हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

कलियुग का महाभारत .....

❑ ले. धर्मजय

Disclaimer : महासंग्राम उपन्यास काल्पनिक है। इसमें वर्णित किसी भी पात्र का किसी भी व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है। हाँ, वर्तमान में चलने वाली अनेक साजिशों को इस कथा के जरिये प्रकट करने का एक प्रयास किया है। उम्मीद है कि साजिशों के समाधान प्राप्त करके पाठक वर्ग अत्यंत लाभान्वित होगा।

अंक - 1

'ओह! गजब हो गया ..... we got it .....' राजन की आँखों से सावन भादो शुरू हो गया।

कई महिनों से जिस घड़ी-पल का इंतजार था वह आ चुकी थी। हिथ्रो एयरपोर्ट के वैटिंग रूम में बैठा हुआ राजन वहाँ लगाये हुए टी.वी. पर सी.एन.एन. चैनल देख रहा था। करीबन सुबह पाँच बजे उस चेनल पर ब्रेकिंग न्यूज फ्लेश हुआ 'Hamas attacked Israel badly ...... 100 killed, so many kidnapped .....' (हमास ने इजरायल पर बहुत बड़ा हमला किया। जिसमें सौ लोग मारे गये और बहुत सारे लोग अपहृत हुए।) आगे चल रहे न्यूज में उसने देखा - करीबन 10000 रॉकेट्स उसने इजरायल पर सात अक्टूबर 2023 की अलसुबह करीबन 3:30 से 7:00 बजे तक दागे हैं। हवाई हमलों से पूरे इजरायल देश को सुरक्षित करने वाला आयरन डोम इस हमले के सामने नाकाम हो चुका था। गाजा पट्टी से हुए इस हमले को हमास ने बड़े पूर्वायोजन के साथ अंजाम दिया है। छः अक्टूबर की देर रात तक दक्षिण इजरायल में नोवा म्यूजिक फेस्टीवल चल रहा था। करीबन अधिकांश प्रजाजन इसके जश्न में डूबे हुए थे तब यह हमला हुआ। पेराग्लाइडर के द्वारा इजरायल में उतरे हुए हमास के आतंकियों ने कई बेगुनाह नागरिकों का अपहरण किया है। इजरायल ने भी इस हमले की प्रतिक्रिया देते हुए गाजा पट्टी पर हवाई हमले शुरू कर दिये हैं और पूरे इजरायल में इमरजेन्सी घोषित की गई है। अमरीकी प्रेसिडेन्ट जो बाईडन ने इस आतंकी हमले की कड़ी निंदा की है और इजरायल को हर तरह से सहयोग करने का वादा किया है।'

इस समाचार को सुनते और देखते हुए राजन की आँखों से सावन-भादो चल रहा था। सबसे बड़ी आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसकी एक आँख से गम के आँसू गिर रहे थे और दूसरी आँख से खुशी के आँसू गिर रहे थे। एक साथ दोनों प्रकार के आँसूओं का गिरना खुद राजन के लिए भी बड़ा आश्चर्य था। लेकिन उस वक्त उसे देख रहे लोगों को तो आँसू दुःख के ही लग रहे थे।

'मेरा जिनशासन और सनातन संस्कृति बच गई' यह सोचकर खुशी के आँसू चल रहे थे। तो अभी हो रहे और आने वाले समय में होने वाले खतरनाक युद्ध को सोचकर गम के आँसू चल रहे थे। अपने आँसुओं को लोगों की नजरों से छिपाने की कोशिश करता हुआ राजन वहाँ से उठकर सीधा ही वॉशरूम में गया। आँखे-मुँह साफ करके पेपर नेपकीन से मुँह पौंछकर वह बाहर निकला और अमरीका जानेवाली डेल्टा एयरलाइन्स की फ्लाइट बोर्डिंग का अनाउन्समेन्ट हुआ। टेग लगे हुए एक्सट्रा लगेज को ट्रोली में डालकर वह हवाईजहाज की ओर आगे बढ़ा। न्यूजर्सी तक करीबन बारह घंटे के सफर में राजन का प्लान सोने का था लेकिन आई हुई ब्रेकिंग न्यूज

ने उसकी नींद उड़ा दी थी।

टेक-ऑफ करने से पूर्व फ्लाइट में होने वलो एनाउन्समेन्ट 'Fasten your seat belt' वगैरह को यांत्रिकता से सुनता हुआ वह यादों में बहुत गहरा डूब चुका था। रन-वे पर रहा हुआ एयर ट्राफिक क्लियर होते ही फ्लाईट टेक ऑफ मोड़ में आ गई थी लेकिन राजन के दिमाग में यादों का ट्रेफिक काफी बढ़ चुका था।

जब से उसने सुना था कि 'BWO (**Better world order** - बेहतरीन विश्व व्यवस्था) में तय हुआ एक विश्व धर्म (One world religion) क्रिस्लाम होगा' तब से उसकी बेचैनी काफी बढ़ चुकी थी। क्रिस्लाम मतलब, क्रिश्चयन + इस्लाम ..... अमरीका में रहे हुए खबरी ने जब सबसे पहले इस बात की जानकारी दी थी तब उसकी बात पर बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ था। लेकिन जब आबुधाबी से पक्के समाचार आये कि यहाँ क्रिस्लाम की ऑफिस खुल चुकी हैं तब से मन में चिंताओं का भयंकर बवंडर उठा था।

क्यों नहीं उठेगा? बरसों से नोस्ट्राडेमस की भविष्यवाणी वह सुनता आ रहा था कि इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्ध में इस्लाम और क्रिश्चन धर्म के अनुयायियों के बीच में तीसरा विश्वयुद्ध होगा। (वह दोनों हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के कट्टर विरोधी है।) सबसे खतरनाक इस युद्ध में दोनों धर्म की बहुत बड़ी हानि होगी और इसी कारण से हिंदू ओर जैन धर्म सुरक्षित हो जायेंगे।

लेकिन कुछेक सालों से अरब साम्राज्य और उसके कट्टर शत्रु इजरायल के बीच निकटता बढ़ने लगी थी। विश्व के सभी देशों को कर्ज के जाल में फाँसने वाले, पर्दे के पीछे रहकर हर एक देश की सत्ता चलाने वाले कुछ चंद लोगों के सामने इजरायल के कट्टर विरोधी अरब देशों को भी घुटने टेकने पड़े थे। वे भी विकास के राग को आलापते हुए BWO के साथ कैसे हो गये यह सभी के लिए बड़े आश्चर्य का विषय था। इलेक्ट्रोनिक और प्रिन्ट मीडिया ने भी अपना आश्चर्य व्यक्त किया था।

इतना ही नहीं ..... अभी कुछ महिनों पूर्व ही समाचार मिले थे कि इस्लाम के सबसे बड़े धर्मगुरु मौलवी और क्रिश्चन धर्म के सबसे बड़े पोप फ्रांसीस के बीच भी वन टू वन मीटिंग्स हुई है। गोपनीय जानकारी मिली थी कि इस मीटिंग्स को यहूदी की लॉबी की भी रहम-नजर प्राप्त हुई है। तीनों धर्म को मान्य ऐसा ईश्वर अब्राह्म के नाम से जाना जाता है। इसीलिए इन तीनों धर्मों को अब्राह्मिक धर्म कहा जाता है। नोस्ट्रोडेमस की भविष्यवाणी से इन तीनों को खतरा महसूस हो रहा था। इसीलिए इन तीनों ने गठबंधन बनाकर एक विश्व धर्म (one world religion) के रूप में क्रिस्लाम को स्थापित करने के लिए प्रक्रिया शुरू कर दी है। कुछ गुप्त संस्थाएँ (secret societies) इस प्रक्रिया को काफी आगे बढ़ा चुकी है। आज तक इन संस्थाओं के बहुत खतरनाक मंसूबे पूरे हुए हैं। चाहे विश्वयुद्ध-1 और 2 की बात हो, चाहे विश्व की आर्थिक शक्तियों को नियंत्रित करने की बात हो, चाहे बड़े-बड़े वायरस को विश्व भर में फैलाने की बात हो और उसे फैलाकर विश्व के सभी लोगों को जबरन नियंत्रित करने की बात हो, इन गुप्त संस्थाओं को हर मोर्चे पर सफलता प्राप्त हुई हैं। करोड़ों-अरबों साल पुराने धर्म और संस्कृति को खत्म करने या बिगाड़ने में उन्हें सिर्फ 70-80 साल में जो सफलता मिली है, उनकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। इसीलिए लग रहा था कि एक विश्व धर्म के रूप में क्रिस्लाम की योजना भी सफल हो जायेगी।

मगर, कई महिनों की मेहनत आज रंग लाई है। जिन लोगों का नेटवर्क हर

एक के मोबाईल तक पहुँचा है। कौन, क्या, कब, किससे, कितनी बात करता है या चेट करता है वह सब जिन्हें पता है। फिर भी Best world order (ऑपरेशन सर्वश्रेष्ठ विश्व व्यवस्था) का पहला चरण 'साकार' कल रात ही पूरा हुआ। अब इस्लाम के सामने क्रिश्चयन खड़ा हो चुका है।

मेरे इस ऑपरेशन में ऐसे लोग मुख्य भूमिका में काम आये हैं, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। यह बात सोचते हुए राजन के चेहरे पर मुस्कान छा गई। एक वक्त का दुश्मन आरिफ अन्सारी आज मित्र बनकर मुझसे जिस तरह जुड़ चुका है वह मैं स्वप्न में भी सोच नहीं सकता। लेकिन, आज पता चल रहा है कि परम कृपालु परमात्मा की कृपा क्या चीज होती है। मन ही मन राजन ने प्रभु को वंदना की।

राजन बहुत भावुक हो चुका था। मोबाईल की स्क्रीन पर वॉलपेपर में दिख रहे अपने प्राण प्यारे शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु को वंदन किया। कृतज्ञता गुण की मिसाल राजन एक के बाद एक फोटो देख-देख के मन ही मन आभार व्यक्त कर रहा था। स्पीकर पर हो रहे ऊँचाई, स्थान वगैरह की अनाउन्समेन्ट की आवाज भी उसकी कान से टकराकर वापिस हवा में घुल रही थी।

सेंट जेवियर्स कॉलेज में जब लव जिहाद का मामला सामने आया था तब आरिफ की गैंग से सामना हुआ था। मारो या मरो वाली बात थी वो ..... लेकिन गुरुदेव निर्वेद विजयजी म. की गजब कृपा हुई और एक वक्त का जानी दुश्मन पक्का दोस्त बन गया। BWO का प्रथम ऑपरेशन 'साकार' इसी के कंधे पर आगे बढ़ा था। आरिफ के साथ बनी हुई बहुत सारी घटनाओं की यादें बहुत तेजी से दिमाग की स्क्रीन पर आने लगी। लेकिन, उपकार स्मृति की लिस्ट लंबी थी इसलिए मोबाईल स्क्रीन पर आगे का किरदार छा गया।

Better world order की साजिशों के साथ रूबरू कराने वाले प्रोफेसर थोमस भी कितने भले इन्सान हैं। पहले तो उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ था लेकिन 2020 में कोरोना वायरस की नौटंकी देखने के बाद पक्का यकीन हो गया। सिर्फ चार साल में आज मैं जिस मुकाम पर पहुँचा हूँ उसमें उन्होंने मेरे लिए मार्गदर्शक बनने की बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। आज उनके उपकार को भी याद कर रहा हूँ। राजन ने फोटो को सिर पर लगाया।

एयरफोर्स में भर्ती हुए संजयसिंह ने कई गोपनीय जानकारियाँ साझा करके मेरा कार्य को सरल कर दिया। आगे के मिशन में भी वह अहम किरदार निभायेगा। धन्य है मेरे मित्र को ......

विकास मल्होत्रा ने पार्टी पोलिटिक्स की गोपनीय जानकारियाँ शेयर करके मेरे काम को आसान बना दिया। सचमुच, लंबी रेस का घोड़ा है वह .....

विश्वास शर्मा, वैसे तो प्लास्टिक सर्जरी में सर्जन बनेगा, लेकिन मेडिकल की सभी शाखाओं की उसकी अद्‌भुत नॉलेज है। कोविड के वक्त में सच्ची जानकारियाँ उसी से मिली थी। सचमुच, प्रभु ने बहुत सोच समझकर मित्र मंडली बनाई है!

अनुपम दास ने पत्रकारिता का पेशा चुनकर रही सही कमी को भी पूरा कर दिया है। 'तू सी ग्रेट हो शंखेश्वर दादा ....'

अंत में जो फोटो देखा उसे देखकर राजन अत्यंत भावुक हो गया। वह फोटो था पू. मुनिराज श्री निर्वेद विजयजी म. का ..... मन ही मन राजन बुदबुदाया कलियुग के इस महाभारत में गुरुदेव! आप श्री कृष्ण की भूमिका में हो। कितना शरारती था मैं ..... अमीर बाप की बिगड़ेल औलाद था मैं .....'खाओ, पीओ और ऐश करो' ही मेरा जीवन का एकमेव मकसद था। मेरे अविनय और गुस्ताखी को माफ करके एवं मेरी बदमाशी को साफ करके गुरूवर! आपने सबसे बड़ा उपकार मुझ पर किया है। इस BWO 'साकार' ऑपरेशन को आपका मिला हुआ मार्गदर्शन अमूल्य है। करोड़ों रूपये का पैकेज लेकर भी एक होनहार टेलेण्टेड व्यक्ति जो विजन नहीं दे पाता वह विजन गुरुवर आपने दिया है! कैसे चुकाऊँगा आपके उपकार को .... इतना बोलते हुए उसकी आँखे बरस पड़ी।

यह अच्छा रहा कि उसकी बाजू की सीट पर कोई यात्री बैठा नहीं था और बाजू की कतार (Raw) में बैठे हुए की दृष्टि उस पर गिर सकती थी लेकिन एक को छोड़कर वे सभी खर्राटे ले रहे थे।

जो जग रहा था, उसकी नजरें राजन पर वेटिंग रूम से ही गड़ी हुई थी। लेकिन तिर्छी नजर एवं गोगल्स के कारण राजन को पता ही नहीं था कि अभी वह किसी की नजर में है।

सावधानी में शिखर पर स्थित राजन शायद पहली बार सावधानी चूक रहा था।

अभी दस घंटे हवाई जहाज में ही पूरे होने वाले थे। मोबाईल को बंद करके वॉलेट में डालकर शांति से पैर लंबे करके राजन सोने का प्रयास करने लगा, लेकिन ऑपरेशन 'साकार' में मिली हुई सिद्धी उसे कहाँ सोने देगी?

अचानक उसने अपने अतीत में गोता लगाया। बंद आँखों से भी वह अपनी सेन्ट जेवियर्स स्कूल को अच्छे से देख रहा था .....

क्रमशः ......

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

पूर्व से –

न्यू जर्सी जाने वाली फ्लाइट में सफर कर रहा राजन अपने अतीत में खो गया। बंद आँखों से भी वह अपनी सेंट जेवियर्स स्कूल को अच्छे से देख रहा था .....

'कल Exam क्यों नहीं दी?' सेन्ट जेवियर्स के प्रिन्सीपल डॉ. जेकब ने जब चार युवाओं से प्रश्न किया तब चारों ने एक साथ जवाब दिया

'सर! हम'

'आपमें से कोई एक ही बात करेगा। Should I teach you simple manners ?....' (क्या मुझे सामान्य शिष्टाचार भी आपको सिखाना पड़ेगा?)

राजन ने चारों की ओर से जवाब दिया 'सोरी सर! परसों हम सभी एक साथ मिलकर मेरे घर पर Exam की Preparation (तैयारी) कर रहे थे। देर रात हो गई तो सभी मेरे घर पर ही सो गये थे। सुबह जगने में लेट हो गया तो स्कूल वेन निकल चुकी थी। पापा की कार से आ रहे थे, लेकिन बीच रास्ते में ही टॉयर पंक्चर हो गया।'

'अच्छा! फिर क्या हुआ?'

'सर! किसी ने हमारी हेल्प नहीं की। भलाई का जमाना ही नहीं है। जैसे-तैसे पंक्चर ठीक करने वाले की दुकान ढूँढी। मगर सर, हमारा नसीब देखो, उसी दिन उसकी दुकान एक घंटे देरी से खुली। हमें इंतजार करना पड़ा। अब आप ही .....'

डॉ. जेकब ने बीच में ही बात रोक दी।

'What nonsense ..... I don't want to listen a novel. I have no time ..... tell me in minimum words...... ' (यह क्या बेवकूफी की बात है ..... मुझे उपन्यास नहीं सुनना है। मेरे पास समय नहीं है। मुझे कम से कम शब्द में कहो)

'सॉरी सर, In short कहूँ तो हमारी एग्जाम का पूरा टाईम पंक्चर ठीक करने में ही बीत गया। सर, हम हमारे क्लास टीचर या आपको मुँह दिखाने के काबिल ही नहीं रहे। आज बड़ी हिम्मत जुटाकर हम आपसे मिल रहे हैं सर .....' इतना बोलते-बोलते राजन रूआंसा हो गया।

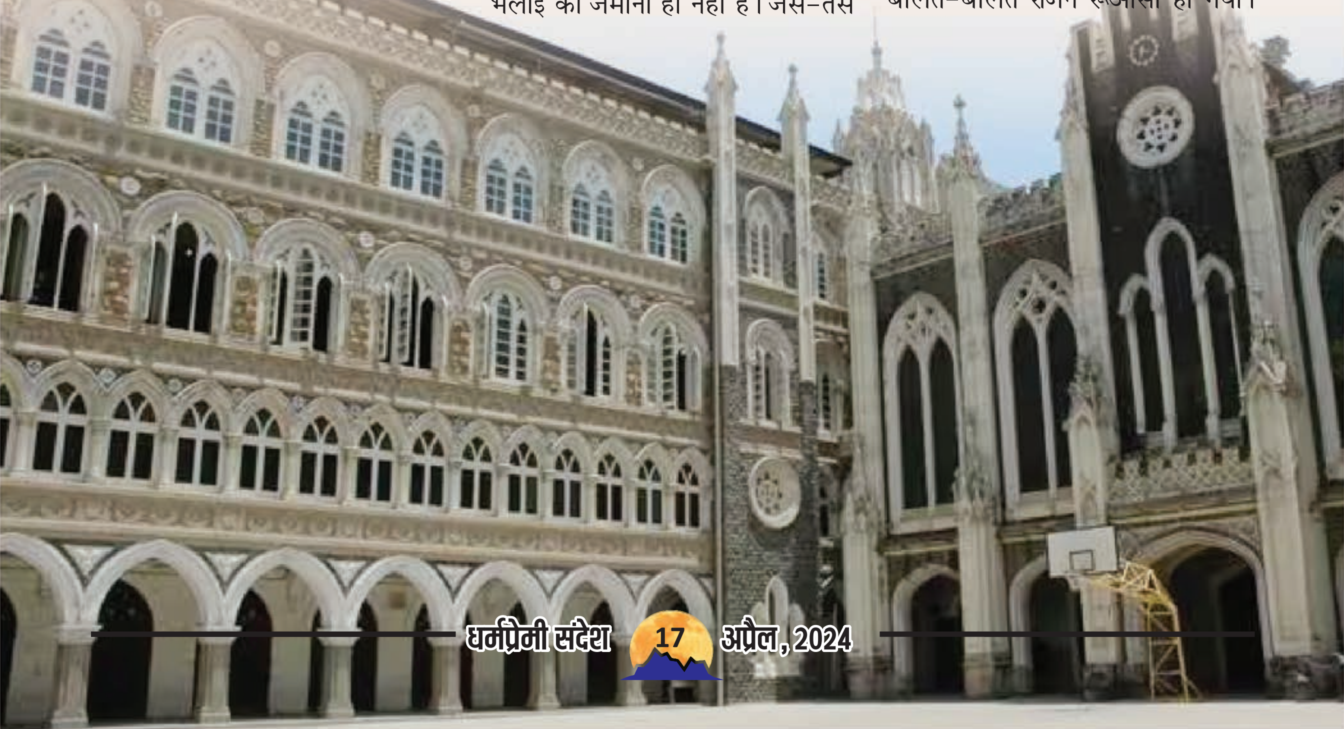

'Sir, can you re-arrange exam for us?'(सर क्या आप हमारे लिए परीक्षा का पुन: आयोजन कर सकते हो?)

'Yes....Yes, Why not? (हाँ ..... हाँ ..... क्यों नहीं) Well, when you want an exam? (आप कब चाहते हो?)'

'Thank you very much sir ..... whenever you call, we are ready for exam' (आभार सर ..... आप जब बुलायेंगे तब हम परीक्षा के लिए तैयार हैं।)

'Ok ..... tomorrow at 10 am, all of you four, come to my office, I will arrange it (ठीक है .... कल सुबह 10 बे आप चारों मेरे ऑफिस पर आ जाना ..... मैं एग्जाम की व्यवस्था करवा दूँगा .....)

'Thank you very much sir .....'

राजन, संजय (संजू), विश्वास और विकास प्रिन्सीपल की केबिन से बाहर निकले। चारों के चेहरे पर मुस्कान थी। केबिन से सौ मीटर दूर जाकर चारों ने ताली ठोकी और हँसी के ठहाके लगाये।

'देखा ना ..... कैसा मस्त उल्लू बनाया जेकब को .....' राजन खुशी के मारे उछल पड़ा .....

'लेकिन मास्टर प्लान तो मैंने ही दिया था ना?' संजू ने खुद का कॉलर टाईट किया।

'Salute to our think tank .....' विकास ने संजू की पीठ थपथपाई ......

'चलो, इस खुशी में कॉफी हाऊस चलते है .....' विश्वास ने फरमाईश रखी।

हकीकत में, दसवी कक्षा में पढ़ने वाले यह चारों, अमीर बाप की बिगड़ैल औलाद थी। एक दिन पूर्व, एग्जाम के ही दिन वे पिकनिक मनाने खंडाला घाट गये थे। प्री-बोर्ड एग्जाम का उन लोगों के लिए कोई महत्त्व ही नहीं था। वे मान रहे थे कि यदि 40-45 प्रतिशत मार्क्स लाने पर भी पास हो सकते है तो पूरी साल गधे की तरह मेहनत करके 80-90 प्रतिशत क्यों लाने का? और, वैसे भी पापा करोड़पति और अरबपति हैं तो उनकी विरासत अपुन को ही तो मिलने वाली है ना?

'अरे संजू, शांति से कॉफी मत पी ..... कल ही एग्जाम देनी है। पासिंग मार्क्स तो लाना पड़ेगा ना?'

'नहीं आयेंगे तो कौन क्या उखाड़ लेगा?' संजू ने बिंदास वाला जवाब दिया।

'अरे, इन स्कूलवालों से तो निपट लेंगे, लेकिन घर वालों से कैसे निपटेंगे?' राजन का भय जबान पर आ गया।

'ठीक कहा राजन तूने ..... अब सारी मस्ती और सुस्ती छोड़ो ..... किताब पर से मिट्टी हटाओ, वर्ना घर वाले मिट्टी बिगाड़ देंगे।' विकास ने राजन की बात का समर्थन किया .....

चारों कॉफी हाऊस से बाहर निकले। राजन ने अंगूठा दिखाकर कहा 'All the best for preparation ..... See you tomorrow at 10 O'Clock' (तैयारी की शुभकामनायें ..... कल दस बजे मिलते हैं .....)

चारों अपनी-अपनी हार्ले डेविडसन बाईक पर रवाना हुए। मुम्बई के रास्तों से जब यह बाइक गुजरती है तब युवाओं की आँखे चौड़ी हो जाती है और कान खड़े हो जाते हैं। राजन ने चौपाटी से घर की ओर बाईक को 120 की स्पीड पर भगाई तब समंदर की लहरों की आवाज को भी दबा दिया।

चारों के घर वाले अंधेरे में थे और उनके सु(?) पुत्र दिन के उजाले में ऐसी कई धोखाधड़ीयों को अंजाम दे चुके थे। खंडाला घाट घूमने के लिए तो वे एग्जाम खत्म होने के बाद भी जा सकते थे, लेकिन गर्ल्स हाईस्कूल की प्री-बोर्ड एग्जाम पूरी हो गई थी और इन लोगों की फ्रेन्ड्स ने उसी दिन पिकनिक का कार्यक्रम बनाया था तो बंदो ने एग्जाम को बिंदास गोली मार दी।

सुबह 9.55 बजे सेन्ट जेवियर्स पर चारों की बाईक की आवाज किसी चोपर की लेन्डिंग का भ्रम खड़ा कर रही थी। जैकब सर की केबिन के बाहर 'हाय! कैसी रही तैयारी?' 'अरे, मजेदार ..... आराम से पास हो जाऊँगा।' संजू ने राजन को जवाब दिया। इतने में तो विकास और विश्वास भी पहुँचकर बिंदास बातें करने लगे, मानो कि आज तो वे मैदान पर उतरकर सेन्चुरी ठोकने वाले हो।

'एग्जाम किसे देनी है?' प्यून (चपरासी) ने रंग में भंग किया .....

'हाँ, हम चारों को देनी है। जैकब सर ने हमें 10 बजे बुलाया था।' राजन ने चारों की ओर से जबाव दिया।

'जी, सर आप ही को अंदर बुला रहे हैं।' कहकर प्यून अपने किसी काम के हिसाब से बाजु के कमरे में चला गया।

'May I come in Sir?'

'Yes, welcome' चारों के सामने गौर से देखते हुए प्रिन्सिपल ने आदेश किया 'रामु (प्यून) आप सभी को एग्जाम हॉल दिखाने आ रहा है। चारों के लिए अलग-अलग हॉल की व्यवस्था की गई है .... वहाँ examiner मौजूद है, वे ही आपको question और Answer Sheet देंगे।'

चारों की आँखों के प्रश्नार्थ भाव को प्रिन्सिपल समझ चुके थे, लेकिन अन्जान बनकर पूछ लिया 'Any problem?'

'No ..... No .... Sir जा रहे हैं।'

राजन मन ही मन बुदबुदाया 'इससे बात करना बेकार है .... आज तो इसकी आँखें खतरनाक दिख रही है।'

चारों को अलग-अलग हॉल की व्यवस्था बहुत विचित्र लग रही थी। सेन्ट जेवियर्स के एक हॉल में सौ-सौ विद्यार्थी आसानी से बैठ सकते थे। चारों को एक-एक कोने में बिठा दिया होता तो भी चल जाता। मालूम नहीं, इन लोगों को क्या सूझ रहा है। प्यून की उपस्थिति के कारण मन के भाव मन में ही दबा देने पड़े।

'रूम नं. 4, 5, 6और 7 में आपको एक-एक करके बैठना है। जाइये .....' कहकर प्यून वहाँ से गायब हो गया।

अंदर मैडम इन महानुभावों का ही इंतजार कर रही थी। पूरा हॉल खाली था। चारों की हालत खाली हॉल में खुद को अकेला देखकर ही पतली हो रही थी। लग रहा था कि पूरे हॉल का बोझ खुद के सिर पर आ गया हो। हॉल की शांति श्मशान की शांति जैसी लग रही थी।

बेन्च पर बिठाकर मेडम ने एक पेज का प्रश्न पत्र और एक पेज की आंसर शीट इनके हाथ में थमा दी।

'मेडम, Only single page for answer sheet? ' (सिर्फ एक ही पन्ना उत्तर पत्र के लिए?) राजन ने प्रश्न किया।

'Yes, First read the question paper properly you will get answer.' (पहले आप प्रश्नपत्र को अच्छे से पढ़ लो, आपको जवाब मिल जायेगा।)

मेडम की आँखों में दिख रही शरारत ने राजन को हिलाकर रख दिया।

राजन की तरह और तीनों की दास्तान भी समान थी।

सभी ने प्रश्न पत्र देखा। विज्ञान का वह प्रश्नपत्र 100 मार्क्स का था। MCQ की तर्ज पर बने उस प्रश्नपत्र में सिर्फ एक ही प्रश्न पूछा गया था। प्रश्न के उत्तर के रूप में पाँच विकल्प दिये गये थे, जिसमें से एक पर टीक (✓) लगानी थी।

प्रश्न था : 'Before 2 days, in your car, which tyre was punctured?' दो दिन पूर्व आपकी गाड़ी के कौनसे टायर में पंक्चर हुआ था?

विकल्प थे :

a. Forward left hand side tyre (आगे की ओर बायाँ टायर)

b. Forward Right hand side tyre (आगे की ओर दायाँ टायर)

c. Backward left hand side tyre (पीछे की ओर बायाँ टायर)

d. Backward Right hand side tyre (पीछे की ओर दायाँ टायर)

e. All four tyres (चारों टायर)

चारों मित्रों को पसीना छूटने लगा। Exam hall fully A.C. होने पर भी सिर से उतर रहे पसीने को देखकर मैडम ने राजन को पूछ लिया 'Why are you sweating So much?' (इतना पसीना क्यों छूट रहा है आपको?)

'No.....No..... Madam.....' राजन् ने अपने रूमाल से पसीना पौंछते हुए पूछा 'Madam ..... In exam of science, which kind of question you have given?'

(मेड़म विज्ञान की परीक्षा में यह कैसा प्रश्न दे दिया?)

मेडम ने प्रश्न का जवाब मुस्कराहट से दिया 'प्रश्नपत्र आप निकालेंगे क्या?'

राजन बौखला गया 'I don't mean so ..... But .....' (मेरा वह मतलब नहीं था .... मगर .....) बीच बात में ही मेडम ने टोक दिया 'Shut up ..... Answer this simple question ..... otherwise.... ' (चुप रहे, सरल प्रश्न का जवाब दे ..... वर्ना .....)

मेडम के तेवर देखकर राजन ढीला पड़ गया .....

'Sorry .... Sorry Madam ....'

राजन को ही नहीं, अन्य तीन मित्रों को भी पता लग चुका था कि यह प्रश्न क्यों पूछा गया है और इसका नतीजा क्या आने वाला है। इतने सरल (?) प्रश्न का जवाब देते-देते चारों को नानी याद आ गई। जिसके मन में जो आया, उस पर (✓) लगाकर सभी एग्जाम हॉल के बाहर आ गये। हॉल में प्रवेश करके बाहर निकले तब तक पौना घंटा बीत चुका था।

चारों के चेहरे उतर गये थे। मौनी बाबा बनकर, नीची मुंडी करके चारों

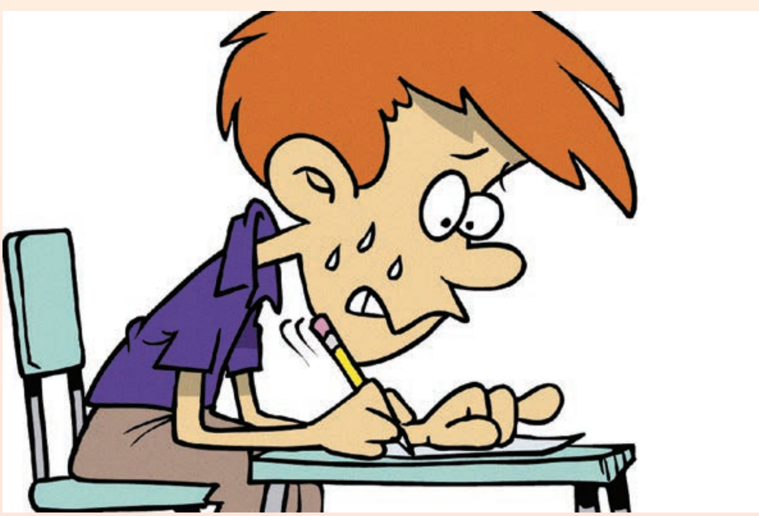

चल रहे थे। गार्डन में बैंच के ऊपर चारों बैठे। राजन का गुस्सा जुबान पर आ गया 'क्यों संजू तेरा आईडीया था ना यह? मरवा दिया ना सबको? हे भगवान ..... मालूम नहीं, अब क्या होगा?' राजन के साथ विकास और विश्वास ने भी अपना सूर मिलाया।

'I am really very very sorry ..... माफ करना मुझे' अपराधभाव के बोझ से संजू की गर्दन झुकी हुई थी।

'Okay....' राजन ने मैत्री भाव से कहा 'अब भविष्य में आने वाली सुनामी में desaster management कैसे करना उसका plan करते हैं। Lets have a cold coffee (चलो कोल्ड कॉफी हो जाये ....)'

चारों कॉफी हाऊस पहुँचे। कोल्ड कॉफी पीते-पीते राजन ने स्कूल के एक्शन पर चर्चा शुरू की 'देखो, हम घर पर पहुँचेंगे उससे पहले ही शायद स्कूल से कॉल पहुँच गया होगा। नौटंकी की शुरूआत सबसे पहले तो घर से ही शुरू करनी पड़ेगी।'

विश्वास ने प्रेक्टिकल एंगल से बात की 'देखो, घर पर कॉल करके वह अपनी सारी करम कुंडली तो खोलने नहीं बैठेंगे। वे तो उन्हें स्कूल में मीटिंग के लिए बुलायेंगे। तब तक तो कोई समस्या नहीं हैं।'

'Exactly ..... you are right' विकास ने विश्वास को सपोर्ट किया। 'अरे! राईट वाली ..... उन लोगों के पास तो अपने फ्रॉड का पूरा प्रूफ आ चुका है। हम घर पर कितना भी समझायेंगे, वे हमारी बात मानेंगे नहीं' राजन अपनी लंबी सोच को काम में ले रहा था।

'तो क्या किया जाए?' विश्वास को सीधी बात में ही रस था।

'Surrender ..... only Surrender घर पर जाकर सीधे ही मम्मी के चरणों में लेट जाओ ..... उन्हें कन्वीन्स करो कि आप सुधर गये हो। थोड़े मूड़ में दिखे तब मम्मी को शांति से सच्ची बात बता दो। हाँ, लेकिन उसमें सहेली सर्कल वाली बात मत बताना। और हाँ ..... शाम 8.00 बजे सभी अपने-अपने घर का Reaction अपने 'बिंदास' ग्रुप पर डाल देना ..... ताकि टॉयर पंक्चर की तरह वापस कोई गलती ना हो जाये .....'

'वाह ..... शानदार Damage control planning .....' विकास ने अपना समर्थन घोषित किया। विश्वास ने भी उसमें सूर मिलाया। एक संजय था जो बेचारा अभी तक अपराध बोध से बाहर नहीं आ रहा था।

'दोस्त, क्यों चूप है? Now come out from guilt and enjoy the world ..... (अपराध बोध से बाहर आ जा और दुनिया का लुत्फ उठाओ) ऐसा तो होता रहता है ..... यह तो शुरूआत है ..... कल हम कॉलेज में Entry लेंगे ...... निष्फलता में भी हौंसला नहीं गंवाना है।'

राजन ने मोटीवेशनल स्पीच दे दी।

राजन घर पहुँचा। मम्मी को देखते ही षाष्टांग दंडवत हो गया। मम्मी आश्चर्य में डूब गई ..... इसे क्या हो गया? बांह पकड़कर बेटे को खड़ा किया।

'क्यों भाई, आज यह सब क्या है?'

'मम्मी, और कुछ नहीं ..... हृदय परिवर्तन'

'बेटा, तेरी तबीयत तो ठीक है ना?' राजवी ने पूछ लिया।

'हाँ मम्मी, एकदम ठीक है .... अब मैंने तय किया है कि तेरी मर्जी को और तेरी अर्जी को जिदंगी में कभी नहीं ठुकराऊँगा।'

'ओहो ..... हो ..... बहुत सुधर गया' राजवी को कुछ क्लियर होने लगा था। करीबन एक घंटे पहले ही स्कूल से मैसेज आया था। कल सुबह 10 बजे प्रिन्सिपल डॉ. जैकब ने मिटिंग के लिए अर्जेन्ट नोटिस इश्यू की थी।

'राजन ! ..... स्कूल में आज-कल में तूने कुछ शरारत की है?'

'मम्मी! सारी बात बाद में, पहले भूखे बेटे को खाना देकर कुछ पुण्य कमा ले।'

राजवी हँस पड़ी, 'चल आ जा थाली लगा रही हूँ।'

मम्मी किचन में गई और राजन ने व्हाट्सएप्प पर बिंदास ग्रुप खोला। तीनों जिगरजान की ओर से कोई मैसेज नहीं आया था। मन ही मन बुदबुदाया 'अभी तो इन सभी के घरों पर पटाखे फूट रहे होंगे .....'

भोजन करने के बाद राजवी ने फिर से पूछा 'स्कूल में कुछ कारनामा किया है तूने?'

'मम्मी, पहले तूं मेरे एक प्रश्न का जवाब दे ..... सुबह का भूला, शाम घर लौट जाता है तो उसे भूला हुआ कहते हैं क्या?'

'नहीं.....'

'मेरा दूसरा प्रश्न ..... दुर्जन जब अपने किये हुए के लिए शर्मिंदा हो, पछतावा करे, माफी माँगे, उसके बाद भी उसे सजा देनी चाहिए? प्रताड़ित करना चाहिए? कि अपने महावीर स्वामीजी को याद करके उसे माफ करना चाहिए?'

राजवी समझ चुकी थी कि राजन किसलिए boundary बना रहा है। 'राजन, भगवान को बीच में मत ला। सीधा-सीधा मेरे प्रश्न का जवाब दे - तूने स्कूल में कोई शरारत की थी?' राजवी की आवाज तेज हो गई।

'मम्मी! की नहीं थी, हो गई थी .....'

'ओ हो ..... मेरा बेटा कितना शरीफ है ..... वो कभी शरारत करता ही नहीं है ..... ख्वामख्वाह यह स्कूल वाले पीछे पड़ जाते हैं।'

'मम्मी! अब सीधी-सीधी बात कर देता हूँ। दरअसल ऐसा हुआ कि हमारी मित्रमंडली ने खंडाला घाट पिकनिक का प्लान पहले से बनाकर रखा था, और इन स्कूल वालों ने उसी दिन साईन्स की Exam रख दी। हम तो हमारे प्लान के मुताबिक घूमने चले गये। Sorry, आपको नहीं बताया' राजन मम्मी का रिएक्शन देखने के लिए थोड़ा रूका ..... 'अब exam re arrange करने के लिए सर को request करने के लिए कुछ तो स्टोरी बनानी ही पड़ेगी ना? तो संजू के idea के मुताबिक हमने साईन्स की मेडम से बात की। उन्होंने हमारा केस प्रिन्सीपल जेकब सर पर रेफर किया। .....' बाद में बना हुआ सारा घटनाक्रम राजन ने राजवी को बता दिया .....

तेवर तीखे करते हुए राजवी ने पूछा 'और कोई बात तो छुपा नहीं रहा है ना? और भी कुछ बात हो तो अभी ही बोल देना ..... वरना मुझ से बुरा और कोई नहीं होगा।'

'नहीं मम्मी, बिल्कुल नहीं ..... तेरे सत्यवादी बेटे पर तुझे नाज होना चाहिए और तूं अविश्वास किये जा रही है?'

सटाक ..... राजवी ने राजन के गाल पर एक चांटा जड़ दिया 'बदमाश ..... तुझे पढ़ने के लिए हम स्कूल भेज रहे हैं? कि यह धोखाधड़ी करने के लिए? तेरा बाप सालाना 10 लाख रूपये तेरी पढ़ाई के लिए खर्च कर रहा है और तू यह गुल खिला रहा है? तेरे पापा कभी तेरी पॉकेटमनी में कटौती करते थे तब मैंने बीच में पड़कर तुझे पैसे दिलाये हैं। जब जैसा चाहा वैसा दिलवाया है। घर में कोई रोक-टोक नहीं हैं। हमारी उदारता का तूने यह फायदा उठाया? आने दे तेरे पापा को ..... अभी तो सिर्फ चांटा लगा है ..... पिटाई तो वो आकर करेंगे।'

राजन गिड़गिड़ाने लगा 'मम्मी! अब कभी ऐसी गलती नहीं होगी, तूं यकीन रख ..... प्लीज! पापा से मुझे बचा लेना।'

मम्मी का चेहरा देखते हुए राजन को लगा कि विनती की जगह अब धमकी देनी पड़ेगी। 'देख मम्मी ..... यदि पापा ने मेरी पिटाई की तो मैं सुसाईड कर लूँगा।'

राजवी का दिल पिघल गया 'ऐसा मत बोल बेटा ..... मैं संभाल लूँगी। लेकिन, तुझे वादा करना पड़ेगा, अब से कभी भी तेरे तीन मित्रों के साथ कहीं भी जाने से पूर्व तूं मुझ से पूछेगा।'

'हाँ पक्का ..... मुम्बई से बाहर फ्रेन्डस के साथ जाना होगा तब तुझे पूछकर ही जाऊँगा।' राजन ने नौटंकी सफलता के साथ पूरी की।

'तेरा देखकर तेरी बहन रोशनी भी बिगड़ रही है। वह कहती है कि भैया अपने फ्रेन्डस के साथ कहीं पर भी कभी भी जा सकता है तो मैं क्यों नहीं?'

राजन बीच में ही बोल पड़ा 'वो आठवीं में पढ़ रही है, उसे मेरे साथ compare करने की क्या जरूरत है? उसे बोल दो, अपनी Limit में रहे .....' राजन आगे बोलने जा रहा था, लेकिन राजवी की लाल आँख देखकर रूक गया 'Cool ..... Cool mummy ..... Cool ..... Cool .....'

क्रमश :

विज्ञापन शुल्क

धर्मप्रेमी संदेश मासिक पत्रिका के अंदर फोर कलर प्रिंटिंग में एक माह के विज्ञापन का शुल्क

चौथाई (1/4) पेज - 2,000/- | आधा (1/2) पेज - 4,000/- | फुल पेज (1) - 8,000/-

विज्ञापन शुल्क, सदस्यता राशी एवं दान राशी जमा करने हेतु बैंक का विवरण : -

Dharmapremi Pariwar Trust, State Bank of India
Account No. : 38947342459, IFSC : SBIN0000516
email : ahoarihant@gmail.com whatsapp no. 9166568636.

सूचना - जो भी व्यक्ति धर्म प्रेमी परिवार को राशि का भुगतान कर रहा है वह कृपया IMPS या NEFT के द्वारा या चेक के जरिये ही भुगतान करें। यदि केश ट्रान्सफर करा रहे हो तो नियत की गई राशि से 56 रुपये अधिक भिजवाए।

भुगतान करने के बाद कृपया साथ में दिए गए ई-मेल अकाउन्ट पर या वॉट्स अप नंबर पर अवश्य मैसेज करें।

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक-3

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

राजन की नजर बंगलो के गेट पर ही गड़ी हुई थी। रात को आठ बज गये थे, पापा की एन्ट्री होने में ही थी। दूसरी ओर बिंदास ग्रुप में तीनों की ओर से मैसेज आ चुका था - 'बढ़िया वाली धुलाई हो गई है। तूने तो सच बोलने का प्लान बनाकर मरवा दिया।'

गाड़ी की आवाज आई, कुछ ही सैकण्ड्स में रोशन ने घर में प्रवेश किया, राजन की आँखों में खौफ छाया हुआ था। उसे पता था कि मम्मी ने भले ही बचाने की जिम्मेदारी ले ली है। पापा शायद हाथ नहीं भी उठायेंगे, लेकिन चुपचाप जो एक्शन लेंगे वो चाँटे से ज्यादा होंगे। बरसों से उनके स्वभाव से राजन अच्छे से परिचित था।

रोशन (राजन के पापा) घर में आकर सीधे ही बाथरूम में गया। फ्रेश होकर खाने के लिए बैठा। 'राजवी! राजन नहीं दिख रहा है?' रोजाना रात 8.30 बजे बाप-बेटे साथ-साथ बैठकर खाना खाते थे। 'आज अष्टमी है ना, राजन ने शाम को ही खाना खा लिया है।'

रोशन को आश्चर्य हुआ 'क्या बात है? राजन सुधर गया।'

'हाँ, बहुत सुधर गया है' राजवी ने जवाब दिया तब राजन की धड़कनें बढ़ गई। राजवी ने आँख के ईशारे से ही राजन को तसल्ली दे दी .....'Don't worry be happy.....'

'आप आज कुछ ज्यादा ही टेन्शन में दिख रहे हो?' खाते-खाते विचारमग्न हुए रोशन को देखकर राजवी ने पूछ लिया।

'हाँ है, थोड़ी सी tough situation.....'

'बाद में बात करते हैं ..... अभी शांति से खाना खा लो.....'

राजन की हालत पतली हो रही थी। एक तरफ पापा टेंशन में हैं। शायद बिजनेस का ही होगा। दूसरी ओर मेरी शिकायत सुनेंगे। क्या होगा? ..... 'हे भगवान! तू ही मालिक है।'

मन में ही बोला 'धरा ने तो हमारी वाट लगा दी। दो दिन बाद खंडाला का प्रोग्राम बनाया होता तो क्या समस्या थी? सचमुच, इन लोगों की बुद्धि से चलना खतरे से खाली नहीं है।'

राजन ने अपने रूम के बाहर लगाया हुआ Spy CCTV On किया। धरा से बात करनी थी, कहीं रंगे हाथ पकड़े न जाये।

'राजवी! मालूम नहीं, करीबन 6माह से हमारे हाथ में एक भी कॉन्ट्रेक्ट नहीं आया। Lowest Rate भरने पर भी अपने competitor टेण्डर में मैदान मार जाते हैं। मुझे तो शक है कि अपनी कंपनी में ही कोई खबरीलाल बैठा है।'

बेडरूम में जाकर रोशन ने बात शुरू की।

'रोशन! जिंदगी में यह सब तो चलता ही रहेगा। आप यदि एक्शन ना लेने वाले हो तो ही एक बात करना चाहती हूँ।'

राजवी ने भूमिका शुरू कर दी।

रोशन ने रिमोट से टी.वी.ऑफ करके पूछ लिया 'लगता है राजन के लिए अभयदान मांग रही हो?' रोशन का दिमाग बहुत ही तेज था। राजवी के चेहरे के सामने बिना देखे ही उसने सच्चा अनुमान लगाया था।

'हाँ, मगर किसी की सुधरने की गुंजाइश हो तो एक बार माफ कर देने में हम सबका भला है।'

'रोशनी, हमें क्या कमी है? उसे माफ करने में मुझे एक सैकन्ड भी नहीं लगेगी। तुझे ही पता है कि अभी तो दसवीं की परीक्षा देगा, लेकिन पैसे के बल पर उसकी शरारतें और उद्दंडता जिस तरह बढ़

रही है वह अच्छे भविष्य का संकेत नहीं है। बोल, क्या कहना चाहती थी तू?'

राजवी ने राजन के साथ हुई सारी बात बता दी।

जैकब के आईडिया को सुनकर रोशन हँस पड़ा। 'सचमुच, ऐसी Standard school में ऐसे ही प्रिन्सिपल होते हैं।'

'तो कल पेरेन्ट्स मीटिंग में आप आ रहे हो ना? विकास, विश्वास और संजू के पेरेन्ट्स भी आने वाले हैं।'

'राजवी! आई एम सॉरी ..... नहीं आ पाऊँगा। कल सुबह 10.30 की अपाइन्टमेन्ट है। बहुत बड़ी डील हो सकती है। तूं ही जाकर निपटा देना।'

'रोशन! यह क्या? हर वक्त अपाइन्टमेन्ट, डील, कॉन्फ्रेन्स, मीटिंग कुछ न कुछ चलता ही रहता है और चलता ही रहेगा। कभी तो आओ मेरे साथ।'

'राजवी, एक बार Business empire बनाना आसान होता है, maintain करना लोहे के चने चबाने जैसा होता है।'

'क्या कमी है हमारे पास? ऑडी, लिमोझिन, Rolls-royce, बी. एम. डब्ल्यू, फरारी ..... पाँच-पाँच गाड़ीयाँ हमारे पोर्च में खड़ी है। 20000 करोड़ का टर्नओवर है। पापा बहुत बड़ी जगह की डील करके कल आ रहे हैं। अपनी छत पर हैलीपेड बन रहा है। शायद एक महिने बाद इस पर हैलीकॉप्टर तैनात रहेगा। रोशन, Now stop here ..... हमारी भी कोई जिंदगी होती है। स्कूल मीटिंग तो एक बहाना था। याद करो, कितने दिन पहले हम दोनों कहीं घूमने गये हो?' राजवी ने अपनी दिल की सारी व्यथा खाली कर दी। आज उसे मौका भी अच्छा मिला था।

'राजवी ..... तुझे पता नहीं हैं। मैंने जो राह चुनी है वह One way है। इसमें यू-टर्न नहीं है। पीछे से हॉर्न पर हॉर्न बज रहे हैं। 'आगे बढ़ो वरना ठोक दिये जाओगे' यह हमारी नियति बन चुकी है। तुझे तो पूरा empire दिख रहा है। कंपनी का टर्नओवर दिख रहा है, वह हकीकत में हमारा नहीं है। थोड़े भी कमजोर पड़े कि हमें कुचलकर खत्म करने के लिए पूरी कायनात खड़ी है। तुझे ड्राईवर और गाड़ी दे दी है। करोड़ों रूपये अकाउण्ट में पड़े हैं। क्या कमी हैं?

'बस, एक आपकी ही कमी है।' राजवी की आँखों से आँसू बहने लगे।

रोशन ने फौरन उसे संभाल लिया।

'देख, कंपनी की AGM, कंपनी की प्रोडक्ट का प्रमोशन सभी में हम साथ ही रहते हैं ना?'

'मुझे पता है, साथ रखना पड़ता है। साथ होने पर भी हम साथ नहीं होते।'

'राजवी! Please, leave me ..... pardon me .... (मुझे माफ कर दे)'

'रोशन तूने सुनी होगी वो गजल – 'यह दौलत भी ले लो, यह शोहरत भी ले लो, भले छीन लो मुझ से मेरी जवानी, मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन ..... वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी' ..... यह गजल मैं गाती रहती हूँ। तूं समझ गया होगा कि मैं क्या कहना चाहती हूँ।'

'राजवी तुझे कहने की जरूरत नहीं है। मैं सब कुछ समझ रहा हूँ, लेकिन मेरी मजबूरी तूं भी समझ.....'

थोड़ी देर बेड़रूम में सन्नाटा छा गया।

'राजवी, तूं कल इसकी स्कूल चली जा। पापा और रोशनी को एयरपोर्ट से लाने के लिए बच्चुसिंह को गाड़ी लेकर भेज देना। फ्लाइट का अराईवल दस बजे का शेडयूल्ड है और हाँ ..... पाँच दिन के बाद हम सब साथ-साथ स्विट्जरलेण्ड जा रहे हैं। बस, खुश अब?'

'हाँ, जब तक आपका वहाँ का शेडयूल मेरे हाथ में नहीं आता है तब तक खुश ..... बाकी वहाँ पर भी आपकी कोई मीटिंग कब फूट निकले उसका कोई भरोसा नहीं .....'

रोशन ने कटाक्ष का जवाब मौन से दिया।

****

'धरा, तुम लोगों ने तो हमारी बैण्ड बजा दी।'

'क्यों? क्या हुआ?' राजन ने शुरू से अंत तक सारी कहानी सुना दी। बीच-बीच में धरा अपना हँसना रोक नहीं पाई तब राजन ने अपना मोबाईल जोर से पटका। शुक्र था कि बेड पर गिरा था तो बच गया।

धरा को पता चल गया कि राजन का गुस्सा सातवें आसमान पर है। फिर भी बिना फिक्र उसने सच-सच बता ही दिया 'देख राजन! हमें जब पता लगा कि उसी दिन तुम्हारी साईन्स की परीक्षा है तो हमने ही सामने से कहा था कि 'डॉन्ट वरी दो दिन बाद जायेंगे।' मगर आपके बिंदास ग्रुप ने ही कहा था कि 'हमारी exam schedule करने वाला सेन्ट जेवियर्स कौन होता है? हम तो ठाकुर हैं ठाकुर ..... हमारे schedule से परीक्षा होती है ..... हीरोगिरी तुम लोगों ने की, तो तुम ही भुगतो ....' कह कर धरा ने फोन कट किया और राजन ने वापस फोन पटका। तकिये पर पाँच-दस मुक्के जड़कर ही उसका गुस्सा शांत हुआ। फोन वापस हाथ में लेकर चेक करते हुए बोला 'शुक्र है ..... अभी जिंदा है।'

नोटिफिकेशन में स्कूल से आया हुआ मैसेज पढ़ा Don't come school, till we discuss with your parents. (हम आपके माँ-बाप के साथ बात नहीं करते हैं तब तक आपको स्कूल में नहीं आना है।) राजन ने फौरन विकास-विश्वास और संजू से कान्टेक्ट किया, वहाँ पर भी Same Message आया हुआ था।

'चलो, अब तो जो होगा देखा जायेगा।'

****

सांताक्रुज एयरपोर्ट पर राजन के दादा लक्ष्मीचंद और बहन रोशनी को लेकर एयर लेण्ड हुआ। बच्चुसिंह समय से पहुँच गया था। कंपनी के जी.एम. रमेश

मेहता भी स्वागत करने पहुँच चुके थे। 'वेलकम सर ..... वेलकम रोशनी .....'

'थेंक्स .....' स्माइल से दोनों ने प्रतिभाव दिया।

ऑडी कार में बैठकर करीबन आधे घंटे में नेपीयन्सी रोड़ पर स्थित भव्य बंगले में वे पहुँच गये। रास्ते में बच्चुसिंह ने सेठजी को घर की स्थिति से अवगत करा दिया था 'छोटे सेठ आपको लेने आने वाले ही थे कि उन्हें अरजेन्ट एक काम आ गया।' 'मालूम है मुझे' लक्ष्मीचंद सेठ लंबी बात सुनना कम पसंद करते थे।

'राजवी भाभी अचानक बुलाई हुई पेरेन्ट्स मीटिंग में सेंटजेवियर्स गये।'

'तो घर पर अभी कौन है।'

'छोटे बाबु, (राजन) ....' 'ओ.के.'

घर पहुँचते ही लक्ष्मीचंद सेठ ने आवाज लगाई 'बेटा राजन! ..... कहाँ है?'

आया ने कहा 'वे अभी तक नाश्ते की टेबल पर नहीं आये हैं। अपने कमरे में ही होंगे।'

'अभी तक सो रहा होगा। बोर्ड की परीक्षा सिर पर है ..... लेकिन इस बिंदास को कुछ पड़ी ही नहीं है।'

'दद्दू, मैंने कहा था ना, राजन बहुत बिगड़ गया है।'

लक्ष्मीचंद सेठ को इन दोनों के चूँहे-बिल्ली वाले खेल का पता था।

'जा मालती, छोटे बाबू को जगाकर आ'

दस मिनट में राजन नाश्ते की टेबल पर आ गया। लक्ष्मीचंद सेठ का लंच चल रहा था और राजन का ब्रेकफास्ट .....

'राजन! तूं सुधर जा ..... सभी मुझसे

शिकायत करते हैं कि आपके लाड ने ही राजन को बिगाड़ा है।'

'दद्दू जो भी आपको ऐसा कहे ना, उसको मेरी ओर से जवाब दे देना 'खुद के बचपन को देख लो ..... आप कौनसे सुधरे हुए थे? और हाँ .... वे सुधरे हुए थे तो तब जमाना भी सुधरा हुआ था। हमारे जमाने में यदि वो बच्चे होते तो पता लगता। खैर, कैसे हो आप? कैसी रही यात्रा?'

'बहुत बढ़िया ..... 1500 एकड़ जगह के कागजात साईन हो गये। अगले माह से वहाँ पर रिफाइनरी का काम शुरू करना है।' लक्ष्मीचंदजी ने और भी जानकारी देते हुए कहा – 'राजन! देखना ..... सिर्फ 6-7 साल जाने दे ..... शायद हिन्दुस्तान के टॉप-10 में हमारा नंबर होगा। तूं थोड़ा गंभीर बन ..... शरारत कम कर ..... यह सब तुझे ही संभालना है।'

'दद्दू, अभी हमारी जिंदगी ऐरटेल की टेगलाईन जैसी है – ऐसी आजादी और कहाँ? मैं पापा को देख रहा हूँ। दिन-रात बस बिजनेस और बिजनेस ..... वे मेरी तरह घूमना चाहे तो घूम सकते हैं? शरारत करना चाहे तो कर सकते हैं?'

लक्ष्मीचंद हँस पड़े ..... रोशनी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

'क्यों रोशनी! मैंने कुछ गलत कहा क्या?' राजन उसे छेड़ने का एक मौका नहीं गँवाता था।

****

राजवी के साथ-साथ और तीनों की मम्मी भी डॉ. जेकब का इंतजार करते हुए बैठी थी। चारों आपस में नजरें मिलाने से कतरा रही थी। सभी को ऐसा ही लग रहा था कि उसके बेटे के अलावा तीन मित्रों की ही गलती थी, जिसके कारण आज हमें यहाँ उपस्थित होना पड़ा है।

डॉ. जेकब के आते ही चारों ने खड़े होकर अभिवादन किया 'गुड मार्निंग सर.....' 'गुड़ मार्निंग एवरीबड़ी..... बैठिए ....' सभी अपनी-अपनी जगह पर बैठ गये।

प्रिन्सिपल जेकब ने चारों के पराक्रम का वर्णन करके कहा – 'यह हमारी स्कूल में पहली घटना है कि इस तरह हमें उल्लु बनाने की कोशिश की गई है। आप लोगों ने उन्हें क्या संस्कार दिये हैं? मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा है कि इन लोगों को क्या सजा दी जाये? आप ही बताओ .....' जेकब एक-एक शब्द तोल-तोल के बोल रहा था। इन चारों की धोखाधड़ी का ठीकरा उसने माँ-बाप के ही सिर पर फोड़ दिया था।

चारों मौन बैठे रहे। करीबन 3 मिनट गुजर गये।

'कुछ तो बोलो .....' चारों को शर्मिंदा करने में जेकब ने कोई कसर नहीं छोड़ी ..... राजवी ने सामने से पूछ लिया – 'सर! मैं कुछ कहना चाहती हूँ।'

जेकब को यकीन नहीं था कि कोई मेरे सामने कुछ कह पायेगा। चौंकते हुए जेकब ने कहा 'Yes ..... Yes ..... tell me .....'

'सर मान लिया कि हमारे बेटों की गलती थी और संस्कार देने में हमारी कमी रह गयी। मगर मैं आपको पूछना चाहती हूँ कि, जिस स्कूल को हम इतना डोनेशन देते हैं, हर साल बड़ी फीस देते हैं, जिस स्कूल में हमारे बच्चे सात से आठ घंटे तक भी पढ़ाई करते हैं, उस स्कूल की संस्कार देने की कोई जिम्मेदारी नहीं हैं? आपके प्रोस्पेक्ट्स और विज्ञापन के ब्रोशर में आप ही लिखते हो कि 'यहाँ हम सिर्फ शिक्षा ही नहीं देते हैं, यहाँ हम उसे जीवन जीने की कला सिखाते हैं। एक अच्छा इन्सान बनाते हैं।' यह लिखने के बाद आपने संस्कार देने की कौन सी जिम्मेदारी निभाई वह हमें बता सकेंगे मि. जेकब?'

राजवी के तीखे तेवर देखकर जेकब बौखला गया 'नहीं ..... नहीं ..... मेरे कहने का वो मतलब नहीं था।'

'तो क्या मतलब था?' राजवी की तीखी जुबान सुनकर जेकब को बराबर की मिर्ची लग गई थी लेकिन और तीनों मित्रों की मम्मियों को मजा आ गया था। उन लोगों की ओर से राजवी ने जो मोर्चा संभाल लिया था।

'मि. जेकब, बेटे ने जो किया उसका मैं कोई समर्थन नहीं कर रही हूँ, लेकिन, हम क्या संस्कार देते हैं? इस प्रश्न का जवाब सुनना है तो गौर से सुन लेना – हम जैनधर्मी है। आज तक मेरे बेटे-बेटी ने नॉनवेज चखा नहीं है। अरे, चखने की बात छोड़ो, देखा तक नहीं है। बेटे-बेटी का जन्मदिन हम सिर्फ केक काटकर और भव्य कार्यक्रम करके ही नहीं मनाते हैं, गौशाला जाकर बेसहारा गायों को उनके हाथ से चारा खिलाते हैं। अनाथाश्रम में जाकर हजारों बच्चों को उनके हाथों से परोसगारी करवाकर खाना खिलाते हैं। हम किस लेवल पर हैं उसका आपको पता है। इस लेवल पर पहुँचने के बावजूद हमारे पूरे खानदान में से किसी ने भी आज तक शराब को हाथ तक नहीं लगाया है।

आपके स्कूल के स्टूडेन्टों का जरा एक बार सर्वे कराना ..... जो आपके चर्च में रोजाना प्रेयर करने आते हैं, उसमें से किसी एक के भी जीवन में यह संस्कार है?

सर मेरी बातों का बुरा मत मानना ..... मैं भी समझती हूँ कि आप वर्तमान में एक ऐसे सिस्टम में इतने ढ़ल चुके हो कि आप संस्कार शिक्षा का कभी सोच भी नहीं सकते। मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि, राजन आपको भविष्य में शिकायत का एक भी मौका नहीं देगा।'

डॉ. जेकब को पता था कि राजवी कौन है। सुन लेने के अलावा उनके पास और कोई विकल्प नहीं था।

'ठीक है, आप यकीन दिला रही हो तो मैं मान लेता हूँ। कुछ ही दिनों में साईन्स की परीक्षा इन चारों के लिए अरेन्ज करके सभी के साथ इन्हें शामिल कर दूँगा। Don't worry'

****

लक्ष्मीचंद सेठ आज आराम के मूड़ में थे। सोफा सेट पर लंबे होकर घर बैठकर ही ऑफिस का काम निपटा रहे थे।

राजवी ने घर आकर ससुरजी के चरण स्पर्श किये।

'जीते रहो बेटे ......'

'कैसे हो पापा?'

'बहुत बढ़िया .....'

'सब काम पूरा हो गया?'

'बहुत अच्छे से ..... शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा की यात्रा करने के बाद ही डील करने के लिए गया था। सफलता ना मिले तो आश्चर्य .....' राजन के साथ हुई बात राजवी को भी बता दी।

'सचमुच पापा! आप इस उम्र में भी गजब मेहनत करते है।'

'इस उम्र में? तुम कहना क्या चाहती हो? अभी तो मैं जवान हूँ।'

लक्ष्मीचंद जी के निर्दोष हास्य से पूरा हॉल गूँज उठा।

'राजवी, आप कहाँ से आ रही हो?'

'पापा! आपके पोते के पराक्रम का जवाब देने स्कूल गई थी।'

'क्या? क्या किया राजन ने?'

राजवी ने पूरी कहानी सुना दी।

'पापा! अब कैसे इसे सुधारूँ? आप ही बताओ।' राजवी ने ससुरजी को पूरा केस सरेन्डर कर दिया।

लक्ष्मीचंद सेठ दो मिनिट सोचते रहे। 'एक काम करते हैं राजू बेटा, आज रात 9.00 बजे हम सब अपने कॉन्फ्रेंस हॉल में मिलते हैं। मैं, तूं और रोशन के अलावा और किसी को भी इस मीटिंग में शामिल नहीं करना है।'

राजवी के चेहरे पर असमंजस के भाव देखकर लक्ष्मीचंदजी ने पूछ लिया – 'शायद तुझे लग रहा होगा कि यह बात ऐसी कोई गंभीर नहीं है कि हम सभी को मिलकर मीटिंग करनी पड़े।'

किसी के मन के भाव पढ़ लेने की ससुरजी की कला से राजवी अच्छे से वाकिफ थी। 'हाँ, पापा, जब सारा मामला निपट चुका है तो मीटिंग का क्या मतलब?'

'राजु, यहीं पर आप सब गलती कर रहे हो। वह अभी दसवीं में पढ़ रहा है। अभी से वह अपनी बुद्धि का ऐसा दुरूपयोग कर रहा है वह खतरे की घंटी है। आज कल के माँ-बाप के पास लंबा विजन नहीं होता है। 'एक घटना घट गई अब क्या समस्या है।' ऐसा सोचकर वे लोग लीपापोती करके संतुष्ट हो जाते हैं। 'अब वापस ऐसा वह नहीं करेगा' ऐसी झूंठी तसल्ली के शिकार बन जाते हैं। हकीकत में इस समस्या की जड़ तक जाना जरूरी है। उस बात को समझाने के लिए ही मुझे आप दोनों को इकट्ठा करना है। एक बात समझकर रखना ..... गुनहगार को गुनाह की सजा देना गुनाह कम करने का एक उपाय तब हो सकता है, जब गुनहगार के पास बौद्धिक क्षमता कम होती है। लेकिन दुर्बुद्धि से कलंकित बौद्धिक क्षमता वाला गुनहगार कभी भी सजा से सुधरता नहीं है, उसके लिए तो समझाइश और संस्कार का रास्ता ही कारगर बनता है। आप समझ गई होगी, मैं क्या कहना चाहता हूँ।'

राजवी ससुरजी का विजन सुनकर नतमस्तक हो गई। 'पापा! आपकी बात एकदम उचित है। हम रात को कॉन्फ्रेंस हॉल में मिलते हैं।' राजवी अपने कमरे की ओर जा ही रही थी कि लक्ष्मीचंदजी ने बुलाया – 'राजवी, ध्यान रखना, राजन को इस बात का पता नहीं चलना चाहिए।'

'हाँ जी, अवश्य ध्यान रखूँगी।'

लक्ष्मीचंदजी जितना समझ रहे थे, उससे भी ज्यादा शातिर हो चुका था राजन। राजवी से लक्ष्मीचंदजी की हुई पूरी बात वह सुन चुका था। High efficiency वाले सी.सी.टी.वी. कैमरे वह घर में कई मुख्य-मुख्य स्थान पर लगा चुका था। ऐसे कैमरे, कि जो आवाज को भी अच्छे से पकड़ सकते थे। राजन सोचने लगा 'शिट्, कॉन्फ्रेन्स रूम में तो कैमरा लगाया ही नहीं ..... कुछ जुगाड़ करना पड़ेगा।'

'राजन्! डॉ. जेकब के साथ मैं सारी बात करके आयी हूँ। 'आईन्दा तूं ऐसी

कोई भी हरकत नहीं करेगा' ऐसा वादा करके आयी हूँ। मुझे यकीन है कि तूं मेरी इज्जत मिट्टी में नहीं मिलायेगा।'

'Of course Mama ..... तूं फिकर मत कर, अब तेरा यह बेटा कभी पकड़ा नहीं जायेगा।'

'रा....ज....न.... तूं क्या बोल रहा है?' राजवी भड़क गई

'मम्मी, मजाक को भी तुम नहीं समझ रही हो? सचमुच, अब मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूँगा। ओ.के.....'

'जरा मोबाइल चैक कर लेना, स्कूल से कुछ नोटिफिकेशन आया है?'

'मम्मी! जो सपूत हमेशा ऑनलाइन रहता है उसे तूं सूचना दे रही है? कभी का देख लिया।'

राजवी को ससुरजी की बात एकदम सच लग रही थी ..... पानी सिर पर से बह रहा है।

****

रोशन को पहले से ही मीटिंग का मैसेज पहुँच चुका था। पापा का इस तरह से मीटिंग बुलाना शायद गंभीर संकेत था। 'देखते हैं' सोचकर वापस अपने काम में लग गया।

पौने नौ बजे भोजन पूरा हुआ और राजवी ने ईशारे से याद दिला दिया। रोशन ने भी ईशारे में ही जवाब दे दिया। ठीक नौ बजे दोनों कॉन्फ्रेंस हॉल में पहुँचे। लक्ष्मीचंदजी पहले से ही वहाँ पहुँचकर किसी मेगेजीन के पन्ने पलट रहे थे।

'कैसे हो पापा?' रोशन ने चरण स्पर्श किया .....'जीते रहो बेटा'

'पापा, कल आपने बहुत ही अच्छे शुभ समाचार दिये तब से मेरी खोई हुई प्रसन्नता वापस लौटी है। 70+ होने के बावजूद भी आपका तन-मन कितना तंदुरूस्त (स्वस्थ) है .....'

'बेटा! सब शंखेश्वर दादा की कृपा है।'

'पापा! आपने आज हमें खास यहाँ बुलाया था?' रोशन सीधा ही काम की बात पर आ गया।

'हाँ ..... पहले दरवाजा बंद करो'

रोशन ने वहाँ बैठे-बैठे ही IOT से दरवाजा बंद किया।

'रोशन, राजवी ने तुझसे राजन के विषय में बात की थी, उसी संदर्भ में मैंने आप दोनों को बुलाया है।' 'जी पापा .....'

'भगवान की कृपा से हमारे पर लक्ष्मी जी की बहुत बड़ी कृपा है। लेकिन इस कृपा के साथ रिएक्शन (side effect) भी जुड़े रहते हैं। जिस बेटे को बचपन से ही इतनी समृद्धि प्राप्त हो गई हो और घरें रोक-टोक करने वाला कोई ना हो तब संस्कार का मामला बहुत नाजुक हो जाता है। राजन अभी दसवीं में है। अभी से इसका यह 'खाओ, पीओ और ऐश करो' वाला रवैया उसे किस व्यसन का और बुरे मित्र का संग नहीं करायेगा वह हम कह नहीं सकते। मैं समझता हूँ कि हमारा जो स्टेटस है, उसके हिसाब से कुछ स्वतंत्रता तो उसे देनी ही पड़ेगी, लेकिन लगाम कौन खींच सकता हैं?'

'पापा! आपकी बात सही है। आज का जमाना इतना बिगड़ चुका है कि अमीर बेटे की बात छोड़ो, गरीब बेटे को भी कोई बाप एक शब्द नहीं कह पाता है। हर जगह एक ही स्लोगन सुनने में आता है, 'मैं कुछ भी करूँ ..... मेरी मर्जी' अब आप ही बताओ कि इस बंदर को कैसे कंट्रोल करें?' रोशन ने अपनी व्यथा व्यक्त की।

'वो ही कहने के लिए लिए मैंने आपको बुलाया है। राजु बेटा, मेरे इस प्लान में खास तो तुझे सहयोग देना है।'

'पापा! कब नहीं दिया? हमेशा आपका कहा हुआ ही मैंने किया है।' ससुर ने खुद पर डाली हुई जिम्मेदारी के कारण राजवी असहज हो गई।

'राजवी! मैं सोच-सझकर कह रहा हूँ। उस वक्त तूने मेरी बात मानी होती तो आज यह दिन नहीं देखने पड़ते।'

राजवी अपनी स्मरण शक्ति पर जोर लगा रही थी ..... ससुरजी कब की बात कर रहे हैं?

'दो साल पहले मुनि श्री निर्वेदविजयजी म. का शिशु शिविर शहापुर तीर्थ में लग रहा था तब मैंने तुझे कहा था कि राजन को इस शिविर में भेज देते हैं ..... तब तूने मेरी बात का विरोध इसलिए किया था कि - 'मेरे राजन को बिना ए.सी. नहीं जमेगा।' मैंने यहाँ तक कहा था कि 'सिर्फ एक दिन के लिए भी तूं उसे वहाँ रखकर आ' लेकिन तूने मेरी बात को नकार दिया था।'

राजवी का मुँह सिल गया। उसे सारी बात याद आ गई थी।

'पापा! मेरा मना करने का सच्चा कारण कुछ अलग ही था, जो मैंने आपको नहीं बताया था'..... राजवी आगे कहे उससे पहले ही लक्ष्मीचंदजी बोल गये 'तेरा सच्चा कारण यह था कि राजन यदि मुनि भगवंत से ज्यादा जुड़ गया तो कहीं दीक्षा ना ले ले .....'

ससुरजी की मन पढ़ने की कला

देखकर राजवी की आँखें चौड़ी हो गई।

'पापा! सच बात है ..... मुझे उस पर इतना प्यार है कि मैं उसकी दीक्षा के बारे में सोचूं तो भी बेहोश हो जाऊँ। मुझे लगा कि हम जितना धर्म और चेरिटी कर रहे, उससे उसका जीवन संस्कारी बन जायेगा।'

'राजवी! बन सकता है। लेकिन, यह धर्म और चैरिटी क्यों करना? इससे क्या लाभ है ..... इत्यादि तर्क के साथ आज की जनरेशन नहीं समझेगी तो वह समझदार और संस्कारी नहीं बन सकती। मैं उसे समझदार बनाने के लिए ही वहाँ भेजना चाहता था। रही बात दीक्षा की .... तो मुझे तूं जवाब दे, शिविर में जाने वाले बच्चों में से कितने प्रतिशत बच्चे दीक्षा लेते हैं?'

ससुरजी के तर्क का कोई जवाब राजवी के पास नहीं था।

'राजवी! यदि उसके नसीब में दीक्षा को योग होगा तो हम उसे रोक नहीं पायेंगे, चाहे उसे शिविर में ना भेजो तो भी ......'

'पापा! अब मैं बिल्कुल विरोध नहीं करूँगी। आप बताईये क्या करें हम?' राजवी ने सरेन्डर कर दिया। रोशन भी सहमत था।

'रोशन और राजवी .... उन्हीं मुनि भगवंत की शिविर इस साल हमारे सौभाग्य से हिल स्टेशन ऊटी पर लगने जा रहा है। सिर्फ तीन महिने की देर है। आठ दिन के उस आवासीय शिविर में राजन को भेज दो। ए.सी. की कोई समस्या वहाँ नहीं आने वाली।'

रोशन और राजवी के चेहरे पर चमक आ गई।

'लेकिन पापा! आपको तो पता है, आज कल राजन प्रवचन, शिविर वगैरह का नाम सुनकर ही भड़क जाता है। उसे तो रोज gym में जाकर बॉडी बनाना, हार्ले डेविडसन लेकर लोंग ड्राईव पर जाकर रेस लगाना, ताज और ऑबेराय में डीनर लेना और रात को क्लब में डिस्को थेक पर नाचना यह इसका नॉर्मल शेड्यूल है।'

'राजू बेटा! मुझे सब पता है। लेकिन, वह भी पता है कि ऊटी उसका फेवरेट हिल स्टेशन है। स्वीट्जरलेण्ड से भी ज्यादा उसे ऊटी के लिए लगाव है। हम पूरे परिवार के साथ शिविर के दिनों में ही ऊटी घूमने के लिए जायेंगे। मैं मुनि निर्वेदविजयजी को अच्छे से जानता हूँ। उनका सिर्फ एक प्रवचन उसे सुनने दे ..... मुझे आगे कुछ भी नहीं करना पड़ेगा।'

'पापा! तू सी ग्रेट हो ..... वाह ..... क्या शानदार आइडिया ..... पापा हम दोनों आपके साथ है, आपसे सहमत है।' रोशन बड़ा खुश हुआ। राजवी खुशी के मारे कुछ बोल नहीं पाई।

'तो कराओ पूरे परिवार की बैंगलोर की फ्लाइट की टिकट ..... शिविर 21 मई से 28मई है। 20 मई रात की टिकट करा लो, आगे की सारी अरैंजमेन्ट मुझ पर छोड़ दो।' लक्ष्मीचंदजी ने समापन किया।

रोशन ने वहाँ बैठे-बैठे ही पी.ए. को एयर टिकिट बुक कराने का कह दिया। सभी इस मास्टर प्लान से खुश थे और राजन भी इस मास्टर प्लान को सुनकर मुस्कुरा रहा था .....

क्रमशः

विज्ञापन शुल्क

धर्मप्रेमी संदेश मासिक पत्रिका के अंदर फोर कलर प्रिंटिंग में एक माह के विज्ञापन का शुल्क

चौथाई (1/4) पेज - 2,000/-   आधा (1/2) पेज - 4,000/-   फुल पेज (1) - 8,000/-

विज्ञापन शुल्क, सदस्यता राशी एवं दान राशी जमा करने हेतु बैंक का विवरण : -

Dharmapremi Pariwar Trust, State Bank of India
Account No. : 38947342459, IFSC : SBIN0000516
email : ahoarihant@gmail.com whatsapp no. 9166568636.

सूचना - जो भी व्यक्ति धर्म प्रेमी परिवार को राशि का भुगतान कर रहा है वह कृपया IMPS या NEFT के द्वारा या चेक के जरिये ही भुगतान करें। यदि केश ट्रान्सफर करा रहे हो तो नियत की गई राशि से 56 रुपये अधिक भिजवाए।

भुगतान करने के बाद कृपया साथ में दिए गए ई-मेल अकाउन्ट पर या वॉट्स अप नंबर पर अवश्य मैसेज करें।

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक-4

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

'गुडमॉर्निंग राजन!' डायनिंग टेबल पर बैठे हुए लक्ष्मीचंद जी ने अभिवादन किया।

'गुड मार्निंग दद्दु!' कुर्सी पर बैठते हुए राजन ने प्रतिभाव दिया।

'आज इतना जल्दी जग गया? लगता है तूं सुधर गया।'

'वो तो स्कूल वालों की मेहरबानी है' राजन ने मम्मी के सामने देखकर जवाब दिया।

राजवी के मन में विचार आया – जल्दी से जल्दी यह शिविर में जाये और इसके तेवर थोड़े ढ़ीले पड़ें।

'राजन्! तेरा सबसे फेवरेट हिल स्टेशन कौनसा है?'

'दद्दु! आपको पता है तो क्यों पूछते हो?' राजन को अगले संवाद की भनक लग चुकी थी।

'मुझे पता है, लेकिन आज-कल समय बहुत तेजी से बदल रहा है और लोगों की पसंद भी .....' चाय पीते-पीते लक्ष्मीचंदजी ने वजह बताई।

'दद्दु! फिलहाल तो मेरा फेवरेट हिल स्टेशन ऊँटी ही है।'

'राजन्! इस साल हम सब घूमने के लिए वहाँ पर ही जाने का प्रोग्राम बना रहे हैं। एग्जाम के बाद तूं भी थोड़ा फ्रेश हो जायेगा।'

दद्दु, प्रभु ने चाहा तो अपना घूमने का कार्यक्रम हो जायेगा, लेकिन फिलहाल तो आप घूमाने का बंद करो.....'

'मतलब?' लक्ष्मीचंदजी चौंक गये। हाथ में रहा हुआ कप हिल गया।

'दद्दु! सीधा-सीधा बोल दो ना, मुझे आप धार्मिक शिविर में संस्कार लेने के लिए भेजना चाहते हो।'

राजन ने धमाका कर दिया। राजवी के हाथ से प्लेट छूट गई और लक्ष्मीचंदजी के हाथ से कप छूट गया।

मालती ने आकर फौरन मोर्चा संभाल लिया। बिखरे हुए काँच के टुकड़े संभालकर ले लिये। दो मिनिट में तो सफाई भी हो गई।

उस वक्त रोशन वहाँ पहुँचा ही था। यह माहौल देखकर वह भी खड़ा रहकर तमाशा देखने लगा। लक्ष्मीचंदजी और राजवी की हालत काटो तो खून ना निकले ऐसी हो गई और राजन मुस्कुरा रहा था। 'तुझे किसने कहा?' लक्ष्मीचंदजी बौखला गये।

'दद्दु! आपने सुना होगा, 'बाप से बेटा सवाया.....' पोता होने के नाते से गिन लेना, मैं कितना बनूँगा? कल रात को आप लोगों की सारी बातें मैं सुन चुका हूँ। आप भले ही मुझे अपनी मिटिंग में शामिल ना करो, लेकिन कैसे शामिल होना, वो मुझे आता है।' राजन ने अपना बोर्नविटा का कप पूरा किया।

'देख बेटे! तूने जब सुन ही लिया है तो अब मैं क्या बताऊँ?' लक्ष्मीचंदजी ने राजन के कारनामे देखकर सरेण्डर किया 'लेकिन बेटे, तूं मेरी बात सिर्फ एक बार मान ले। तुझे जो भी चाहिए दिला दूँगा, लेकिन तूं इस बार मना मत कर। वैसे भी चुनौति (Challange) का स्वीकार करना तेरे खून में है। यदि तूं इस बार शिविर में नहीं गया तो मैं समझूँगा कि तूं गुरू भगवंत से डर गया। तुझे यदि लगता है कि अभी तूं जो भी कर रहा है वह सही है और दुनियाँ की कोई ताकत तुझे तेरे पथ से विचलित नहीं कर सकती है तो मैं तुझे चुनौति दे रहा हूँ, ताकत है तो मुनि निर्वेदविजयजी म. से मुकाबला करके दिखा।' लक्ष्मीचंदजी ने राजन की कमजोर कड़ी (अहंकार) को छेड़ दिया था।

'दद्दु! आप मुझे क्या समझते हो? मैं आपके गुरू महाराज की जबान से मेरे कारनामे को प्रमाणित करके ना आऊँ तो मेरा नाम राजन नहीं।'

लक्ष्मीचंदजी, राजवी और रोशन के

चेहरे पर चमक आ गई। रोशन ने मन ही मन पापा की सायकॉलोजिकल मास्टरी को सलाम किया।

रोशन डाइनिंग टेबल पर नाश्ता करने बैठ गया। आज उसे नाश्ते का स्वाद कुछ अलग ही लग रहा था। लेकिन, वह एक ही विचार में बार-बार डूब रहा था - राजन ने हमारी सिक्रेट मीटिंग कैसे सुन ली। राजवी और लक्ष्मीचंदजी भी इसी उलझन में फँसे हुए थे।

राजन स्कूल के लिए निकल ही रहा था। लक्ष्मीचंदजी ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे रोक दिया।

'राजन! ढाई बजे तूं छूटेगा ना? मैं गेट के बाहर तेरा इंतजार करूँगा। आज ओबेराय में लंच करेंगे।'

'ओ.के. दद्दु!' कहकर राजन स्कूल के लिए निकल गया।

लक्ष्मीचंदजी पीछे मुड़े, रोशन और राजवी उनका ही इंतजार कर रहे थे।

'आप सोच रहे होंगे, राजन ने हमारी बात कैसे जान ली?'

दोनों ने सिर हिलाकर सहमति दी।

'मुझे लगता है कि राजन ने अपने बंगले में कई जगह पर स्पाई कैमरे इंस्टाल कर दिये हैं। हम राजन को जैसा समझ रहे हैं उससे कई गुना ज्यादा वह शातिर हो चुका है।' लक्ष्मीचंदजी बात सुनकर रोशन और राजवी के चेहरे पर स्पष्ट रूप से परेशानी छलक रही थी। 'मगर मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि जो कॉन्फ्रेंस रूम हमेशा लॉक रहता है एवं आप और मेरे सिवा और कोई इसे खोल नहीं सकता हैं, उसमें उसने Spy Camera/Recorder कैसे लगाया होगा?' रोशन ने अपनी उलझन व्यक्त की।

'मैं इसीलिए आज दोपहर को राजन के साथ ऑबेराय में लंच लूँगा। राजवी! आज हम दोनों खाना खाकर आयेंगे।'

****

दोपहर 2:35, सेन्ट जेवियर्स के बाहर खड़ी लीमोझीन में राजन बैठ गया और दद्दु के साथ ओबेराय पहुँचा। सबसे लग्जुरियस डाइनिंग हॉल में बुक किये हुए टेबल पर पहुँचकर वेलकम ड्रिंक से शुरूआत की। शांत और मधुर संगीत से वातावरण मजेदार था।

'राजन, वाकई में तेरे जैसा युवा मैंने आज तक देखा नहीं है।'

लक्ष्मीचंदजी ने राजन को फूल चढ़ाकर शुरूआत की। 'राजन! आज तो वेज पनीर टिक्का ही मँगवा रहा हूँ।' लक्ष्मीचंदजी को राजन की favourite dish का पता था।

'ओ.के. दद्दु, आपको सब पता ही है।'

'हाँ, लेकिन अब तक मुझे यह पता नहीं चला कि तूने हमारी जासूसी कैसे की?' लक्ष्मीचंदजी सीधे ही काम की बात पर आ गये।

हँसते-हँसते राजन ने कहा 'क्या आप भी दद्दु ..... कभी किसी को अपने बिजनेस की सिक्रेट बताई हैं?'

'राजन! तूं मुझे पूछ, अभी सारा सिक्रेट तेरे सामने ओपन कर दूँगा।'

'वो तो आप करेंगे ही ना? I am your heir (मैं आपका वारिसदार हूँ।)'

लक्ष्मीचंदजी को समझ नहीं आ रहा था कि इसको कहाँ से पकड़ूँ?

'देख, अगली साल से तूं कॉलेज में प्रवेश कर रहा है। तेरे लिए स्पेशल फरारी या स्पोर्ट कार बुक करवा देता हूँ।'

'दद्दु! मेरे आगे गाजर लटकाने की जरूरत नहीं है। वैसे भी मैं ऐसी किसी भी गाड़ी में कॉलेज जाना पसंद नहीं करता। मैंने नदीम प्रेमजी के बेटे की बात सुनी थी। वो ऐसी बड़ी लग्जुरियस गाड़ी में कॉलेज जाता था, तो लोग उसे अमीर बाप के बेटे के रूप में पहचानते थे। अपने क्लासमेट्स के साथ उसके फ्रेण्डली रिलेशन बन नहीं पाये थे और जो भी उसके आसपास फिल्डिंग भरते थे वे सब उसका उपयोग करते थे। मैं नहीं चहाता कि मेरे साथ भी ऐसा हो। मेरी हार्ले डेविडसन ही सही रहेगी।'

लक्ष्मीचंदजी राजन की बात सुनकर बड़े प्रभावित हुए। छोटी उम्र में भी अच्छा सयानापन है।

'राजन! तेरी बात सही है। लेकिन तूं यदि मुझे बता देगा कि तूने कैसे हमारी जासूसी की, तो मैं तुझे अपनी ही कंपनी का एक चेलेन्जेबल केस देना चाहता हूँ।'

चेलेन्ज का नाम सुनते ही राजन के कान खड़े हो गये।

'दद्दु! क्या हुआ अपनी कंपनी में? मैं ट्राय करना चाहता हूँ।'

'कहूँगा, लेकिन पहले तुझे जवाब देना पड़ेगा'

'दद्दु! आप जब मम्मी से बात कर रहे थे तब मुझे पता लग गया था कि आप तीनों मेरे विषय में खानगी मीटिंग कर रहे हो। लेकिन, स्थल के रूप में कॉन्फ्रेन्स रूम का पता लगने पर मैं परेशान हो गया, क्योंकि वहाँ तो स्पाई कैमरा लगाना नामुमकिन था। चाबी तो आपके और पापा के हाथ में ही रहती थी। अचानक एक आइडिया मेरे दिमाग में आया। पापा ऑफिस से आने के बाद अपने पम्मी (Pet) के साथ खेलते हैं। बेडरूम में नहीं जाते तब तक वह पम्मी के साथ ही रहते हैं। मैंने कल शाम को ही उनके बेल्ट में Spy recorder चिपका दिया। पापा जैसे ही रूम में गये, मैंने रिकार्डर ऑन कर दिया और अपने रूम में बैठे-बैठे मैंने सब कुछ सुन लिया।'

राजन का आइडिया सुनकर लक्ष्मीचंदजी का माथा चकरा गया।

'सर, सॉरी टू डिस्टर्ब यू' दोनों का लंच आ गया।

'ओ.के.' कहकर लक्ष्मीचंदजी ने वेटर को रवाना किया।

'शानदार ..... बहुत खूब ..... राजन! सचमुच तूं रॉ या आईबी का डायरेक्टर बन सकता है ..... गजब दिमाग लगाया।'

'थैंक्स दद्दु!' राजन ने स्माईल देकर जवाब दिया।

'अब आप बताओ, क्या चैलेन्ज है अपनी कंपनी में?'

'सब आ गया है, पहले खाना खा लेते हैं, वर्ना खाना ठंडा हो जायेगा, बाद में रास्ते में तेरे साथ बात करता हूँ।' ऐसे सार्वजनिक स्थान में कंपनी के विषय में लक्ष्मीचंदजी बात करना नहीं चाहते थे और अच्छा बहाना उन्हें मिल गया था।

रू. 12000 का बिल भरके, 2000 रू. की टीप देकर दोनों ऑबेराय होटल से निकले। लीमोझीन में बैठते ही लक्ष्मीचंदजी ने बात शुरू की 'राजन्! छः महिने पूर्व हर साल हमारी शंखेश्वर ग्रुप ऑफ कंपनीज. लिमिटेड के 50 से ज्यादा टेन्डर पास होते थे। अभी हमारी कंपनी कपड़ा, चाय, प्लास्टिक, इलेक्ट्रोनिक, होम अप्लायंसेस और पेपर इन पाँच फिल्ड में हिन्दुस्तान की टॉप 15 कंपनीज में है। अगले साल से हम पेट्रोकेमिकल में भी प्रवेश कर रहे हैं। मार्केट केप दस लाख करोड़ का है। 20000 करोड़ का सालाना टर्नओवर है। छः माह से टेण्डर पास नहीं होने के कारण हमारी फेक्ट्री और गोडाउन में माल का डंपिंग हो गया है। फैक्ट्री में मशीनरी का इन्स्टोलेशन-इन्वेस्टमेन्ट और गुडविल के हिसाब से प्रोडक्शन बंद नहीं कर सकते हैं। यदि एक साल तक यही स्थिति रही तो हमें जो नुकसान होगा, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। फिलहाल कॉर्पोरेट वर्ल्ड में अपने समाचार फैले नहीं हैं, लेकिन कब फैल जाये उसका पता नहीं। समाचार Spread होते ही हमारे सारे शेयर धरातल पर आ जायेंगे।'

'दद्दु! टेण्डर पास होने में problem कहाँ आती हैं?'

'एक तो टेण्डर की सारी इंफोर्मेशन अपनी ही कंपनी से Leak हो रही है। अपने कम्पीटीटर इस इंफोर्मेशन के आधार पर कम कोटेशन भरकर कॉन्ट्रेक्ट खुद के पालें में कर लेते हैं।

दूसरे नंबर में, अब तक तो मिनिस्ट्री में अपनी कंपनी की बहुत अच्छी पेठ थी। लेकिन, छः माह पूर्व ही प्रधानमंत्री ने केबिनेट में बड़े बदलाव किये हैं, तबसे हमारी पकड़ ढ़ीली पड़ गई है।

हम अपनी पेठ बढ़ाने के प्रयास में हैं, काम बन जायेगा। लेकिन, टेण्डर का मामला क्लियर नहीं हुआ तो बहुत बड़ी समस्या खड़ी होगी।'

'दद्दु! आप 2 दिन पूर्व 1500 एकड़ जमीन की डील करके आये थे, वो तो फायदे में ही रही ना?'

'हाँ, वो तो गुजरात में स्टेट मिनिस्ट्री में अपनी अच्छी पहचान होने से कोई प्रॉब्लम नहीं है। लेकिन कंपनी के खबरीलाल का पता लगाना ही पड़ेगा।'

'इसके अलावा तो कोई समस्या नहीं है ना?'

'शंखेश्वर ग्रुप ऑफ कंपनीज लिमिटेड की स्थापना को 20 साल ही हुए हैं।

सिर्फ 10 साल में ही हम अपने झंडे गाड़ने लगे थे। उस वक्त हमारी कपंनी को टेकओवर करने के लिए एक बहुत बड़े लेवल पर खेल हुआ था। जिस दिन हमारी शेयर होल्डर्स के साथ Annual General Meeting (AGM) थी उसके ठीक दो दिन पूर्व ही हमें पता लगा कि 65 प्रतिशत हमारे शेयर होल्डिंग में से 20 प्रतिशत शेयर, मार्केट में बिकने की तैयारी में हैं। यदि वो बिक जाते तो कंपनी आसानी से टेकओवर हो जाती। दरअसल, हमारे पास अपने तीन इन्वेस्टरों के मिलकर 65 प्रतिशत हो रहे थे। जिसमें अपने परिवार का होल्डिंग 40 प्रतिशत था, तेरे नाना के ग्रुप का 5 प्रतिशत था और बाकी 20 प्रतिशत मेरे जिगरी मित्र का था। अपनी कंपनी के ही एक गद्दार ने मेरे मित्र को गलत इंफोर्मेशन देकर मेरे खिलाफ भड़का दिया था। मुझे बिना पूछे उसने वह 20 प्रतिशत शेयर अपने खतरनाक कंपीटीटर, जो कि उस वक्त हिन्दुस्तान के टॉप-10 अमीरों में था, उसे बेचने के लिए तैयार हो गया था। कई दिनों से बाजार में मंदी के बावजूद अपने शेयर के भाव बढ़ने से मुझे कुछ शंका तो होने लगी थी। स्टॉक मार्केट में अपने बहुत सारे मित्र हैं उन्होंने सबसे पहले मुझे चेतावनी दी।

AGM के सिर्फ दो दिन पूर्व ही मैं मेरे मित्र से मिला। वह भी बिना कहे, सीधा ही उसे मिलने के लिए चला गया तो वह मिला। मैंने सरलता और प्यार से सारी बातें की। उसे तसल्ली हुई और वह बेचने से पीछे हट गया। हम बाल-बाल बच गये।'

'दद्दु! आपके मित्र को उस वक्त किसने Misguide किया था?'

लक्ष्मीचंदजी इतनी छोटी उम्र में भी राजन की परिपक्वता (Maturity) देखकर दंग रह गये।

'मैंने मेरे मित्र को कई बार पूछा, लेकिन उसने उसका नाम नहीं बताया। बाद में मैंने छोड़ दिया।'

'क्या अभी भी 20 प्रतिशत शेयर उसी के पास है?'

'हाँ है, लेकिन हमने मार्केट से लेकर 55 प्रतिशत से ऊपर अपने परिवार का ही होल्डिंग कर दिया है, इसलिए अभी तो हम खतरे से बाहर हैं।'

'दद्दु! जल्द से जल्द इस खबरीलाल को ढूँढ़ना ही पड़ेगा'

'राजन! मुझे विश्वास है, यह काम तू ही कर सकता है।'

'दद्दु, मुझे एक दिन का वक्त दो, मैं प्लान रेडी कर के आपको कल मिलता हूँ।'

लिमोजीन को ब्रेक लगते ही दोनों की बात को ब्रेक लगा। दादा-पोते बातों में इतने मशगूल हो गये थे कि शंखेश्वर पेरेडाइज की पोर्च में गाड़ी रूकी तब दोनों को पता लगा कि घर आ गया है।

****

राजन ने शायद जिंदगी में पहली बार इतना बौद्धिक श्रम उठाया होगा। अपने P.C. पर शाम 4 बजे से वह काम पर लग गया था। कोर्पोरेट वर्ल्ड में information leakage समस्या जब-जब आई तब उसे किस तरह परखा गया था और कैसे उसका सोल्युशन हुआ था उसका पूरा इतिहास (हिस्ट्री) खंगाला। जब कम्प्यूटर बहुत व्यापक रूप से फैला नहीं था तब जो information leakage हुई थी, वह परिस्थिति अब है ही नहीं इसलिए उस हिस्ट्री को ना देखते हुए विगत 15-16साल में घटित घटना पर concentrate किया। कोर्पोरेट वर्ल्ड में टेण्डर का System computer पर स्वीच ऑन हो गया था। कम्प्यूटर की विशाल दुनियां में राजन डूब गया और मुम्बई के समंदर में सूर्य डूब गया।

रात आठ बजते ही रोशन ने घर में प्रवेश किया। आज लक्ष्मीचंदजी ने रोशन को आठ बजे तक पहुँचने का मैसेज पहले से ही भिजवा दिया था।

'मालती! राजन कहाँ हैं?' डाईनिंग टेबल पर राजन को अनुपस्थित देखकर रोशन ने पूछ लिया।

'अपने कमरे में ही होगा, बुलाती हूँ।'

राजवी, रोशनी और लक्ष्मीचंदजी डाईनिंग टेबल पर आ गये और राजन का इंतजार करने लगे।

'छोटे बाबू ने कहा है कि दोपहर को थोड़ा हेवी हो गया है और अभी थोड़ा काम है तो दीनाराम से स्ट्राँग कॉफी बनवाकर ले आ।'

रोशन ने लक्ष्मीचंदजी के सामने देखा।

'रोशन! राजन को एक काम दिया है, उसे करने दे। जा, मालती! दे के आ।'

लक्ष्मीचंदजी की बात से राजवी और रोशन सोच में पड़ गये। ईशारे से

लक्ष्मीचंदजी ने जिज्ञासा पर पर्दा गिरा दिया।

भोजन निपटाकर तीनों कॉन्फ्रेन्स रूम में पहुँचे।

'रोशन! पम्मी को मालती के पास छोड़ के आ। साथ मत लाना।'

रोशन को पापा की बात सुनकर झटका लगा। मालती को पम्मी सौंप दिया।

'अंदर आ, Reason बताता हूँ।'

तीनों अंदर गये और दरवाजा बंद हुआ।

रोशन पूछे उससे पहले ही लक्ष्मीचंदजी ने बता दिया 'कल की हमारी बात कैसे राजन तक पहुँची वह जानकारी प्राप्त करने के लिए ही आज मैंने उसके साथ ओबेराय में लंच लिया।'

लक्ष्मीचंदजी ने सारी बात रोशन-राजवी को बता दी। दोनों पापा के विजन ओर टेलेण्ट के सामने नतमस्तक हो गये।

'सचमुच, पापा! आप genius हो ..... और आपने तो भूत को सीड्डी पकड़वा दी!'

'आप आनंद मनाओ, कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन, सावधान होने की भी उतनी ही जरूरत है।' दोनों के सामने देखकर लक्ष्मीचंदजी ने आगे चलाया 'वो परिवार के ऊपर ही जासूसी के लिए उपकरणों का उपयोग करने लगा है। राजवी! मैंने तेरे साथ कल दोपहर को जब मीटिंग के लिए बात की थी तब राजन वहाँ मौजूद नहीं था। उसे कॉन्फ्रेन्स हॉल में मीटिंग है उस बात का पता कैसे चला?'

रोशन बोल पड़ा - 'पापा! यह तो हमने सोचा ही नहीं।' 'तो अब सोचो' ..... राजवी भी आश्चर्य के समंदर में डूब गई, पापा भी किसी जासूस से कम नहीं है।

'पापा! आप ही बताओ, हमें तो कुछ समझ नहीं आ रहा है।' रोशन ने अपनी असमर्थता घोषित कर दी।

'मेरा मानना है कि उसने घर में भी मुख्य-मुख्य जगह पर High frequency spy camera लगाया है। हम सब उसकी survilance (निगरानी) में हैं।'

रोशन और राजवी चौंक गये।

'सचमुच पापा! आपकी बात मुझे सही लगती है।'

'देख रोशन! कल ही तूं एक्सपर्ट को बुलवाकर पूरे घर में तलाशी ले, कहाँ-कहाँ spy camera install किया है।'

'पक्का ...... पापा! अभी ही मैं सूचना कर देता हूँ।'

'शिवांगी, Spy equipment में expert team को कल घर पर भिजवानी है। टाईम का मैसेज एक घंटे के बाद करता हूँ।' कॉन्फ्रेन्स रूम से ही रोशन ने अपनी पर्सनल सेक्रेटरी से बात कर ली।

'पापा! कल से राजन की बोर्ड एग्जाम की तैयारी के लिए छुट्टी है। कब बुलाऊँ expert को?'

'रोशन! मैं यहाँ से राजन के रूम में ही जा रहा हूँ। तुझे एक घंटे के अंदर ही मैसेज करता हूँ।'

'ओ.के.'

घड़ी में दस बज रहे थे। लक्ष्मीचंदजी ने राजन का दरवाजा खटखटाया।

'come in ......'

'राजन्! कॉफी पीली?'

'हाँ दद्दु!' कम्प्यूटर की स्क्रीन पर से बिना आँख उठाये राजन ने जवाब दिया।

' आज तो तूं अर्जुन की तरह लग गया है। प्लान रेडी हुआ क्या?'

एक file downloading पर रखकर राजन ने बात शुरू की।

'दद्दु! बहुत सारी Information leakage की हिस्ट्री चेक कर ली है। कम्प्यूटर ने जबसे अपनी दुनियां में प्रवेश किया है तब से Information leakage को ढूँढना टेढ़ी खीर हो गई है। वेल, अपने यहाँ टेन्डर कौन बनाता है? उस पर किन-किन लोगों के साईन होते हैं? उसका flow चैनल क्या है? और अपने मैन ऑफिस के सभी कम्प्यूटर्स पासवर्ड से लॉक्ड रहते हैं कि बिना पासवर्ड ही खुलते हैं? यह सारी Information मुझे चाहिए। कल से Board Exam की तैयारी के लिए मेरी एक माह की छुट्टी है। कल मैं आपके साथ ऑफिस आ जाता हूँ। शायद कल रात इसी समय मेरी प्लानिंग पूरी हो जायेगी। परसों से Operation M.C. शुरू हो जायेगा।'

'यह क्या है?'

'Operation Mouse Cage .....चूहे के लिए पिंजरा .....'

M.C. का फुलफॉर्म सुनते ही लक्ष्मीचंदजी ने हँसी के ठहाके लगाये।

'बहुत खूब ..... कल सुबह ठीक 9:30 को हम ऑफिस जाने के लिए निकलेंगे ..... ओ.के.?'

अंगूठा दिखाकर राजन ने हाँ भर दी।

रूम से बाहर आकर लक्ष्मीचंदजी ने रोशन को मैसेज किया 'Call the SEE (Spy equipment experts) team at 10.00 AM' (स्पाय इक्वीपमेन्ट एक्सपर्ट टीम को सुबह दस बजे बुला लो)

रोशन ने वही मैसेज सीधा शिवांगी को फॉरवर्ड किया।

****

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक-5

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

शंखेश्वर पेराडाइज की लोन पर रोज की तरह सुबह से लक्ष्मीचंदजी योग-प्राणायाम करने लगे और राजन जिम हॉल में अलग-अलग साधनों पर कसरत करके पसीना बहाने लगा। शरीर को चुस्त ओर तंदुरूस्त रखने के घर के सभी के अलग-अलग तरीके थे। साढ़े सात बजे दादा-पोते स्वीमिंग पुल पर मिले। आधा घंटा स्वीमिंग करके चेंजिंग रूम में आ गये।

'राजन! कितने बजे सोया था?'

'साढ़े ग्यारह .....'

'वैसे तो साढ़े दस बजे सो जाता है ना?'

'दद्दु, आपने मुझे काम पे लगा दिया था। वो काम सवा दस को पूरा हुआ। बाद में मेरा काम चालू हुआ।'

'ओ.के-ओ.के. .....' लक्ष्मीचंदजी समझ रहे थे, आज की यंग जनरेशन का क्या काम होता है।

सवा आठ बजे रोशन, राजवी, रोशनी, राजन और लक्ष्मीचंदजी सभी डायनिंग टेबल पर आ गये थे।

'पापा! आज मैं ग्यारह बजे के बाद ऑफिस पहुँचुंगा। यू.के.फाइनेन्शीयल सर्विसेज वाले मि. डेविड को मिलने दस बजे ताज पहुँचना पड़ेगा।'

'ओ.के.' लक्ष्मीचंदजी ने शोर्ट में ही जवाब दे दिया।

सुबह साढ़े नौ बजते ही दादा-पोते लिमोझिन में बैठकर SGC Corporate Park की ओर निकल गये। लक्ष्मीचंदजी समय के बड़े पाबंद थे। उनके सारे काम घड़ी की सूई पर चलते थे।

शंखेश्वर ग्रुप ऑफ कंपनीज का कॉर्पोरेट पार्क नरिमन पाईन्ट पर विशाल जगह में फैला था। सेठ की गाड़ी आते ही पूरा सिक्योरिटी स्टाफ हाई एलर्ट मोड़ पर आ गया था। सेठ बहुत पैनी नजर रखते थे। छोटी-सी भी गड़बड़ी नहीं चलाते थे। ऑफिस के कर्मचारियों को पूर्व से ही पता रहता था कि सेठ की गाड़ी कितने बजे आती है ..... अतः समय से पूर्व ही सभी अपनी गाड़ी लेकर पहुँच जाते थे। फिर भी किसी की गाड़ी बीच में आती थी तो पूर्व से ही सारा ट्रेफिक क्लीयर कर दिया जाता था। वे आते थे तब ऐसा लगता था कि किसी मिनिस्टर या सी.एम. की एन्ट्री हो रही हैं।

गाड़ी से उतरते ही अलग-अलग 3-4 डिपार्टमेन्ट के मैनेजर उन्हें ब्रीफिंग करने लगे।

'सर, जे.बी.सॉफ्टवेयर के मल्होत्रा से बात हो गई है .... दो दिन में वाशी प्लांट वर्किंग कंडीशन में होगा।'

'ओ.के.'

'सर, VRL logistics में अपने 50 कण्टेनर रूक गये थे वो रात को ही निकल गये, कस्टम क्लीयरेन्स मिल गया।'

'ओके....'

'सर! महाराष्ट्र के पी.डब्ल्यू.डी. मिनिस्टर आज ही टाईम दे देंगे।'

'ओके'

गाड़ी से उतरकर ऑफिस में पहुँचने तक लक्ष्मीचंदजी ने कई कार्यों की रिपोर्ट ले ली और सूचनाएँ दे दी।

राजन शायद कई महिनों के बाद आया था। दीपावली जैसे त्यौहार पर ही उसका आमतौर से आना होता था। नॉर्मल वर्किंग-डे में तो वह पहली बार ही आया था। दद्दु की काम करने की स्टाईल देखकर वह बहुत प्रभावित हो गया। राजन को इस तरह अचानक कंपनी की कॉर्पोरेट ऑफिस में देखकर वहाँ रहे सभी कर्मचारी आश्चर्यचकित थे।

ऑफिस में पहुँचकर शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु और कुलदेवी अंबिका देवी को नमन करके वे अपनी सीट पर बैठे।

'राजन! यहाँ आ जा' खुद की बाजू

की सीट पर राजन को बिठाया। कंपनी की इन्टरकॉम लाईन से कंपनी के जनरल मैनेजर रमेश मेहता को बुलाया। वे ऑफिस में पहुँचे तब तक कई सारे पेपर्स, चेक वगैरह साईन कर लिये।

'गुड मॉर्निंग सर, गुड मॉर्निंग राजन .....'

'गुड मॉर्निंग अंकल .....'

नियत सीट पर बैठते हुए मि. मेहता ने कहा।

'सर, क्या बात है? आज राजन भी साथ आया है? लगता है एक्जाम की तैयारी के लिए मिली छुट्टी का सदुपयोग कर रहा है।'

'मि. मेहता ..... राजन कंपनी की एक जरूरी मेटर में आपसे कुछ पूछना चाहता है।'

'खुशी से पूछो बेटा .....'

'अंकल, अपने यहाँ टेण्डर की फ्लो चैनल क्या है? कहाँ से शुरूआत होती है और अंत में कोटेशन कौन भरता है?'

प्रश्न सुनते ही मि. मेहता को पता लग गया कि राजन किसलिए आया है। 'सर, हमारी कंपनी में टेण्डर की सारी प्राथमिक प्रक्रिया मार्केटिंग डिपार्टमेण्ट वालों के हाथ में है। जब भी कोई गवर्मेन्ट या प्राईवेट बॉडी को किसी भी कार्य के लिए प्रोडक्ट चाहिए या सर्विस चाहिए तब वे लोग ओपन में टेण्डर इश्यू करते हैं। हमें भी वो मिलता है। टेण्डर में लिखी गई प्रोडक्ट या सर्विस आप किस कीमत पर देंगे वह आपको बताना होता है। उसमें भी क्वालिटी की अपेक्षा से आप कीमत भर सकते हो। जैसे कि फायर बिग्रेड के लिए गवर्मेन्ट को फायरप्रूफ कपड़ा चाहिए। तो Per Meter आप क्या कीमत लेंगे वह ही नहीं, उस कपड़े की क्वालिटी वगैरह Specification भी आपको उसमें भरनी होगी।

अपना मार्केटिंग डिपार्टमेण्ट उस मेन्यूफेक्चरिंग यूनिट से जुड़े हुए Purchase Department, Costing Department वगैरह को सूचना देकर सारे डाटा मंगवाता है। कंपनी की पॉलिसी के मुताबिक उस प्रोडक्ट की रेट तय करता है। यह सब करके वह मार्केटिंग मैनेजर को पहुँचवाता है। वहाँ मार्केटिंग मैनेजर चेक करके, उसमें आवश्यक चेंज करके जनरल मैनेजर तक पहुँचाते हैं। वे कम्पनी के चेयरपर्सन-मैनेजिंग डायरेक्टर ऐसे आपके पापा और दादाजी तक पहुँचाते है। वे उन पेपर्स को फाइनली साईन करके गवर्मेन्ट या प्राईवेट बॉडी Organisation तक पहुँचाते हैं। इसे ही कहते हैं Tender भरना .....'

मि. मेहता के प्रेजन्टेशन को सुनकर राजन बहुत प्रभावित हुआ। 'अंकल, मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या पूरी प्रक्रिया कम्प्यूटर से चलती है? मतलब कि Data information computer to computer flow करता है? या कोई अलग सिस्टम है?'

'सर, जब हमारी कंपनी में कम्प्यूटर आये तब शुरूआत में मार्केटिंग मैनेजर तक यह Data Information computer to computer चलता था। आज भी ऐसे ही चल रहा है। फर्क इतना ही है कि जब से Tender में leakage of information की problem आने लगी है तब से मार्केटिंग मैनेजर प्रोडक्ट Specification की Sheet ही निकालते हैं। उसमें जो भी कीमत भरने का काम है, वह कागज पर ही किया जाता है। उस कागज को सील बंद कवर में जनरल मैनेजर तक पहुँचाया जाता है। जनरल मैनेजर भी उसे साईन करके चेयरमेन और मैनेजिंग डायरेक्टर तक बंद लिफाफे में ही पहुँचाते हैं। फाईनली सिग्नेचर होकर हमारी सिक्युरिटी वाली गाड़ी इस कागज को गवर्मेन्ट या प्राईवेट आर्गेनाइजेशन तक पहुँचाते है। जो गाड़ी यह टेण्डर पहुँचाती है, उसके अंदर बाहर सी.सी.टी.वी. कैमरे रहते हैं और गाड़ी से निकलकर उन लोगों की ऑफिस तक पहुँचे तब-तब की पूरी मूवमेन्ट की विडियो रिकोर्डिंग होती है। सिक्युरिटी वाली गाड़ी में भी विदाउट इन्फॉर्मेशन कभी भी किसी भी ऑफिसर की बदली हो जाती है। कभी-कभी तो हर महिने या उससे भी पहले ट्रांसफर हो जाता है ताकि कोई भी व्यक्ति इन्फॉर्मेशन को बीच में से leak नहीं कर सकता है या उसकी प्लानिंग भी नहीं कर सकता।'

'वेल, अंकल गवर्मेन्ट/प्राईवेट बॉडी में कोई व्यक्ति अनऑफिशियली अपना कवर खोलकर Information leak कर सकता है?'

'नहीं सर, उसकी भी कोई गुंजाइश नहीं रहती है। क्योंकि इन कवर पर जो सील लगती है उसका रजिस्ट्रेशन पहले से ही उस बॉडी के पास मौजूद होता है। Seal Break करके कोई वापस उसी तरीके से सील लगा नहीं पाता है। Special Security Feature वाला वह Hologram होता है। उसका Duplication असंभव हैं। समय-समय पर वह सिक्यूरिटी का होलोग्राम भी बदलता रहता है। होलोग्राम बनाने वाले भी हम बदलते रहते हैं ताकि Duplication भी टाला जा सके।'

'अंकल, समय-समय पर सिक्यूरिटी को चेंज करना, होलोग्राम बनाने वाली कंपनी को चेंज करना - यह सब कार्य कौन करता है?'

मेहता साहब को राजन की IQ पर

सम्मान हुआ।

'सर, छोटे बाबू को आपने जोरदार तैयार किया है।' हँसते-हँसते मेहता ने कहा।

'नहीं, नहीं मि. मेहता .... He is born great.... माँ के पेट से ही सब लेकर आया है।' लक्ष्मीचंदजी भी हँसते-हँसते बोले।

'हाँ ..... तो मैं यह कह रहा था कि समय-समय पर यह सब चेंज करने का काम आपके पापा, आपके दादा और मैं ..... तीनों करते हैं, वह भी समय-समय पर Randomly change होता रहता है।' मि. मेहता ने मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया।

राजन को अब पूछने का कुछ नहीं रहा।

राजन ने दद्दु की ओर इशारा किया। लक्ष्मीचंदजी समझ गये कि Question Session पूरा हो गया है। मि. मेहता भी समझ गये।

'सर, और कुछ सेवा?'

'No, Mr. Mehta ..... कुछ होगा तो बुला लूँगा। दरअसल, मि. मेहता, राजन को चेलेंजेबल जॉब का बड़ा शौक है। पिछले छ: माह से अपना टेण्डर वाला इश्यू सोल्व नहीं हो रहा था। मेरे टेन्शन को देखकर उसने पूछ लिया तो मैंने उसे सारी बात बताई। अब यह हमें कुछ सहयोग करना चाहता है।'

'वेरी गुड, वेरी गुड माय सन... सर, इसकी IQ देखकर मुझे लगता है कि इसके लिए यह जॉब मुमकिन है। ऑल दी बेस्ट राजन...'

'थेंक्स अंकल .....'

'Mr. Mehta now you can proceed' (आप जा सकते हैं)

अचानक राजन ने मि. मेहता को पूछ लिया, 'अंकल, मैं अपनी कोर्पोरेट ऑफिसेज का दौरा करना चाहता हूँ और खास करके मार्केटिंग डिपार्टमेण्ट को देखना चाहता हूँ।'

मि. मेहता ने लक्ष्मीचंदजी के सामने देखा।

'राजन् ..... हम यहाँ बैठे-बैठे ही सारी ऑफिस का दौरा कर सकते हैं। घूमने की जरूरत नहीं है।' लक्ष्मीचंदजी ने मैनेजर की जगह खुद ही जवाब देकर राजन को बिठा दिया। मि. मेहता स्माईल देकर बाहर निकल गये।

'देख राजन! हम वहाँ जायेंगे तो सब लोग खड़े होकर रिस्पेक्ट करने लगेंगे। जो बंदे काम में डूबे हुए हैं, उन्हें Disturbance होगा। इसलिए बिना विशेष प्रयोजन हमें कहीं घूमना नहीं है। सामने दिख रही स्क्रीन पर हम अभी ही सब कुछ देख सकते हैं। इससे किसी को Disturbance भी नहीं होगा और बिना किसी को इन्फॉर्म किये हम देखते हैं तो वर्क प्लेस का रियल पिक्चर हमारी नजर के सामने आ जाता है।'

'ओके दद्दु, आप सही हो। प्लीज स्क्रीन को ऑन करो .....'

लक्ष्मीचंदजी ने अपनी जगह बैठे-बैठे ही Survilance System, Screen पर ऑन कर दी। एक के बाद एक ऑफिस और फ्लोर को राजन देखने लगा। पूरी कॉर्पोरेट ऑफिस को देखते-देखते करीबन आधा घंटा बीत गया।

'दद्दु, अपनी जितनी फैक्ट्रीयाँ है, उसे हम यहाँ बैठे-बैठे देख सकते हैं?'

लक्ष्मीचंदजी को समझ नहीं आ रहा था कि राजन क्या करना चाहता हैं?

'राजन, वहाँ से कुछ नहीं मिलेगा।'

'नहीं, फिर भी मुझे देखना है।'

'ओके.....' कहकर लक्ष्मीचंदजी ने मोड चेंज किया। एक के बाद एक फैक्ट्रीज को राजन देखने लगा। टेक्सटाईल में मेन्यूफेक्चरिंग और प्रोसेसिंग यूनिट, टी प्रोसेसिंग, पेकिंग यूनिट, प्लास्टिक दाने की फैक्ट्री, इलेक्ट्रोनिक अप्लायंसेस और पेपर मैन्युफेक्चरिंग, पैकिंग सब कुछ देखते-देखते डेढ़ घंटा बीत गया। लक्ष्मीचंदजी उस वक्त खुद का काम करते रहे।

घड़ी साढ़े बारह का समय दिखा रही थी।

'राजन! लंच का टाईम हो गया।'

'हाँ, चलो, चलते हैं।'

कॉर्पोरेट ऑफिस की executive केंटिन में दोनों पहुँच गये। वहाँ कंपनी के सभी डिपार्टमेन्ट के प्रेसिडेन्ट, वाईस प्रेसिडेन्ट और जनरल मैनेजर खाना खाते थे। बहुत ही अच्छी क्वालिटी वाला हाईजेनिक खाना वहाँ मिलता था। स्पेशल सीट पर दोनों बैठकर खाना खाने लगे। भोजन लेकर वापस ऑफिस में दोनों लौटे तब तक कुछ फाईल लक्ष्मीचंदजी की ऑफिस में आ गई थी।

'दद्दु, टेण्डर को भरने के बाद, साईन करने के बाद आप टेण्डर का कागज फौरन रवाना कर देते हो कि, कभी भोजन करके, वापस आकर भी रवाना करते हो?'

लक्ष्मीचंदजी इस प्रश्न से चौंक गये। प्रश्न वाजिब था क्योंकि भोजन करके आये इतनी देर में कोई यहाँ फाईल ड्रॉप करके गया है।

'वाह राजन! तेरा निरीक्षण! मैंने हमेशा एक नियम रखा है कि ऐसे कॉंफिडेंशियल जितने भी काम होते हैं उसे पूरा करने के बाद, कवर रवाना होने के बाद ही मैं मेरा ऑफिस छोड़ता हूँ। दूसरी बात, मैं सुबह जब आता हूँ तब ही मेरा ऑफिस खुलता है। बीच में कभी फाईल वगैरह रखने का अधिकार सिर्फ मेरी सेक्रेटरी कृतिका को ही है।'

'ओके दद्दु .....' कहकर राजन का ध्यान फाईल्स पर गया। वह फाइलें उठा-उठाकर देखने लगा।

'May I come in sir?' कृतिका ने इजाजत माँगी।

'Yes Welcome....'

'सर, Other expenses की फाइल्स है... आपको नजर करने के लिए ऑडिट डिपार्टमेन्ट वालों ने भेजी है। Sir, Please Check it...'

'ओके....' 'दद्दु, ऐसी फालतू फाईल्स आपको देखनी पड़ती है?'

राजन के प्रश्न को सुनकर कृतिका हँस पड़ी।

'बेटा, यह other expenses की फाईल है। मार्च महीना करीब है। जो expenses हमसे संबंधित होते हैं वह तो हमें ही चेक करने पड़ते हैं ना?'

'कृतिका! you can proceed .....' (आप जा सकती हो)

लक्ष्मीचंदजी के साथ-साथ राजन भी टाईम पास करने के लिए वाउचर फाईल देखने लगा।

अचानक उसकी नजर ऑफिस फर्नीचर के बिल पर गई। वह उसे देखता ही रह गया। उस बिल की डेट ठीक साढ़े छः माह पूर्व की थी। राजन गहरी सोच में डूब गया। करीबन पंद्रह मिनट तक वह सोचता ही रहा। लक्ष्मीचंदजी का काम पूरा हो गया, लेकिन राजन गहरी समाधि से बाहर आया ही नहीं। लक्ष्मीचंदजी को अजीब-सा लगा।

'मि. राजन ..... कहाँ खो गये?'

'दद्दु, आई एम ओके ..... मैं अब थोड़ा बोर हो रहा हूँ। मुझे गेट वे ऑफ इण्डिया पर थोड़ी राईड लेकर ताज में कॉफी पीने की इच्छा है।'

'ओके ..... मैं बच्चुसिंह को तेरे साथ भेज देता हूँ, वह तुझे ले जायेगा.....'

'नहीं दद्दु, आपको ही आना होगा।'

'राजन! मुझे बहुत काम है। बच्चुसिंह आ जायेगा।'

'दद्दु! सिर्फ आधा-पौने घंटे का प्रश्न है। मैं थोड़ा फ्रेश हो जाऊँ बाद में वापस हम ऑफिस आ जायेंगे। पहली बार आपके ऑफिस में यह सब स्क्रीन पर देखते-देखते मैं थक गया हूँ।'

लक्ष्मीचंद पोते के आग्रह को मना नहीं कर पाये।

'Let's go ....' कहकर लक्ष्मीचंदजी ने कृतिका को फाईल ले जाने को कहा।

'कृतिका! सब Clear है, ऑडिट वालों को भेज दे'

'Ok Sir'

लिमोझिन को अचानक बाहर जाती देख सिक्यूरिटी वाले आनन-फानन में अलर्ट मोड पर आ गये।

'Gate way of India गाड़ी ले ले'

बच्चुसिंह को भी Schedule Change से थोड़ा आश्चर्य हुआ।

गेटवे ऑफ इण्डिया के पार्क में घूमते-घूमते राजन दद्दु के साथ एक बेंच पर बैठ गया। आसपास देखकर राजन बोला .....

'दद्दु! Operation M.C. का

पहला चरण शायद आज पूरा हो गया।'

'क्या? मैं समझा नहीं .....'

'दद्दु! Other Expenses के बिल्स देखते हुए मैंने एक बिल देखा - Office Furniture का ..... ठीक साढे छः माह पूर्व का है। क्या अपनी ऑफिस में कोई नया फर्नीचर आया था?'

'हाँ राजन, सात माह पूर्व ही ऑफिस में हमने रिनोवेशन करवाया था। हमने आठ माह पूर्व एक बहुत अच्छा फर्नीचर डिजाइन देखा था। तो हमने ऑफिस का पूरा इंटिरियर पंद्रह दिन में बदल दिया। कैसा लगा लेटेस्ट फर्नीचर?'

'दद्दु! कैसा लगा? वह प्रश्न नहीं है। प्रश्न टाईम का है। आपको कुछ समझ में आया, मैं क्या कहना चाहता हूँ?'

लक्ष्मीचंदजी सोचने लगे ..... राजन क्या कहना चाहता है? अचानक टाईम की बात पर गौर करते हुए, उन्हें क्लीक हुआ

'अच्छा, तो राजन, छः माह से हमें टेण्डर नहीं मिल रहा है, उसके साथ फर्नीचर का कोई संबंध है?'

'Exactly दद्दु! Now you got my point. (आप अभी मेरी बात समझ रहे हो)'

लक्ष्मीचंदजी राजन की बुद्धि पर फिदा-फिदा हो गये .....

'ग्रेट राजन, ग्रेट .....' बोल, तू आगे क्या कहना चाहता है?

'दद्दू! मैं यह कहना चाहता हूँ कि आज के समय में Spy Equipment Industry ने बहुत तरक्की की है। मुझे ऐसा लगता है कि नये फर्नीचर में स्पाई Equipment लगा है। आपकी खुद की ऑफिस सर्विलांस में है। क्योंकि, टेण्डर की इंफोर्मेशन लीक होने की कोई गुंजाईश हमारी सिस्टम में नहीं है। तो एक ही संभावना बचती है कि आपके टेबल के ऊपर की साईड में ही कैमरे लगे हुए हैं।'

लक्ष्मीचंदजी सोचने लगे ..... 'हाँ ...... बात में तो कुछ दम है।'

'दद्दु! एक जवाब देना ..... इन छः माह में आपने जब भी फाइनली टेण्डर में रेट भरकर साईन की है वह ऑफिस के टेबल से ही की है?'

'हाँ ..... सच बात है। मेरा यह काम ऑफिस टेबल से ही होता है।'

'दद्दु! हमारे पीछे लगे हुए Competitor हमारी ऑफिस तक पहुँच गये हैं।'

लक्ष्मीचंदजी कुछ देर तक मौन बैठे रहे ..... सोचते रहे .....

'राजन, यह बात तुझे ऑफिस में ही समझ आ गई थी?'

'यस दद्दु!' ..... 'तो तूने ऑफिस में ही क्यों कुछ भी नहीं कहा?'

'अरे दद्दु! आप फिर भूल गये? We were under survilance (हम सब निगरानी में थे)'

लक्ष्मीचंदजी जोर से हँस पड़े। ठीक कहा राजन तूने ..... 'I am proud of you.....'

'राजन! मुझे लगता है कि ऑफिस का पूरा फर्नीचर बदल डालते हैं, या तो टेण्डर दूसरी जगह पर बैठकर भरते हैं। क्या कहता है तूं?'

'दद्दु! ऐसा नहीं करना है। टेण्डर तो पास होने लगेंगे, लेकिन अपने दुश्मन की पहचान हमें नहीं हो पायेगी।'

लक्ष्मीचंदजी ने राजन की पीठ थपथपाई ..... 'इतने सालों का एक्सपीरियेन्स होने के बावजूद मुझे जो समझ में नहीं आया, वह तुझे कैसे समझ में आ जाता है? यह मुझे समझ में नहीं आता।'

'दद्दु! आप अच्छा बोल लेते हो .....'

'हाँ, तो अब तू ही बोल कि क्या करना है?'

'दद्दु! अपना पहला चरण पूरा हो गया कि लिकेज कहाँ से है? अब अपने Operation M.C. का दूसरा चरण शुरू होता है। इस चरण में हमें उस जासूस तक पहुँचना है। आगे कहूँ तो अपने Competitor तक पहुँचना है।'

'Exactly .... But how?'

'देखो, जासूस तक पहुँचना है तो सीधा रास्ता यह है कि हम फर्नीचर का कान्ट्रेक्ट लेने वाले को ही पकड़ें। लेकिन इससे हम जड़ तक नहीं पहुँच पायेंगे। इसके लिए हमें एक स्टंट करना पड़ेगा।'

'तूं सीधा-सीधा बोल दे क्या करना है?' लक्ष्मीचंदजी का धीरज जवाब दे रहा था।

'दद्दु! मुम्बई में स्मगलिंग के बिजनेस में कौन सबसे आगे है?'

'हनीफ पठाण है। उससे हमारे अच्छे रिलेशन भी हैं।'

'कल ही आप उसे आपके ऑफिस में बुलाओ और .....'

राजन ने लक्ष्मीचंदजी को सारी योजना बता दी। लक्ष्मीचंदजी की आँखों में चमक आ गई। 'सॉलिड गुरु ..... सॉलिड ..... तूं बता, यह सब कुशलता (Expertise) तूने कहाँ से प्राप्त की?'

'दद्दु! मुझे डिटेक्टिव कहानियाँ पढ़ने का शौक बचपन से ही है। शायद उसकी वजह से ही ऐसी बातों में मेरी दिलचस्पी अधिक रहती है।'

'बहुत खूब ..... ओके ..... तो Now we are entering in second phase of M.C.' (अब हम M.C. के दूसरे चरण में प्रवेश कर रहे हैं)

'यस दद्दु! .....' कहकर राजन ने अंगूठा दिखाया .....

क्रमशः .....

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक-6

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

'राजन्! तूने बहुत अच्छा प्लान बताया। मुझे लगता है कि यदि सब सही ढंग से पार उतरा तो एक महिने में ही चूँहा पिंजरे में होगा।' लेकिन, एक महिने में तेरी बोर्ड की एग्जाम है। अब तूं एग्जाम की तैयारी में लग जाना।'

गेटवे ऑफ इण्डिया से वापस ऑफिस की ओर आते हुए लक्ष्मीचंदजी राजन को सलाह देकर उसके प्रतिभाव का इंतजार करने लगे।

'दद्दु! आप मेरी एग्जाम की फिक्र मत करो। यह तो 10वीं बोर्ड की एग्जाम है। आगे अच्छी कॉलेज में एडमिशन के लिए तो बारहवीं के परसेन्टेज मायना रखता है। वैसे भी आज-कल तो चाहे मेडिकल में जाना हो, आई.आई.टी. में जाना हो कि आई.आई.एम. में जाना हो, entrance के percentile ही देखे जाते है।'

लक्ष्मीचंदजी को अंदर से लग ही रहा था कि मेरी बात इसके गले सीधी उतरने वाली नहीं है। राजन को किस तरह इस operation में silent करना उसके लिए लक्ष्मीचंदजी का दिमाग तेज गति से दौड़ रहा था।

'राजन, भले ही दसवीं बोर्ड इतना इम्पोर्टेन्ट नहीं है, तो भी इस ऑपरेशन को पूर्ण करेंगे तब तक तेरी एग्जाम चालू हो गई होगी। वैसे भी इस तरह के कार्यों में हमारा Involvement एक हद से ज्यादा नहीं होना चाहिए। क्योंकि, किसी भी स्टेप पर कोई व्यक्ति हमें आसानी से फँसा सकता है। बाद में हम अपने आप को कितना भी निर्दोष साबित कर लें, लेकिन बरसों की जमाई हुई वह गुडविल वापस नहीं लौट सकती। जैसे-जैसे अपना यह ऑपरेशन आगे बढ़ेगा, मैं तुझे परिस्थिति से रूबरू कराता जाऊँगा।'

'दद्दु, अब तक मैं Detective stories सिर्फ पढ़ रहा था, लेकिन detective बनने का मौका पहली बार मिला है। वैसे भी आपको पता है कि मुझे challangable jobs ज्यादा पसंद है।'

'राजन, एक बार तूं तैयार हो जा, तेरा education पूरा कर दे। हमें अभी बहुत आगे बढ़ना है। हिन्दुस्तान में टॉप पोजिशन पाने के लिए बहुत सारी challanges तुझे ही पास करनी होगी। अपना जो ऑपरेशन है उसमें silently काम करना होगा। शायद कल ही हनीफ को अपनी ऑफिस में बुलाकर discuss कर लेता हूँ। बाद में वो ही हमें update देता रहेगा। मेरा involvement भी limited ही रहेगा।'

'दद्दु, हनीफ हमारे साथ बीच में कोई गेम न खेले, उसकी क्या गारन्टी हैं?'

लक्ष्मीचंदजी राजन की चौकसी देखकर दंग रह गये।

'सच बात है राजन, लेकिन आज तक उसने कभी भी हमें धोखा नहीं दिया है।'

'मगर दद्दु, अपराध की दुनिया में जिसका डंका बजता हो वह अपने फायदे के लिए कब, किसको, क्या नुकसान कर बैठे उसका कोई भरोसा नहीं होता।'

'सच बात है, लेकिन अपने ऑपरेशन में इक्के-दुक्के का काम नहीं है। बहुत सारे लोग जाने-अनजाने में भी इससे जुड़ेंगे। हर जगह हम चैक करने थोड़े ही जा सकते हैं?'

'लेकिन, आप सिर्फ इतना करेंगे कि जब आप किसी के साथ मिटिंग करो तब मुझे साथ रखना।'

'हाँ जरूर.....'

लक्ष्मीचंदजी को आखिर स्वीकार करना ही पड़ा। लेकिन, अचानक ही उनके दिमाग में एक आइडिया आई जिसने उनके चेहरे पर मुस्कान बिखेर दी।

SGC Corporate Park में गाड़ी ने एन्ट्री ली।

'राजन, मुझे अभी ऑफिस में काम है। तूं बैठा-बैठा बोर होगा। बच्चुसिंह मुझे यहाँ उतारकर तुझे वापस घर पर छोड़ देगा। ठीक है?'

'ओ.के. दद्दु .....'

लक्ष्मीचंदजी ने मैन बिल्डिंग से ही राजन को रवाना कर दिया। साथ-साथ बच्चुसिंह को कह दिया 'तू वापस मत आना, मैं रोशन के साथ आ जाऊँगा।'

****

'रोशन तूं अभी फ्री है ना? मैं तेरी ऑफिस पर आ रहा हूँ।'

लक्ष्मीचंदजी ने लिफ्ट से ही contact करके जब रोशन को पूछा तब फौरन ही उसने 'हाँ' कह दिया। लेकिन उसे आश्चर्य हुआ। क्योंकि, पापा शायद पहली ही बार इस तरह उसकी ऑफिस पर आ रहे थे। एक बार तो विनय के साथ कह दिया 'पापा, मैं ही आ जाता हूँ।'

'नहीं रोशन, मैं आ रहा हूँ। रूबरू में बात करता हूँ।'

रोशन को लगा कुछ तो serious है।

लक्ष्मीचंदजी की ऑफिस 23rd floor फ्लोर पर थी उसकी जगह 22nd floor पर ही लिफ्ट रूकवा दी। अटेन्डन्ट को भी आश्चर्य हुआ।

'good evening रोशन'

'good evening पापा ..... आईये ....'

अपनी सीट पर लक्ष्मीचंदजी को बिठाकर खुद उनके सामने बैठ गया।

रोशन ने शिवांगी को मैसेज कर दिया 'I don't want any disturbance' (जब तक हमारी मीटिंग पूरी ना हो तब तक किसी के भी ओर से कोई व्यवधान नहीं चाहिए।)

'रोशन spy equipment experts ने क्या रिपोर्ट दिया?'

'पापा, करीबन दो घंटे में उन्होंने पूरा घर छान मारा। मैन हॉल, डायनींग हॉल, खुद के फ्लोर का पैसेज सभी जगह उसने हाई फ्रिक्वन्सी वाले स्पाई कैमरे फिट किये थे। यह स्पाय कैमरे सिर्फ 2.5 एम.एम. के थे। नेनो-टेक्नॉलोजी का उसमें उपयोग होता है। बाहर से ही इम्पोर्ट होते हैं। एक-एक कैमरा 7000 डॉलर का ..... मतलब, 45000 रु. से महंगा है।'

'ओ.के. तूने वह सभी निकलवा दिये? कि और कुछ? .....'

'पापा निकलवाते तो उसे पता चल जाता। मैंने दूसरा ऑप्शन चुना। उन सभी की फ्रिक्वन्सी में डिस्टर्बन्स करके उन्हें बिगाड़ दिये। राजन को पता लगेगा तो भी कुछ समझ में नहीं आयेगा।'

'तू उसे इतना भोला मत समझना। वह मालती, दीनाराम, अशोक, शीला, किसी को भी पूछकर information निकलवा सकता है।'

'पापा, उन दो घंटों में मालती और शीला को चौके से बाहर नहीं निकलने का आदेश दे दिया था। दीनाराम तो चौके से वैसे भी बाहर निकलता नही हैं। अशोक दो दिन से छुट्टी पर है।'

'रोशन, कुछ भी abnormal रूटिन बनता है तब शंका जाती ही जाती है। यह कॉमन सायकोलॉजी है। ठीक है ..... उसका भी रास्ता निकाल देंगे। बाद में क्या किया?'

'पूरे घर में अपने इन्स्ट्रुमेन्ट से उन्होंने सारे के सारे spy equipment ढूँढ लिये और special frequency का उपयोग करके सभी में disturbance पैदा कर दिया। इतना ही नहीं नये spy equipment हमने install कर दिये ताकि वह वापस और कुछ लगायेगा तो भी हमें पता चल जायेगा।'

लक्ष्मीचंदजी रोशन की full proof planning से प्रसन्न हो गये।

'रोशन, बाकी तो किसी जगह कोई इन्स्ट्रूमेन्ट नहीं लगाया है ना?'

'नहीं पापा ..... स्पेशल डिटेक्टर के जरिये उन्होंने व्यवस्थित चैक कर लिया है। कोना-कोना छान मारा है।'

'रोशन, राजन ने उनके डिटेक्टर को भी फेल करे ऐसा कुछ लगाया ना हो, उसकी कोई गारंटी?'

'पापा, हमने जिस टीम को बुलाया था वह पूरे हिन्दुस्तान में सबसे टॉप लेवल की टीम है। चाहे भारत देश हो या पूरी दुनिया ..... कोई भी नया Spy equipment बाजार में आता है, उसका उन्हें पता चल जाता है। उनकी R&D टीम उसे deactivate करने से लेकर सारे रिसर्च कुछ ही दिनों में पूरा कर देते हैं। इसलिए उन लोगों के performance में शंका करने का कोई मतलब नहीं है।'

लक्ष्मीचंदजी के चेहरे पर छलक रहे संतुष्टि के भाव देख कर रोशन समझ गया कि यह टॉपिक अब पूरा हो गया।

'पापा, राजन को आप ऑफिस साथ ले आये थे ना? कहाँ है वो?'

'रोशन, मैंने उसे घर भेज दिया है।'

'क्या लिकेज का कोई सुराग मिला?'

'मिल गया रोशन... मिल गया.....'

रोशन आश्चर्य में गरक हो गया। 'इतना जल्दी पता चल गया? क्या बात कर रहे हो पापा?'

लक्ष्मीचंदजी ने सुबह से लेकर गेट वे ऑफ इण्डिया की बैंच और वापसी में हुए वार्त्तालाप तक सारी बात बता दी।

रोशन अपना सिर पकड़ कर बैठ गया।

'क्यों? कैसा लगा?' लक्ष्मीचंदजी हँसते-हँसते बोले।

'पापा, और सब बात तो एकदम सही है, लेकिन स्टंट की बात खतरे से खाली नहीं है। मुझे तो लगता है कि हम ऑफिस फर्नीचर बदलकर अपना काम पूरा कर लें। राजन को इस ऑपरेशन में involve करने की बात मेरे दिमाग में खतरे की घंटी बजा रही है। आप मेरी बात मानो .... Strong होकर decision ले लो।'

'देख रोशन, तेरी बात मैं बराबर समझता हूँ। लेकिन, राजन की बुद्धिक्षमता (intelligency) को देखकर मैं उसे नाराज करना नहीं चाहता। हम यदि उसकी बात की उपेक्षा करके उसे demoralize करेंगे तो हम सिर्फ उससे मिलने वाले लाभ ही नहीं खोयेंगे, उसकी यह ताकत गलत रास्ते पर जाने से बड़ा नुकसान भी कर बैठेंगे।'

'तो उसका मतलब यह हुआ कि राजन की उचित या अनुचित, सारी माँगें हमें पूरी करते ही रहना?'

'नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है।'

'पापा, अगर वो कह रहा है कि- 'इस ऑपरेशन के हर कदम पर हमें उसे सारी इंफोर्मेशन देते ही रहना है।' इसका मतलब आप समझते हो?'

'रोशन, तेरे से ज्यादा मैं इस बात से चिंतित हूँ। मगर तूं फिक्र मत कर, मैंने उसका भी रास्ता सोचकर रखा है। वह इस ऑपरेशन में Involve होने पर भी Involve नहीं रहेगा।'

'वह कैसे?'

लक्ष्मीचंदजी ने पूरी आईडिया बताई। सुनकर रोशन संतुष्ट हो गया।

'पापा, सारा confusion clear हो गया। लेकिन, छः माह से हमें टेण्डर नहीं मिले हैं, तो वो टेण्डर किसे मिले है उसका आपको पता है?'

लक्ष्मीचंदजी प्रश्न का उद्देश्य समझ गये।

'रोशन, उन टेण्डरों में से 50 प्रतिशत टेण्डर तो राणे ग्रुप ऑफ इण्डिस्ट्रिज (R.G.I.) को मिले थे। तेरा पूछने का मतलब यह है कि लिकेज करवाने वाले वो लोग है?'

'मेरा मानना है कि वो आज भारत देश में टॉप लिडींग इन्डस्ट्री है। हमारी उसके साथ cut-throat कम्पीटीशन भी चल रही है। वह ग्रुप direct नहीं तो indirect भी इस साजिश में शामिल हो ऐसी पूरी संभावना है। हम यदि स्टंट के जरिये spy equipment install करने वाले को पकड़ भी ले तो भी उन तक शायद नहीं पहुँच पायेंगे। उन लोगों की पहुँच PMO तक है, उसका आपको पता ही होगा।'

'रोशन, तूं सच कह रहा है। लेकिन हमने जो प्लान किया है उसमें हम भी direct involve नहीं होने वाले है। हम तो सिर्फ उस व्यक्ति तक पहुँचना चाहते हैं। दुश्मन और दुश्मन के साथ जुड़े हुए लोग एक बार पहचान में आ जाये तो लड़ाई में बड़ा फायदा होता है।'

रोशन के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था। क्योंकि यह Plan safe risk था और भविष्य का फायदा बहुत बड़ा था। वर्तमान में सामने से लड़ने वाले करीबन मिलते ही नहीं हैं तब पीछे से वार करने वाले का पता लगाना अनिवार्य हो जाता है।

'पापा, आपको जैसे उचित लगे, आप आगे बढ़ना। जब भी कोई जरूरत हो, आप मुझे याद करना।'

'रोशन, शायद एक-दो दिन में हनिफ के साथ मीटिंग हो जायेगी। मुझे जरूरत लगेगी तब तुझे बुला लूँगा। फिलहाल मैं दस मिनिट मेरी ऑफिस जा के आता हूँ। बच्चुसिंह को मैंने वापस नहीं बुलाया है। दस मिनिट के बाद हम साथ ही घर वापस लौटते है।'

'ओ.के. पापा .... मैं भी दस मिनिट के बाद निकलता हूँ।'

लक्ष्मीचंदजी अपनी ऑफिस में जाने के बदले सीधे ही कृतिका की ऑफिस में पहुँच गये।

'सर, आप यहाँ? मुझे बुला लिया होता।' कृतिका आश्चर्य में गरक थी। पहली ही बार ऐसा हो रहा था।

'कृतिका, मुझे थोड़ा जरूरी काम था। मैं घर लौट रहा था तो मैंने सोचा तुझसे जरूरी बात यहाँ करके ही निकल जाऊँ।'

लक्ष्मीचंदजी ने आठ मिनिट में कृतिका से बहुत महत्त्वपूर्ण बात कर ली। 'समझ गई? I don't want any blunder .... got my point? (मैं कोई गलती चलाने वाला नहीं ..... समझ गई?)'

'यस सर ..... आप निश्चिंत रहना .....'

दो मिनिट में लक्ष्मीचंदजी और रोशन Rolls-royce में बैठकर SGC कोर्पोरेट पार्क से रवाना हो गये।

****

राजन ने घर पहुँचते ही पूरे दिन की ताजा खबर जानने के लिए स्पाई कैमरा ऑन किया लेकिन न रिकॉर्डिंग सुनने में

आई ना ही कोई पिक्चर दिखा। वह आश्चर्य में डूब गया। यह क्या हुआ? इतना महंगा कैमरा भी फेल? उस बदमाश को पकड़ना पड़ेगा .... सा.... बड़ी-बड़ी बातें करता था और गारन्टी दे रहा था।

फौरन उसे फोन लगाया। 'क्यों मिस्टर ..... बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे आप? सारे के सारे कैमरे फेल हो गये हैं।'

'भाई साब! एक ही दिन में सभी 4 कैमरे फेल? मेरे हिसाब से तो मामला कुछ और है। एक या दो फेल हो सकता है, चारों चार?.....'

'क्या इसके फेल होने का और कोई रिजन भी हो सकता है?'

राजन का दिमाग तेजी से चलने लगा। दद्दु को कल ही पता चला था कि कैसे मैंने जासूसी की थी। दाल में जरूर कुछ काला है।

'राजन साब! मुझे लगाता है कि तुम्हारे स्पाई कैमरा की रैकी हो चुकी है। एक ही संभावना लगती है कि High frequency के Electro magnetic radiation छोड़कर इन कैमरों की frequency पूरी तरह से disturb कर दी है। अब यह सारे कैमरे निकम्मे हो गये है। नहीं चलेंगे शायद ..... मेरा मानना है कि ऐसा ही कुछ हुआ होगा। क्योंकि मैंने आपको जो सेल किया था वह बहुत ही Advance technology वाले थे। आज तक कहीं से भी इसकी शिकायत नहीं आई।'

'ओके..... ओके ..... मैं आपने कही हुई Possibility को मानकर सर्च करता हूँ।' राजन ने फोन कट किया। सोचने लगा - मैंने तो सिर्फ उस दिन पम्मी के बेल्ट पर लगे रिकार्डर की ही बात की थी। इन जगहों के रिकार्डर का पता उन्हें कैसे चल गया होगा? मैं दद्दु को बहुत भोला मान रहा हूँ लेकिन मेरी बात से ही उन्होंने इन्फोर्मेशन निकलवा ली होगी।

****

Rolls-royce ने गेट से एन्ट्री ली। ऊपर की ऑपन गैलेरी से एन्ट्री से लेकर बंगलों के गेट तक पूरा एरिया दिख रहा था। राजन वहाँ खड़ा-खड़ा नीचे ही देख रहा था। 20-25 सैकण्ड में करतार सिंह गार्डन से लगे रामु माली की केबिन में दौड़ता हुआ गया। रामु माली से बात करके वापस आया और बंग्लो के गेट से गाड़ी को पोर्च में ले जाकर खड़ी कर दी।

'गजब है ..... पापा बंग्लो में एन्ट्री होते ही गाड़ी सीधी पोर्च में जानी चाहिए। यह करतारसिंह माली के पास क्यों गया होगा?' राजन को आश्चर्य का झटका लगा। ऊपर की गैलरी से देखा, पापा और दद्दु दोनों साथ में आये हैं। वैसे तो यह नॉर्मल बात है, लेकिन माली को मिलना एक abnormal routine था। कुछ करना पड़ेगा .....

राजन तेजी से नीचे उतरा। किसी को पता भी न चले वैसे बंग्लो से बाहर निकलकर सीधा ही रामु माली की केबिन की ओर चल पड़ा। पापा और दद्दु अपने कमरे में फ्रेश हो रहे होगे, यह ही बेस्ट टाईम था।

'रामु चाचा, कैसे हो?'

'ईश्वर की कृपा है और आपकी मेहरबानी है छोटे बाबू .....'

'अभी करतारसिंह आपको कुछ सूचना देने आया था कि ऐसे ही .....?'

'हाँ, वो क्या है कि बड़े सेठजी ने कल गार्डन में कोई मीटिंग रखी है। उसके बारे में सूचना करने आया था।'

'मीटिंग कितने बजे होगी?'

'पता नहीं मुझे .... मुझे तो सुबह 8.00 बजे से ही तैयार रखने कहा है।'

'चाचा आप गार्डन बहुत अच्छा ही रखते हो आपके क्या तैयारी करनी?'

'और तो कुछ करना नहीं हैं, उस मार्बल की बेन्च के पास टेबल और कुर्सी लगानी है। होगा कोई नाश्ता-चाय पानी का प्रोग्राम .....'

राजन के लिए इतनी इन्फोर्मेशन काफी थी। केबिन से बाहर निकलते ही राजन को अफसोस हुआ। यार, एक Spy recorder drawer में रह गया। वापस गार्डन में आने का कोई जुगाड़ करना पड़ेगा।

****

साढे आठ बजते ही घर के सभी सदस्य एक डायनिंग टेबल पर आ गये थे। 'दीनाराम जी! आज तो आपने क्या खाना बनाया है! सचमुच, लाजवाब ..... एक परांठा और लाना।' राजन ने खाते-खाते ही आदेश किया। राजवी भी देखकर आनंदित थी। आमतौर पर, बेटे के आनंद में ही माँ का आनंद सम्मिलित रहता है।

लक्ष्मीचंदजी और रोशन को भी लग रहा था, पूरे दिन माथापच्ची करने का ही यह रिजल्ट है। वे बहुत दिनों के बाद इस तरह उसे खाते हुए देख रहे थे।

'दीनाराम, एक ग्लास कोल्ड कोको .....'

'लाता हूँ छोटे बाबू .....' खाने के ऊपर एक ग्लास कोल्ड कोको गटकते राजन को देखकर रोशनी ने कमेण्ट की 'पापा, लगता है कि राजन कल से कोई तपश्चर्या करने वाला है।'

'ऐय, नजर मत लगा।' सब लोग हँस पड़े .....

डायनिंग टेबल से उठकर सभी अपने-अपने शेड्यूल में व्यस्त हो गये। राजन ने मोबाईल ऑन किया और स्कूल से मैसेज आया 'Please come tomorrow at 10 am. to collect your hall ticket for board exams' (कल सुबह दस बजे बोर्ड एग्जाम के लिए आपकी हॉल टिकट लेने (स्कूल) आना हैं)

'इन स्कूल वालों को कल ही मुहूर्त आने वाला था? कोई बात नहीं ..... देख लेंगे .....' इतने में ईमेल पर आये हुए मैसेज का नोटिफिकेशन देखा। मैसेज डाउनलोड करके पढ़ते ही राजन के दिमाग ने गर्मी पकड़ ली।

मैसेज में लिखा था 'अमीरजादे की औलाद ..... तुझे पढ़ाई से कोई मतलब है? बाप ने पूरा empire जमाया हुआ है। उसी पर तो बैठना है। खुद को बहुत शाणा समझता है तो इस साल बोर्ड की एग्जाम में 90+ प्रतिशत लाकर दिखा। मुझे पता है, तेरी कोई औकात नहीं हैं, Disinction ले के आया तो भी तेरे पापा और दद्दु, लोगों को ताज में पार्टी देंगे। हा....हा....हा....'

सा ...... यह कौन बदमाश हैं? आये हुए ईमेल एड्रेस को चेक किया। लेकिन प्रोफाईल में कोई नंबर नहीं था। मन में ही बोला 'ऐसे मैसेज करने वाला नंबर थोड़ी show करेगा?'

फौरन राजन ने रिप्लाई का मैसेज फोरवर्ड किया।

'मैं अमीरजादा हूँ या नवाबजादा .... तुझे क्या मतलब है? मुझसे जलता है क्या? छिप-छिप कर क्या हमला करता है? मेरी औकात की तूं छोड़, तेरी ताकत है तो मेरे सामने आकर बोल। बोलने की ताकत नहीं है तो तेरा नंबर दे, सीधा तेरे से ही बात कर लेता हूँ।'

वापसी में मैसेज आया 'औकात और ताकत की बातें छोड़। मैंने जो चैलेन्ज दी है, उसे उठा कर देख। मान जाऊँगा गुरु'

'फालतू आदमी है सा..... चलो, अब काम निपटाते है।'

Spy recorder को जेब में लेकर, कमरे से बाहर निकलकर सीढ़ी उतर ही रहा था कि राजवी की नजर उस पर पड़ गई 'राजन! अभी किस ओर चले?' बिना घबराये राजन ने जवाब दिया 'मम्मा! आज थोड़ा हैवी हो गया है थोड़ा uneasy feel हो रहा था तो सोचा कि गार्डन में जरा राउण्ड लगाकर आता हूँ।' 'ठीक है .....' हंसकर राजवी अपने बेडरूम की ओर मुड़ गई। शंखेश्वर पेरेडाइज में 5000 स्क्वायर फीट का बहुत शानदार गार्डन उस एरिया की शान था। बड़े-बड़े उद्योगपतियों को उसके शानदार गार्डन की हरी लॉन को देखकर आँखों में ठंडक होने की जगह जलन होती थी। राउण्ड लगाते-लगाते राजन ने पूरी सावधानी के साथ अपना काम पूरा कर दिया। क्रमशः

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक-7

महाभारत : कलियुग का......

ले. धर्मजय

'हाय संजू! how are you?' सेन्ट जेवियर्स के गेट पर ही राजन को संजू मिल गया 'Fine ..... कैसी चल रही है तैयारी?'

'यार .... मत पूछ तैयारी का ...... अभी तो तीन दिन से किताब को खोलने का भी टाईम नहीं मिला है।' साथ-साथ चलते-चलते ही राजन ने जवाब दिया।

'अरे यार ..... क्या कर रहा है रे तूं? बोर्ड में फेल होने का इरादा हैं?'

'नहीं संजू .... हालात ही कुछ ऐसे थे .... अभी मेरा दिमाग मत फिरा'

दोनों केन्टीन में पहुँचे। वहाँ विकास और विश्वास उन दोनों का ही इंतजार कर रहे थे।

'गुड मोर्निंग ..... कैसी चल रही है तैयारी?' विकास ने पूछ लिया .....

'संजू, तूं ही बता दे इसे ....' राजन ने irritate होते कहा।

सभी को लगा कि राजन के साथ कुछ प्रोब्लेम है।

राजन ने जेब से मोबाईल निकाल कर रात में आया हुआ मेल दिखाया।

'इसकी बेंड बजानी है। है कोई रास्ता?' राजन ने पूछ लिया।

'देख राजन, इस ईमेल आईडी से हमें कुछ पता लगने वाला नहीं है। ये दब्बू लोगों का काम है। पी.सी. से फेक आईडी बनाकर मैसेज करते हैं। कैसे पकड़ेंगे?' संजू ने प्रेक्टीकल बात की।

'मगर संजू, यदि किसी की साईबर क्राइम के डिपार्टमेन्ट में पहचान है तो आई.पी. एड्रेस मिल सकता है और हम इस दब्बू तक भी पहुँच सकते हैं।' विकास ने उसका भी तोड़ निकाला।

'राजन, आपका ग्रुप तो हिन्दुस्तान के टॉप-10 में हैं। तेरे पापा या दद्दु को बताया यह मैसेज? उनके लिए तो बांये हाथ का खेल है।' विश्वास ने रास्ता भी बता दिया।

'My dear friends, आप समझो – यह मैसेज कोई terrorist की धमकी नहीं है कि मेरे पापा या दद्दु इसे सिरियसली लें। वे तो उल्टा मुझे कहेंगे, इसमें गलत क्या लिखा है?

और कोई रास्ता हो तो बताओ।'

अचानक संजू को याद आ गया 'मिल गया ..... मिल गया .....'

'अरे! क्या मिल गया?' विकास ने irritate होकर पूछा .....

'दोस्त, रास्ता मिल गया आई.पी. एड्रेस ढूँढ़ने का .....' संजू ने टेबल पर मुक्का जड़ दिया 'राजन मेरे चाचा विजेन्द्र सिंह साईबर क्राइम के डिपार्टमेन्ट में सीनियर पोस्ट पर है। हम यहाँ से हॉल टिकट लेकर सीधे ही चाचा की ऑफिस पर चलते हैं। वे बहुत आसानी से कुछ ही मिनिटों में आई.पी.एड्रेस और लोकेशन बता देंगे।'

'वाह, क्या आइडिया दियेला है ..... यह हुई ना बात' राजन खुशी के मारे उछल पड़ा। सभी कॉफी पीकर क्लास में गये। वहाँ से हॉल टिकट लेकर केम्पस से बाहर निकले।

'विकास, विश्वास..... आप घर जाओ ..... मैं और संजू जाकर आते हैं।'

'यार, हाथ सफाई का मस्त मौका आयेला है ..... हमें भी साथ ले लो।'

'अभी आई.पी. एड्रेस-लोकेशन देखने तो दे ..... जरूरत पड़ी तो तूं आधी रात को भी हाजिर है ना? श्योर, आप दोनों को बुलाऊँगा।' राजन ने कह दिया।

'O.K. ..... Bye ..... See you ...... update देते रहना .....' विकास और विश्वास ने बाईक को किक लगायी और घर की ओर चल पड़े।

संजू के पीछे-पीछे राजन भी निकल गया। बान्द्रा में साईबर क्राइम डिपार्टमेन्ट की ऑफिस में सिर्फ आधे घंटे में पहुँच गये। निकलने से पहले ही चाचा की appointment ले ली थी इसलिए कोई समस्या नहीं थी। लेकिन एहतियात के तौर पर राजन ने पापा या दद्दु के नाम से खुद की पहचान कराने का संजू से मना कर दिया था। क्योंकि, उन्हें पता चल गया तो उनकी पूछताछ का सामना करना

पड़ेगा।

'गुड मॉर्निंग अंकल .....'

'गुड मॉर्निंग संजू ..... अचानक चाचा की याद कैसे आ गई?' हँसते हुए चाचा ने पूछ लिया।

'अंकल, यह है मेरा बेस्ट फ्रेन्ड राजन। कल रात को उसके इ-मेल अकाउण्ट में उसे irritate करने वाला एक मैसेज आया है। उसका profile hidden है। उसका आई.पी एड्रेस और लोकेशन मिल सकता है?'

'दिखा मुझे, क्या मैसेज आया है?'

राजन ने उन्हें मेल दिखाया। मेल पढ़कर विजेन्द्र सिंह हँस पड़े। राजन को बहुत बुरा लगा, लेकिन वह helpless था।

'राजन, इसमें ऐसा कुछ आपत्तिजनक मुझे नहीं दिखता। तेरे शत्रु या मित्र किसी का भी यह हो सकता है। ऐसी तो मजाक चलती रहती है।'

'अंकल, फिर भी जानना हो तो कोई रास्ता है?' संजू ने फिर से अर्ज की।

'ठीक है ..... आपकी इतनी इच्छा है तो....' कहकर विक्रमसिंह ने बेल मारी

'ऐय धोंडु! राजीव को बुला के ला'

'जी साहब!'

दो मिनिट में राजीव हाजिर हुआ। 'राजीव, यह मेरा भतीजा है ..... आई पी एड्रेस और लोकेशन निकाल के दे।'

'यस सर' कहकर राजीव दोनों को अपनी केबिन में ले गया।

दो मिनट में आई पी एड्रेस और लोकेशन दे दिया।

दोनों ने देखा, खार का लोकेशन था। 'Silver crest' बिल्डिंग के बाजू में ही दिख रहा था।

'चल राजन्, Lets go.....'

दोनों ऑफिस से बाहर निकले 'राजन्, विकास और विश्वास को बुलाना है?'

'नहीं यार ..... देखने तो दे है कौन? बाद में सोचते हैं।'

बाईक पर राजन सोचकर परेशान था कि पहचान वालों में से कोई भी ऐसा नहीं था जो खार में रहता हो। दस मिनिट में वे दोनों Silver crest के सामने खड़े थे। वहाँ एक कचरे का ढेर था और म्यूनिसिपाल्टी की गाड़ी कचरा उठा रही थी। उसी कचरे में उसने देखा कि एक लैपटॉप भी है। राजन समझ गया कि लैपटॉप से मेल भेजकर सा..... ने कचरे में डाल दिया। संजू को भी उसने दिखाया।

'राजन! कोई अपना भी गुरू है यार .....'

'संजू! नो प्रोब्लेम ..... उपर देख सी.सी.टी.वी. है। फूटेज चैक करवाते हैं, किसने डाला? पता लग जायेगा।'

'राजन! लोग हमें पागल समझेंगे। लोग कहेंगे ऐसे मैसेज के चक्कर में तुमने इतना बड़ा पहाड़ खोद डाला? और दूसरी बात ..... मेल करने वाला कोई और हो, और फेंकने वाला कोई और, ऐसा भी तो हो सकता है। Just ignore this faltu message ..... चल, शांति से नाश्ता करते हैं।'

राजन के जिगरी मित्र ने ही उसके टायर में से हवा निकाल दी थी। राजन को ignore करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

बांद्रा में नई-नई बनी महाराजा इन फाईव स्टार में दोनों नाश्ता करने गये। 'राजन! समझ नहीं आ रहा है तूं इतना बुझा-बुझा क्यों हैं?'

'संजू! मुझे ललकारने वाला आज तक कोई पैदा नहीं हुआ है। Really I am feeling so insulting (मुझे बहुत अपमानजनक लग रहा है)'

'राजन! मुझे पक्का भरोसा है तूं 90 up ला सकता है। यह तो कुछ सालों से हमारा ट्रेक चेन्ज हो गया है। याद है तुझे, 7^{th} में 96प्रतिशत लाया था?'

'संजू! उसका कोई सवाल नहीं है। मैं चाहूँ तो ला सकता हूँ। लेकिन अभी मैं बहुत बड़ा इश्यू डील कर रहा हूँ।'

'क्या बात है?' संजू को धीरे-धीरे समझ में आ रहा था कि इसीलिये शायद उसे 3 दिन तक टाइम नहीं मिला होगा।

राजन ने शिविर की बात से लगाकर दद्दु से गाडी में S G Corporate Park वापस आने तक की सारी बात बताई। हालांकि, स्टंट वाली खुद की आईडीया नहीं बताई।

'संजू! कल मैं तेरे घर पर स्टडी करने आ रहा हूँ।'

'मोस्ट वेलकम ..... मगर राजन तूं अभी भी कुछ छिपा रहा है।'

'संजू! पूरी बात तुझे कल बताता हूँ।'

बांद्रा से दोनों अपने-अपने घर की ओर निकल गये।

****

'राजन, हॉल टिकिट आ गई? कौन सी स्कूल मिली?'

'हाँ मम्मा .... 18मार्च से 31 मार्च का शेड्यूल है। विद्या भारती मिली है।'

'आज 14 फरवरी है। एक महीना और 4 दिन ही बाकी है, तैयारी शुरू करो।'

'सॉरी मम्मा! For your kind information फरवरी में 28दिन होते हैं, इसलिए 1 महीना और 2 दिन ही बाकी हैं।'

राजवी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। बीच बात में ही चुप होकर वहाँ से निकल गई।

'मम्मा, मेरी मजाक तूं नहीं समझती?' राजन उसके पीछे-पीछे गया।

'राजन, तूं बहुत बदतमीज हो गया है। गलत दिशा में ही अपना दिमाग दौड़ाता रहता है।'

'सॉरी मम्मा ..... अब ऐसी गलती नहीं करूँगा' राजन ने रोने की एक्टिंग करते हुए फिर से कहा 'सॉरी मम्मा .....'

'ओके ..... ओके ..... चल, थाली लगाती हूँ।'

'मम्मा, हॉल टिकिट लेने के बाद संजू के साथ नाश्ता करके आया इसलिए भूख नहीं है। थोड़े फ्रूटस खा लूँगा।'

'ओके..... शीला ..... राजन को सेब और चीकू दे देना .....'

'हाँ ..... अभी लाई।'

'मम्मी ..... मेरा आज से मिशन बोर्ड एग्जाम शुरू होता है ...... मुझे अब डिस्टर्ब मत करना ..... जैसे अर्जुन को सिर्फ पंछी की आँख ही दिखती थी वैसे मुझे अब सिर्फ किताब और बोर्ड के पेपर ही दिखेंगे ..... देख लेना तेरा लाल कितना प्रतिशत लाता है .....' किसी मूवी के डायलॉग की तरह राजन को बोलता देखकर राजवी हँस पड़ी।

'मम्मी, मुझे गार्डन के शांत और मस्त वातावरण में एक्जाम की तैयारी करना जमेगा। शीला को बोल देना एप्पल और चीकू वहाँ पर ही दे दे।'

राजन ने अपने कमरे में से किताबें ले ली और गार्डन में मार्बल की कलात्मक बेन्च पर ही अपनी बैठक जमा दी।

पाँच मिनिट में एप्पल और चीकू वहाँ रखे टेबल पर सर्व हो गये।

पेड़ की छाँव में राजन शांति से तैयारी करने लगा। उसका बगुलानूमा ध्यान लंबा नहीं चला।

पाँच मिनिट के बाद उसने चारों ओर देख लिया। रामु माली अपने कमरे में था। आजू-बाजू और कोई दिखाई नहीं दे रहा था। ऊपर गैलरी और खिड़की की ओर देख लिया। सोचा - लगता है सभी खाने-खिलाने में बिजी होंगे। कल ही इंस्टाल किया हुआ स्पाई रिकार्डर सिर्फ 3 सेकण्ड में खुद की जेब में डाल दिया। वापस वहाँ बैठकर पढ़ने लगा।

एक घंटे के बाद खड़ा होकर वापस खुद के रूम में जाने लगा।'क्यों जनाब? किस ओर चले?'

'मम्मा लगता है कि इन टेक्सट बुक वालों ने किसी नशीली दवाई का उपयोग इंक में किया है। आधे पौन घंटे में ही नींद आने लगती है।'

'तूं नहीं सुधरेगा' राजवी हंसकर अपने कमरे में चली गई। तीन बजे का टाईम था, बाजू वाली सलोनी की रिंग सेरेमनी में जाने के लिए उसे तैयार होना था।

राजन थोड़ी देर आराम करके जग गया। मम्मी फरारी लेकर बाहर निकल चुकी थी। दरवाजा अंदर से बंद करके राजन ने स्पाई रिकार्डर का डेटा अपने मोबाईल में ले लिया और कान पर वाईफाई-ईयरफोन लगाकर रेकोर्डिंग ऑन किया।

'रामु .... MH-02-EB-7860 नंबर वाली बी.एम.डब्ल्यू दस मिनिट में आयेगी। उसके मालिक को सीधा मेरे पास लेकर आना।'

'जी मालिक .....'

राजन ने मन में ही सोचा 'हम्म्..... रामावतार छुट्टी पर है इसलिए माली को काम सौंपा लगता है।'

करीबन 10 मिनिट के बाद .....

'अस्सलाम आलेकुम हनीफ जी ...'

'वालेकुम अस्सलाम लक्ष्मीचंदजी ...'

'आईये, बैठिये' कुर्सी की आवाज आई .....

'रामु, चाय .... नाश्ता .....'

'जी मालिक'

'कैसी है तबीयत?'

'बस, खुदा की रहम है। आप की बताओ .....'

'प्रभु की कृपा है'

'आपने मुझे याद किया ..... मेरी तो किस्मत खुल गई।'

'हनीफ जी ..... मुझे चने के झाड़ पर मत चढ़ाओ...' कुछ सेकण्डस् शांति ...

'वैसे तो हमारी और आपकी लाईन अलग है। मुझे बुलाने की वजह जान सकता हूँ?'

'मैं उस बात पर ही आ रहा हूँ। करीबन साढे छः माह पूर्व हमने ऑफिस में फर्नीचर बनाया तब से हमारा टेण्डर पास होना बंद हो गया था। मुझे ऐसा लग रहा है कि नये फर्नीचर में स्पाई कैमरा इंस्टाल हो गया है और हमारी सारी इंफोर्मेशन हमारे कम्पीटीटर को पहुँच रही है। फर्नीचर वापस बदलने से भी हमारा काम हो सकता है लेकिन हम कैमरा इंस्टाल कराने वाले तक पहुँचना चाहते हैं। आप हमें उस व्यक्ति तक पहुँचा सकते हो।' शांति ..... कुछ सेकण्ड्स के लिए राजन ने सोचा – शायद दद्दु उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहे हैं।

'मैं आपकी मदद कैसे कर सकता हूँ? मुझे कुछ समझ में नहीं आया।'

कप-प्लेट और नाश्ते की डिश की आवाज .....

'आपको आज ही दोपहर दो बजे एस. जी. कॉर्पोरेट पार्क, मेरी ऑफिस में आना है और मेरी बात में हाँ कहना है।' चाय की सीप की आवाज .....

'मगर जनाब, बात तो कहो......' कुर्कुरे, बिस्कूट की आवाज .....

'आपको दुबई से 3 टन सोना (24 कैरेट गोल्ड) मुम्बई भेजना है।'

'3 टन.....?'

'हाँ 3 टन ..... दुबई से रवाना करना है लेकिन मस्कत से आगे बढने के बाद, करीबन डेढ़ सौ नोटिकल माइल्स चलने के बाद, रात के समय में एक जहाज आपके जहाज को मिलेगा। उस जहाज में सेमीकन्डकटर्स, चीप्स वगैरह कम्प्यूटर के स्पेयर्स होंगे। वह सारा ऑफिशियल माल होगा। दुबई से निकलते वक्त उसके सारे ऑफिशियल पेपर्स आपको मिल जायेंगे। आप उससे सारा माल चेक कर लेना। सारा माल आपको अपने जहाज में ले लेना है। और 3 टन सोना उस खाली जहाज (ऑफिशियल माल लेकर आये हुए जहाज) में डालकर उसे वापस दुबई की ओर रवाना कर देना है। मतलब, कि मुम्बई की ओर आने वाले जहाज के पास कागजात वाला ऑफिशियल माल ही रहेगा।'

'तो 3 टन सोना का क्या करना है?'

'वो आप जानो .....' कुछ क्षण रूककर 'मेरी पूरी बात सुनने के बाद आपको एक भी प्रश्न नहीं रहेगा बरखुरदार .....'

'ठीक है ..... आगे कहो.....'

'आपके उस जहाज को (ऑफिशियल माल वाले जहाज को) मुम्बई की जगह अलीबाग के समंदर के किनारे पर पहुँचाना है। याद रखना, उस दिन दिनांक होगी 23 मार्च 2016 उस वक्त 99.99 प्रतिशत आपका स्वागत करने के लिए पुलिस की टीम हाजिर होगी। क्योंकि उनके पास तो 3 टन स्मगलिंग किये हुए सोने का ही इनपुट होगा। वे लोग आपके जहाज की तलाशी लेंगे। हाँ, एक बात रह गई – आपको अलीबाग के किनारे पर पहुँचने से 3 घंटे पहले मुम्बई पोर्ट (बंदरगाह) पर रहे हुए कमीश्नर ऑफ कस्टम को एवं हमें फोन करके सूचना देनी होगी कि – हम रास्ता भटक गये थे इसलिए अलीबाग आ गये हैं। ताकि आप किसी भी जगह फॉल्ट में नहीं रहेंगे। बोलो, अब है कोई प्रश्न?'

'लक्ष्मीचंदजी, यह सब करने की जरूरत क्या है?'

'हनीफ जी अब सुनो ..... आज आप जब मेरी ऑफिस में आओगे तब मैं आपको बिना ड्यूटी का smugulled 3 टन सोना मुम्बई लाने को कहूँगा। मेरा यह मैसेज मेरे कम्पीटीटर के पास पहुँच जायेगा। वह मुझे बदनाम करने के लिए पहले से पुलिस में information दे देगा। जब जहाज से सोना नहीं मिलेगा तब ऊपर की ऑथोरिटी पुलिस से इनपुट की इंफोर्मेशन निकलवायेंगी और टेण्डर लीक करने वाला पकड़ा जायेगा।'

'इन्शा अल्लाह, क्या प्लानिंग है!'

कप-प्लेट रखने की आवाज .....

'इस काम को करने का आपका जो चार्ज हो वह बोल दो .....' हनीफ की हँसने की आवाज ..... 'लक्ष्मीचंदजी, मुझे शर्मिंदा ना करें ..... आपका इतना बड़ा काम शायद पहली बार कर रहा हूँ। कभी पैसे से ज्यादा अहमियत संबंध की होती है। पैसे तो बहुत कमाये हैं, आपके साथ संबंध बन गया तो जीवन सफल हो गया समझो ..... हाँ ट्रांसपोर्टेशन का जो बनेगा वो ले लूँगा। ठीक है ..... चलता हूँ, दोपहर दो बजे मिलेंगे।'

आवाज शांत ..... कोयल की कूहु .....

'दद्दु आपका नेटवर्क पुराना 2 जी का है ..... हमारा नया 4 जी का है।'

****

'कृतिका, आज कौन है मैन गेट पर?' लक्ष्मीचंदजी ने ऑफिस में एन्टर होते ही पूछ लिया।

'सर, आज एन्टनी की ड्युटी है।'

'MH-02 EB-7860 को बिना पूछताछ एन्ट्री देनी है। करीबन दो बजे आयेगा।'

'ओके सर .... सर कौनसी गाड़ी है?' 'बी.एम.डब्ल्यू. ....' 'ओके ....'

लक्ष्मीचंदजी ने घड़ी देखी 2:10 दिखा रही थी।

'सर, आपने कहा था वो गेस्ट आ गये हैं भेज दूं अंदर?' 'हाँ, भेज दे और अब मुझे कोई डिस्टर्बन्स नहीं चाहिए।'

'अस्सलाम आलेकुम हनीफजी ...'

'वालेकुम अस्सलाम लक्ष्मीचंदजी ...'

'बैठिये .....' लक्ष्मीचंदजी के सामने ही हनीफ पठाण ने सीट ले ली। औपचारिक बातें पूरी करने के बाद .... 'बताईये, लक्ष्मीचंदजी ...... मुझे याद किया?'

'हाँ ..... आपसे बहुत जरूरी काम था।' पाँच-दस सैकण्ड रूककर

लक्ष्मीचंदजी बोले 'आपको पता ही होगा, गवर्मेन्ट ने गोल्ड पर ड्युटी बहुत बढ़ा दी है मुझे एक महीने के अंदर 3 टन गोल्ड लेना है। करीबन 900 करोड़ का माल होगा। 15 प्रतिशत ड्यूटी भरने जाऊँ तो 135 करोड़ रू. मुझे ड्यूटी के ही देने पड़ जायेंगे। आपको अपनी कला आजमाकर पूरा माल एक साथ लाकर मुझे देना है।'

'एक साथ इतना माल? बहुत बड़ा जोखिम हो जायेगा सेठजी .....'

'हनीफजी आपको 50-100 किग्रा. एक साथ लाने की प्रेक्टीस है इसलिए इतना बड़ा consignment सुनकर आप घबरा रहे हो। लेकिन आप ही सोचो सौ-सौ किग्रा लाने जायेंगे तो आपको 30 बार ट्रीप मारनी पड़ेगी। एक ही बार में बड़ा धमाका कर दो, आप और मैं दोनों फायदे में रहेंगे। बोलो, क्या कह रहे हो?'

'मुश्किल है लक्ष्मीचंदजी ..... जब से नरेश मोदी प्राईममिनिस्टर बना है तब से हमारी पोजिशन भी टाईट हो गई है।'

'हनीफ जी, मुश्किल जरूर है, लेकिन आपके लिए नामुमकीन नहीं है। मैंने आपकी टीम के बड़े-बड़े कारनामे सुने हैं और देखे हैं। बराबर है ना?'

'आपने जो कारनामे सुने थे वह वक्त और था और अभी .....'

'देखो हनीफ जी ..... काम करना है ..... कैसे करना वो आपका Headache है।'

'ठीक है ..... आपको बाद में बात करता हूँ।'

'बाद में नहीं हनीफ जी ..... अभी ही यहाँ से जो तय करना है वो कर दो, वरना मुझे असलम को यह काम सौंपना पड़ेगा।'

लक्ष्मीचंदजी अच्छे से जान रहे थे कि असलम के साथ हनीफ का कॉम्पीटीशन खतरनाक लेवल पर चल रहा था।

'लक्ष्मीचंदजी, अभी मैं जरा बात करके बताता हूँ।'

'खुशी से... मेरा ऑफिस बहुत बड़ी है। आप वहाँ जाकर बात करना चाहते हो तो भी प्रोब्लम नहीं हैं।'

हनीफ खड़ा होकर कॉन्फ्रेंस की जगह जाकर अरबी-उर्दु भाषा में मोबाईल पर बात करके पाँच मिनिट में वापस लौटा।

'लक्ष्मीचंदजी वैसे तो हम 2 प्रतिशत में काम करते हैं लेकिन काम बड़ा है उसके हिसाब से 5 प्रतिशत लगेगा और आज 18फरवरी हुई है। 18मार्च तक यह पहुँचाना नामुमकिन है। मैं 23-24 मार्च तक पहुँचा पाऊँगा। आपके प्लानिंग के मुताबिक हम अलीबाग पर डिलेवरी देंगे। बोलो चलेगा? तो डन करता हूँ ?'

'हनीफ जी ! मुझे सारी बात मान्य है। मुझे 23 मार्च को हिन्दुस्तान की धरती पर माल चाहिए .....' दोनों ने हाथ मिलाये।

'आपको अलीबाग से वह माल कहाँ पहुँचाना है?'

'वो मैं 23 मार्च के दिन अलीबाग में ही बताऊँगा। मेरा आदमी आपको वहाँ मिलेगा। लेकिन गाड़ी आपकी ही रहेगी वह समझ लेना।'

'जी ..... मुझे मंजूर है। लेकिन 50 प्रतिशत मुझे एडवांस चाहिए - सिर्फ दो दिन में .....'

'22.5 करोड़ आपको कल कहाँ पहुँचाऊँ?'

'मैं आज रात 10.00 बजे आपको बताता हूँ।' 'ओके' कहकर लक्ष्मीचंदजी ने इंटरकॉम पर कृतिका को सूचना दी 'लड्डू का बॉक्स लेकर आ .....'

'जस्ट ए मिनिट .....'

'लक्ष्मीचंदजी और हनीफ ने एक-दूसरे को लड्डू खिलाये।'

'हनीफ, I want each & every update time by time (मुझे समय-समय पर सारी movement के समाचार चाहिए)'

'इंशाअल्लाह मिल जायेगा .....'

****

'मम्मा! कल मेथ्स के प्रोब्लम सॉल्व किये, लेकिन बहुत सारी जगह कन्फयूजन था तो मुझे संजू के साथ बैठकर समझना है। उसका मैथ्स अच्छा है। मैं निकलता हूँ।' सुबह में नाश्ता करके राजन ने राजवी से इजाजत माँगी। लक्ष्मीचंदजी यह सुनकर मुस्करा रहे थे। रोशन और राजवी को सुखद झटका लगा था।

'राजन, देखना पड़ेगा, आज सूरज कहाँ से उगा है।' राजवी ने हँसते हुए कहा।

'ठीक है जा .... खाना भी वहीं खाके आयेगा?'

' उसकी मम्मी मुझे थोड़े ही छोड़ने वाली है? करीबन 3 बजे दोपहर को वापस आ जाऊँगा।'

'ठीक है .....'

राजन अपना बैग लेकर बाईक से निकल गया।

इधर रोशन ने लक्ष्मीचंदजी से पूछ लिया 'पापा! यह क्या चमत्कार हुआ?'

लक्ष्मीचंदजी ने हँसते हुए कहा 'चमत्कार मैंने नहीं, कृतिका ने किया।'

'कृतिका ने? मतलब?.....' राजवी ने बड़ी आवाज से आश्चर्य व्यक्त किया।

'परसों जब मुझे पता चल गया कि राजन पीछे हटने वाला नहीं है, तब मैंने कृतिका से कहा कि इसका इलाज करना पड़ेगा। उसने परसों रात को फेक आईडी से उसे मेल करके 90 up लाने की चैलेन्ज दे दी। यह पढ़ ईमेल ..... राजवी और रोशन, दोनों पढ़कर बड़ी जोर से हँस पड़े। दूसरा काम उसने वो किया कि approach लगाकर, 10वीं बोर्ड की एक्जाम की हॉल टिकिट के लिए नोटिस इश्यू करवा दी। जिसके कारण वह कल सुबह से ही घर से निकल गया। वरना हनीफ के साथ हुई बातचीत का उसे पता लग जाता।'

राजवी के चेहरे पर उलझन के भावों को देखकर लक्ष्मीचंदजी ने कहा 'राजवी, रोशन तुझे सारी बात बता देगा। अभी मैं निकलता हूँ। रोशन, तूं राजवी से सारी बात करके आना।'

****

'संजू, हमें थोड़ा अलग से बैठना है।'

'डॉन्ट वरी राजन, पापा डेली रूटीन के हिसाब से निकल गये हैं और मम्मी किसी सोशल वर्क से बाहर गई है, ग्यारह बजे आयेगी। शालिनी कॉलेज के लिए निकल गई है। मैं और तूं दो ही इस फ्लेट में हैं।'

'ओके' कहकर राजन ने कल की बाकी रही हुई सारी स्टंट की बात बता दी।

'संजू, कल हनीफ मेरे घर पर आया था। दद्दु ने उससे जितनी भी बात की वह मुझे पता लग गई है। दद्दु मुझे कहीं पर भी इन्वॉलव करना नहीं चाहते हैं। लेकिन तूं यदि साथ देता है तो 23 मार्च को हम अलीबाग चलते हैं। वैसे भी उस दिन sunday के हिसाब से exam नहीं होगी।

वहाँ फाइनल स्टेज पर कोई इश्यू आता है तो हम सॉल्व कर सकते हैं। दद्दु ने हनीफ पर सारा मामला छोड़ दिया है, लेकिन वह भी गेम खेल सकता है। दूसरी बात, हमारा कम्पीटीटर महाशय हकीकत का पता चलने पर भागने की कोशिश करे तो हम उसे पकड़ सकते हैं। यदि सब सही चलता है,तो हमें कुछ करने की जरूरत नहीं है, घूमकर वापस आ जायेंगे। बोल, तूं तैयार है?'

'दोस्त, कोई पूछने की बात है? लेकिन, हमें खुद की सुरक्षा का इंतजाम करना भी जरूरी है।'

'वो भी मैंने सोचकर रखा है। आज ही पूरा बुलेटप्रुफ सूट पर्चेज करके आते हैं।' राजन ने पूर्व से ही सोचा हुआ प्लान बता दिया।

'कब जायेंगे?' 'थोड़ी देर पढ़ाई करके, खाना खाकर चलते हैं।'

'ओके ..... लेकिन now study sincerely .....'

खाना खाने के बाद दोनों licenced amunition (gun) की दुकान पर गये। दोनों ने सबसे पॉवरफूल बुलेट प्रुफ सूट पर्चेज कर लिये। ट्रायल भी ले ली। साथ में उस बात का भी ध्यान रखा कि वह बहुत ज्यादा चुस्त (टाइट) ना हो। पैक कराकर दोनों बाहर निकले।'संजू, मेरा भी सूट तूं ही रखना। घर पर छुपाकर रखने की जगह तो है ना?'

'ओके मैं रख लेता हूँ ..... मेरे घर पर तलाशी नहीं ली जाती है, फिक्र मत करना .....'

'कुछ दिन छोड़कर, करीबन 15 मार्च से मैं रोजाना तेरे घर पर पढ़ने आऊँगा ..... अंडरस्टूड?' राजन ने आँख मारकर कहा। संजू ने हंसते हुए अंगूठा दिखाया।

****

उसी दिन रात 8.30 बजे खाना खाने के बाद राजन ने लक्ष्मीचंदजी से पूछ लिया 'दद्दु, हनीफ से मीटिंग कब होगी?'

'हाँ राजन, उससे आज ही मीटिंग हो गई। मैं तुझे कहने ही वाला था। अलीबाग वो consignment 28मार्च को आने वाला है।'

राजन ने मुस्कराकर कहा 'दद्दु, यू आर रियली ग्रेट ..... वो इतना जल्दी मान गया?'

'वो क्या, उसका बाप भी मानेगा। ठीक है ..... बाद में जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं मैं तुझे बताता रहूँगा।'

'दद्दु, वैसे तो मैं पढ़ाई में ज्यादा बिजी रहूँगा। फिर भी कभी कुछ इश्यु हो तो मुझे बताना।'

'श्योर माई डियर .....' हंसकर लक्ष्मीचंदजी ने जवाब दिया।

राजन को अपने कमरे में जाते देख लक्ष्मीचंदजी, रोशन और राजवी सभी प्रसन्न थे, भूत को अच्छी सीढ़ी पकड़ा दी, और राजन भी प्रसन्न था, उसका भी काम हो गया था। लेकिन, किसी को पता नहीं था कि भविष्य कुछ अजीब रिजल्ट ही देने वाला है।

क्रमशः

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक - 8

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

'गुड मॉर्निंग लक्ष्मीचंदजी' 'गुड मॉर्निंग हनीफजी ..... क्या बात है ..... सुबह-सुबह में ही आपने हमें याद किया?'

सुबह 8.00 बजे डाइनिंग टेबल पर ही हनीफ जी का फोन आने पर लक्ष्मीचंदजी ने आश्चर्य व्यक्त किया।

साथ में सावधानी से खड़े होकर अपने कमरे में चले गये।

'खुशखबर देनी हो तब समय नहीं देखा जाता ना!'

'फरमाइये जनाब! क्या खुशखबरी है?'

'लक्ष्मीचंदजी तीर निशाने पे लगा है।'

'मतलब?'

'कल दोपहर दो बजे आपकी ऑफिस में मेरी आपसे बातचीत हुई। उस वक्त दुबई में 12:30 बजे थे। लक्ष्मीचंदजी! आप आश्चर्य करेंगे ..... सिर्फ एक घंटे में ही दुबई का बुलियन मार्केट ऑल टाईम हाई पर चला गया। मैंने तो तब मेरे मित्रों से इस विषय में कोई बातचीत ही नहीं की थी। आपसे मिलकर मैं मेरे ऑफिस पर पहुँचकर प्लान बनाने लगा। करीबन साढ़े तीन बजे मैंने मेरे एक मित्र को फोन लगाया और उसने समाचार दिया 'हनीफ! तहलका मच गया है मार्केट में सिर्फ आधे घंटे में 300 दिरहाम गोल्ड बढ़ गया।' मैं समझ गया, मामला क्या है। मैंने उसे कहा 'शोएब! कल रात तक मैं दुबई पहुँच रहा हूँ। शांति से बात करते हैं।' लक्ष्मीचंदजी! हमारी बात हम जहाँ पहुँचाना चाहते थे वहाँ पहुँच चुकी है।'

'सही कह रहे हो। अभी ऑफ सीजन में मार्केट ऑल टाईम हाई जाने की और कौनसी वजह हो सकती है? ठीक है ..... लेकिन आप कैसे मैनेज करोगे?'

'लक्ष्मीचंदजी! उसकी चिंता आप मुझ पर छोड़ दो। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जायेंगे, मैं आपको अपडेट देता रहूँगा।'

'मगर एक बात आज से ध्यान में रहे, ऐसे Confidential matter का कॉल आपको अब मेरे Office hours में नहीं करना है। सुबह का यह समय चलेगा या शाम को 8.30 बजे से 10.00 बजे के बीच मुझे कॉन्टेक्ट कर सकते हो।' लक्ष्मीचंदजी ने थोड़ा रूककर कहा .....

'हाँ, कभी मिसगाईड करने वाला कोई मैसेज उन लोगों को भेजना होगा तब मैं मेरे ऑफिस से आपको कॉल करूँगा।'

'सही बात है, लक्ष्मीचंदजी! मैंने आपको इसी वजह से अभी फोन किया था।'

'ओ.के. ..... ओ.के. ..... ठीक है, बाद में मिलेंगे। खुदा हाफिज .....'

फोन कट करके लक्ष्मीचंदजी ने रोशन को अपने ही कमरे में बुलाकर हनीफ से हुई बातचीत बता दी। 'पापा! इसका मतलब साफ है कि राणे ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज के अलावा यह काम और किसी का नहीं हो सकता है।'

'तेरी बात सही है। अब मुझे और तुझे एक बात का ख्याल रखना पड़ेगा कि 23 मार्च तक जब मैं मेरी ऑफिस में बैठा हूँ तब रूटिन कार्य के अलावा ना हमें कोई चर्चा करनी है और ना ही इस विषय में कोई बातचीत। हाँ, एक टेण्डर भरना है, वो मैं मेरे ऑफिस में बैठकर ही भरूँगा और कभी उन लोगों को मिसगाईड़ करने के लिए हनीफ से जरूरी बातचीत भी अपनी ऑफिस से करूँगा।'

'ग्रेट पापा! आपने तो आगे-पीछे सब कुछ वेल प्लान करके रखा है।'

जवाब में लक्ष्मीचंदजी थोड़े मुस्कराये .....

****

दस दिन के बाद, 28फरवरी 2016.....

'कहाँ हो हनीफ जी?' ऑफिस से घर आकर रात 9:00 बजे लक्ष्मीचंदजी ने हनीफ को कॉल किया।

‘दुबई में बैठा हूँ।’

‘काम चल रहा है?’

‘सही चल रहा है। आपका काम बहुत बड़ा है। उधार माल पाने के लिए कई लोगों को जोड़ना पड़ रहा है।’

‘हनीफ जी ..... आप इस तरह लेंगे तो, शायद सामने वाले को शंका हो सकती है।’

‘सेठ जी ..... आप फिक्र मत करो ..... मैं अभी मेरी खुद की क्रेडिट पर माल ले रहा हूँ। भाव बढ़ने के कारण मुझे दिक्कत आ रही है। लेकिन अल्लाताला की मेहरबानी है ..... करीबन डेढ टन का कमीटमेंट हो चुका है।’

‘हनीफ जी ...... एक बात में आप निश्चिंत रहना ..... जब आप वह माल वापस लौटायेंगे तब वहाँ के मौजूदा मार्केट प्राईस के हिसाब से जो भी Loss होगा वह मैं आपको चूका दूँगा। शायद Loss की जगह आपको प्रोफिट ही होगा ऐसा मुझे अभी लगता है।’

‘सच बात है, सेठ्जी ..... आपके ऑफर के लिए शुक्रिया ..... लेकिन मुझे सेमीकंडक्टर्स, चीप्स और कम्प्यूटर स्पेयर्स के ऑरिजनल कागजात कब मिलेंगे?’

‘आप दुबई से अंदाजन कब तक कार्गोशीप को निकालेंगे?’

‘16मार्च को तो निकालना पड़ेगा।’

‘इतना जल्दी क्यों?’

‘सारा गोल्ड दुबई से नहीं चढ़ेगा। कुछ हमें मस्कत से भी चढ़ाना पड़ेगा।’

‘ठीक है, तो आपको 15 मार्च को सुबह वह कागजात कहाँ पहुँचाने हैं, वह मुझे बता देना।’

‘हाँ, मैं मैसेज कर दूँगा।’

‘और कुछ बात?’

‘जी नहीं’ ..... ‘खुदा हाफीज’ कहकर लक्ष्मीचंदजी ने कॉल कट किया।

‘रोशन! फ्री है तो जरा मेरे कमरे में आना .....’

‘हाँ, अभी आया .....’

रोशन के आते ही लक्ष्मीचंदजी ने हनीफ से हुई सारी बात बता दी।‘रोशन! उसे 15 मार्च सुबह हमें कम्प्यूटर स्पेयर्स वगैरह के कागजात (डाक्यूमेंट) पहुँचाने पड़ेंगे। वहाँ सागर अपना आदमी है, उसे बोल देना, समय से सब पहुँचा दे।’

‘हाँ, जरूर ..... उसे वह सब कहाँ पहुँचाना हैं?’

‘कुछ दिनों में वह हमें एड्रेस मैसेज करेगा। और हाँ ..... जर्मनी से वह सारा सामान हमें 15 मार्च से पहले मिल जायेगा ना?’ लक्ष्मीचंदजी पूरा काम पक्का करना चाहते थे।

‘दो दिन पहले बात हुई थी, कल कन्फर्म कर लूँगा।’

‘ठीक है ..... राजन क्या कर रहा है?’

‘वह तो पढ़ाई में बराबर लग गया है ..... कृतिका के ईमेल ने बहुत अच्छा काम किया।’

‘मैं जरा राजन को मिल लेता हूँ’ लक्ष्मीचंदजी कमरे से बाहर निकलने लगे, लेकिन रोशन के चेहरे पर रहे प्रश्न भाव को देखकर रूक गये ‘किसी को शांति से बिठाये रखने के लिए समय-समय पर संतुष्टि देना आवश्यक होता है .....’

****

‘क्या चल रहा है प्रिन्स?’ राजन के कमरे में प्रवेश करते ही लक्ष्मीचंदजी ने प्रश्न किया ..... राजन ने किताब से नजर हटाए बिना जवाब दिया ‘बोर्ड की एग्जाम के 17 दिन पहले स्टूडेन्ट का क्या चलता है दद्दु?’

‘अच्छा, तो हमारे राजा बाबू पूरे-पूरे किताब में डूब चुके हैं’ ..... कुछ सैकण्डस के लिए रूककर लक्ष्मीचंदजी बोले ‘मैं तो हनीफ से बातचीत हुई वह बताने के लिए आया था।’

राजन ने किताब साईड में रखकर बेसब्री से पूछा – ‘क्या बात हुई दद्दु?’

‘कार्गो शीप में वह माल ठीक 21 मार्च को निकल जायेगा। बीच समंदर में करीबन 24 मार्च को दूसरे जहाज से

आया हुआ माल एक्सचेंज हो जायेगा और नॉर्मल शेडयुल के मुताबिक 28मार्च को अलीबाग के समंदर किनारे पर शानदार तमाशा होगा।'

लक्ष्मीचंदजी की यह बात सुनते वक्त राजन को बड़ा गुस्सा आ रहा था 'मेरे आइडिया से काम करने पर भी ददु मुझे सही-सही नहीं बताते हैं' लेकिन अपने चेहरे पर उन भावों को छुपाते हुए राजन बोला 'सचमुच, ददु? यू आर रियली ग्रेट ...... शानदार प्लानिंग की है आपने .....' कुछ देर के लिए रूककर राजन वापस बोला - 'ददु, 28को सेटरडे है ..... मैं फ्री रहूँगा। आप और मैं दोनों अली बाग पहुँचकर लाईव तमाशा देखेंगे?'

लक्ष्मीचंदजी को पता ही था कि राजन की ओर से यह बात आयेगी। 'राजन्! ऐसा मत समझना कि स्पाई इक्वीपमेन्ट सिर्फ ऑफिस में ही लग सकते हैं। हम अभी से अली बाग का प्लान बनायेंगे तो चूहा पकड़ में नहीं आयेगा, छिटक जायेगा। अभी तो तमाशा देखने की बात मेरे और तेरे बीच में ही रख। वहाँ की, उस दिन की हर सैकण्ड की लाईव अपडेट लेने का मैं और कोई बंदोबस्त करवा दूँगा। हम यहाँ बैठे-बैठे ही लाईव देखेंगे।'

'ठीक है ..... अब मैं मेरी एक्जाम की तैयार जारी रखता हूँ और कुछ इश्यु हो तो मुझे बताना ..... ओ.के. .... ?'

राजन ने शोर्ट में बात निपटाकर ददु को रवाना किया।

****

'पापा! आप स्क्रीन ऑन करो ..... मार्केट में सेन्सेक्स बढ़ने पर भी हमारे शेयर्स तेजी से गिर रहे हैं। समझ में नहीं आ रहा है, यह क्या हो रहा है?'

29 फरवरी की सुबह में ही अपने कमरे से रोशन ने लक्ष्मीचंदजी को कॉल किया। एक मिनिट तक तो लक्ष्मीचंदजी भी सोचते रहे ..... कुछ जवाब नहीं दे पाये।

अचानक ..... 'राजन! मुझे क्लू मिल गया है। अपने Operation Mouse Cage की effect है .....'

'पापा! मैं कुछ समझा नहीं .....'

'बड़ी सिम्पल बात है। उन लोगों को यकीन है कि 23 मार्च के बाद हमारी कंपनी के शेयर बड़ी तेजी से गिरने वाले हैं, इसलिए वे लोग ही हमारे महँगे शेयर्स बेचकर प्रोफिट बुक कर रहे हैं। जब हमारे शेयर्स धड़ाम हो जायेंगे तब बड़े पैमाने पर वे खरीदेंगे। रोशन जरा चेक करवाना, बेचने वाला ग्रुप कौनसा हैं?'

'पापा! समझ गया। अभी ही चैक करके बताता हूँ।'

पाँच मिनिट में रोशन ने कॉल बैक किया।

'पापा! सच बात है आपकी ..... राणे ग्रुप के ही लोग हैं बेचने वाले .....'

'डॉन्ट वरी रोशन! ..... कुछ ही दिनों में उन लोगों को जवाब मिल जायेगा।'

****

12 मार्च, 2016.....

'गुड मॉर्निंग लक्ष्मीचंदजी ....' सुबह-सुबह में हनीफ ने लक्ष्मीचंदजी को फोन किया। 'गुड मार्निंग हनीफ जी ..... बोलो, क्या समाचार हैं?'

'दुबई का एड्रेस मैंने आपको मैसेज किया है। वहाँ अपने आदमी को भेजकर पेपर्स भिजवा देना।'

'जरूर ..... 15 मार्च को आपको सारे कागजात मिल जायेंगे और आपको जर्मनी से आया हुआ माल - कम्प्यूटर स्पेयर्स, सेमी कन्डक्टर्स वगैरह दुबई में कहाँ पहुँचवाना है वह आप मुझे बता देना। सीधा ही पहुँचवाना हो तो उसकी भी व्यवस्था हो जायेगी।'

'हाँ, वह सामान तो पोर्ट पर ही पहुँचवाना पड़ेगा। 18मार्च की रात तक दुबई के कौनसे पोर्ट पर वह पहुँचवाना है वह मैं आपको 16मार्च तक बताता हूँ।'

'ओके ..... ओके ..... और भी कुछ बात होगी तो कॉन्टेक्ट करता हूँ। लेकिन, आपका काम कहाँ तक पहुँचा?'

'काम पूरा हो गया है ..... 16मार्च के दिन दोपहर 12.30 बजे से पहले कार्गो शीप दुबई से निकल जायेगी ..... 17 मार्च को मस्कत से आधा माल लोड़ हो जायेगा और 19 मार्च को बीच समंदर में रात साढे ग्याहर बजे दूसरा जहाज उस जहाज को मिल जायेगा और हमारा मुख्य कार्य पूर्ण हो जायेगा। हाँ, बीच में कुछ गड़बड़ हुई तो बदलाव भी हो सकता है। मैं आपको समय-समय पर अपडेट देता रहूँगा।'

****

'हे लो, Can I speak Alibagh division deputy supritendent of police Mr. अजित म्हाडे?'

'Yes, Ajit Speaking आप कौन बोल रहे हो?' स्क्रीन पर unknown नंबर देखकर अजित ने पूछ लिया।

'आपकी जिंदगी बदल दे ऐसी एक इंफोर्मेशन देना चाहता हूँ।'

'मिस्टर! मैंने इंफोर्मेशन नहीं पूछी है, मैंने आपका नाम पूछा है।'

सामने वाले ने हँसते हुए का 'नाम में क्या रखा हैं?'

'अबे ओ, सोक्रेटिस की औलाद पहले तेरा नाम बता ..... मेरे पास फालतू टाईम नहीं है।'

'नाम तो आप ट्रयू कॉलर से भी जान लोगे .... पहले काम की बात सुन लो ..... 23 मार्च 2016 करीबन दोपहर बारह बजे के बाद कभी भी आपके अलीबाग बीच पर 3 टन सोना उतरने

वाला है।'

हा ..... हा ..... हा ..... ठहाके मारकर डी.एस.पी. हँसने लगा .....'क्या खूब ..... सुबह-सुबह से तुझे कोई मिला नहीं लगता है। आज तक अलीबाग के किनारे पर किसी भी स्मगलर का 100kg से ज्यादा माल नहीं उतरा है।'

'देखो, मि. म्हाडे .... इस हिन्दुस्तान में आज तक ऐसा बहुत कुछ हुआ है, जो कभी नहीं हुआ था। आपको मेरी बात पर यकीन करना या नहीं करना वो आपकी मर्जी ..... लेकिन आप बहुत बड़ी Opportunity को ठुकरा रहे हो। यदि आपने इस कंसाईन्मेन्ट (माल) को पकड़ा तो शायद आप आई.जी.पी. या ए.डी.जी. की पोस्ट तक पहुँच जाओगे। मैं अब दुबारा आपको कॉल नहीं करूँगा। इस मौके (Opportunity) को लपकने वाले और भी बहुत हैं। शायद आपकी तरक्की आपकी तकदीर को नामंजूर है।' इतना बोलकर सामने वाले ने फोन कट कर दिया।

अजीत म्हाड़े इस बंदे की डायलोगबाजी से बड़े प्रभावित हुए। पाँच मिनिट तो सोचते ही रह गये। जिस तरह गोल्ड की ड्यूटी बढ़ी है इसके हिसाब से 3 टन सोना आना भी मुमकिन है। फौरन उन्होंने अपना मोबाईल उठाया और पुलिस स्टेशन से बाहर निकलकर उस unknown number पर कॉल बैक किया। सामने वाले ने भी उसे तड़पाते हुए तीन बार फोन उठाया ही नहीं।

ट्रू कॉलर में चैक करने पर पता लगा कि यह फर्जी सिम है। वापस कॉल किया। सामने वाले ने उठाकर कहा - 'क्यों मिस्टर म्हाडे, आपके पास फालतू बातों को सुनने का टाईम है?'

'सॉरी ..... मि.! जो भी हो आप ..... आपकी दी हुई इंफोर्मेशन सच है लेकिन वह साबित करने के लिए आपके पास कोई प्रुफ है?'

'क्या बात है ..... आपके खबरियों से आप प्रुफ माँगते हो?'

'देखों, आप गलतफहमी मत करो ..... हमारे खबरी को हम अच्छे से पहचानते हैं ..... लेकिन आप तो अपना नाम भी बताने के लिए तैयार नहीं हो।'

'मि. म्हाड़े! आप बहुत भोले इन्सान हो। मेरे जैसा आदमी सत्यवादी हरिश्चंद्र है, ऐसा आपने कैसे मान लिया?'

डी.एस.पी. अजीत म्हाडे को ऐसा लगा कि किसी ने उसे चाँटा लगा दिया हो।

'नाम की पंचायती छोड़ो ..... यदि प्रूफ चाहिए तो आपके पुलिस स्टेशन से मुंबई के रास्ते पर ठीक 10 किमी. की दूरी पर एक खाली मकान है। रास्ते से वह भूत बंग्लों जैसा दिखता है। रोड़ की लेफ्ट साईड पर रहे उस मकान पर मेरे आदमी को आधे घंटे में मिल लेना। वर्ना, आपकी तकदीर आपसे रूठ जायेगी।'

'ओके ..... ओके ..... मैं अभी जा रहा हूँ ....'

फौरन पुलिस स्टेशन जाकर हवालदार गणेश बापट को तैयार करके, अपनी रिवॉल्वर खलेची में भराकर अजीत म्हाडे बाईक लेकर उस मकान पर पहुँचने के लिए निकल गये। सिर्फ पंद्रह मिनिट में वहाँ पहुँच गये। बाईक का मीटर ठीक दस किमी. का आंकड़ा दिखा रहा था। बाईक को खड़ी करके बायीं और देखते ही भूत बंगला नजर आया।

'गणेश! सावधान ..... कुछ भी हो सकता है' 'यस सर .....'

बड़ी सावधानी से कदम रखते हुए अजीत ने उस मकान में प्रवेश किया।

'कोई है? .....' दो बार आवाज लगाई, बाद में आवाज आई .....

'सीधे ऊपर आ जाओ ..... आपकी दायीं ओर से सीढ़ी है।'

ऊपर पहुँचते ही एक युवा उन्हें रूम में ले गया। वहाँ दो युवा पहले से बैठे थे।

'आईये डी.एस.पी. साहब!' हाथ मिलाने के लिए उस युवा ने हाथ बढ़ाया, लेकिन डी.एस.पी. अजीत ने हाथ जोड़कर नमस्कार ही किया।

'बैठिए' कुर्सी पर बैठते ही टेबल पर रखे लेपटॉप को खोल कर ऑन किया।

'मुझसे जिसने बात की थी वह कहाँ है?'

'उन्होंने ही हमें भेजा है .... यू डॉन्ट वरी ..... सबूत आपके सामने है .....' लेपटोप की स्क्रीन को डी.एस.पी. की ओर घूमाते हुए वह युवा बोला

स्क्रीन से दिख रहा था किसी ऑफिस का ऊपर से लिया हुआ टोप व्यू .....

नीचे टेबल दिख रहा था और एक सफेद बाल वाले सेठ किसी टोपी और दाढ़ी वाले मुस्लिम भाई से बात कर रहे थे। अजीत चौंक गया। 'यह तो हनीफ है?' उसकी जबान से नाम निकल गया।

'आप शांति से बैठो और इन दोनों की बात सुनो .....'

पूरी बातचीत सुनकर अजीत को यकीन हो गया कि बात 100 प्रतिशत सच्ची है।

'मगर यह वीडियो लिया कैसे? किसने लिया?'

'मि. म्हाड़े! काम से वास्ता रखो ..... आप 23 मार्च को अपनी टीम को लेकर अलीबाग के समंदर किनारे पर हाजिर रहो, आपकी जिंदगी बन जायेगी।'

'लेकिन इतना बड़ा कन्साईन्मेन्ट होगा तो उन लोगों की तैयारी भी तगड़ी हो सकती है।'

'पुलिस की नौकरी क्यों कर रहे हो? जाओ, घर पे चूड़ियाँ पहनकर बैठ जाओ।'

अजीत बौखला गया 'नहीं ..... नहीं

..... मेरा कहने का मतलब वो नहीं था। मैं तो कह रहा था कि बड़ी फोर्स लेकर हमें जाना पड़ेगा।'

'आपके अंडर में पुरा पुलिस थाना हैं। ज्यादा पुलिस की जरूरत हो तो क्या करना चाहिए वो मैं आपको बताऊँ क्या?'

'ओके..... ओके ..... धन्यवाद इंफोर्मेशन के लिए। लेकिन किसी को पकड़वाने में आपको इतना इंटरेस्ट क्यों हैं?'

'क्यों? देश सेवा करना कोई गुनाह है? तुम पुलिसवाले सा .... खा-पी के पड़े रहते हो। कोई भला आदमी इंफोर्मेशन देता है तो तुम्हें लगता है कि हमें दौड़ना पड़ेगा। सरकार की तनख्वाह मुफ्त में खानी हैं?' उस युवा ने डी.एस.पी. अजीत की हालत काटो तो खून न निकले ऐसी कर दी।

'जाओ अपना काम करो मेरा मुँह क्या देख रहे हो?' 'हाँ ..... हाँ ..... जाता हूँ' कहकर अजीत खड़ा हुआ और सीधा ही अपनी बाईक पर बैठकर रवाना हो गया।

****

16मार्च 2016रात 2:00 बजे दुबई से रवाना हुआ 'सुलतान' कार्गो शिप .....

सुबह 8:00 बजे ..... 'गुड मॉर्निंग लक्ष्मीचंदजी'

'गुड मॉर्निंग हनीफजी .... क्या खबर है?'

'रात 2:00 बजे जहाज रवाना हो चुका है।'

'अरे! 16मार्च तो आज हो रही है .... कल ही रवाना कर दिया?'

'लक्ष्मीचंदजी ..... 12:00 बजे के बाद दिन बदल जाता है कि नहीं?'

'ओह ..... सही है ..... सब खैरियत तो है ना?'

'अल्ला ताला की महरबानी है ..... आप बिल्कुल फिक्र मत करना ..... अब मस्कत पहुँचते ही आपको खबर करता हूँ।'

'हाँ ..... मगर और एक बार आपको ये ही समाचार मुझे देने हैं ..... ठीक 11.00 बजे ऑफिस में .....'

'हाँ ..... हाँ ..... समझ गया।' लक्ष्मीचंदजी ने फोन काट दिया।

****

16मार्च ..... सुबह 9:00 बजे, शंखेश्वर पेराडाइज के डाइनिंग टेबल पर नाश्ता पूरा करके राजन ने राजवी से कहा – 'मम्मा! अभी मैं संजू के घर पर जा रहा हूँ ..... दो दिन के बाद एक्जाम चालू हो रहे हैं।'

'ठीक है ..... कितने बजे तक आ जायेगा?'

'3:00 बजे तक .....' अपनी बैग उठाते हुए राजन बोला। 'खाना वहीं खाके आऊँगा।'

' Ok ..... all the best for preparation (तैयारी के लिये शुभकामना)'

मुस्कराकर राजन चल दिया ..... मन में ही बुदबुदाया 'चलो, अनजाने में ही सही, मम्मी ने आशीर्वाद दे दिये .....'

बाईक की आवाज आते ही संजू सामने लेने आ गया।

'हाय राजन!...''हाय! कैसी है तैयारी?'

'दोनों तैयारियाँ शानदार चल रही है .....'

'Now we don't want any disturbance' राजन ने कमरें में प्रवेश करते ही सूचना दे दी।

'मम्मा ..... बोर्ड की तैयारी शुरू ..... राजन आ गया है ..... Now don't disturb me ... 12:30 को हम दोनों डाईनिंग टेबल पर आ जायेंगे। तब तक leave us alone .....'

संजू की मम्मी दीपेन्द्र कौर बेटे की बात सुनकर बहुत खुश हुई

'पुत्तर, तू सी ऐसे ही स्टडी करता रहे ... मैं कभी तुझे डिस्टर्ब नहीं करूँगी ...'

'ओके' कहकर संजू ने राजन को विजयसूचक स्माईल दी .....।

'दोस्त! कहाँ तक पहुँचा अपना काम?'

संजू ने गूगल मैप खोला ..... 'देख अलीबाग जाकर सारे चारों स्पोट्स देख लिये। ऐसे माल लाने वाले जहाज करीबन उन्हीं जगह पर अनलोड होते हैं।'

'संजू ...... चार जगह है तो हमें पता कैसे लगेगा कि कहाँ जनाब पधारेंगे?'

'वो बात तो सही है ..... वो पता तुझे ही लगाना पड़ेगा, अपने दद्दु से ..... वरना वहाँ बैठकर हमें कद्दु ही खाना पड़ेगा।'

'दोस्त, वो ही तो प्रोब्लम है ..... मैं मेरे दद्दु को जितना भोला मान रहा था उतने है नहीं ..... मेरे सारे Spy Instrument उन्होंने fail करवा दिये हैं। अब क्या करें? .....'

राजन ने अपनी विवशता बता दी। लेकिन अचानक आईडिया मिलते ही वह उछल पड़ा।

'दोस्त!... शानदार आईडिया है ...'

'क्या?' 'दद्दु जाये घास चरने ..... अपन एक काम करते हैं ..... 23 मार्च सुबह 11:00 बजे से अलीबाग की पुलिस चौकी के बाहर फिल्डिंग भरते हैं। जैसे ही कुछ हलचल होगी ..... हमें लोकेशन अपने आप मिल जायेगी।'

'मगर पुलिस एक्टीवेट होगी ही, उसका कोई भरोसा थोड़े ही है?'

'अरे मेरे सरदार! ..... 3 टन गोल्ड की इनपुट आने के बाद पुलिस थाने में बैठकर माला फैरेगी?'

'क्या आईडिया है..... सारे प्रोब्लम सॉल्व' संजू ने राजन की पीठ थपथपाई।

'अब लोकेशन का टेन्शन छोड़, आगे का प्लान बता .....'

प्लानिंग सुनकर राजन खुशी के मारे उछल पड़ा ..... 'वाह मेरे सरदार ..... यह हुई ना बात .....!'

क्रमशः

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक – 9

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

16मार्च 2016.....

'हेलो ...... लक्ष्मीचंदजी ..... Good Afternoon ....'

अपनी ऑफिस में बैठे-बैठे सुबह 11 बजे से हनीफ के फोन का इंतजार कर रहे लक्ष्मीचंद जी ने घड़ी में समय देखा .... दो बज चुके थे .....

'बोलिए हनीफ जी ..... क्या समाचार है?'

'सेठजी, कल रात दो बजे दुबई से डेढ टन माल रवाना हो गया है।'

'हनीफ, बस डेढ़ टन ही रवाना किया? मैंने तो तीन टन की बात की थी।'

'सेठ जी ..... बाकी के डेढ़ टन मस्कत से कल रात दो बजे चढ़ जायेंगे। आप फिक्र मत करो .....'

'क्यों ..... मस्कत से डेढ टन?'

'सेठजी, ये कोई चने-मुरमुरे नहीं लाने हैं ..... सोना है सोना ...... और वह भी दो नंबर का .....'

'हाँ समझ गया ...... कोई बात नहीं ..... लेकिन तीन टन अलीबाग कब मिलेगा?'

'हमारा वादा पक्का है ..... ठीक 23 मार्च की रात को ग्यारह बजे कशिद बीच पर माल उतरेगा। वहाँ आपको ले लेना है। बाद में मेरा काम पूरा हो जायेगा।'

'एक मिनिट ..... मुझे लिख लेने दे .....' लक्ष्मीचंद जी ने पेड़ निकाला और लिखने लगे – कशिद बीच – अलीबाग

– 23 मार्च – रात को 11:00 बजे .....

'ओ.के. ...... और कुछ इनपुट हो तो बताना'

'खुदा खैर करे ..... सब कुछ प्लानिंग से हुआ तो मुझे वापस आपको कॉल नहीं करना पड़ेगा ..... ओ.के. ..... और कुछ काम?'

'नहीं ..... खुदा हाफिज .....' 'जी ..... खुदा हाफिज ......'

****

22 मार्च, 2016

'मम्मा! आज की एग्जाम बहुत अच्छी रही। कल wednesday का off है और उसके बाद Thursday को मेथ्स का पेपर है। तुझे तो पता है कि मेथ्स में Geometry और Trigonometry में मैं थोड़ा कच्चा हूँ। तो कल सुबह में 8.30 बजे ही नाश्ता करके मैं संजू के साथ Central Library, Churchgate निकल जाऊँगा। रात 10-11 बजे तक वापस लौटूँगा।' राजन ने रात 8:00 बजे डिनर लेते-लेते राजवी को सारी बात कह दी।

'पूरे दिन तैयारी में लगेगा? लगता है कि राजा बाबू इस वक्त मेरिट में आने वाले हैं।' राजवी ने मुस्कराकर कहा।

सूप का कटोरा पीकर राजन बोला – 'मम्मा! तेरा आशीर्वाद होगा तो मेरिट नहीं ..... टॉप करूँगा पूरे बॉम्बे बोर्ड में .....'

'ओके ...... बाबा ओके...... मेरे आशीर्वाद तो हमेशा तेरे साथ ही हैं।' राजवी ने राजन के बालों को सहलाते हुए कहा।

'मम्मा ..... कल दस बजे से हमारा फोन स्वीच ऑफ होगा। क्योंकि तुझे पता ही है कि सेन्ट्रल लाईब्रेरी में यदि अपना फोन बजा तो वो लोग अपनी बजा देते हैं।'

राजवी हँस पड़ी – 'ओके ..... बाबा ओके ..... मुझे सब पता है..... बताने की जरूरत नहीं है, लेकिन रात 11.00 बजे से लेट होने वाले हो तो मुझे बता देना'

'Sure मम्मा ..... ठीक है ..... अब मैं चलता हूँ तैयारी करने' डाइनिंग टेबल से उठकर राजन सीधा पहुँचा अपने कमरे में .....

****

'रोशन, शंखेश्वर दादा की कृपा से

सब सही चल रहा है।' लक्ष्मीचंदजी रात का खाना निपटाकर 22 मार्च की रात को 9:00 बजे रोशन के कमरे में बैठकर सारी बातें शेयर कर रहे थे। दरअसल, 18मार्च से चार दिन के लिए रोशन कोमर्स मिनिस्ट्री के साथ यूरोप के दौरे पर गया था। बहुत सारी dealing सही ढंग से होने के कारण उसे लग रहा था कि SGI का सिक्का अब जम जायेगा। इतने महीनों की मंदी का असर मानो साफ हो गया था।

'पापा, यह तो बहुत अच्छी बात है।'

'हाँ, 17 की रात को समाचार थे कि मस्कत से बाकी का डेढ़ टन सोना लोड हो गया और 19 की रात को 12.00 बजे सारा माल एक्सचेंज हो गया और वह गोल्ड वापस मार्केट में पहुँच गया। हनीफ ने भी बहुत संजीदगी के साथ अपना काम किया है। 23 की रात से पहले वह अपना Stock release नहीं करेगा। कल ही समाचार थे कि जहाज प्लानिंग के मुताबिक चल रहा है और वरूण देव भी शांत है, इसलिए कल रात तक तो जहाज अलीबाग पहुँच जायेगा।'

रोशन लक्ष्मीचंदजी की बात को बड़ी ध्यान से सुन रहा था।

'पापा! कल वहाँ से माल लाने के लिए किसे कहा हैं?'

'अपना Regular Importer है उसे ही कहा है।'

'लेकिन पापा, यह रेग्युलर काम नहीं है। वहाँ जो कुछ होने वाला है, उसका कोई प्लान किया है कि नहीं?'

लक्ष्मीचंदजी ने मुस्कराकर जवाब दिया 'बबलू वहाँ escort करेगा। जो भी इश्यु होगा उससे निपट लेगा और Continuous हमारे संपर्क में रहेगा।'

बबलू का नाम सुनकर रोशन ठंडा पड़ गया। क्योंकि लीगल और इल्लीगल सभी कामों में बबलू नामचीन था। कभी भी कोई कॉम्पलीकेशन होता है तब सेठजी और रोशन की जबान पर पहला नाम बबलू का आता था। उसके हाथ के नीचे सौ से अधिक बाहुबलियों की टीम हमेशा तैनात रहती थी।

'पापा! यह तो मैं यूं ही पूछ रहा था, बाकी आपकी प्लानिंग में से एक नेनोमीटर की गलती निकालना भी नामुमकिन है।'

'नहीं रोशन! ऐसा नहीं है। इंसान कितना भी होशियार या होनहार हो, उससे गलती हो सकती है। इसीलिए मैं तुझसे सारी बातें शेयर कर रहा हूँ। हो सकता है कि जिस पहलू पर मेरी नजर ना गई हो, उस पर तेरी नजर चली जाये।'

पिताजी की यह विनम्रता देखकर रोशन मन ही मन नतमस्तक हो गया।

****

23 मार्च, 2016 सुबह 8:00 बजे

'शीला! नाश्ता तैयार है?' अपने कमरे से आते ही राजन ने आवाज लगाई।

'हाँ छोटे बाबू, सब तैयार है .....' राजन के डाइनिंग टेबल पर आते ही शिला ने कहा – 'आज 8:00 बजे का आपका हुकुम था तो तैयार रखना ही था।'

'OK.....' कहकर राजन ने फटाफट नाश्ता शुरू किया।

राजवी राजन की समय की पाबंदी देखकर बहुत खुश हुई।

नाश्ता निपटाकर ठीक 8:30 बजे राजन घर से बाहर निकल गया।

इस ओर राजन निकल रहा था और डाइनिंग टेबल पर लक्ष्मीचंदजी और रोशन की एंट्री हुई।

'राजवी! आज तो उसकी एग्जाम नहीं है। इतनी जल्दी यह कहाँ जा रहा है?' लक्ष्मीचंदजी ने पूछ लिया।

'संजू के साथ मेथ्स की एग्जाम की तैयारी करने चर्चगेट की सेन्ट्रल लाईब्रेरी में जा रहा है। इतने सालों में पहली बार इतना Seriously Study कर रहा है राजन .....'

'राजवी! कुछ बच्चे ऐसे ही धुनी होते हैं। उन्हें एक बार बस धुन चढ़नी चाहिए, बाद में अपने आप सारा काम होता है।'

****

'चल जल्दी निकलते हैं। We are late for half an hour in our schedule (हम अपने कार्यक्रम में आधा घंटा लेट हो चुके हैं)' संजू से मिलते ही राजन बोला .....

अपनी स्कूल बेग को भरते हुए संजू ने कहा – 'जनाब! हम बड़े मिशन पर जा रहे हैं तब जल्दबाजी नहीं चलती है सब कुछ याद करके लेना पड़ता है। अरे! binocular तो भूल ही जाता .....' कहकर binocular (दूरबीन) डालकर संजू ने बैग की चैन बंद की।

'चलो, अब निकलते हैं' कहकर दोनों रूम से बाहर निकले।

'मम्मा कल मैंने कहा था ना .....' बात को बीच में ही काटते हुए दीपेन्द्रकौर ने कहा 'हाँ आप सेन्ट्रल लाईब्रेरी जा रहे हो। खुशी से जाओ। हाँ ..... लेकिन रात को बारह बजे से पहले घर पर आ जाना।'

'आंटी, आप फिकर मत करो ..... हम टाइम से वापस आ जायेंगे। वहाँ हमारे लिए गद्दी तकिये का कोई इंतजाम नहीं किया है।' तीनों हँस पड़े। बेग लेकर

दोनों रवाना हुए।

कुछ ही सेकण्ड्स में संजू की बाईक हवा से बातें करने लगी। राजन ने अपनी बाईक संजू के घर पर ही छोड़ दी थी।

'दोस्त! मैं आया तब पूरा बैग पैक हो गया था। सब कुछ बराबर भर लिया है ना?' 'यस! माय बॉस.....'

चर्चगेट की सेन्ट्रल लाईब्रेरी रास्ते में नहीं आने पर भी दोनों वहाँ पहुँचे। पहुँचकर दोनों ने अपने-अपने मोबाईल स्वीच ऑफ करके उसकी SIM निकालकर एक प्लास्टिक के कवर में डाली और कवर को डाला अपनी अंदर की जेब में ..... राजन और संजू की प्लानिंग बहुत पक्की थी। घर वाले कोई कैसे भी ट्रेस करे तो भी किसी को भनक नहीं लगनी चाहिए।

'तूने तो अपने बूलेट प्रूफ ड्रेस का ही कहा था, लेकिन मैंने कुछ ड्राई फ्रूट्स के पैकेट, स्पाई कैमरा और अंत में Binocular भी डाल लिया है। बोल, अब कुछ बाकी रहता है?'

संजू की संजीदगी से राजन प्रभावित हो गया .....

'एकदम सही....... एक स्पाई रिकार्डर तो मेरी जेब में भी है और मैंने तो तैयारी के लिए बुक्स भी ले ली है। वहाँ बैठे-बैठे टाईमपास कैसे करेंगे?' 'बहुत खूब .....'

दोनों अब अलीबाग के रास्ते पर थे। बहुत ही जल्दी उन्होंने पनवेल क्रॉस किया और करीबन सुबह ग्यारह बजे वे दोनों वहाँ के मैन पुलिस हेडक्वार्टर पर पहुँच गये। वहाँ अपनी पोजिशन लेकर पुलिस की चहलकदमी पर नजर लगाकर रखी।

शाम को करीबन चार बजे पुलिस हेडक्वार्टर के बाहर बड़ी वेन आई। 'संजू, गेट रेडी ..... तैयारी शुरू हो चुकी है।'

'राजन मैं एक बात कहना भूल गया था। मैं RFID ट्रेकर लाया हूँ। उस पुलिस वेन पर चिपका देता हूँ।'

'अरे लल्लु, पकड़ा जायेगा तो ......' राजन वाक्य पूरा कर उससे पहले ही संजू ने हँसते हुए कहा - 'तूं पहले देख।' कहकर जेब से RFID ट्रेकर निकाला। दोनों साईड गम वाले स्टीकर पर RFID ट्रेकर लगा हुआ था।

'देख, मेरे शूज पर ऐडी के हिस्से में मैंने एक सोल्यूशन लगाया है। RFID के आसपास जो स्टीकर है वह सोफ्ट गम वाला है।

वह मेरे शूज के साथ चिपका हुआ रहेगा और दुसरी साईड जो Exposed Part है वह बाहर की साईड रहेगा। इसका गम स्ट्रोंग है।

मैं पुलिस वेन को टेककर खड़ा रहूँगा और वेन के नीचे के हिस्से पर अपने शूज को लगाकर यह स्टीकर वहाँ ट्रांसफर कर दूँगा। स्टीकर वहाँ चिपक जायेगा और सोफ्ट गम लगा हुआ मेरा शूज फ्री हो जायेगा। बाद में यह वेन जहाँ पर भी जायेगी, खुद-ब-खुद अपना लोकेशन बता देगी।'

'मान गये गुरु तुझे.....' राजन ने संजू की पीठ थपथपाई 'लेकिन जनाब! यह जवाब दीजिए कि आपकी मोबाईल सीम जब जेब में रहेगी तो वेन का लोकेशन तेरा चाचा बतायेगा?'

संजू ने मुस्कराकर कहा 'मेरे मित्र, उसका भी बंदोबस्त मैंने कर रखा है। यह ले दूसरा Unknown Sim वाला फोन'...... अपनी जेब से दूसरा फोन निकालकर राजन को बताया।'

'अरे यार ..... तूं एक के बाद एक पत्ता खोल रहा है ..... लाजवाब!'

बात करके मौका देखकर संजू ने सोफ्ट गम वाला स्टीकर ओपन करके शूज पर लगाया और स्ट्रांग गम वाला दूसरा हिस्सा भी ओपन कर दिया। धीरे से वेन के करीब लपककर वेन को टेककर खड़ा रह गया और शूज को नीचे की साईड लगाकर पाँच सैकण्ड खड़ा रहा। हवालदार आकर देखे उससे पहले वह पैर को जमीन की ओर लेकर शांति से अपनी पोजिशन पर पहुँच गया। अंगूठा दिखाकर राजन को मैसेज दिया 'Operation is successful'

****

23 मार्च रात 8.00 बजे,

'Can I speak to comissioner of custom? (क्या मैं कमीश्नर ऑफ कस्टम से बात कर सकता हूँ?)'

'Yes, Comissioner of Custom Vijay Datt is speaking..... (हाँ मैं विजय दत्त कमीश्नर ऑफ कस्टम बोल रहा हूँ।)'

'सर! हमारी सुलतान कार्गोशीप नंबर - 3114, 15 डिग्री रास्ता भटक गई है। हम 10.30 बजे मुम्बई पोर्ट पर पहुँचने वाले थे उसकी जगह 11.00 बजे अब अलीबाग कशीद बीच पर पहुँचेंगे। प्लीज वहाँ की कस्टम ऑथोरिटी को आप इंफोर्म करना ता कि हमें कोई इश्यू ना आये।'

'O.K. please send your papers on email ID - custommumbai@gov.in..... (आप मुझे अपने कागजात इस ईमेल आईडी पर भिजवाओ)'

'यस सर, अभी ही भिजवाता हूँ।'

हनीफ के आदमी शोएब ने फौरन उस आईडी पर सारे पेपर्स भिजवाकर लक्ष्मीचंदजी के इम्पोर्ट एजेन्ट को कॉल किया। अभी-अभी बताई सारी बात उसने उसे भी बता दी। एजेन्ट ने कहा – 'Don't worry ..... मैं सेठ को खबर कर देता हूँ।' कट करके एजेन्ट ने कॉल लगाकर लक्ष्मीचंदजी को सारी सूचना दे दी।

लक्ष्मीचंदजी ने फौरन अलीबाग डिवीजन के Senior Supritendent of Police संतोष शिंदे को कॉल लगाया।

'Can I Speak to SSP Alibagh Mr. Santosh Shinde? (क्या मैं एसएसपी अलीबाग संतोष शिंदे से बात कर सकता हूँ?)'

'Yes Santosh Speaking'

'सर मैं Chairman of SGI लक्ष्मीचंद बोल रहा हूँ। हमारा SGI का माल लेकर सुलतान कार्गोशीप – 3114 दुबई से आ रहा था। वह रास्ता भटक चुका है और अब वह मुंबई पोर्ट की जगह अलीबाग रात 11.00 बजे कशीद बीच पर पहुँच रहा है।'

'OK. you inform comiss-ioner of custom'

'सर! वहाँ हमने इन्फोर्म कर दिया है। लेकिन वहाँ कोई हमारे एजेन्ट को परेशान ना करे इसलिए मैंने आपको कॉल किया है। Sir please do needful.....'

'Ok .... I will inform Dy. S.P. Ajit Mahade.....'

'Thank You Sir .....'

कॉल कट करके लक्ष्मीचंदजी ने बबलू को सावधान कर दिया। SSP ने Dy.S.P. को फोन किया।

'सर! आपको किसी ने गलत इंर्फोमेशन दी है। दरअसल, उसमें ऑफिशियल माल नहीं आ रहा है, उसमें स्मगल किया हुआ बहुत बड़ा कन्साइन्मेन्ट आ रहा है।' अजित ने अपनी सफाई दी।

'कैसी फालतू बात कर रहे हो!! स्मगलिंग का माल लाने वाला सामने से आपको इन्फोर्म करेगा?'

'सर! आप मेरे सीनियर है। आपको पता ही होगा कि ऑफिशियल के नाम से ही कितना अनऑफिशियल घुसता है अपने देश में .....'

'ओके ..... तुझे क्या इनपुट है?'

'सर! आप नहीं मानोगे, 3 टन सोना अलीबाग के समंदर किनारे पर रात को 11.00 बजे उतरने वाला है।'

'What?!!!' सतीश ने फौरन कॉल कट किया और अलीबाग के लिए निकल पड़ा।

****

अलीबाग के कशीद बीच पर पुलिसों का जमावड़ा हो गया था। रात के करीबन ग्यारह बजने की तैयारी थी और SSP संतोष शिंदे ने वहाँ एन्ट्री की।

दूसरी ओर सुल्तान कार्गो शिप से सिग्नल चालू हो गये थे। सुलतान कार्गो शिप से छोटी-छोटी लाईफ बोट में Computer spares वगैरह माल भर-भर कर कशीद बीच की ओर रवाना होने

लगा था। उस तरफ अजित म्हाडे ने पुलिस पैट्रोलिंग बोट सुलतान कार्गो शिप की तलाशी के लिए रवाना कर दी थी।

दूर खड़े-खड़े राजन और संजू Night vision Binocular आँखों पर लगाकर पूरा तमाशा देख रहे थे। उन दोनों ने बुलेट प्रुफ शूट पहन लिया था और सिर पर हेलमेट लगा दिया था।

SSP की गाड़ी पहुँचते ही सभी हवालदार पोजिशन में आ गये।

SSP संतोष गाड़ी से उतरते ही सभी ने सलाम ठोकी। DyS.P. भी स्वागत के लिए आगे आया।

'अजित! इनपुट किससे मिले थे?'

'सर Unknown Source था।'

'उस पर इनता भरोसा कर लिया तूने? और मुझे पूछा तक नहीं?'

'सर! वो क्या था .....'

'Don't speak lye ..... I understand ..... (झूंठ मत बोलो, मैं समझता हूँ)

यह क्रेडिट लेने के लिये आपने किया है, लेकिन आपका पूरा दाँव उल्टा पड़ेगा।' संतोष ने भड़ककर कहा .....

अजित बौखला गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूँ।

'और तूने Petrolling boat को cargo ship की तलाशी लेने किसे पूछकर भेजा? SSP के प्रश्न पर प्रश्न चल रहे थे और DSP के पास जवाब नहीं थे।

यह बात चल रही थी कि अचानक राजन की नजर एक सिटी होण्डा कार पर गई।

'संजू देख, उस कार में एक आदमी Binocular लगाकर पूरी घटना पर नजर रख रहा है। He is suspected ..... (वह शंकास्पद है) मैं वहाँ जाकर देखता हूँ। तूं यहाँ पर ही खड़ा रहना!'

'OK' राजन उस कार की ओर लपका। उस व्यक्ति ने कहीं पर कॉल लगाया और बात चालू की। राजन का नसीब अच्छा था, उसने खिड़की (Window) खुली रखी थी।

'सर! कुछ गड़बड़ लगती है। कार्गो शिप तो आ चुकी है लेकिन संतोष शिंदे और अजित की बहस चल रही है। लगता है अपने साथ धोखा हुआ है।'

'तूं थोड़ी देर रूक ..... पता लग जायेगा।'

'नहीं सर! ..... यदि कुछ नहीं मिला और SSP ने मुझे पकड़ लिया तो मेरी पत्रकारिता की कैरियर पर पूर्णविराम लग जायेगा।

सिर्फ किसी विडियो के आधार पर आपने पूरा ट्रेप बनाया है। लेकिन उसमें मैं और आप ही कहीं फँस न जाये। सर! मैं निकल रहा हूँ।' उसने सामने वाले का जवाब सुने बिना ही call cut किया।

राजन को यकीन हो गया कि यह आदमी ही बिचौलिया है। इसे यदि पकड़ लिया जाए तो चूँहा पिंजरे में आ जायेगा। लेकिन यह तो भाग रहा है। जल्दी उसको फोलो करना पड़ेगा।

राजन भागकर संजू के पास गया। संजू भी ईशारे से समझ चुका था। उसने बाईक स्टार्ट कर दी .....

क्रमश :

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक - 10

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मंजय

राजन दौड़ता हुआ बाईक तक पहुँचा ..... तब तक संजू ने अपना binocular bag में डालकर बैग की चैन बंद की और ड्राईविंग पोजिशन में तैयार हो चुका था।

'संजू! तेरा नया मोबाईल मुझे दे। मैं पीछे बैठकर GPS का Satellite mode on करके आगे का रास्ता देखता हूँ। उस गाड़ी को पहले आगे जाने दे ता कि पता लगे कि वह किस रास्ते पर जा रही है। बाद में हम उसे ओवरटेक करके स्पीड़ में आगे चले जायेंगे। आगे पत्थरों से रास्ता बंद करके उसे रोकना पड़ेगा।'

राजन ने अपनी बात पूरी की, इतनी देर में वह सीटी होन्डा कार कॉस्टल रोड़ की ओर आगे बढ़ी।

यहाँ राजन ने उस रोड़ को मोबाईल से देखना शुरू किया और संजू ने बाईक स्टार्ट कर दी।

'संजू! गुड लक ...... यह coastal road 20 km. तक सीधा ही जा रहा है। कोई रोड़ इससे जुड़ नहीं रहा है। Now hurry up ..... overtake him ..... संजू ने 120 की स्पीड पर बाईक भगाई।

इस ओर SGC का इम्पोर्ट एजेन्ट समुंद्र के किनारे पर (कशीद बीच पर) आ चुका था। वह भी अजित म्हाडे के सामने बहस में जुड़ चुका था।

'मिस्टर म्हाडे ..... आप संभालकर यह सारी पेटियाँ खुलवाना। कुछ भी टूट-फूट हुई या नुकसान हुआ तो जिम्मेदारी आपकी होगी। हवाएँ ठंडी चल रही थी, फिर भी अजित म्हाडे को पसीना छूट रहा था। Randomly पेटियाँ खोली गई, लेकिन एक से भी सोना नहीं निकला। जहाज की तलाशी लेने गई पेट्रोलिंग बॉट की ओर से भी क्लिन चिट मिल गई। उस वक्त बबलू भी अपने आदमियों को लेकर पहुँच गया। अजीत को यकीन हो गया कि वह बहुत बुरी तरह फँस चुका है। संतोष शिंदे से वह नजर नहीं मिला पा रहा था। कन्टेनर में माल लोड होने लगा था।

****

शंखेश्वर पेरेडाइज की घड़ी में बारह बज चुके थे। लक्ष्मीचंदजी बबलू से संपर्क में थे और राजवी टेन्शन में थी - 'अब तक राजन क्यों नहीं आया? ग्याहर बजे तो आ जाने वाला था।'

'राजवी! Cool ..... मैंने करतारसिंह को 10 मिनिट पहले ही सेन्ट्रल लाईब्रेरी रवाना कर दिया है। अभी पहुँचने की तैयारी में ही होगा। संजू के घर से भी सेम आंसर मिला है कि वे लोग सेन्ट्रल लाईब्रेरी गये थे।' रोशन राजवी को ढ़ाढ़स बंधवा रहा था। अचानक मोबाईल की घंटी बजी।

'बोल शिवांगी! क्या समाचार है?'

'सर! सुबह 9:00 बजे तक सेन्ट्रल लाईब्रेरी का लोकेशन राजन का मोबाइल दिखा रहा है। बाद में उसने disturbance टालने के लिये शायद स्वीच ऑफ कर दिया होगा। लेकिन, सर! मुझे एक बात समझ में नहीं आ रही है कि उसने अपने मोबाईल से सीम क्यों निकाल दी होगी?'

'व्हॉट? सीम निकाल दी थी?'

'हाँ सर, फोन स्वीच ऑफ होने के बावजूद यदि सीम फोन में ही है तो लोकेशन ट्रेस हो जाता है। सुबह 9:00 बजे के बाद उसका लोकेशन जीरो है। मैंने असीस्टेन्ट कमीश्नर को कॉल करके तलाश करने को कहा तब उनकी ओर से यह जवाब मिला है।'

अब राजवी के साथ रोशन भी टेंशन में आ गया। दोनों लक्ष्मीचंदजी से

मिलने अपने बेडरूम से बाहर निकले कि सामने ही वे मिल गये।

'रोशन, गुड न्यूज ..... पूरा माल कन्टेनर में लोड हो गया है और SSP अब Dysp की खबर ले रहे हैं। थोड़ी देर में पता लग जायेगा कि कौन जासूसी कर रहा था।'

'पापा! वह सब तो सही है, लेकिन राजन का कोई पता नहीं है।' रोशन ने लक्ष्मीचंदजी से सारी इंर्फोमेशन शेयर कर दी।

लक्ष्मीचंदजी भी अब टेंशन में आ गये। उन्होंने बॉम्बे पुलिस कमीश्नर सुशांत खेड़ेकर के पर्सनल नंबर पर कॉन्टेक्ट किया।

****

'संजू! यह जगह ठीक रहेगी! यहाँ बहुत सारे पत्थर भी हैं। करीबन दो मिनिट उसे यहाँ पहुँचने में लगेंगे।' बाईक को साईड करके स्टेण्ड पर लगाकर फौरन दोनों ने बड़े-बड़े पत्थर लेकर रोड ब्लॉक करने का काम चालु किया। रोड ब्लॉक होते ही संजू ने कॉलेज बैग से रिवॉल्वर निकाली। 'संजू, तूं रिवाल्वर लाया है?' 'हाँ ..... मगर असली दिखने वाली नकली रिवाल्वर है। बिना गोली यह धमाका करती है और धुआँ भी छोड़ती है।'

'संजू, तू सी ग्रेट हो।'

पत्थरों की लाईन देखकर सीटी होण्डा ने अचानक ब्रेक लगाई। संजू ने रिवाल्वर से हवाई फायर किया और राजन ने दरवाजा खुलवाया।

'Hands up मिस्टर पत्रकार ..... गलती से भी चालाकी की तो तेरा शरीर छलनी कर दूँगा!' संजू ने कड़कती आवाज से उसे पुकारा ....

दोनों हाथ खड़े करके पत्रकार बाहर निकला। राजन ने पूछताछ शुरू की 'क्या नाम है आपका?'

'विकास कानिटकर...' 'इस बीच पर जासूसी करने किसने भेजा था?' 'आपको गलतफहमी हुई है ... मैं घूमने के लिए निकला हूँ, जासूसी करने नहीं ...'

राजन ने संजू को ईशारा किया। संजू ने उसके पेट में पंच लगाया, वह बेण्ड हो गया।

'अबे ओ, सच सच बोल, वर्ना तेरी खाल उतार दूँगा।'

विकास किसी का नाम बोले उससे पहले एक रेन्ज रोवर गाड़ी सीटी होण्डा के पास आ गई। जोर से ब्रेक लगने की आवाज आई और उस गाड़ी में बैठे हुए एक शॉर्प शूटर ने विकास पत्रकार पर तीन गोलीयाँ दाग दी। अचानक ही हुए इस हमले से संजू के हाथ में रही हुई रिवाल्वर गिर गई।

पत्रकार वहाँ पर ही ढेर हो गया। रेन्ज रोवर में बैठे हुए चारों ने चेहरे पर नकाब बाँध कर रखा था। दो आदमी उसमें से उतरे। उसमें से एक के हाथ में ऑटोमेटिक गन थी। राजन और संजू ने हाथ खड़े कर दिये। दूसरे ने धमकी दी 'ओ मच्छर! ज्यादा शाणपट्टी की तो इसके जैसी ही तेरी हालत कर दूँगा। हमारा पीछा करने की कोशिश की तो भून

डालूँगा। यहाँ से सीधा तेरे घर पर जा! घर वाले तेरा इंतजार करते होंगे, तेरी अर्थी का नहीं ..... समझा .....'

बात चल ही रही थी, इतने में तीसरा आदमी गाड़ी से निकला और रोड़ पर रहे पत्थर हटाने लगा। पत्थर हटते ही हवा में फायरिंग करके सभी गाड़ी में बैठ गये और गाड़ी को वहाँ से आगे भगवाई।

चंद सैकण्डों में ही बन गई इस घटना को देखकर राजन और संजू भौंचक्के रह गये। मूवीज में ऐसी घटना दोनों ने अनेक बार देखी थी लेकिन नजर के सामने ही गोलियाँ चलती उन्होंने पहली बार देखी। अब तक उन्हें पता नहीं था कि Reel life और Real life में बहुत बड़ा अंतर होता है। संजू इस आघात से थोड़ा जल्दी बाहर आया .....

'राजन! जल्दी इसे उठाकर गाड़ी में डलवा। जल्दी इसे अस्पताल में भर्ती करना पड़ेगा।' दोनों ने उसे उठाकर गाड़ी की पिछली सीट पर डाला।

'राजन! मुझे ड्राईविंग आती है। तूं बाईक मेरी पीछे-पीछे ले ले। जल्दी ..... Hurry up.....'

'संजू! मुझे लगता है कि यह टपक गया है। पहले इसकी जेब से मोबाईल निकालकर ट्राई कर। कुछ इंफोर्मेशन मिल सकती है।'

'राजन! उसका यह वक्त नहीं है ..... जितनी ज्यादा देर होगी उतने इसके बचने के चांस कम हो जायेंगे .... और यदि यह बच गया तो बाद में सारी इंफोर्मेशन मिल जायेगी।'

'संजू ..... एक काम करते है, मैं इसके मोबाइल को लेकर ट्राई करता हूँ ..... तेरा लाईव लोकेशन ऑन रख, मैं तेरे पीछे-पीछे ही आता हूँ।'

'ले यह मोबाईल .....' कह कर संजू ने गाड़ी भगा दी। पत्रकार का मोबाईल राजन के हाथ में आ चुका था। फौरन उसने अलग-अलग आईडिया से उसका लॉक ऑपन करने की कोशिश चालू कर दी। इत्तेफाक से फोन खुल गया। खुद के मोबाईल में सीम डाल दी और फौरन उसके मोबाईल में रही हुई सारी इंफोर्मेशन क्लोन करके खुद के मोबाईल में ले ली। दोनों मोबाईल अपनी जेब में डाल दिये। बाईक चालू करके संजू के लाईव लोकेशन को फोलो करते हुए अपनी गति बढ़ा दी।

****

'लक्ष्मीचंदजी गुड न्यूज ..... राजन का लोकेशन मिल गया है।'

'सुशांत जी, कहाँ है मेरा पोता?' लक्ष्मीचंदजी आनंदित हो गये।

'अभी वह अलीबाग के बीच पर कोस्टल हाईवे से बहुत तेज गति से अलीबाग की ओर जा रहा है।'

अलीबाग का नाम सुनते ही लक्ष्मीचंदजी के हाथ-पाँव फूल गये।

'अलीबाग बीच?' 'हाँ, अलीबाग बीच .....'

लक्ष्मीचंदजी ने अपनी भावनाओं को फौरन नियंत्रित कर लिया।

'सुशांत जी, प्लीज वहाँ की ऑथोरिटी को उसका लोकेशन भेजकर जल्दी उसे पकड़ो ..... लेकिन मेरा पोता है, जरा ख्याल रखना।'

'Don't worry, लक्ष्मीचंदजी ..... उसे कुछ नहीं होगा।'

फोन कट करके रोशन को कहा 'रोशन! राजन को मैं और तूं जितना समझते हैं, वह उससे काफी आगे है! वह अलीबाग बीच पहुँच चुका है। मगर लोकेशन पकड़ में आ गया है, इसलिए ज्यादा फिकर की बात नहीं है। मैं बबलू को कॉल करता हूँ। वह थोड़ी देर पहले अलीबाग बीच पर ही था।'

लक्ष्मीचंदजी ने बबलू को राजन का नंबर और ईमेल आईडी भेज दिया। 'बबलू, जल्दी राजन का लोकेशन देखकर उसे फोलो कर .... पुलिस को भी मैंने सूचना दे दी है। वे लोग भी पहुँचते ही होंगे।'

****

संजू अलीबाग के सिविल अस्पताल में पहुँचा। फौरन उस पत्रकार को casuality वार्ड में लिया गया और गोली निकालने के लिए ओपरेशन चालू हो गया।

'आपका नाम लिखाओ और आईडी प्रूफ बताओ .....' अस्पताल के चीफ मेडिकल ऑफिसर (C.M.O.) ने संजू को साईड में लेकर पूछताछ शुरू की।

'सर! किसी की मदद करना अपराध है? इस तरह बचाने वाले से आप पूछताछ करेंगे तो किसी की जिंदगी बचाने के लिए कौन आगे आयेगा?' संजू ने CMO के सामने लेक्चर झाड़ दिया। CMO ने शांति से जवाब दिया - 'देख बेटा! यह हमारी रूटीन प्रोसीजर है। नॉर्मल रोड़ एक्सीडेन्ट में भी हमें फोर्मालिटीज पूरी करनी पड़ती है, तो यह तो गोलीबारी का मामला है। तूने यदि इसे बचाया है तो तुझे कुछ नहीं होगा, वह मेरी गारंटी है।'

संजू के चेहरे पर उभर रहे भावों को गौर से देखकर कहा - 'देख, मैं जो भी इंफोर्मेशन मांगूँ वह तूं सच-सच बता दे, वरना हवालात में तेरी हवा बंद हो जायेगी

और लातें खाने की नौबत आयेगी।'

संजू ने अपने दिमाग में पहले से स्टोरी बनाकर रखी थी। 'सर! मेरा नाम संजू है। यह ले लो मेरा आईडी प्रूफ .....' आईडी को देखकर CMO ने प्रश्न किया .....'आप तो मुम्बई के हो और अभी तो आपकी बोर्ड की एक्जाम चालू है। इतनी देर रात अलीबाग में क्या कर रहे हो?'

'सर! मैं मेरे फ्रेण्ड राजन के साथ अलीबाग बीच पर घूमने आया था। कई दिनों की एग्जाम से बोर हो गया था तो घूमने का प्रोग्राम बनाया था।' बीच बात में ही CMO ने उसे रोक दिया .....

'आपका फ्रेंड कहाँ हैं?'

'मैं पूरी बात कर लूँ बाद में आपको जो पूछना है वह पूछते रहना।'

'O.K. ..... Carry on ..... (आगे बोलो)'

'अलीबाग कोस्टल रोड़ पर चांदनी रात की मजा लेने के लिए हमारी बाईक लेकर निकले थे। हमने नजर के सामने इनको गोली लगती देखी। रेन्ज रोवर गाड़ी से कुछ लोग आये थे। इसकी गाड़ी को रोककर उन्होंने इसे बाहर निकाला और इस पर गोलियाँ चलाई।'

'आप उस जगह से कितने दूर थे?'

'हम करीबन 800 फीट की दूरी पर खड़े थे। इनकी गाड़ी गई और फौरन उसका पीछा करते हुए रेन्जरोवर गई। हम Binocular से प्रकृति का नजारा देख रहे थे और यह घटना हमें दिख गई।'

'रेन्जरोवर की नंबर प्लेट देखी आपने?'

'हाँ .....' कहकर संजू ने अपने मोबाइल से सेव किया हुआ उसका नंबर दिखाया। CMO ने वह नंबर नोट कर लिया।

'फिर क्या हुआ?'

'हमने बाईक भगाई और वहाँ पहुँचे तब तक तो ये लोग भाग चुके थे। हमने वहाँ पर हमारी बाईक खड़ी की। मुझे ड्राईविंग आती थी तो मैंने मेरे मित्र को कहकर इस भाई को पिछली सीट पर सुला दिया और ड्राईव करके मैं इसे ले आया। मेरा फ्रेण्ड बाईक पर बस पीछे आता ही होगा।' CMO को शंका हुई ..... बाईक अब तक तो आ जानी चाहिए थी। उन्होंने फौरन पुलिस हैल्पलाईन पर कॉल किया।

****

'मुझे जाने दो। मेरा फ्रेण्ड एक घायल को लेकर अस्पताल पहुँचा है।' राजन गिड़गिड़ा रहा था लेकिन अलीबाग की एंट्री पर ही नाकाबंदी करने वाली पुलिस पैट्रोलिंग टीम ने उसे पकड़कर रखा था।

SSP शिंदे की वैन आते ही सभी पुलिस अटेंशन में आ गई। शिंदे वेन से उतरे, सभी ने सैल्यूट किया।

'मि. राजन ..... डॉन्ट वरी ..... हम आपकी हैल्प करने आये हैं।'

'ऐय गणपत! छोड़ दे बच्चे को .....' SSP ने आते ही राजन का विश्वास जीत लिया। बात करते-करते ही उन्होंने

लक्ष्मीचंदजी को कॉल कर दिया।

'हैलो लक्ष्मीचंदजी! लो कर लो बात अपने पोते से'

राजन दद्दु का नाम सुनते ही बौखला गया। दस सैकण्ड के लिए तो कुछ बोल नहीं पाया

'हाँ ..... दद्दु ....' 'बेटा, तूं ठीक तो है ना .....'

'हाँ दद्दु ....' 'बेटा! तूं जल्दी वापस आ जा ..... यहाँ आने के बाद सारी बात करते है।'

'दद्दु, आई एम रियली वेरी वेरी सॉरी ..... मैं अभी ही वापस लौटता हूँ, लेकिन मेरा मित्र संजू भी मेरे साथ आया है। एक आदमी को गोली लगी थी, उसे फौरन अस्पताल में भर्ती करने गया है। वह अलीबाग की सिविल हॉस्पीटल में है। अभी उसे मेरी जरूरत होगी। लेकिन इन लोगों ने मुझे यहाँ रोक लिया है। प्लीज दद्दु, इन्हें कहो कि मुझे जाने दे .....'

'राजन, SSP को फोन दे .....'

'शिंदे साहब, प्लीज जान लो कि मैटर क्या है। Please help Rajan immediately ..... hospital पहुँचकर वापस मेरी बात राजन से करवाओ .....'

'ओके' शिंदे ने राजन को पूछकर संजू का लोकेशन देख लिया।

'गणपत .... तूं हमारे पीछे-पीछे इसकी बाईक ले ले और राजन, come on with me (मेरे साथ चल)'

राजन SSP के साथ वैन में बैठ गया और शिंदे ने घटना के विषय में पूछताछ चालू कर दी।

SSP की सवारी अस्पताल में पहुँची। अस्पताल का पूरा स्टाफ हाई अलर्ट मोड पर आ गया।

शिंदे का स्वागत करने CMO अनीस पेडनेकर सामने आया।

'Mr. Pedanekar मरीज की हालत कैसी हैं!'

'सन, वेन्टीलेटर पर रखा है। गोलियाँ तो निकल गई है लेकिन 99 प्रतिशत बचने के कोई चांस नहीं है।'

'उसके घर पर इंफोर्मेशन दे दी?'

'यस सर.... वे लोग दो घंटे में पहुँचेंगे।'

'संजू का स्टेटमेन्ट ले लिया?'

'यस सर .... रिकोर्डेड है।'

शिंदे ने रिकोर्डिंग अपने नम्बर पर मँगवा दी। दूसरी और राजन को खुद का दूसरा मोबाइल देकर घर पर बात करने के लिए कहा।

'दद्दु! अभी आपसे और कोई बात नहीं करूंगा। हमारी कल एग्जाम है। इन लोगों को कहो कि मुझे और संजू को जाने दे। दो घंटे में हम घर पहुँच जायेंगे।'

'राजन, तूं समझता है इतनी सिम्पल बात यह नहीं है। मैं मेरी ओर से ट्राई करता हूँ। तू शिंदे को फोन दे।'

दोनों की बात चल रही थी तब तक शिंदे ने संजू का पूरा स्टेटमेन्ट सुन लिया था।

'बोलिए लक्ष्मीचंदजी, क्या कहना चाहते हो?'

'सर! यह अमीर बाप की बिगड़ैल औलाद है। आप इन्हें माफ कर दो और जल्दी वहाँ से रवाना करो।'

'लक्ष्मीचंदजी! आप तो सारी बातें अच्छे से जानते हो। यहाँ संजू और राजन दोनों साथ में आये थे और पूरी घटना के दोनों चश्मदीद गवाह है, लेकिन दोनों के स्टेटमेन्ट में बड़ा अंतर है। आपकी मुश्किलें बढ़ सकती है।'

'सॉरी टू से ..... शिंदे साहब! आप करीबन 20 साल से पुलिस डिपार्टमेन्ट में हो, लेकिन मैं 40 साल से बिजनेस फिल्ड में हूँ। आप जो भी कहना चाहते हो वह सीधा-सीधा कहेंगे तो बहुत अच्छा रहेगा। मेरा और आपका ..... दोनों का टाईम बचेगा।'

'आप बहुत समझदार निकले लक्ष्मीचंदजी ..... आप शुरूआत करो, बाद में मैं बताता हूँ।'

'आप अभी इन दोनों को मेरे घर पर छोड़ दो। कल सुबह ग्यारह बजे SGC Corporate Park में आ जाना। वहाँ सारी व्यवस्था रखी है चाय-पानी नाश्ते की ..... ओके?'

शिंदे ने लक्ष्मीचंदजी के बारे में पहले बहुत कुछ सुना था मगर इस तरह उन्हें सुनने का मौका उसे पहली बार मिला था।

'ठीक है, अभी ही उनको भेजने का इंतजाम करवाता हूँ।'

'सर! राजन को फोन देंगे?' लक्ष्मीचंदजी की आवाज बहुत वजनदार थी। ना कहने की ताकत SSP में नहीं थी।

'राजन, बाईक एक हवालदार लेकर आ जायेगा। आप दोनों को सीधा घर पर आना है। संजू को भी अपने घर साथ ही लाना है। मैं उसके घर पर बात कर रहा हूँ।' 'ओके. दद्दु ....'

दस-पंद्रह मिनिट में शिंदे ने सारी फोर्मालिटिज पूरी की। अचानक वे CMO के पास आये 'Mr. Pednekar .....विकास का मोबाइल फोन किसके पास है?' 'सर ! यह काम हमारे दायरे में

नहीं आता है। हमने उसे OT में लिया तब उसकी जेब में मोबाइल नहीं था।'

शिंदे फौरन संजू के पास पहुँचा 'संजू, विकास का मोबाइल तूने देखा?'

राजन वहाँ पर ही खड़ा था .... 'सर! हमने जब इसे उठाकर गाड़ी की पिछली सीट पर डाला था तब उसकी जेब से मोबाइल गिर गया था। वह मैंने उठा लिया था। लीजिये उसका मोबाईल' राजन ने शिंदे के हाथ में मोबाईल थमा दिया।

शिंदे ने फौरन अपने PA को वह मोबाईल देकर सूचना दी 'इसे साईबर एक्सपर्ट के पास भेज दो और कल सुबह तक पूरी इंफोर्मेशन मुझे चाहिए।' 'यस सर.....' कहकर PA ने वह मोबाइल ले लिया।

'चलो, अब चलते हैं .....' संजू और राजन शिंदे की बताई हुई गाड़ी में बैठ गये।

इस ओर लक्ष्मीचंदजी ने संजू के घर पर बात करके उनके परिवार वालों को आश्वस्त कर दिया। रोशन और राजवी को आराम करने के लिए कहकर खुद अपने कमरे में सोने के लिए चले गये। लेकिन नींद कहाँ से आये? राजन की गाड़ी को कैसे पटरी पर चढ़ाऊँ? उसी को सोचते हुए उनकी नींद हराम हो गई। एक डायरी में भविष्य का प्लान वे लिखने लगे।

क्रमशः

मुख्य आधारस्तंभ

पू. आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय उदयवल्लभसूरीश्वरजी म.
की प्रेरणा से एक सद्गृहस्थ, अहमदाबाद

आधार स्तंभ

• प्रणवभाई, सूरत • एक सद्गृहस्थ, सूरत

• पू. आचार्यदेव श्री वरबोधि सूरि म. के संयम जीवन के 50 साल
और पिता गुरुदेव पन्यास श्री कैवल्य बोधि वि.म. के 41 साल के संयम जीवन की
अनुमोदनार्थ पं. श्री पद्मबोधि वि.जी.म.सा. की प्रेरणा से गुरु भक्त परिवार

• सूरजमल कान्ता बाई गोटावाला परिवार - भवानीमण्डी
चन्द्रशेखर - किरण बाला, रूपल - सौरभ, आलीशा - अंकुर, दृष्टि - पारस

• भामाशाह श्रीमान दीनदयाल जी जैन, महेश - सीमा, नमन, लक्षित

• श्री महावीर प्रसाद जी, मनोज जी, सुनील जी, तालचिडी वाले, हिंडौन सिटी

• शान्ता बहन वाडीलाल शंभुलाल वोरा, जिज्ञा-प्रविण, जोली-नितिन, भावि, महेक,
आदीश, आरना, नयसार, बेटी रसीला, अलका, लता, घाटकोपर (कल्पतरु औरा)

श्री कल्पतरु औरा जैन संघ - घाटकोपर

श्री वाधवा जैन संघ- घाट कोपर

• सेठ श्री कान्तिलाल मणिलाल शाह, कीर्तिभाई-बीना, जिनेश- फोरम घाटकोपर

• मातुश्री पुष्पाबहन चन्दुलाल एम. शाह, कोंढ-सुरेन्द्र नगर वर्त. में घाटकोपर

• श्री धर्मेश भाई जयसुख भाई देसाई, घाटकोपर

• धनजी दामजी छेड़ा - पंकज, छेड़ा परिवार घाटकोपर

• श्री सुपार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे

पू.मु. श्री मग्नशेश्वर वि.जी, पू. मु. श्री पूर्णशेखर वि.जी, पू. सा. श्री तीर्थध्यान प्रभा श्रीजी म.सा.
की प्रेरणा से मातु श्री बेबीबाई वनेचंद जी बामणिया परिवार, दावणगेरे (मरुधर में सीलधर)

अर्हम् मोबाइल दावणगेरे (श्री गौतम, जयन्तीलालजी, पूनम, मेहेक, तन्वी)

एक गुरुभक्त परिवार, दावणगेरे

कल्पेश विपुल विशाल भाई - स्व.कलाबाई रसिकलाल शंकर लाल जी परिवार चौहाण - बरलूट- दावणगेरे

नरेन्द्र कुमार ओटमल कालन्द्री, दावणगेरे

रसिकलाल शंकरलाल जी परिवार, दावणगेरे

एक सुश्राविका - दावणगेरे

मोहन लाल जी कटारिया, पालीवाले - दिवेश-किशोर-चंदन (देवीचंद जी)

रमण लाल जी मयाचंद जी, दिनेश कुमार, विजय कुमार, मनोज कुमार, संतोष, संयम,
मोक्षित, दर्शन, श्रेयांस, जैनम् दावणगेरे

पटियात साहेबचंद, सोहनराज, बाबूलाल, राजवीर,
लक्ष्य, हर्ष बेटा-पोता, वच्छराज जी धूड़ाजी (मरुधर-धाणसा, वर्तमान, चित्रदुर्गा)

महासंग्राम

महाभारत : कलियुग का ......

❑ ले. धर्मजय

भविष्य का प्लानिंग शुरू ही किया था और लक्ष्मीचंदजी को महत्त्वपूर्ण काम याद आ गया। उन्होंने अपनी घड़ी में देखते हुए इन्टरकोम पर बच्चुसिंह से बात की- 'बच्चुसिंह, अभी एक बज रहे हैं। राजन और संजू को अलीबाग से एसएसपी शिंदे पुलिस वेन में लेकर आ रहे हैं। मैं तुझे एसएसपी का नंबर सेंड करता हूँ। तूं उन्हें मेरे नाम से बता देना कि दोनों को ताज होटल पर उतार दे। ठीक ढ़ाई बजे उन दोनों को ताज होटल से लाने के लिए तुझे वहाँ पहुँचना है। शिंदे को बोल देना कि सायन क्रॉस होते ही वे तुझे सुचना दे दे। बातचीत में कोई कॉम्पलीकेशन आये तो तूं मुझे फौरन कॉल करना ..... ओके?' 'जी साहब ...... अभी ही बात कर रहा हूँ।'

लक्ष्मीचंदजी का प्लान फुल प्रूफ था। रात के ढाई-तीन बजे पुलिस वेन खुद के घर के बाहर खड़ी रहे ऐसा वे नहीं चाहते थे।

पाँच मिनिट के बाद लक्ष्मीचंदजी ने बच्चूसिंह को वापस कॉल किया। 'बात हो गई बराबर?' 'जी साहब! कोई कॉम्पलीकेशन नहीं है।'

'बच्चुसिंह उन दोनों को ताज से पिकअप करते ही तुझे मुझे कॉल करना है।'

'जी साहब! मगर, इतनी देर रात आपको क्यों जगाऊँ? वे दोनों आकर सो जायेंगे।'

'बच्चू ..... Dont argue (दलील मत कर) just follow my order ...... (मेरी बात का सिर्फ अमल कर)'

'जी साहब .....' बच्चू सिंह हैरान था। मालिक करीबन ग्यारह बजे से टेन्शन में थे, लेकिन इतनी देर रात को जगाने की बात सुनकर उसे लग रहा था कि मामला बहुत बड़ा है।

*****

नींद आये एक घंटा ही हुआ था कि लक्ष्मीचंदजी का मोबाईल बजा। 'बोल बच्चूसिंह' 'साहब! राजन और संजू को लेकर ताज होटल से मैं निकल चुका हूँ।' 'ओ.के.' कहकर लक्ष्मीचंदजी ने फोन कट किया।

शंखेश्वर पैरेडाइज की एन्टिक वॉल क्लॉक में तीन के डंके बजे और दो पराक्रमी युवाओं ने घर में प्रवेश किया।

'पधारिए ..... पधारिए ..... शहजादे ..... बड़ा काम करे आये हो।' लक्ष्मीचंदजी के अंदाज से राजन और संजू दोनों शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे।

'कुछ खाया-पीया? कि सुबह के भूखे हो?'

'दद्दू ..... अभी रास्ते में ही शिंदे जी के साथ बराबर नाश्ता करके आ रहे हैं।'

'ठीक हैं ..... बैठो दो मिनिट .....' आलीशान ड्रॉईंग रूम के सोफे पर बिठाकर लक्ष्मीचंदजी ने बात शुरू की।

'देखो ..... अभी तीन बजकर पाँच मिनिट हो रही है। तुम दोनों थके हुए हो और कल सुबह 11.00 से 2.00 बजे आपकी मेथ्स की अंतिम परीक्षा है। आप दोनों ने Exam preparation तो पूरी कर ही ली होगी। शांति से सुबह 8.00 बजे जगाऊँगा। फ्रेश होकर नाश्ता करके आप दोनों एग्जाम के लिए चले जाना। करतारसिंह आप दोनों को छोड़ने और लेने आ जायेगा। आप दोनों को वापस घर पर ही आना है।' संजू को साथ-साथ में सूचना दे दी 'संजू! तेरे मम्मी-पापा से मेरी बात हो गई है। कल शाम तक तूं मेरी कस्टडी में है ..... ओके ......?'

संजू लक्ष्मीचंदजी के रूआब के सामने चूं भी नहीं कर पाया 'हाँ अंकल ...... sure'

'राजन् और संजू! आप से मैं सारी जानकारी कल दोपहर साढ़े तीन बजे इसी जगह पर लूँगा। तब तक तो आपका लंच भी निपट जायेगा। ओके? .....' 'हाँ

दद्दु'.....

'तब तक दोनों को गुड नाईट.....'

*****

'सर! एस.एस.पी. शिंदे आ गये हैं, भेज दूँ ऑफिस में?' कृतिका ने पूछा ..... लक्ष्मीचंदजी ने घड़ी की ओर देखा। बराबर ग्यारह बज रहे थे।

'send him ..... (उन्हें भेज दो)'

लक्ष्मीचंदजी की ऑफिस में Spy equipment वाला फर्नीचर ही लगा था। इस लिये वे ग्यारह बजे से पूर्व ही रोशन की ऑफिस में आ चुके थे।

'welcome Mr. Shinde ...... बैठिए.....'

'थैंक यू लक्ष्मीचंदजी .....'

'इट्स ओके ..... आपने भी तो राजन को मेरे घर तक सही-सलामत पहुँचाया ..... आपका धन्यवाद .....'

'वो तो मेरा फर्ज था सर .....' शिंदे लक्ष्मीचंदजी के एस जी कॉर्पोरेट पार्क में पहली बार ही आया था। रोशन की ऑफिस की हर दिवार लक्ष्मी जी की रोशनी का बयान कर रही थी। एस. जी. कोर्पोरेट पार्क की चकाचौंध से शिंदे की आँखे चौड़ी हो गई थी।

'पत्रकार को कैसा है?' लक्ष्मीचंदजी ने प्रश्न पूछा तब शिंदे लक्ष्मीचंदजी की संपत्ति के वशीकरण से बाहर आया।

'हाँ ..... हाँ ..... वह बेचारा तो सुबह 5.00 बजे ही शांत हो गया।'

'बहुत बुरा हुआ' ..... 'लेकिन, लक्ष्मीचंदजी, बोर्ड की एग्जाम सर पर खड़ी है तब किसी भी स्टूडेन्ट को इस तरह रात बारह बजे बीच पर घूमता हुआ मैं मेरी जिंदगी में पहली बार देख रहा हूँ।' शिंदे ने बिछात करने का काम शुरू कर दिया।

'शिंदे साहब, मुझे लगता है कि अभी सन् 2016 चल रहा है लेकिन आपका दिमाग सन् 1916 के समय से बाहर नहीं निकला है। हाँ ..... वह ऐसे भी समय में घूमने चला गया और हमें पता भी नहीं लगा वो हमारी गलती है। लेकिन, मुझे पक्का पता है कि पत्रकार के मर्डर से इन दोनों का बिल्कुल कोई भी लेना-देना नहीं है।'

'ऐसा आप कैसे कह सकते हो लक्ष्मीचंदजी .....?'

'देखो, मैं अभी आपसे बहस करने की स्थिति में नहीं हूँ। क्योंकि वे रात को तीन बजे आये थे और मैंने कोई लंबी-चौड़ी बात किये बिना ही उन्हें सुला दिया था और अभी वे दोनों बोर्ड की अंतिम एग्जाम देने के लिए गये हैं। लेकिन, आपके पास पत्रकार का मोबाईल फोन तो आया ही होगा। आप तहकीकात करो .... आपको सब पता लग जायेगा।'

शिंदे लक्ष्मीचंदजी की बात सुनकर बहुत प्रभावित हुआ, लेकिन खुद के चेहरे पर भावों को छुपाने में भी वह माहिर था।

'हाँ, फोन तो मिला है, वह साईबर एक्सपर्ट को दिया है। आज रात तक रिपोर्ट आ जायेगी।'

लक्ष्मीचंदजी की एक-एक सेकण्ड लाखों रुपये की थी।

'तो आपको रिपोर्ट आने के बाद चाय-पानी नाश्ता करना है कि अभी ही करना है?' लक्ष्मीचंदजी सीधे ही बात पर आ गये।

हकीकत में शिंदे के पास सारी इंफोर्मेशन साईबर एक्सपर्ट की ओर से आ चुकी थी। उसे पता था कि रिपोर्ट आने के बाद भूखा ही मरना पड़ेगा। अभी तो कटिंग चाय भी नसीब हो जायेगी।

'लक्ष्मीचंदजी ..... आप नाराज क्यों हो रहे हो?'

'I have only one minute ..... you tell me your figure otherwise get lost ...... (मेरे पास सिर्फ एक मिनिट है ...... आप अपना आंकड़ा बताओ वरना दफा हो जाओ यहाँ से .....)'

लक्ष्मीचंदजी के तेवर देखकर शिंदे चौंक गया।

'देखो, आपका टाईम बिगाड़ने का मेरा कोई उद्देश्य नहीं है .....'

'only 50 seconds' 'अरे! इस तरह थोड़ी बात होती हैं?'

'only 40 seconds' रोशन ने लक्ष्मीचंदजी का ऐसा स्वरूप पहलीबार देखा .....

'इस तरह एक Senior supretendent को तेवर दिखाना भारी पड़ सकता है लक्ष्मीचंदजी.....'

'only 25 seconds' लक्ष्मीचंदजी की आवाज और बुलंद हो गई।

'सर 20 लाख रु. दे दो.....' शिंदे ने सरेंडर कर दिया

'ओके...'

लक्ष्मीचंदजी ने कृतिका से इन्टरकोम पर बात कर दी ..... 'Send 20 in my office.....' 'Yes sir.....'

20 सैकण्ड के भीतर 20 लाख रु. केश शिंदे के हाथ में आ गये।

'थैंक्स' कहकर शिंदे खड़ा हुआ।

'कृतिका ..... अपने कैफेटेरिया में इन्हें नाश्ता करा दो।'

'नहीं ..... नहीं..... उसकी कोई जरूरत नहीं है।' शिंदे ने formality की .....

'देखो शिंदे साहब ..... अभी जो चाय-पानी नाश्ता हुआ, वो तो आपकी तिजोरी का हुआ .... आपके पेट से

नाइन्साफी क्यों?'

शिंदे, रोशन और कृतिका सभी हँस पड़े .....

शिंदे रवाना हुआ और लक्ष्मीचंदजी ने रोशन से कहा 'रोशन आज से मैं तेरी ऑफिस में बैठूंगा और मेरी ऑफिस में सब कुछ बदल जायेगा ..... रिनोवेशन के बाद ही वहाँ बैठूँगा।' रोशन समझ गया।

****

ठीक ढाई बजे लक्ष्मीचंदजी के साथ-साथ राजन और संजू डाइनिंग टेबल पर आ चुके थे।

'कैसी रही लास्ट एग्जाम?' 'दद्दु, उम्मीद से काफी बेहतर .....'

'गुड ..... वेरी गुड ..... अब तो टेन्शन फ्री होकर मस्ती से खाना खाओ ......'

टेन्शन के मारे संजू और राजन दोनों सुबह में ढंग से नाश्ता नहीं कर पाये थे, इसलिए भूख भी बड़ी जोरों से लगी थी। दूसरी ओर हलवाई वगैरह सारे कर्मचारियों को इन लोगों की फेवरेट डीश बनाने की सूचना हो गई थी।

ठीक साढ़ेतीन बजे लक्ष्मीचंदजी के साथ राजन और संजू की मिटिंग शुरू हुई।

'राजन! मैंने तो तुझे 28मार्च की डेट दी थी, तूं 23 को ही अलीबाग कैसे पहुँच गया? सच्ची इंफोर्मेशन तुझे कहाँ से मिली?'

राजन को कल से पता था कि यह प्रश्न जरूर आयेगा। लेकिन इस प्रश्न का अलग जवाब ढूँढ़कर तैयार रखने का उसे समय ही नहीं मिला था। उसे वह भी पता था कि दद्दु रिमाण्ड पर लेने वाले हैं। थोड़ी भी चूक हुई तो एक चाँटा गाल पर रसीद हो जायेगा।

'वो क्या था .....' बौखलाया हुआ राजन कुछ अलग जवाब दे उससे पहले ही लक्ष्मीचंदजी ने कड़कती आवाज से फिर पूछा 'राजन, इंफार्मेशन कहाँ से मिली?'

राजन ने सारी बात सच-सच बता दी।

'देख लिया ना तूने जासूसी करने का परिणाम? तेरी इस गलती के कारण 20 लाख रू. चुकाने पड़े है हमें .... और चूँहा भी ऐन वक्त पर हाथों से निकल गया। operation mouse cage failed .....'

'नहीं दद्दु! चूहे को मैं मेरे मोबाईल में पकड़कर लाया हूँ।'

'व्हाट?.....' लक्ष्मीचंदजी को सुखद झटका लगा ..... 'मोबाइल में .....?'

'हाँ दद्दु ..... अब हम आपको पूरी रियल स्टोरी सुनाते हैं .....'

दादा-पोते की बात राजवी दूर से सुन रही थी, वो भी नजदीक आ गई ..... लक्ष्मीचंदजी की उसने इजाजत माँग ली .....'हाँ ..... हाँ .... आप भी सुनो अपने बेटे के पराक्रम .....'

राजन ने बुलेट प्रूफ सूट की खरीद की, वहाँ से लेकर घर वापिस आये तब तक की सारी बातें बता दी। लक्ष्मीचंदजी ने आँखें मूँद कर सारी बातें ध्यान से सुनी ..... राजन और संजू की परफेक्ट प्लानिंग सुनकर वे बहुत खुश हुए लेकिन दिल के भावों को चेहरे पर आने से प्रतिबंध लगा दिया था। ..... राजवी की आँखे इन दोनों की बातें सुनकर बार-बार चौड़ी हो रही थी।

'दद्दु! इस मोबाईल में पत्रकार विकास की सारी इंफोर्मेशन है। एक बात कहना भूल गया ..... मेरी जेब में मैंने स्पाई रिकार्डिंग वाली पेन ऑन रखी थी। पूरी घटना और दुर्घटना इसमें रिकार्डेड है। ..... आपको सबूत के रूप में भी काम लग सकती है।' लक्ष्मीचंदजी ने वो पेन मंगवाई और लैपटाप में डेटा को ट्रांसफर करके सभी देखने लगे।

लक्ष्मीचंदजी हर एक मूवमेंट को ध्यान से देख रहे थे और राजवी अचंभित होकर देख रही थी। पत्रकार पर हुई फायरिंग को देखकर सभी के मुँह से 'आह' निकल गई। बीच में ही रिकार्डिंग को रोककर लक्ष्मीचंदजी ने राजन और संजू को बताया 'आज सुबह यह बेचारा शांत हो गया।' दोनों सुनकर मायूस हो गये। 'हमारी वजह से बेचारा इस दुनिया से चला गया' इस अपराध बोध से दोनों की आँखे झुक गई। रिकार्डिंग आगे चलाया ..... संजू की परिपक्वता को देखकर लक्ष्मीचंदजी प्रसन्न हुए। उन्होंने सारा डेटा खुद के पास सुरक्षित कर लिया।

'देख, राजन और संजू! भले ही हमारा operation mouse cage successfull हुआ, लेकिन एक व्यक्ति की इसमें बलि चढ़ गई वह बात हमें हमेशा कचोटती रहेगी। मेरे हिसाब से आप दोनों को इस पाप का प्रायश्चित करना चाहिए .....'

प्रायश्चित का नाम सुनकर संजू की जुबान पर प्रश्न आ गया, 'यह प्रायश्चित क्या होता है अंकल?'

'जैसे कोई अपराधी अपराध करता है तब कोर्ट के जज उसे सजा देते हैं वैसे ही हमारे द्वारा या हमारी वजह से किसी का मर्डर होता है तो हमारी अंतरात्मा को शुद्ध करने के लिए हमारे जो गुरू हैं वे कुछ न कुछ धर्मक्रिया को प्रायश्चित के रूप में देते हैं। वह करने पर आपको अपराध

बोध से और भविष्य में होने वाली सजा से मुक्ति मिलती है। यदि आपकी इच्छा हो तो मैं आज ही हमारे गुरू मुनि निर्वेद विजयजी म. को पूछवा लेता हूँ।'

'मगर दद्दु! हमारा तो कोई कसूर नहीं था। उस पत्रकार ने और हमारे कंपीटीटर ने बदमाशी की थी, तो हमें पाप कैसे लगेगा?'

'राजन्! तूं एक बात का जवाब दे कि यदि आप दोनों ने उसे बीच रास्ते में नहीं रोका होता तो उसे कोई मारता? नहीं...... क्योंकि, उन लोगों को लगा होगा कि यह अपने सारे राज उगल सकता है तो उन्होंने उसे शूट कर दिया।'

'दद्दू! यदि उसे नहीं पकड़ते तो जासूस का पता ही नहीं चलता हमें?'

'राजन! उसका पता लगाने के लिए और भी बहुत सारे रास्ते हैं। शेयर मार्केट और गोल्ड मार्केट में हुई बड़ी हलचल को देख कर हमें तो कई दिन से उस व्यक्ति की पहचान हो चुकी थी।'

राजन लक्ष्मीचंदजी की बात सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। 'सच बात है दद्दु! अब आप गुरूजी को पूछकर बताइये कि हमें क्या करना होगा?'

'आज रात को ही तुझे बताता हूँ।'

'अंकल, यदि हमारी बात पूरी हो गई हो तो मैं घर जाऊँ?'

'एक मिनिट ठहर ..... आज 24 मार्च, गुरूवार है .... 27 मार्च को रविवार आ रहा है। उस दिन राजन, तुझे तेरे सबसे करीब रहे तीनों फ्रेण्ड्स को अपने पूरे परिवार के साथ घर पर बुलाना है। शाम 5:00 बजे से सभी को आ जाना है। अपने होम थियेटर में एक सुपरहिट मूवी देखेंगे, बाद में हम सभी अपने पार्टी हॉल में डिनर लेंगे। उस दिन रात 8.00 बजे से लिजेण्ड तबला वादक जाकिर हुसैन की भी पर्फोर्मन्स रहेगी। ओके ..... ?'

'दद्दु! मैं आज ही सभी को इंफोर्म कर देता हूँ, कोई भी व्यक्ति कोई भी अन्य कार्यक्रम ना बनाये।'

राजवी को मन ही मन में आश्चर्य लगता था। क्योंकि राजन के फ्रेंड को फैमिली के साथ ससुरजी पहली ही बार बुला रहे थे।

*****

'पापा! राजन-संजू के साथ आपकी मीटिंग कैसी रही?' खाना खाने के बाद रोशन ने लक्ष्मीचंदजी को पूछ लिया।

'शानदार ..... राजवी को ही पूछ ले, कैसा रहा?'

'उसने तो शाम पाँच बजे ही बात कर ली थी, लेकिन आपके हिसाब से इस घोड़े को कैसे काबू में करना है?'

'रोशन वो बात यहाँ नहीं होगी, अपने कॉन्फ्रेंस हॉल में चल ..... राजवी को भी साथ में ले ले .....' 'हाँ पापा, उसे बुलाकर आया।'

राजन के जीवन को एक नई दिशा देने के लिए यह मीटिंग महत्त्वपूर्ण थी।

'रोशन, उसकी पूरी स्टोरी सुनकर मैं एक निर्णय पर आया हूँ कि राजन की IQ बहुत आगे है। हम उसकी योग्यता को किसी भी हालत में प्रभावित करना नहीं चाहेंगे। न्यूक्लियर वेपन की Mass destruction की ताकत को जिस तरह एटमिक रिएक्टर में कन्ट्रोल करके पूरे जगत को सुविधाएँ देने एवं उजाले फैलाने के काम में लगा सकते हैं। वैसे ही राजन की खतरनाक बौद्धिक क्षमता को कन्ट्रोल करके भारत देश एवं पूरे विश्व के हित के लिए काम में ले सकते हैं। फिलहाल इतना बड़ा नहीं सोचते हैं तो भी मुझे ऐसा लगता है कि उसका सामर्थ्य है कि वह हमारी SGI को पूरे विश्व में पहले नंबर पर ला सकता है। लेकिन, सबसे महत्त्वपूर्ण है उसे कन्ट्रोल करके सही दिशा देना।'

बीच बात में राजवी ने पूछ लिया - 'कन्ट्रोल करना मतलब, उसकी IQ को कम करना, यह अर्थ आपके दिमाग में है?'

'नहीं राजू बेटा ..... बिल्कुल नहीं ..... मैं तो चाहता हूँ कि उसकी IQ और भी बढ़े ..... साथ-साथ में मैं यह भी चाहता हूँ कि उसकी यह IQ गलत कार्यों में नहीं, सही कार्यों में लगे।'

हमने अक्सर देखा है कि कोई शातिर अपराधी गुंडागर्दी कर रहा है और उसे पकड़ा जाता है तब उसकी शक्ति को कानून हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त करना चाहता है, लेकिन इस विषय में मेरी सोच अलग है। मैं मानता हूँ कि उसकी ताकत तो समाप्त नहीं करनी है, सही दिशा देनी है। अब तक अपराध जगत एवं गलत संगत ने उसकी ताकत को गलत दिशा देने का ही प्रयास किया था लेकिन अब उसे अच्छी संगत में रखकर, प्रेम से उसकी काउन्सलिंग करके उसकी इस शातिर ताकत को सही दिशा देने का प्रयास करना चाहिए। हम उसकी उस शातिर ताकत को निगरानी में रखकर आतंकियों के सामने उपयोग में लेकर दुश्मन के दाँत खट्टे कर सकते हैं। कश्मीर के पत्थरबाजों को ईंट का जवाब पत्थर से दे सकते हैं।

राजवी, तूं रोशन को पूछ लेना, मैंने कैसे-कैसे अपराधियों को समझाकर अपनी फैक्ट्री और कंपनी को फायदा पहुँचाने के लिए उपयोग में लिया है।

कुछ दिनों पहले मैं रिफाइनरी की जमीन देखने के लिए गुजरात गया था, तब मैंने आनंदी बहन चुडासमा से भी

बात की थी कि 'आप गुजरात की शराब बंदी के कारण राजस्व हानि (Revenue loss) का रोना-धोना बंद करो। हर साल करोड़ों रुपये की शराब पकड़ी जाती है और आप उसे destroy करने का काम करते हो। न आपको कोई फायदा होता है ना ही शराब बनाने वाली कंपनियों को कोई नुकसान होता है।' तब सी.एम. ने मुझे पूछा कि 'हमने इतनी शराब नष्ट कर दी तो उस कंपनी को तो नुकसान पहुँचता ही है ना?' तब मैंने कहा - 'नहीं मेडम! आप यहाँ पर ही गलती करते हो। उस शराब की कंपनी ने तो अवैध शराब का कारोबार करने वाले को वह शराब बेच दी है। उन्हें कैसे नुकसान होगा? और एक अपेक्षा से अवैध शराब कारोबारी को भी नुकसान नहीं होता है, क्योंकि उन्हें पता ही है कि हर दस बोटल में से एक-दो बोटल का नुकसान होगा ही। उसी हिसाब से वे उसका रेट तय करते हैं। नुकसान होता है तो केवल आपका और बेचारी भोली भाली जनता का.....'

वे मेरी बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए! उन्होंने पूछा - 'क्या कर सकते हैं?' मैंने कहा - 'वेरी सिम्पल ..... उन शराब की बोटलों में रहे हुए अल्कोहॉल का उपयोग फ्यूल के रूप में क्यों नहीं कर सकते हो? कोई उसका पीने में उपयोग ना करे उस हेतु कोई केमिकल उसमें डाल सकते हो। आपको फ्री ऑफ चार्ज फ्यूल मिलेगा, आपका ऑवरऑल फ्यूल बिल कम होगा। बोलो, रेवन्यू लॉस की बात कहाँ आयेगी?'

'फेन्टास्टिक आईडिया पापा।' राजवी बोल उठी ..... 'क्या वे लोग आपके आईडिया को अपनाने के लिए तैयार हैं?'

'राजू बेटा, तू बहुत भोली है ..... यह सरकार कैसे चलती है उसका तुझे कहाँ पता है? सभी की नजर में जनता के प्रतिनिधि सरकार चलाते हैं, लेकिन हकीकत में मल्टीनेशनल कंपनीज सरकार चलाती हैं। मेरे सुझाव पर अमल करने से पहले उन्हें बरसों पुराने अपने नियमों को बदलना पड़ेगा। उसे ये लोग बदलने देंगे?'

खैर, छोड़ों इन अप्रस्तुत बातों को ..... मेरा कहना यह था कि राजन की अप्रतिम शक्ति का हमें गुड युज करना है।' दो सैकण्ड रूककर लक्ष्मीचंदजी ने अपनी बात आगे जारी रखी ..... 'राजवी! दोपहर को मैंने उन दोनों को प्रायश्चित करने की बात कही थी वो तुझे याद है?' 'हाँ, पापा .....'

'मैंने शाम साढ़े पाँच बजे ही निर्वेद विजयजी महाराज से बात की। उनके सेवक ने मुझसे बात कराई तब मैंने राजन का पूरा केस शॉर्ट में उन्हें बताया। वे सब समझ गये। बाद में उन्होंने जो कहा वह रेकोर्डेड है मेरे फोन में .....'

'पापा! अभी ही सुनाओ' रोशन की उत्सुकता बढ़ गई। लक्ष्मीचंदजी ने ऑडियो ऑन किया।

'लक्ष्मीचंदजी 22 मई से 29 मई, ऊँटी में हमारी निश्रा में Youth enlightement Shivir (Yes) है। यह उस शिविर का तीसरा इवेन्ट है। लक्ष्मीचंदजी आप बिलीव नहीं करेंगे, पिछले दो इवेन्ट में आये हुए युवाओं में करीबन 40 युवा ऐसे थे जो हर दूसरे-तीसरे दिन ड्रिंक करते थे। उन्होंने हमेशा के लिए ड्रिंक छोड़ दिया है। 50 युवाओं ने हमेशा के लिए सिगरेट छोड़ दी है। देव और गुरू की कृपा से unbelievable results मिले हैं। आप खुशी से राजन को यहाँ लेकर आओ। लेकिन, आपने मुझे राजन का अभी जो परिचय दिया है उसके हिसाब से मुझे लगता है कि राजन अकेला सुधरेगा तो आपको लोंग टर्म रिजल्ट नहीं मिलेगा। आप तो राजन और संजू को एक टास्क दे दो कि आप दोनों को तो शिविर में आना ही है। साथ-साथ में अपनी मित्र मंडली को भी लाना है। उन्हें कह देना कि चाहे जैन हो या नॉन जैन, कोई फिक्र नहीं करनी है, सभी को लाना है। आप मेरी ओर से राजन और संजू को कहना कि किसी के मर्डर में निमित्त बनने का आपके लिए यह ही प्रायश्चित है।'

'गुरूदेव! आप कॉन्फीडेन्ट हो इसलिए मैं टेन्शन फ्री हूँ, बाकी साहब जी! इन लोगों को देखकर आपको डार्विन की बात उल्टी लगाने का मन हो जायेगा। मेरा मतलब है कि इन महाशयों को देखकर आपको लगेगा कि हमारे पुरखें तो इन्सान थे मगर यह यंग जनरेशन तो बंदर में कन्वर्ट होने लगी है।' हँसने की आवाज

'लक्ष्मीचंदजी, फिकर मत करो, आप तो बंदरों की पूरी टीम लेकर आओ। ये बंदर हैं, तो हम मदारी हैं। वे मदारी तो नचाने का काम करते होंगे, हम बचाने का काम करते हैं।'

हँसते हुए 'क्या खूब'.... थोड़ा रूककर लक्ष्मी चंदजी बोले 'गुरुदेव! बहुत बड़ी कृपा की आपने ..... मैं आजकल में ही सभी की ऐयर की टिकट बुक करा लेता हूँ ..... हाँ, इस शिविर में मुझे भी कुछ न कुछ लाभ देना है।'

'लक्ष्मीचंदजी, इस शिविर के लाभार्थी तो मिल चुके है, फिर कभी आपको बताऊँगा ..... आपको तो इन सभी को यहाँ पहुँचाकर लाभ लेना ही

है।'

'जरूर ..... जरूर ..... मैं भी आता हूँ और शायद रोशन और राजवी भी .....'

'जी हाँ ..... खुशी से पधार सकते हो .....' कॉल डिसकनेक्ट हो गया .....

राजवी और रोशन, दोनों ने ताली बजाकर लक्ष्मीचंदजी की बात का अनुमोदन किया। 'शानदार पापा..... शानदार.....' आप आज ही राजन को यह बात कर लो... ताकि 27 मार्च को उन सभी के परिवारों में भी अच्छे से बात हो जाये।' राजवी ने अपना प्रपोजल रखा।

'हाँ राजवी, अभी मैं राजन से मिलने ही जा रहा हूँ।'

****

राजन के कमरे में जाने से पूर्व लक्ष्मीचंदजी ने दरवाजे पर कान लगाये तो पता लगा कि एक फेवरेट पॉप गाने को हाई वोल्युम पर लगाकर राजन डान्स कर रहा था। नॉक करके उन्होंने प्रवेश किया।

'राजन, बोर्ड की एग्जाम पूरी हुई उसका जश्न मना रहा है?'

'हाँ दद्दु, इस बार तो सारे पेपर्स बहुत अच्छे गये हैं। उस बदमाश ने मुझे जो चैलेन्ज दी थी, उसे चाँटा लग जाये ऐसा रिजल्ट आने वाला है .....' लक्ष्मीचंदजी हँस पड़े ..... 'अभी भी तेरे तेवर ऐसे ही है।'

'पोता किसका हूँ?' दोनों ठहाके लगाकर हँसने लगे।

'राजन्! तुने प्रायश्चित का जो पूछा था उसका जवाब आ गया है।'

'बोलो दद्दु! मुजरिम हाजिर है ..... क्या सजा फरमा रहे हो?'

'आप दोनों को ऊंटी में लगने वाली YES (Youth Enlightement Shivir) में जाना है और साथ-साथ में तुम्हारे दोनों दोस्त, विकास और विश्वास को भी ले जाना है। उन्हें convince करने का टास्क भी आपको प्रायश्चित में दिया हुआ है।'

'दद्दु! अजीब प्रायश्चित है यह ...... मैंने तो सुना था कि इसमें उपवास, एकासना वगैरह करना होता है ..... यह क्या बात हुई?'

'देख राजन! अपने गुरूओं को बहुत सारे शास्त्रों का ज्ञान होता है। उनकी बात में शंका करने की कोई वजह नहीं है। वैसे भी उपवास करने की जगह तीन-चार टाईम खाना खाकर, ऊंटी के वातावरण का लुत्फ उठाने में तो ज्यादा ही फायदा है ना?'

'दद्दु, वो बात तो सही है, लेकिन अपने गुरूओं के प्रवचन कितने पकाऊ होते हैं ..... मुझे तो वो सब नहीं जमता .....'

'राजन! मैंने तुझे पहले भी कहा था, मुनि निर्वेदविजयजी की बात थोड़ी अलग है, और तूने तो चैलेन्ज लगाई थी ना?'

राजन को याद आ गया ..... 'ठीक है, हम सभी को convince करके ले आते हैं।'

****

रात में ही राजन ने संजू को समाचार बताकर कहा 'यार, अजीब मुसीबत आ गई है।'

'राजन! तेरे दद्दु ने तो तुझे एक दिन के लिए भी अटेण्ड करने को कहा है ना? क्या प्रोब्लम है? यदि नहीं जमा तो दूसरे दिन से अपनी शिविर रिसोर्ट में चलेगी। ऊटी का क्लाईमेट होगा .... मजा ही मजा .....'

'हाँ, मगर विकास और विश्वास का

क्या करना है?'

'अरे, उसकी क्यों फिक्र कर रहा है ..... जिस्म भले ही चार है, लेकिन जान तो हम एक ही हैं ..... अभी सबको मैं कोन्फ्रेंस में लेता हूँ।'

'ले ले .....' कुछ एक मिनट में चारों के बीच बातचीत चालू हो गई।'

विकास और विश्वास कन्वीन्स हो गये और राजन ने 27 मार्च की पार्टी का भी न्यौता दे दिया।

****

संजू, विकास और विश्वास की फैमिली में बड़ा उत्साह था। लक्ष्मीचंदजी के बंगले के बारे में सभी ने सुना था लेकिन देखने का मौका आज पहली बार मिलने वाला था।

शाम पाँच बजे ही सभी हाजिर हो गये थे। होम थियेटर का पर्दा, सीटें, साउण्ड सीस्टम ..... सब कुछ अफलातून था। दो घंटे में एक सुपरहिट मूवी देखकर सभी शंखेश्वर पेरेडाइज की लॉन में इकठ्ठे हो गये। वर्ल्ड क्लास लिजेण्ड स्टार जाकिर हुसैन भी अपनी टीम के साथ आ गये और एक घंटे तक अद्‌भुत समा बांध दिया उन्होंने ..... रात आठ बजे पार्टी हॉल में खाने-पीने का कार्यक्रम शुरू हुआ, लेकिन पूरे कार्यक्रम में परिवार की संस्कारप्रियता झलक रही थी। प्योर वेज खाना और पीने में सॉफ्ट ड्रिंक और फ्रूट ज्यूस के अलावा कोई भी चीज नहीं .....

चारों के माँ-बाप अलग से लक्ष्मीचंदजी के साथ बैठे और लक्ष्मीचंदजी ने शिविर की प्रपोजल रखी। संजू के पापा जोगिन्दर सिंह ने सभी पेरेन्ट्स की ओर से पूछ लिया, 'इन लोगों को यह सब जमेगा? और इस इवेन्ट में सारी बातें जैनिज्म के हिसाब से होगी, इन्हें कैसे मजा आयेगी?'

'देखो, यह इवेन्ट पूरा अलग किस्म का है। यह इवेन्ट इन्सान में इन्सानियत जगाने के लिये है, यह इवेन्ट युवाओं में जिम्मेदारी का ख्याल प्रगट करने के लिए है, यह इवेन्ट युवाओं को पॉजिटीव बनाने के लिए है, यह इवेन्ट युवाओं को सच्चा आइकन देने के लिए है। आप यकीन करो ..... इस इवेन्ट को अटेण्ड करने के बाद आप खुद अपने बच्चों में एक पॉजिटिव चेंज महसूस करोगे .... मैं भी साथ में जाने वाला हूँ। यदि 1 दिन के बाद भी उन्हें नहीं जमा तो मैं वापस लेकर आ जाऊँगा ..... ओके.....?'

सभी पेरेन्ट्स के मन का समाधान हो गया। सभी की ओर से जोगिन्दर सिंह और दीपेन्द्र कौर ने कह दिया 'O.K. We all are convinced.... (हम सभी सहमत है)'

'आप बिल्कुल फिक्र मत करना ..... एयर टिकिट बुकिंग से लेकर सारी व्यवस्था हो जायेगी।'

सभी पेरेन्ट्स को लक्ष्मीचंदजी की बात बहुत अच्छी लगी, क्योंकि सभी अपनी संतान के कारण थोड़े-बहुत टेन्शन में ही रहते थे।

****

21 मई ..... बैंगलोर के एयरपोर्ट पर हवाईजहाज की लेन्डिंग हुई और

लक्ष्मीचंदजी के साथ चारों युवाओं ने स्पेशल मर्सिडिज टैक्सी में स्थान लिया। कुछ ही घंटों में सभी ऊंटी के ताज होटल में पहुँचे। अलग-अलग साईट सीइंग प्वाईन्टस में घूमें, पार्क में हॉर्स राइडिंग की और लेक में बोटिंग की ....

'देख, राजन! शिविर में कल पकेंगे तो परसो निकल जायेंगे, लेकिन आज तो सचमुच मजा आ गया।' संजू की बात को विकास और विश्वास ने भी समर्थन दिया।

21 मई की रात में सभी मित्र जब डांसिंग क्लब में डांस कर रहे थे तब लक्ष्मीचंदजी मुनि श्री निर्वेदविजयजी म. को मिलने चले गये।

'मत्थएण वंदामि साहबजी! त्रिकाल वंदना .....'

'कौन?' अंधेरे में चेहरा पहचानने में निर्वेदविजयजी म. को दिक्कत आ रही थी, और वैसे भी लक्ष्मीचंदजी करीबन दस साल के बाद उन्हें मिल रहे थे। दस साल पहले जब निर्वेदविजयजी म. का विचरण मारवाड़ में चल रहा था तब उनके गाँव-मालवाडा में ध्वजा निमत्ति उनका आगमन हुआ था। मुम्बई से लक्ष्मीचंदजी का परिवार भी उस कार्यक्रम में जुड़ा था।

'साहबजी! लक्ष्मीचंद हूँ, मुम्बई से आया हूँ .....'

'ओ हो ..... लक्ष्मीचंदजी ..... आप तो कल सुबह चार युवा बच्चों को लेकर आने वाले थे ना? आज एडवान्स में?'

'जी साहब! हम आज दोपहर बारह बजे से ऊंटी आ चुके हैं'

'तो कहाँ रूके हो?' 'साहबजी! मैं तो यहाँ रूक जाऊँ, मगर राजन और उसके फ्रेन्ड आज घुमने के और मजा के मूड में थे। इसलिए ताज में रूके हैं .....'

'अच्छा ..... तो वे सब अभी होटल में ही है?' 'हाँ साहब जी! डांसिंग क्लब में वे डांस कर रहे हैं।' लक्ष्मीचंदजी ने शरमाते हुए कहा। 'कोई प्रॉब्लम नहीं है ..... आप क्या कर सकते हो? आपकी जनरेशन ही ऐसी है। आप उन्हें हम तक ले आये वो ही आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि है, ऐसा मैं मानता हूँ।' निर्वेदविजयजी म. की पोजिटिविटी से लक्ष्मीचंदजी काफी प्रभावित हुए। उन्हें 10 साल पहले भी ऐसा ही अनुभव हुआ था, इसलिए तबसे उनके मन में गुरू के रूप में उनका नाम एक नंबर पर था।

'आपकी इस पोजिटिविटी को देखकर ही मैं आप से जुड़ा हुआ हूँ। लेकिन साहबजी! बुरा मत लगाना ..... अपने जिनशासन में आज ऐसे बहुत सारे महात्मा हैं, जो यंग जनरेशन को न समझ पाते है, ना ही उन्हें समझा पाते हैं। वे कई बार तो इन लोगों को गालियाँ देते रहते हैं। कई बार एक ही ग्रुप के दो महात्माओं के बीच तीखी बहस सुनकर वे दूर हो जाते हैं। कई बार वे अपना महिमा मंडन इतना करवाते हैं कि, युवा इन सभी चीजों को देखकर दूर हो जाते हैं।'

'लक्ष्मीचंदजी! आप की बातें कुछ अंश में सही है, ऐसा कहते हुए ..... मुझे दिल में बहुत दर्द हो रहा है। लेकिन आपकी तरह हम तक युवाओं को पहुँचाने वाले माँ-बाप कितने? आपको यदि लगे कि यह मुनि भगवंत लॉजिकल प्रेक्टिकल अप्रोच लेकर बैठे है, तो आपकी पहली फर्ज यह है कि उन युवाओं को कैसे भी करके, भय से या लालच से हम तक जोड़े। एक बार युवा हमसे जुड़ गया, तो मान लो कि शायद जिंदगी के अंत तक वह अच्छाई से दूर नहीं होगा। करीबन दो महिने पूर्व आपकी बात मुझसे हुई तबसे मैंने पूरी नई तैयारी शुरू की। राजन, संजू, विकास और विश्वास को ध्यान में रखकर ही मैंने पूरे सेलेबस बनाया है। By word there will be no jainism, but by essence there will not other than jainism..... (शब्द से जैनिज्म की कोई बात नहीं होगी मगर हार्द (अभिप्राय) के रूप में जैनिज्म को छोड़कर कोई बात नहीं होगी।)'

'बस, साहबजी! मैं यह बात कहने के लिए ही अभी आया था, लेकिन मेरे कहने से पूर्व ही आप मेरे भाव को जान गये हो, धन्य है आपके ज्ञान को ..... साहबजी! दूसरी एक बात वो थी कि अमीरी के कारण नहीं, लेकिन इन्हें टिकाना है और आपसे जोड़ना है, बस इसी उद्देश्य से कह रहा हूँ कि Please tell all your volunteers to be liberal & humble with these fellows.....'

(कृपया अपने कार्यकर्त्ताओं को बता देना कि इन चारों के प्रति थोड़े उदार और कोमल रहे।)

'लक्ष्मीचंदजी, यह तो आप बताने आये ..... बाकी' ..... एक मिनिट बात को बीच में रोककर निर्वेदविजयजी म. ने जयेश नाम के किसी युवा को बुलाया।

'जयेश, दो दिन पूर्व मैंने चार युवाओं के विषय में तुझे कोई सूचना दी थी?' 'जी साहबजी! लक्ष्मीचंदजी के बेटे राजन और उनके तीन मित्रों को जरा व्यवस्थित संभालने के लिए आपने मुझे आधा घंटा बैठाकर कहा था। मुझे सब याद है। गुरूजी क्या वे आ गये है?'

निर्वेदविजयजी म. ने लक्ष्मीचंदजी की ओर ईशारा किया 'इनसे मिलिए ..... यही है लक्ष्मीचंदजी ..... कल वे चारों युवा आयेंगे।'

जयेश भाई ने लक्ष्मीचंदजी के चरण छूएँ ..... 'नहीं ..... नहीं ..... बेटा ..... यह क्या कर रहा है?' 'नमस्कार ..... आपके बारे में बहुत सुना है, दर्शन आज पहली बार हुए।'

'मगर मैंने आपके बारे में नहीं सुना है।' लक्ष्मीचंदजी ने हँसते-हँसते कहा

'लक्ष्मीचंदजी! ..... यह हमारी शिविर का इन्टर्नल एंड एक्सटर्नल पूरा मेनेजमेन्ट देखता है।' निर्वेदविजयजी म. ने परिचय दिया .....

'ओ हो ..... बस, तो तो काम हो गया।' लक्ष्मीचंदजी खुश हो गये।

'लक्ष्मीचंदजी, आप बिल्कुल निश्चिंत रहिए ..... आपके बेटे जिनशासन का भविष्य हैं ..... बहुत अच्छे से संभालेंगे ..... हो सके तो कल सुबह में 6.00 से 7.00 योगा एवं प्राणायाम का पीरियड है तबसे उन्हें जोड़ देना ..... और यह पर्चा रखो ..... इसमें पूरे दिन का कार्यक्रम है। हो सके तो कल से पूरे आठ दिन उन्हें यहाँ पर ही रखना है। हाँ ..... ताज जैसे कमरे नहीं मिलेंगे, लेकिन हमारे पास Avaliable A-1 Deluxe कमरा उन चारों के लिए रखा है। आप फिकर मत करना।' 'ओ.के. थैंक्स' कहकर लक्ष्मीचंदजी खड़े हुए। जयेश की बातों में रह हुआ केरिंग नेचर और नम्रता देखकर लक्ष्मीचंदजी अत्यधिक प्रभावित हुए .....

क्रमशः

मुख्य आधारस्तंभ

पू. आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय उदयवल्लभसूरीश्वरजी म.
की प्रेरणा से एक सद्गृहस्थ, अहमदाबाद

आधार स्तंभ

• प्रणवभाई, सूरत • एक सद्गृहस्थ, सूरत

• पू. आचार्यदेव श्री वरबोधि सूरि म. के संयम जीवन के 50 साल और पिता गुरुदेव पन्यास श्री कैवल्य बोधि वि.म. के 41 साल के संयम जीवन की अनुमोदनार्थ पं. श्री पद्मबोधि वि.जी.म.सा. की प्रेरणा से गुरु भक्त परिवार

• सूरजमल कान्ता बाई गोटावाला परिवार - भवानीमण्डी
चन्द्रशेखर - किरण बाला, रूपल - सौरभ, आलीशा - अंकुर, दृष्टि - पारस

• भामाशाह श्रीमान दीनदयाल जी जैन, महेश - सीमा, नमन, लक्षित

• श्री महावीर प्रसाद जी, मनोज जी, सुनील जी, तालचिडी वाले, हिंडौन सिटी

• शान्ता बहन वाडीलाल शंभुलाल वोरा, जिज्ञा-प्रविण, जोली-नितिन, भावि, महेक, आदीश, आरना, नयसार, बेटी रसीला, अलका, लता, घाटकोपर (कल्पतरु औरा)

श्री कल्पतरु औरा जैन संघ - घाटकोपर

श्री वाधवा जैन संघ- घाट कोपर

• सेठ श्री कान्तिलाल मणिलाल शाह, कीर्तिभाई-बीना, जिनेश- फोरम घाटकोपर

• मातुश्री पुष्पाबहन चन्दुलाल एम. शाह, कोंढ-सुरेन्द्र नगर वर्त. में घाटकोपर

• श्री धर्मेश भाई जयसुख भाई देसाई, घाटकोपर

• धनजी दामजी छेड़ा - पंकज, छेड़ा परिवार घाटकोपर

• श्री सुपार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे

पू.मु. श्री मग्नशेखर वि.जी, पू. मु. श्री पूर्णशेखर वि.जी, पू. सा. श्री तीर्थध्यान प्रभा श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से मातु श्री बेबीबाई वनेचंद जी बामणिया परिवार, दावणगेरे (मरुधर में सीलधर)

अर्हम् मोबाइल दावणगेरे (श्री गौतम, जयन्तीलालजी, पूनम, मेहेक, तन्वी)

एक गुरुभक्त परिवार, दावणगेरे

कल्पेश विपुल विशाल भाई - स्व.कलाबाई रसिकलाल शंकर लाल जी परिवार चौहाण - बरलूट- दावणगेरे

नरेन्द्र कुमार ओटमल कालन्द्री, दावणगेरे

रसिकलाल शंकरलाल जी परिवार, दावणगेरे

एक सुश्राविका - दावणगेरे

मोहन लाल जी कटारिया, पालीवाले - दिवेश-किशोर-चंदन (देवीचंद जी)

रमण लाल जी मयाचंद जी, दिनेश कुमार, विजय कुमार, मनोज कुमार, संतोष, संयम, मोक्षित, दर्शन, श्रेयांस, जैनम् दावणगेरे

पटियात साहेबचंद, सोहनराज, बाबूलाल, राजवीर, लक्ष्य, हर्ष बेटा-पोता, वच्छराज जी धूड़ाजी (मरुधर-धाणसा, वर्तमान, चित्रदुर्गा)

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक - 12

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

'ग्यारह बज रहे हैं ..... ये लोग अभी भी मुम्बई के माहौल से बाहर निकलने का नाम नहीं ले रहे हैं' लक्ष्मीचंदजी अपने स्यूट से डान्सिंग क्लब की ओर जाने के लिए निकले .....

डान्सिंग क्लब में प्रवेश लेते ही उन्होंने देखा, वे चारों हुक्का पोट में पाइप लगाकर फ्लेवर्ड हुक्के का कश ले रहे थे। राजन की नजर लक्ष्मीचंद जी पर पड़ी 'come on दद्दू enjoy hukka bar .....' लक्ष्मीचंदजी का माथा ठनका ..... उन्होंने जिंदगी में कभी भी एक भी व्यसन को स्थान नहीं दिया था और यह बेशर्मी से उन्हें ऐसी ऑफर कर रहा था .....

'राजन, संजू ..... सब चलो कमरे पर .....' लक्ष्मीचंदजी ने कड़कती आवाज से कहा। सभी फटाफट खड़े होकर होटल के सूइट में पहुँच गये। लक्ष्मीचंदजी ने चारों के हाथ में 'YES' सेमिनार के कार्यक्रम का पर्चा (broucer) दे दिया। ध्यान से पढ़कर चारों सोच में पड़ गये। इसमें तो चार घंटे प्रवचन ही है ..... कैसे करेंगे? हाँ ...... competition बहुत अच्छी रखी है उसमें मजा आ जायेगी। लक्ष्मीचंदजी सभी का face reading कर रहे थे। 'क्यों फिकर कर रहे हो? एक दिन नहीं जमा तो दूसरे दिन मैं आपको मुम्बई वापस ले जाऊँगा।'

'दद्दू वह सब तो ठीक है ..... लेकिन पूजा और संध्या भक्ति तो हमने कभी की नहीं ..... क्या होता है इसमें?'

'राजन! अभी तूं डांसिंग क्लब में डांस करने गया था ना?'

'हाँ उसमें तो बड़ा मजा आता है।'

'संध्या भक्ति में भी तूझे नाचने का बड़ा आयेगा और हाँ ..... दूसरी बात, कल से आपको YES के कैम्पस में ही रहना होगा।'

राजन को लगा कि दद्दू से बहस करने का कोई मतलब नहीं है ..... Let see tomorrow (कल देखते हैं.....)

सुबह ठंड के समय में 6:00 बजे ही शिविर की शुरूआत योगा और प्राणायाम से हुई। हरिहर श्रीवास्तव ट्रेनर के रूप में थे। चारों को योगा मेट दी गई और सभी के साथ चारों ने भी हॉल में अपना स्थान ले लिया।

'देखो, आप सभी सुबह या शाम के समय रेग्युलर रूटिन में जिम में जाते होंगे। उसमें आपके मसल्स ही बनते हैं लेकिन पूरी बॉडी और माईन्ड का डेवलपमेन्ट नहीं होता है। आठ दिन में आप बहुत सारे योगासन और प्राणायाम सीख जायेंगे, जो आपको लाईफ टाईम काम लगेगा।' ट्रेनर की स्पीच बहुत अच्छी थी ..... सभी बच्चों और युवाओं को उन्होंने जकड़कर रखा था। करीबन एक घंटे तक योगा और प्राणायाम करके बच्चे फ्रेश हो गये। राजन वगैरह सभी युवाओं को भी इसमें मजा आया।

स्नान करके सभी युवाओं के साथ चारों मित्र पूजा के कार्यक्रम में गये। संजू, विकास और विश्वास पूजा के वस्त्र को पहने बिना ही उस कार्यक्रम में शामिल हुए। बहुत सुंदर प्रभू की मूर्ति के सामने चल रही भक्ति में संगीतकार ने शानदार तरीके से समा बाँध दिया। संगीत जब शिखर को छूता था तब सभी बच्चों और युवाओं के पैर थिरकने के लिए मजबूर बन जाते थे। बीच-बीच में मुनि निर्वेदविजयजी म. पूजा की एक-एक क्रिया के लॉजिक को वहाँ प्रस्तुत करते थे। राजन जन्म से जैन होने पर भी यह सब कुछ पहली बार सुन रहा था और देख रहा था। संजू-विकास और विश्वास को लग रहा था कि कल से हम भी पूजा की ड्रेस में शामिल हो जायें ....

नाश्ता करके सभी बच्चें शिविर हॉल में पहुँचे। शिविर के हॉल में शानदार बैनर लगे हुए थे। संजू वगैरह चारों एक बैनर के पास खड़े ही रह गये उसमें लिखा था 'Say yes to carrier, say yes to peace, say yes to prosperity, say yes to good relation and always say yes to 'YES' (Youth Enlightenment Shivir) ' शासनगीत और शासन वंदना ने सभी युवाओं के दिल में जोश भर दिया। लक्ष्मीचंदजी खुद पहली बार ऐसी शिविर देख रहे थे। वे बहुत प्रसन्न थे। शासन वंदना के बाद जयेश भाई ने शिविर का Introduction कराया 'Welcome ..... everybody in our 3rd event of YES.....' (YES के तीसरे चरण में सभी का हार्दिक स्वागत है) पिछले दो शिविरों की अपेक्षा से यह शिविर थोड़ी अलग है। हर वक्त गर्मी में हमारे मित्र शिविर को एंजाय नहीं कर पा रहे थे और प्रवचन के लिए ए.सी. हॉल की माँग कर रहे थे तो पू. गुरुजी ने ऐसा लोकेशन पसंद किया है, कि जहाँ गर्मी के दिनों में भी 24×7 कुदरती कूलिंग सिस्टम ऑन रहता है ..... बराबर है ना मित्रों?' सभी शिविरार्थियों ने Cheer करके प्रश्न का प्रतिभाव दिया ....

जयेश भाई ने अपनी बात आगे चलाई .....'मित्रों, पंछी को आसमान में उड़ने के लिए सिर्फ पंख ही नहीं, आँख भी जरूरी है। आज हमारे पास जवानी के पंख मजबूत हैं, लेकिन ज्ञान की आँखें कमजोर हो चुकी है। अचानक एक शिविरार्थी ने बड़ी आवाज से बीच में ही प्रश्न कर दिया 'Objection Sir .....'

ऊँगली उठाने वाले बच्चे की ओर जयेश ने ईशारा करके प्रश्न पूछने की अनुमति दी 'Yes you can speak.....'

'सर, आज यंग जनरेशन में एज्युकेशन बहुत बढ़ा है तो आप ऐसा क्यों कह रहे हो कि ज्ञान की आँखे कमजोर हो चुकी है?'

'good question .... बैठ जाइये ..... देखो, आज आपकी दुनिया में एज्युकेशन बढ़ा है लेकिन वह तो Information है, Knowledge नहीं है..... वह wisdom नहीं है ..... पू. गुरुजी हमें information, knowledge और wisdom के बीच रहे अंतर को अभी बतायेंगे ..... लेकिन आप मुझे एक बात बताओ कि ज्ञान क्या करता है?'

'सर, ज्ञान हमारा जीवन खुशहाल बनाता है। ज्ञान से हम दुनिया को समझ पाते हैं, अपना कैरियर बना सकते हैं, अच्छे पैकेज वाली नौकरी पा सकते है। नये-नये रिसर्च करके खुद के और औरों के जीवन को सुख-समृद्धि से भर सकते हैं। मगर, ऐसा ज्ञान हमें शिविर से कहाँ मिलता है? यहाँ तो हमें धर्म की बातें ही बताई जाती है।'

जयेश भाई ने उस शिविरार्थी को बीच में ही रोकते हुए प्रश्न किया 'excuse me ..... शायद आप YES 1 & 2 में नहीं आये हो ..... ओके?'

'हाँ सच बात है ..... मैं पहली ही बार YES में आया हूँ।'

'यह शिविर पूरी तरह से अलग है। यहाँ धर्म से भी ज्यादा जीवन की बात होती है, यहाँ केरेक्टर के साथ-साथ कैरियर की भी बात होती है। पूरी दुनिया में संपत्ति और भोग के साधन बढ़ने के साथ-साथ उसके Reaction के रूप में stress level बढ़ता है तब उसे कंट्रोल में रखने का फॉर्मूला यहाँ शेयर किया जाता है। ज्यादा मुझे कुछ कहना नहीं है, गुड़ की चर्चा मुझे ज्यादा नहीं करनी है ..... आप खुद चख लो सब कुछ समझ में आ जायेगा। अब मेरा Indian News पूरा होता है .... Now ..... Over to Gurudev ..... हाँ, एक महत्त्वपूर्ण बात सुन लेना - पू. गुरुदेव के प्रवचनों को ध्यान से सुनना, आपको दी गई डॉयरी में उसे लिखना ..... शिविर के सातवें दिन Quiz World Cup का आयोजन होगा ..... You can be a Quiz World Cup Winner ...... बहुत ही exciting event होता है वह ..... अतः सब कुछ ध्यान से सुनना और लिखना .....'

गुरुवंदन के पश्चात् निर्वेदविजयजी म. ने मंगलाचरण करके प्रवचन शुरू किया ..... प्रवचन का विषय था 'The journey from Reel Life to Real Life .....' एक शानदार चुटकले के साथ उन्होंने शुरूआत की ..... युवाओं के द्वारा दमदार प्रतिभाव मिला। उनकी ओजस्वी वाणी ने युवाओं का दिल जकड़ लिया। बीच-बीच में दृष्टांत, चुटकले, Quotes का भरपूर उपयोग करके वे अपनी बात युवाओं के दिमाग तक पहुँचाने में काफी सफल रहे। लेकिन राजन पहले से ही इन सभी बातों के प्रति नेगेटिव था। उसने उस वक्त बहुत ही छोटे Wifi earpod कान में लगाकर रखे थे। जेब में रहे मोबाइल से रॉक म्यूजिक का एल्बम चालू कर रखा था।

निर्वेद विजयजी म. प्रवचन करते वक्त प्रवचन के साथ-साथ सभी

शिविरार्थियों के ऊपर पैनी नजर रख रहे थे। कौन उन्हें ध्यान से सुन रहा है और कौन अन्य विचार में उलझा हुआ है, वह वे चेहरे पर उभर रहे भावों (Facial expression) से बहुत अच्छे से समझ सकते थे। इस शिविर में राजन एक स्पेशल शिविरार्थी था। इसलिए उनकी नजर बार-बार राजन की ओर जा रही थी। नॉर्मल बात में भी वह जिस तरह से मुंडी हिला रहा था, वह देखकर लग रहा था कि वह अभी कोई गाना सुन रहा है। निर्वेदविजयजी म. के पास उसे रंगे हाथ पकड़ने का आईडिया था, लेकिन लंबी सोच का उपयोग करते हुए उन्होंने उस आईडिया का अमल नहीं किया।

राजन के आस-पास बैठे हुए विकास, विश्वास और संजू का रेस्पोंस बहुत अच्छा था। पहले और दूसरे सेशन के बीच में intellectual puzzle का दौर चला। कई युवाओं ने उसे बहुत अच्छे से सॉल्व किया। दूसरा सेशन पूरा होने के बाद Queries के लिए समय दिया गया। Reel Life से Real Life को ज्यादा महत्त्व देने पर friends circle में क्या समस्याएँ आती है उस विषय में कई युवाओं ने प्रश्न करके समाधान प्राप्त किया। निर्वेद विजयजी म. के उत्तर को पाकर सभी का दिल नाच उठा और हाथ तालियाँ बजाने के लिए मजबूर बन गये।

दोपहर को एक घंटे के लिए लंच ब्रेक दिया गया था और आधा घंटा आराम एवं कंपीटीशन की तैयारी के लिए दिया गया था। लक्ष्मीचंदजी ने राजन को लंच ब्रेक में पूछ लिया – 'कैसा रहा शिविर?'

राजन दो सैकण्ड रूक कर बोला 'हाँ ..... बहुत बढ़िया ..... विकास, विश्वास और संजू को भी बहुत मजा आया।'

जवाब देने में राजन दो सैकण्ड रूक गया, वह लक्ष्मीचंदजी ने पकड़ लिया। लेकिन क्यों रूका था उसका उन्हें पता नहीं चला। मन ही मन उन्होंने समाधान कर लिया ..... कैसे भी यह यहाँ रूके, फायदा ही होगा .....

खाना खाते-खाते विकास को राजन ने पूछ लिया – 'कैसा लगा हमारा Pure Jain Food?'

'वैसे तो सब सही है, लेकिन आपके किये की सजा अभी हम भुगत रहे हैं।' तीनों हँस पड़े .....

राजन ने हँसते-हँसते पूछ लिया, 'चल, बाहर होटल जाकर आना है?'

'नहीं ..... नहीं ..... ऐसी बात नहीं है ..... सिर्फ प्याज लहसून नहीं मिलने से मजा नहीं आया ..... कल देख लेंगे .....'

****

इस ओर प्रवचन पूरा होते ही जयेश भाई निर्वेदविजयजी म. की सेवा में उपस्थित हुए। दोपहर को होने वाली Debate competition के विषय में चर्चा की और व्यवस्था के विषय में बातें हुई। जयेश भाई जा ही रहे थे तब निर्वेदविजयजी म. ने उन्हें रोककर पूछ लिया, 'जयेश प्रवचन के दौरान तूने राजन पर नजर की थी?'

'नहीं साहबजी, शुरू में तो मैं आपका प्रवचन सुनने बैठ गया, बीच में शिविर कमेटी का कुछ काम आ गया तो मैं उठकर चला गया था। कोई Complication है? तो बताईये .....'

'नहीं कोई Complication तो नहीं है। राजन तो मेरे सामने ही बैठा था। लेकिन, मेरे प्रवचन के हिसाब से उसके चेहरे पर कोई expression नहीं दिख रहा था। कई बार तो jokes सुनने पर आजु-बाजु रहे हुए सब युवाओं को हंसता हुआ देख वह भी हँसने का नाटक करने लगता था। बीच-बीच में कई बार संगीत सुनकर लोग जिस तरह से अपनी मुंडी हिलाते हैं, ऐसे ही वह भी मुंडी हिला रहा था। मुझे लगता है, वह मुझे नहीं सुन रहा था।'

जयेश भाई पूरी बात समझ गये। गुरुजी, मैं अभी ही जाकर बात-बात में पक्की इंफोर्मेशन लेकर आता हूँ। आपकी बात सुनकर मुझे ऐसा लग रहा है कि वह महँगे वाले एकदम छोटे ear pods लेकर आया है और पूरी शिविर उसने Pop या रॉक सोंग्स सुने हैं। Anyway ..... हमें अभी कोई एक्शन नहीं लेना है।' 'जयेश तेरी बात सही है। लेकिन यह बड़ा चालबाज है, पूरे शिविर में इस तरह टाईमपास कर देगा और फायदा कोई नहीं होगा।'

'गुरुजी आप चिंता मत करो। मैं 3 बजे से शुरू होने वाले सेशन में दूर से उसका observation करता हूँ। यदि मुझे लगा कि वह गाने सुन रहा है, तो मैं फौरन हॉल में रहे हुए चारों जैमर ऑन करवा दूँगा।'

'उससे क्या होगा?' निर्वेदविजयजी जैमर का नाम पहली ही बार सुन रहे थे.....

'गुरुजी Radio frequency को जाम करने के लिए जैमर आता है। जहाँ पर भी बड़े-बड़े नेता आते है वहाँ यह जैमर लगाया जाता है। कोई भी व्यक्ति दूर से रिमोट डिवाइस से explosion करना

चाहेगा तो वह नही कर पायेगा। इस जैमर से मोबाईल नेटवर्क भी बंद हो जाता है। दरअसल, रात 10 बजे के बाद शिविरार्थी मोबाईल ना चला पायें इसलिए हम यहाँ जैमर लेकर आये हैं। कंपीटीशन शुरू होने से पूर्व ही प्रवचन हॉल में हम जैमर लगा देंगे। यदि वह earpod से सुन रहा है ऐसा लगेगा तो जैमर ऑन कर देंगे ..... उसका Wifi earpod काम ही नहीं करेगा।'

निर्वेदविजयजी विज्ञान की खोज से अभिभूत थे।

'जयेश, आज का सोल्युशन तो हो गया। मैं आने वाले दिनों के लिए तुझे एक प्लान बता रहा हूँ।' निर्वेदविजयजी म. ने अगल-बगल झाँक लिया, और जयेश को एक मास्टर प्लान बताया। सुनकर जयेश का चेहरा खिल गया। प्लान के मुताबिक जयेश लक्ष्मीचंदजी को फौरन बुलाकर लाया। बात सुनने के बाद लक्ष्मीचंदजी ने कहा - 'ठीक है साहब जी, मैं आज रात ही मुम्बई निकल जाता हूँ।'

लक्ष्मीचंदजी ने बाहर निकलकर बैंगलोर से मुम्बई की फ्लाईट में बिजनेस क्लास में टिकट बुक कराई और राजन को समाचार देने उसकी रूम की ओर चल पड़े।

कमरे में debate competition की तैयारी चल रही थी। लक्ष्मीचंदजी बाहर खड़े रहकर कान लगाकर सुनने लगे।

'देख संजू ..... मैंने विषय चुना है - त्याग में सुख v/s भोग में सुख ..... मेरे दिमाग में इस विषय में बहुत मजबूत तर्क है। मेरे सामने opponent जिनांग मेहता है वह त्याग में सुख पर अपना पक्ष रखेगा और मैं भोग में सुख पर ..... मेरे दिमाग में जो प्वाईन्ट्स है वह मैं तुझे बताता हूँ ..... तूं भी कुछ प्वाईन्ट्स बताना.....'

लक्ष्मीचंदजी ने मुस्कुराकर दरवाजा नॉक किया। 'Yes come in .....' दद्दु को देखते ही राजन बोल उठा 'क्या बात है दद्दु ..... आप अभी यहीं पर ही हो?'

'हाँ हूँ ..... लेकिन, थोड़ी देर में मुझे बैंगलोर के लिए निकलना पड़ेगा। रात 10.00 बजे मुम्बई के लिए फ्लाईट है .... अर्जेन्ट मिटिंग आ गई है।'

'दद्दु! यह क्या बात हुई? आप तो हमारे साथ ही रूकने वाले थे।'

'My dear ..... सच बात है, लेकिन Emergency का पता पहले से ही कहाँ होता है?'

'दद्दु! पापा मैनेज कर लेंगे। यदि 1/2 दिन में हमें रिटर्न आना होगा तो कैसे आयेंगे?'

'तूं मुझे कॉल कर देना, सारी arrengement हो जायेगी।' पाँच सैकण्ड रूककर लक्ष्मीचंदजी ने सभी को पूछा -

'वैसे आप लोगों का आधा दिन कैसा गया?'

विकास ने फौरन उत्तर दिया 'Uncle marvellous ..... हमने नहीं सोचा था कि आपके महाराजजी इतना नॉलेज रखते हैं .... क्या Logical presentation था।'

राजन समस्या बोलने जाए उससे पहले ही विकास ने बात पूरी कर दी।

'O.K. ..... तो मैं चलता हूँ। बैंगलोर भी यहाँ से दूर है।'

'O.K. दद्दु! Bye....'

****

'Dear friends ...... अब हम debate competition चालू करते है। यहाँ Debate करनी है मच्छी मार्केट नहीं बनानी है। इसलिए शुरू में 2 मिनिट एक लड़के को मिलेंगे। after 2 minutes आपका माइक्रोफोन अपने आप स्वीच ऑफ हो जायेगा। बाद में भी आप यदि अपनी बात चालू रखेंगे तो Negative Points मिलेंगे। एक लड़के की argument सुनने के बाद उसके opponent को चांस मिलेगा। उसे भी 2 मिनिट बोलना है। बाद में वापस पहले को 1 मिनिट दी जायेगी। और opponent को भी 1 मिनिट दी जायेगी। बाद में लास्ट 1 मिनिट में दोनों को बोलने की छूट रहेगी। But remember, here your loud voice is not important. Your logic and decency in presentation will count ..... (याद रखना, यहाँ आपकी ऊँची आवाज का कोई महत्त्व नहीं है। आपके तर्क एवं प्रस्तुति में रही सौम्यता को यहाँ गौर किया जायेगा) 'O.K.? ..... Now we will start the debate competition' जयेश भाई ने शुरू से ही माहौल जमा लिया।

करीबन 15 ग्रुप अलग-अलग 4 विषयों पर डिबेट करने वाले थे। करीबन डेढ़ बजे कॉम्पीटीशन चालू हुआ। निर्वेदविजयजी म. समेत सभी लोग युवाओं की IQ से प्रभावित थे। अंत में बारी आई राजन और जिनांग मेहता की ..... पहले जिनांग को चांस दिया गया - उसने शारीरिक और मानसिक स्वस्थता के लिए त्याग की महत्ता को प्रस्थापित किया। साथ में त्याग को परलोक में भी हितकारी बताया। राजन ने उनकी बात

का प्रतिकार करते हुए कहा कि 'यदि आपने Air की टिकट ली है तो Air की सफर करने का आपका अधिकार है, उसी तरह यदि आपको अच्छी सामग्रियाँ और साधन मिले हैं तो उसका भोग करना आपका अधिकार है। दूसरी बात, आप कहते हो की शारीरिक स्वस्थता के लिए त्याग जरूरी है तो मैं कहता हूँ कि आज ऐसे लाखों लोग हैं जो त्याग नहीं करने पर भी त्यागी लोगों से अधिक स्वस्थ हैं। मुझे ही ले लो ..... मैं लाईफ को जो एंजोय कर रहा हूँ वैसी आप में से कोई एंजोय नहीं करता होगा।

तीसरी बात, मेरे जैसे को त्याग करने की बात करेंगे तो मैं मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाऊँगा। जिसके पास दुनिया भर की चीजें है वह खुशहाल रहता है लेकिन वह इन चीजों को गँवायेगा तो disturb हो जायेगा। शायद वो suicide कर लेगा। इसलिए जो मिला है उसे use करके मस्त रहो so eat, drink and be merry.....' राजन के तर्क और प्रस्तुति से अभिभूत होकर सभी युवाओं ने तालियाँ बजाई।

जिनांग ने बाद में एक मिनिट तक उसके तर्क के जवाब दिये लेकिन उसका लॉजिकल पॉवर हल्का पड़ रहा था। बाद की एक मिनिट में राजन ने उन सभी का भी जवाब दे दिया।

निर्वेदविजयजी महाराज इस डिबेट को बड़े ध्यान से सुन रहे थे। Final decision उन्हें ही लेना था। डिबेट के बाद जब निर्वेदविजयजी महाराज रिज़ल्ट घोषित कर रहे थे उससे पहले राजन उनके कान में बात करके अपने स्थान पर बैठ गया। जयेश भाई निर्वेदविजयजी म. का face reading कर रहे थे। उन्हें लगा कि गुरुजी राजन की बात से बहुत ही impress हुए है।

अब निर्वेदविजयजी म. ने बात का दौर संभाल लिया। 'मेरे प्यारे शिविरार्थी ..... कुल पंद्रह जोड़ी में, 30 बच्चों ने शानदार डिबेट की है। मुझे बड़ा confusion हो रहा है कि जैनम् को top rank दूँ कि रियान को, वैभव को first दूँ कि रैवत को ..... अंत में बहुत गहराई से सोचा तो लगा कि पहले आप से ही पूछ लेता हूँ कि किसे Rank देना चाहिए ..... हाँ ..... जरूरी नहीं है कि आप जिसका नाम बोलेंगे उसे ही दूँगा ..... तो बोलो, who should get first Rank?'

बड़े आश्चर्य की बात थी कि जो नाम निर्वेदविजयजी म. के दिमाग में था वो ही नाम युवाओं की जबान से निकला ..... 'राजन ..... राजन ..... राजन .....' जयेश भाई ने हाथ खड़ा करके सभी को शांति से बिठा दिया। 'अब हम गुरुजी को सुनेंगे।'

'देखो, आपने बहुमत से जो नाम पुकारा वो ही नाम मेरे दिमाग में था।' सभी युवाओं ने cheer up किया ....

निर्वेदविजयजी म. ने बात आगे चलाई 'देखो क्या सही है और क्या गलत? उसके आधार पर इस competition में Rank नहीं दी जाती है ..... बल्कि किसके Logics sound हैं, और Presentation अच्छा है उसके आधार पर decision लिया जाता है। राजन ने भोग का पक्ष लिया था, उसके पास खुद की बात prove करने के लिए अच्छे logics थे इसलिए He wins today's competition.....

लेकिन उसकी सारी बातों के खिलाफ मेरे पास logics हैं। मैं साबित कर सकता हूँ कि त्याग में ही सुख है। यदि राजन मुझे इजाजत देता है तो मैं यहाँ पर ही उसका जवाब दे दूँगा। आपको आश्चर्य लगेगा कि मैं उसकी इजाजत क्यों माँग रहा हूँ? तो उसका जवाब है कि मैं उसका oponent नहीं हूँ इसलिए मुझे जवाब देना नहीं है, और महत्त्वपूर्ण दूसरी बात यह है कि मेरे इस clearification से उसे hurt हो सकता है।'

निर्वेदविजयजी म. ने राजन के सामने देखा। महाराज जी की इस सोच ने राजन को नतमस्तक कर दिया। 'गुरुजी आप लॉजिक दो ..... सभी के बीच में दो ..... मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं है। लेकिन मैं भी बीच में आपसे counter question कर सकता हूँ ना?' राजन सोच रहा था कि मैंने उस दिन दद्दु को जो चैलेंज दी थी उसका वक्त आ चुका है।

डिबेट का माहौल ऐसा जम गया था कि उसे देखकर वहाँ की हवा थम गई। 'देखो बच्चों ..... यहाँ मैं जो जवाब दे रहा हूँ वह राजन के तर्क के सामने होने पर भी शायद हर एक युवा के दिल के ऐसे ही तर्क का जवाब है ऐसा आपको समझना है।'

जवाब देने से पूर्व गुरुजी ने जयेश को बुलाकर सूचना दे दी। जयेश ने वह सूचना सभी को forward करते हुए कहा – 'मधुरपान का समय हो चुका है लेकिन पू. गुरुजी जवाब दे रहे हैं इसलिए दस मिनिट के बाद हमें खड़ा होना है।'

क्रमश : ......

मुख्य आधारस्तंभ

पू. आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय उदयवल्लभसूरीश्वरजी म.
की प्रेरणा से एक सद्गृहस्थ, अहमदाबाद

आधार स्तंभ

• प्रणवभाई, सूरत • एक सद्गृहस्थ, सूरत
• पू. आचार्यदेव श्री वरबोधि सूरि म. के संयम जीवन के 50 साल
और पिता गुरुदेव पन्यास श्री कैवल्य बोधि वि.म. के 41 साल के संयम जीवन की
अनुमोदनार्थ पं. श्री पद्मबोधि वि.जी.म.सा. की प्रेरणा से गुरु भक्त परिवार
• सूरजमल कान्ता बाई गोटावाला परिवार - भवानीमण्डी
चन्द्रशेखर - किरण बाला, रूपल - सौरभ, आलीशा - अंकुर, दृष्टि - पारस
• भामाशाह श्रीमान दीनदयाल जी जैन, महेश - सीमा, नमन, लक्षित
• श्री महावीर प्रसाद जी, मनोज जी, सुनील जी, तालचिडी वाले, हिंडौन सिटी
• शान्ता बहन वाडीलाल शंभुलाल वोरा, जिज्ञा-प्रविण, जोली-नितिन, भावि, महेक,
आदीश, आरना, नयसार, बेटी रसीला, अलका, लता, घाटकोपर (कल्पतरु औरा)
श्री कल्पतरु औरा जैन संघ - घाटकोपर
श्री वाधवा जैन संघ- घाट कोपर
• सेठ श्री कान्तिलाल मणिलाल शाह, कीर्तिभाई-बीना, जिनेश- फोरम घाटकोपर
• मातुश्री पुष्पाबहन चन्दुलाल एम. शाह, कोंढ-सुरेन्द्र नगर वर्त. में घाटकोपर
• श्री धर्मेश भाई जयसुख भाई देसाई, घाटकोपर
• धनजी दामजी छेड़ा - पंकज, छेड़ा परिवार घाटकोपर
• श्री सुपार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे
पू.मु. श्री मग्नशेश्वर वि.जी, पू. मु. श्री पूर्णशेखर वि.जी, पू. सा. श्री तीर्थध्यान प्रभा श्रीजी म.सा.
की प्रेरणा से मातु श्री बेबीबाई वनेचंद जी बामणिया परिवार, दावणगेरे (मरुधर में सीलधर)
अर्हम् मोबाइल दावणगेरे (श्री गौतम, जयन्तीलालजी, पूनम, मेहेक, तन्वी)
एक गुरुभक्त परिवार, दावणगेरे
कल्पेश विपुल विशाल भाई - स्व.कलाबाई रसिकलाल शंकर लाल जी परिवार चौहाण - बरलूट- दावणगेरे
नरेन्द्र कुमार जी, ओटमल जी कालन्द्री, दावणगेरे
रसिकलाल शंकरलाल जी परिवार, दावणगेरे
एक सुश्राविका - दावणगेरे
मोहन लाल जी कटारिया, पालीवाले - दिवेश-किशोर-चंदन (देवीचंद जी)
रमण लाल जी मयाचंद जी, दिनेश कुमार, विजय कुमार, मनोज कुमार, संतोष, संयम,
मोक्षित, दर्शन, श्रेयांस, जैनम् दावणगेरे
पटियात साहेबचंद, सोहनराज, बाबूलाल, राजवीर,
लक्ष्य, हर्ष बेटा-पोता, वच्छराज जी धूड़ाजी (मरुधर-धाणसा, वर्तमान, चित्रदुर्गा)

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक - 13

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

मुनि श्री निर्वेदविजयजी म. ने राजन के लोजिक्स का जवाब देना शुरू किया 'मैं राजन ने debate में प्रस्तुत किये हुए बिंदु का एक-एक करके जवाब दे रहा हूँ।

नंबर वन - 'अच्छी सामग्रियाँ और साधन मिले हैं तो भोग करने का उसे मालिक का अधिकार है .....' यह बात आधी-अधूरी है। भोग की तरह त्याग करना भी उस मालिक का अधिकार है। सच बोलना राजन! किसी उद्योगपति के पास 1000 करोड़ रुपये हैं ..... क्या वह अपनी जिंदगी में 1000 करोड़ रुपये भोग के लिए खर्च कर सकता है?'

राजन निर्वेदविजयजी से नजर नहीं मिला पाया। गर्दन नीची करके ही उसने ईशारे से मना किया।

'यदि 1000 करोड़ रू. का भोग नहीं कर सकता है तो उसके भोग के अधिकार का क्या हुआ?'

राजन को लग रहा था कि खामख्वाह मैं इनके सामने भिड़ गया हूँ। मेरी इज्जत का कचरा होने के अलावा आज और कोई नतीजा आने वाला नहीं है।

गुरुजी ने बात आगे चलाई ..... 'लेकिन वह 1000 करोड़ का मालिक उन सभी संपत्ति का त्याग करना चाहता है तो कर सकता है कि नहीं?' राजन ने गर्दन हिलाकर हाँ कही .....

'तो हकीकत में सभी संपत्ति का त्याग करना उसके अधिकार की बात है, भोग करना उसके अधिकार में नहीं है ..... गत साल दिल्ली के एक बड़े उद्योगपति ने दीक्षा ली वह आपने देखा ही था ना?.....'

निर्वेदविजयजी म. ने debate का पहला मोर्चा जीत लिया।

अब दूसरी बात ..... 'राजन ने कहा कि आज ऐसे लाखों लोग हैं जो त्याग नहीं करने पर भी त्यागी लोगों से अधिक स्वस्थ हैं।' यह बात भी अर्धसत्य है। भोग में कहीं पर रूकने वाले ही स्वस्थ रहते हैं, नहीं रूकने वाले बहुत जल्दी ऊपर जाते हैं ..... मतलब, त्याग करने पर ही स्वस्थता मिलती है।

'आपने वीटेलिअस का नाम सुना है?'

'नहीं ..... नहीं .....' सभी शिविरार्थियों ने मना किया।

'वह एक ग्रीक राजकुमार था। खाने का बेहद शौकीन ..... एक बार डाईनिंग टेबल पर बैठ गया तो वह अपनी पेट की केपेसिटी को भूल जाता था। इतना खाता था कि डाईनिंग टेबल से उठते ही उसे वोमिट हो जाती थी। खाया हुआ सारा माल निकल जाता था। हाथ, मुँह धोकर वापस वह खाना खाने बैठ जाता था।'

सभी शिविरार्थी ठहाके लगाकर हँसने लगे .....

'क्या करे, बेचारे की तृप्ति होती ही नहीं थी। कभी-कभी खाया हुआ पेट में फँस गया और सहज रूप में वोमिट नहीं होती थी तो वह ऊँगली डालकर वोमिट करके वापस खाने के लिए बैठ जाता था। इस तरह खाने से सिर्फ 30 साल की उम्र में उसकी मौत हो गई।'

आप एक बार अस्पताल का सर्वे करके आओ, अस्पताल में खाना खाने से दाखिल होने वाले लोग ज्यादा हैं कि त्याग करने से दाखिल होने वाले लोग ज्यादा हैं?

सभी शिविरार्थियों ने एक साथ कहा - 'खाना खाने से .....' राजन की हालत तो एकदम पतली हो गई।

'राजन ने जो कहा कि वह जिस तरह लाईफ को एन्जॉय कर रहा है उस तरह यहाँ कोई एन्जॉय नहीं करता होगा।' वह बात शायद सच होगी। लेकिन राजन, तुझे एन्जॉय करना है तो पैसे खर्च करने पड़ते हैं, मैं तो फ्री में ही लाईफ को बहुत अच्छे से एन्जॉय करता हूँ।'

सभी शिविरार्थियों ने जमकर तालियाँ बजाई।

अब तीसरी बात.....'जिसके पास दुनियाभर की चीजें हैं वह खुशहाल रहता है लेकिन इन चीजों को गँवाने वाला डिस्टर्ब हो जायेगा..... हकीकत में देखने जाओ तो थोड़ा उल्टा दिख रहा है। जिसके पास दुनियाभर की चीजें हैं वह टेन्शन में जीता है, उसे सोने के लिए नींद की गोलियाँ लेनी पड़ती है और जिसका जीवन अनगिनत अभावों से जूझ रहा है ऐसे झौंपड़पट्टी वाले को बिस्तर पर पड़ते ही खर्राटे चलने लगते हैं।' राजन ने निर्वेदविजयजी म. को बीच में ही रोक दिया

'गुरुजी! एक ओब्जेक्शन है आपकी बात में.....' सभी शिविरार्थी चौंक गये ..... यह कैसे बात करता है? 'Yes, you are welcome.....'

'गुरुजी! मैंने कहा था कि जो उन चीजों को गँवाता है वह डिस्टर्ब होता है लेकिन आपने तो ऐसे व्यक्ति का दृष्टांत दिया है कि जिसने कभी पाया ही नहीं ..... हकीकत में तो गँवाता है उसे झटका लगता है, वह तो डिस्टर्ब होगा ही ना?'

निर्वेदविजयजी म. राजन की तर्क शक्ति से प्रभावित हुए ..... सभी शिविरार्थियों ने भी इस लोजिक को सुनकर तालियाँ बजाई। तर्क के मैदान में सिक्सर लगाने वाले अपने मित्र को देखकर विकास, विश्वास और संजू भी जोश में आ गये।

'Really good logic Rajan..... लेकिन मैं उसका भी जवाब दे रहा हूँ। जिस करोड़पति ने वह (सब कुछ) गँवाया है, उसके पास और कोई sources नहीं होते हैं कि जिसके द्वारा वह अपनी simple life चला सके? आपको पता न हो तो बता दूँ कि कोई भी व्यक्ति कितना भी कर्ज में डूब जाये तो भी भारत के संविधान ने उसके जीने के अधिकार को छीना नहीं है। वह Settlement कर सकता है, जीवन के लिए आवश्यक रोटी, कपड़ा, मकान वगैरह लेनदार उससे छीन नहीं सकता है तब उसे Suicide करने की क्या जरूरत है?

मैंने कई बार देखा है कि यदि अपनी प्रोपर्टी को बेच दे ..... अपने शेयर सर्टीफिकेट्स बेच दे तो वह कर्ज चुका सकता है और एक नॉर्मल लाईफ भी जी सकता है। लेकिन Name & fame खत्म हो जाये वह उससे सहन नहीं होता है। अब तक जो Luxury का उपभोग किया है, उसके बिना वह तड़पने लगता है .... हाँ ..... यह तड़पन शारीरिक नहीं, मानसिक होती है।

सब कुछ खोने के बाद हो रही इस परेशानी को आप किसी Drug addict की स्थिति से compare कर सकते हो। जिस तरह drug addict बिना drug तड़पता है, वैसे ही यह बंदा बिना Luxury तड़पता हैं। तब आप कह सकते हैं Luxury का उसने जो addiction लगाया वह ही उसकी गलती थी। मैं भी वो ही कह रहा हूँ कि संपत्ति थी तब भोग के पीछे वह भागा वो ही उसकी गलती थी। यदि उसने भोग के साथ त्याग करने की practice रखी होती तो वह बच जाता

...... बराबर है?'

सभी शिविरार्थियों ने निर्वेदविजयजी म. को जोरदार Standing ovation दिया ..... कई युवा पुकारने लगे 'गुरुजी अमारो अंतर्नाद, अमने आपो आशीर्वाद .....' माहौल को देखकर राजन रूआँसा हो गया।

निर्वेदविजयजी म. ने फौरन बाजी संभाल ली 'शांति ..... शांति .....' जयेश ने सभी को बिठा दिया।

'देखो ..... मैंने भले ही राजन के दिये हुए Logic का जवाब दिया और आपको पसंद आया ..... लेकिन राजन ने इतनी Young Age में मेरे सामने खड़ा होने की जो हिम्मत की है वह भी कुछ कम नहीं हैं ..... आपको उसे भी encourage करना है .....'

फौरन शिविरार्थी खड़े हुए और corus में चिल्लाये 'राजन ..... राजन ..... राजन ..... राजन .....' कुछ शिविरार्थीयों ने उसे अपने कंधे पर उठा लिया।'

25-30 सेकण्डस् तक यह माहौल रहा ..... गुरुजी के ईशारे पर जयेश ने Announcement किया 'चलो, सभी शिविरार्थी बाजु वाले हॉल में मधुर-पान के लिए पहुँचो .... Within 15 minutes you must come back ..... hurry up.....'

पंद्रह मिनिट में शिविरार्थी मधुरपान लेकर वापिस आये इतने में जयेश ने निर्वेदविजय जी म. से बातचीत कर ली।

'गुरुजी मार्वेलस ..... शानदार ..... मजा आ गई' निर्वेदविजयजी ने मुस्कान से प्रत्युत्तर दिया। 'गुरुजी, राजन ने आपके कान में क्या कहा था?' 'जयेश, यह राजन सचमुच हीरा है हीरा ..... तराशने का बाकी है ..... उसने मुझे कहा कि गुरुजी, मेरी पहचान लोगों के बीच में उजागर मत करना ..... वरना मुझे लोग मेरे पापा और दद्दु के नाम से पहचानने लगेंगे ..... I don't want that ..... मैं Normal youth की तरह रहना चाहता हूँ। मैंने मेरे तीनों फ्रेण्ड्स को भी यह सूचना पहले से ही दे रखी है .....'

जयेश की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गई ..... 'जयेश अभी जो सेशन स्टार्ट होने जा रहा है उससे पूर्व तुझे वह Announcement करना है ..... ध्यान है ना?' 'जी गुरुजी.....' '

और जैमर का इंतजाम भी हो गया होगा?' 'जी, सब कुछ तैयार है।'

पंद्रह मिनिट में सभी शिविरार्थी शिविर हॉल में वापस लौट गये। जयेश भाई ने Announcement शुरू किया 'मेरे मित्रों, प्रणाम ..... एक sad news है ..... हमारा एक शिविरार्थी कुणाल ..... आज दोपहर साढ़े बारह बजे से लापता है। सभी रूम्स ..... अपना केम्पस ..... सब कुछ छान मारा है लेकिन मिला नहीं तब हमने दोनों मेईन गेट्स के सी.सी.टी.वी. फुटेज चेक करवाये तो पता लगा कि गेट नं. 2 से वह बाहर गया है। Actually इसमें यहाँ के Watchman की भी गलती हुई है। उसे अपनी एजेन्सी के किसी और आदमी को खड़ा करके वहाँ से लंच के लिए जाना चाहिए, लेकिन वह गेट को ऐसे ही बंद करके निकल गया और कुणाल वहाँ से भाग गया। हमने यहाँ के प्रशासन को फोटो शेयर करके सूचना दे दी है। लेकिन, उन लोगों का कहना है कि - 'हम प्रयास करेंगे ..... मगर सभी स्टूडेण्ट्स को बोल दो कि यह तमिलनाडु है ..... यहाँ के ग्रामीण लोग तमिल के अलावा और कोई भाषा नहीं समझते हैं। आप यदि कहीं पर खो गये तो ना घर पहुँच पाओगे, ना शिविर स्थल पर.....' दूसरी बात, यहां के जंगल और पर्वतों में कुछ आदिवासी प्रजातियाँ ऐसी है जो बच्चों को पकड़कर ले जाती है और कच्चा-कच्चा ही खा जाती है। इसलिए सभी को Strict warning है कि इस कैम्पस से बाहर नहीं जाना है ..... कोई भी प्रोब्लम है तो Contact me or my volunteer team ..... ok ..... Now over to Pujya Guruji .....'

जयेश भाई बैठ गये लेकिन शिविरार्थी बच्चों के चेहरे पर खौफ खड़ा हो गया था। निर्वेदविजय जी म. ने 'Our Ideals ..... Our Heors' विषय पर प्रवचन करने से पूर्व एक-दो जोक्स सुनाकर बच्चों के भय को दूर करने का प्रयास किया .... 'आप जब तक इस कैम्पस में हो तब तक बिल्कुल फिकर मत करना ..... सिक्योरिटी की व्यवस्था और भी टाईट की गई है ...... ओके......?' निर्वेदविजयजी म. का यहाँ प्रवचन शुरू हुआ और राजन का ear pod शुरू हुआ। जयेश भाई राजन के चेहरे पर रहे expression से समझ गये कि बंदा अभी किसी और दुनिया में पहुँच गया है। उसे वापस धरती पर लाने के लिए उन्होंने सारे जैमर शुरू करवा दिये। पाँच सेकण्ड्स के भीतर राजन के ear pod ने जवाब दे दिया। उसके चेहरे पर उभरे हुए भावों को देखकर जयेश को बहुत हंसी आ रही थी। राजन ने संभलकर दोनों ear pod कान से निकाल दिये। अब वह

प्रवचन सुनने लगा। लेकिन बार-बार बेचैनी उसके चेहरे पर झलक रही थी। शायद जीतने पर भी हुई हार को वह हजम नहीं कर पा रहा था।

****

लक्ष्मीचंदजी ठीक नौ बजे अपने P.A. विनय के साथ बैंगलूरू एयरपोर्ट पहुँच गये। जब भी out of mumbai उन्हें जाना होता था और कोई साथ में नहीं होता था तब विनय उनके साथ ही रहता था।

एयरपोर्ट के वेटिंग रूम में पाँच मिनिट रूककर, Security check points को पास करके वे बोर्डिंग पास का इंतजार करने लगे। बार्डिंग पास प्राप्त करके वे विनय के साथ वेटिंग लॉन्ज में बैठ गये। पौने दस बजे उन्होंने फ्लाइट बोर्डिंग किया। बिजनेस क्लास की सीट नं. 5 पर वह बैठे और पाँच मिनिट में भारत देश का नं. 1 उद्योगपति प्रदीप राणे सीट नं. 4 पर आया ..... लक्ष्मीचंदजी और प्रदीप राणे दोनों बड़े surprise से एक दूसरे को देखने लगे .....

लक्ष्मीचंदजी ने खड़े होकर प्रदीप से हाथ मिलाये 'glad to meet you Mr. Rane.....' प्रदीप ने भी गर्मजोशी से हाथ मिलाये 'I also glad to meet you Mr. L. N. Sanghvi.....' औपचारिक मुस्कान के साथ दोनों अपनी-अपनी सीट पर बैठ गये ..... 'वेटिंग लॉन्ज में दूर से मैंने आपको देखा तो मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि आप अचानक ही मुझे मिल जायेंगे' राणे ने बात शुरू की ..... 'और मुझे तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा है कि प्राईवेट जेट और पर्सनल हेलीकॉप्टर में घूमनेवाले हिन्दुस्तान के legend industrialist का मिलन मेरे जैसे छोटे आदमी को ऐसे ही हो जायेगा।' लक्ष्मीचंदजी ने हँसते-हँसते कहा .....

इतने में सीट नं. 3 पर प्रदीप राणे का बेटा संदीप राणे आया 'Mr. L.N. Sanghvi meet my son Sandeep.....' लक्ष्मीचंदजी ने उससे भी हाथ मिलाये .... 'संदीप तूं शायद पहली बार मिल रहा है ...... यह लक्ष्मीचंदजी है.....' 'good evening uncle.....' 'good evening my son.....' मुस्कान के साथ लक्ष्मीचंदजी ने भी उसका अभिवादन किया .....

दस बजते ही टेक ऑफ की सूचना प्रसारित हुई और सभी अपने-अपने सीट बेल्ट बांधने लगे। टेक ऑफ की पाँच मिनिट के बाद लक्ष्मीचंदजी की नजर प्रदीप पर गई। वह मन ही मन कुछ उलझन में था। मोबाईल की स्क्रीन ऑन होने पर भी उसका ध्यान मोबाईल पर नहीं था ऐसा लक्ष्मीचंदजी को स्पष्ट लग रहा था। अचानक वह लक्ष्मीचंदजी की ओर मुड़ा 'Mr. Sanghvi' लक्ष्मीचंदजी ने हाथ में रहा हुआ मैगजीन विनय के हाथ में दे दिया 'हाँ, राणे जी कहिये कैसे हो?' 'I am fine ..... may I know your future investment plannings?' (क्या मैं आपका भविष्य का निवेश आयोजन जान सकता हूँ?) लक्ष्मीचंदजी ने मुस्कराकर कहा 'sorry ..... I beg pardon to edit your question' (आपके प्रश्न का संशोधन करने के लिए मैं माफी चाहता हूँ) you are just asking the future planning of my SGC .... am I right? (आप मेरी SGC के भविष्य के आयोजन के लिए पूछ रहे हो ..... सही है ना?) प्रदीप राणे बौखला गया ..... 'It is same....' 'You might have heard about SGC refinery project near Ahmedabad' (आपने SGC रिफाईनरी के बारे में शायद सुना होगा) 'Yaa..... Yaa.....' 'अब आपके बारे में बताओ .....' 'I think, Gold will be the safest and superb option for investment in future (मुझे लगता है निवेश के लिए सोना सबसे सुरक्षित और सुंदर विकल्प भविष्य में रहेगा) थोड़ा रूककर, अजीब निगाह से लक्ष्मीचंदजी की ओर देखते हुए राणे ने पूछा 'Am I right?'

लक्ष्मीचंदजी बहुत अच्छे से समझ रहे थे कि इस बंदे ने सोने की बात क्यों निकाली थी .... हँसते हुए उन्होंने जवाब दिया 'जनाब आप कहाँ और हम कहाँ ..... इन्वेस्टमेन्ट के लिए जेब में कुछ होना भी तो चाहिए?'

प्रदीप राणे ने टोक दिया 'Mr. Sanghvi .... If you don't mind, Let's talk in english ..... otherwise I can talk in hindi or marathi also......' (मिस्टर संघवी, यदि आपको समस्या ना हो तो हम अंग्रेजी में बात करें? वरना मैं तो हिन्दी या मराठी में भी बात कर सकता हूँ .....)

लक्ष्मीचंदजी ने फर्राटेदार अंग्रेजी में बात शुरू की ..... लेटेस्ट मार्केट ट्रेन्ड और W.E.F. (World Economic Forum के Resolution-2016) के ऊपर वे बोलने लगे। 15 मिनिट तक फर्राटेदार अंग्रेजी में बातें सुनकर प्रदीप राणे भौंचक्के रह गये। प्रदीप राणे को कुछ बात समझ में न आने पर बीच में लक्ष्मीचंदजी को रोककर जब पूछना पड़ा तब लक्ष्मीचंदजी ने दो टूक सुना

दिया 'Sorry to say Mr. Rane .... I can talk in english very well, but with my Indian brothers I prefer to talk in Indian language. (मि. राणे, माफ करना मैं इंग्लीश में बहुत अच्छे से बात कर सकता हूँ, लेकिन मेरे भारतीय भाईयों के साथ मैं भारतीय भाषा में बात करना चाहूँगा)'

प्रदीप राणे की हालत काटो तो खून ना निकले ऐसी हो गई। वह कुछ जवाब दे उससे पहले ही लक्ष्मीचंदजी ने अपनी बात शुरू कर दी ..... 'Well Mr. Rane ...... आज कल बाजार में जो Spy equipments मिलते हैं, उसके बारे में आपका क्या कहना है?'

लक्ष्मीचंदजी की बात राणे के कान में सुई की तरह चुभी ..... उसके चेहरे पर बौखलाहट साफ नजर आ रही थी ..... 'आप कहना क्या चाहते हो?' 'जो आप समझते हो .....' लक्ष्मीचंदजी हंसकर बोले। 'Mr. राणे ..... मैं समझता हूँ कि बड़े-बड़े बिजनेस हाउस के बीच कम्पीटीशन होती रहती है ..... लेकिन लिमिट क्रॉस करना किसी के भी फायदे में नहीं होता।' लक्ष्मीचंदजी की बात को बीच में ही काटकर प्रदीप बोल पड़ा 'Mr. Sanghvi आप मुझ पर इल्जाम लगा रहे हो।' लक्ष्मीचंदजी ने शांति से जवाब दिया 'आवाज बड़ी करके सबके बीच में तमाशा करना हो तो आप स्वतंत्र हो ..... लेकिन समझ लेना अभी हिन्दुस्तान में मुझसे बड़ी इज्जत आपकी है .....' राणे ने एकदम शांति धारण कर ली ..... 'मैं जो कह रहा हूँ वह सुनते जाओ ..... पहली बात तो यह है कि मैंने आप पर कोई भी इल्जाम ही नहीं लगाया है तो आप इतने उबल क्यों रहे हो?'

लक्ष्मीचंदजी ने राणे को तीखी नजर से देखा ..... राणे को भी एहसास हो रहा था कि खामख्वाह वह गुस्से में आकर खुला पड़ गया।

'Mr. राणे एक बात हमेशा याद रखना कि आप भले ही शिखर पर बैठे हो, लेकिन शिखर पर ही बैठे रहोगे उसकी कोई गारंटी नहीं है। दूसरी बात, शिखर पर बैठे हो तो शांति से बैठकर हवा खाओ ..... आपको कोई परेशान नहीं कर रहा है। लेकिन आप ऊपर बैठे-बैठे नीचे रहे हुए लोगों को पत्थर मारते रहें तो नीचे रहा हुआ इन्सान आपको छोड़ने वाला नहीं है।

तीसरी बात ..... किसी को Overtake करके आप शिखर पर भले ही पहुँच जाओ ..... लेकिन अच्छा संबंध बनाया होगा तो कल आपको नीचे उतरते वक्त वह मिलेगा तो कम से कम आप उससे नजर मिला पाओगे।' थोड़ा रूककर लक्ष्मीचंदजी ने अंतिम मिसाईल दाग दिया 'Mr. राणे ..... आप गलतफहमी में मत रहना कि विकास कानिटकर के मरने से सारे सबूत नष्ट हो गये हैं ..... वह सारे सबूत मेरे पास Secured है...... मेरे P.C. में ..... ' राणे का चेहरा और आँखें सब कुछ बयां कर रही थी और लक्ष्मीचंदजी उसे अच्छी तरह से पढ़

रहे थे।

'आप बहुत सयाने और समझदार हो ..... वो मेरे PC. में ही पड़ा रहे ऐसा आप चाहते हो तो Now no blunder any more ..... understood .....?'

लक्ष्मीचंदजी ने अपनी बात पूरी की और सीट नं. 3, 4, 5, और 6पर सन्नाटा छा गया। संदीप राणे लक्ष्मीचंदजी के तेवर देखकर कांप गया और विनय अपने बॉस का यह स्वरूप देखकर भौंचक्का रह गया। लक्ष्मीचंदजी के चेहरे पर मुस्कराहट थी। राणे का चेहरा लाल हो गया था और ए.सी. की ठंडक होने पर भी शरीर पसीने से स्नान कर रहा था।

'Please fasten your seat belt' Flight attendant ने घोषणा की तब राणे को शांति हुई। प्लेन लेण्ड हुआ। सभी अपनी-अपनी सीट से खड़े हुए ..... लक्ष्मीचंदजी ने राणे से कहा 'Mr. राणे, कभी किसी के दिल को चोट पहुँचे तो हमारे यहाँ 'मिच्छामि दुक्कडम्' कहा जाता है ..... आपने PM नरेश मोदी जी से भी यह शब्द सुना होगा ..... मिच्छामि दुक्कडम् ..... good bye .... see you again positively.....' हाथ मिलाकर दोनों अलग हुए।

राणे तो लक्ष्मीचंदजी के तेवर देखते ही रह गया। हिन्दुस्तान में अमीरों की सूची में प्रथम क्रम पर आने के बाद उसके साथ ऐसे तेवर के साथ बात करने वाला यह पहला शख्स था।

****

'यार, आज का पूरा दिन मनहूस गया ..... मालुम नहीं सुबह-सुबह में सबसे पहले किसकी शक्ल देखी

थी.....'

राजन की बात सुनकर संजू ने मजाक की 'मैंने देखा था सुबह में तो तूं जगकर सबसे पहले आयने के सामने खड़ा हुआ था।'

राजन ने संजू को जोर से धब्बा लगाया.....

'यार, ऐसे हालात में तुझे मजाक सुझती है?'

'राजन! enjoy this shivir..... आज शाम के वक्त हर्ष दोशी ने क्या भक्ति कराई थी ..... मुझे, विकास और विश्वास को ऐसा लगा कि इतने सालों में हम कभी क्लब में भी इतना नहीं नाचे थे ..... क्या सोंग था और क्या bits थे.....'

'मगर debate में जीतने के बावजूद मेरी इज्जत का जो कचरा कर दिया था, उसकी वजह से शाम को मुझे नाचने का कोई मजा नहीं आया था। दूसरी ओर दद्दु हमें छोड़कर आज ही चले गये।'

'राजन! आज निर्वेदविजयजी म. के सामने तूने बीच में argument की वो ही तेरी सबसे बड़ी गलती थी। वे जैन मुनि बरसों से ऐसी शिविरें लेते हैं। हमारे जैसे तो उन्हें कितने सारे मिलते होंगे! वे इस बुद्धि के दंगल में अच्छे-अच्छे को पटखनी देते हैं। ऐसे वक्त में तो Surrender कर देना वो ही एक रास्ता होता है। चल जाने दे जो हुआ सो हुआ। Now just enjoy this shivir.....'

'संजू! तुझे पता चला ..... Network zero आ रहा है ..... तूं कहीं पर भी चला जा ...... पूरे कैम्पस में न Jio का पकड़ रहा है ना ही airtel का.....' विश्वास ने कमरे में enter होते ही Breaking News दिये .....

'अरे यार ..... यह क्या बात हुई? आज सुबह में तो अच्छा-खासा नेटवर्क आ रहा था .....' विकास ने आश्चर्य व्यक्त किया .....

'तूं सुबह की बात कर रहा है ..... दोपहर को भोजन के बाद भी 800KB की स्पीड आ रही थी.....' संजू ने विकास की बात का समर्थन किया।

'तुम्हें तो अभी पता चला मुझे तो जीरो नेटवर्क का अनुभव दोपहर को ही कम्पीटीशन के बाद हो गया था। मैं प्रवचन में बोर हो जाता हूँ इसलिए Wifi वाले micro ear pods कान में लगाकर स्मार्ट वॉच से पॉप सांग शुरू कर देता हूँ ..... सुबह में तो ear pods अच्छा चल रहा था। दोपहर को debate के बाद जो तमाशा हुआ, उसके चलते मेरा मूड ऑफ हो गया था। मैंने शुरू किया और क्या मालुम, 10 सेकण्ड में ear pode बंद हो गया। यह तो बिल्कुल नया था ..... प्रवचन के बाद जैसे ही मैने स्टार्ट किया तो वापस शुरू हो गया .....' राजन बोलते-बोलते रूक गया ..... सोच रहा था कि क्या प्रॉब्लम हुआ होगा?

अचानक संजू को click हुआ ..... 'अरे यार ..... यह और कुछ नहीं है, जैमर का कमाल है। राजन, सुबह में 9.00 से 12.00 का फर्स्ट सेशन था, उसमें तूं ear pode से गाना सुन रहा था। निर्वेदविजय जी म. की नजर बहुत ही शार्प है ..... वे समझ गये होंगे कि तेरा ध्यान प्रवचन में नहीं है और पॉप सुनकर तूं मूंडी इधर-उधर हिलाता होगा तो उन्होंने पकड़ लिया होगा। इसीलिए दोपहर के टाईम में उन्होंने हॉल में पहले से ही जैमर का इंतजाम करवा दिया। अभी रात में हमारा नेटवर्क का काम है तब वापस जैमर ऑन हो गये लगते है। समझे बरखुरदार.....?'

'यार, और सात दिन कैसे निकालेंगे?' राजन के दिमाग में रहा हुआ टेन्शन जबान पर आ गया।

'देख राजन, मैं 24 घंटे में यहाँ से फरार होने का कोई रास्ता ढूँढ निकालता हूँ, तूं फिकर मत करना .....' संजू ने मित्र की पीड़ा दूर करने का बीड़ा उठाया .....

'संजू, आज दोपहर की कम्पीटीशन के बाद में जो अनाउंसमेन्ट हुई थी वो तूने सुनी थी कि नहीं?'

'हां यार ..... वो तो मैंने सोचा ही नहीं ..... यदि आदिवासियों के हाथ चढ़ गये तो खतम समझो .....'

'संजू, दद्दु ने और निर्वेदविजय जी म. ने हमें बराबर का फंसा दिया है ..... और कुछ आईडिया मिले तो बताना ..... तब तक गुडनाईट .....'

****

सुबह के योगा और प्रभु पूजा के कार्यक्रम में राजन को अनुपस्थित (Absent) देखकर जयेश भाई नाश्ता करने से पहले ही राजन के कमरे में पहुँच गये। वह गद्दी में सोया हुआ था।

'संजु, विकास, राजन क्यों सो रहा है? योगा और पूजा के कार्यक्रम में क्यों absent था?'

'सर, उसे सुबह से पेट में दर्द हो रहा है।' संजू ने जवाब दिया।

'आपको कब पता लगा कि उसे पेट में दर्द है?'

'सर, अभी कहा न-सुबह से' ..... 'सुबह से तो बराबर, लेकिन 5:45 को जगने के बाद तुरंत ऐसा लग रहा था

कि योगा से आने के बाद'

'सर जगने के बाद फौरन ..... इसीलिए तो योगा में नहीं आ पाया था'

'तो आपको मुझे योगा के लिए जाने से पूर्व ही सूचना दे देनी थी, बराबर है ना?'

संजु, विकास और विश्वास को जयेश सर Volunteer कम और जासूस ज्यादा लग रहे थे।

'Sorry sir ..... अब क्या करें?' संजू ने शॉर्ट में निपटाया .....

'एक मिनिट आप साईड में आ जाओ ...... मैं जरा देख लेता हूँ।' जयेश ने डॉक्टर की अदा से आदेश किया .....

राजन को जगाया, चद्दर साईड पर करवाई।

'कल क्या खाया था?' जयेश की inquiry शुरू हुई।

'दाल-बडे, चटनी, गुलाब जामुन, कोल्ड कोको ..... नॉर्मल खाया था सब.....'

'आज सुबह फ्रेश होके आया था?'

'हाँ ..... मगर आने के बाद ही थोड़ी गड़बड़ लग रही थी।'

'ठीक है ..... सीधा लेट जा।'

जयेश ने उसके पेट पर हाथ लगाकर चेक किया। उन्हें समझ में आ गया कि यह एक ड्रामा है।

'सर, डॉक्टर को बुलाना है?' संजू ने जैसे ही पूछा, राजन ने संजू की ओर देखकर रोकने का ईशारा किया। यह ईशारा जयेश की नजर से बाहर नहीं जा पाया।

'नहीं ..... नहीं ..... वैसे तो यह नॉर्मल है ..... खाने-पीने में थोड़ा बदलाव कर देंगे तो सही हो जायेगा। डॉक्टर Antibiotic देगा तो लंबा चलेगा।' राजन की ओर देखकर जयेश ने कहा 'राजन, आज तूं आराम करना। तुझे कहीं पर भी आना-जाना नहीं है। मैं खुद तेरे लिए दवाई, खाना वगैरह ले आऊँगा। शायद शाम तक तो तूं दौड़ने लगेगा ..... ओके?' संजू, विकास और विश्वास की ओर घूमकर जयेश ने सूचना दी 'Today, he will be under my observation ..... All of you will attend programms ..... (आज यह मेरी निगरानी में रहेगा। आप सभी को सारे कार्यक्रम में पहुँचना है) आपमें से किसी को यहाँ रूकना नहीं है।'

सभी के पास हाँ कहने के अलावा कोई चारा नहीं था। जयेश ने वहाँ से ही एक Volunteer को कॉल करके बुलाया और उस कमरे को छोड़ते हुए सूचना दे दी 'दो मिनिट में सचिन आ जायेगा। पूरा दिन वह राजन की सेवा में रहेगा। ओके .....?' जयेश कमरे से बाहर निकला और बाहर ही खड़ा-खड़ा अंदर की बात सुनने लगा।

'संजू ..... तूने मरवा दिया ..... अब वो जयेश का बच्चा खिलायेगा वो ही खाना पड़ेगा।' राजन ने अपनी भड़ास निकाली ..... 'पता नहीं ..... मैं तेरे पास से ही आईडिया क्यों लेता हूँ?' 'सॉरी बाबा सॉरी ..... आज का दिन पास कर ले ..... आगे के लिए .... मैं नई आईडिया' संजू की बात को बीच में ही काटते हुए राजन चिल्लाया 'गलती से भी नहीं .....' विकास ने बीच में पड़कर मोर्चा सम्हाल लिया 'तुम लड़ना-झगड़ना बंद करो .... वो आता ही होगा।'

जयेश वहाँ से फौरन रवाना हो गया और दस मिनिट में वहाँ काढ़ा लेकर पहुँच गया। 'राजन, चलो ब्रश करके तैयार हो जाओ'

पाँच-सात मिनिट में तैयार होते ही एक कटोरे में काढ़ा परोसा गया।

'यह क्या है?' राजन चिल्लाया ..... 'कुछ नहीं ..... तेरे पेट के दर्द की दवाई है।'

'यह कड़वा तो नहीं होगा ना?' 'दोस्त, मीठी-मीठी दवाईयों से सेहत अच्छी नहीं होती है' सचिन ने जवाब दिया।

राजन को जबरन वो काढ़ा पीना ही पड़ा।

'देख राजन, पेट के प्रॉब्लेम में हम थोड़ा हल्का रखते है तो जल्दी अच्छे जो जाते हैं। इसलिए आज तुझे जौ की छाछ में बनी राबड़ी पिलायेंगे।'

'वो कैसी लगती है?' राजन पहली बार छाछ की राबड़ी का नाम सुन रहा था।

'काढ़े से तो अच्छी ही लगेगी।' जयेश भाई ने हँसकर कहा।

राजन के दिमाग में और पेट में आग लग रही थी लेकिन उसे बाहर निकालने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था।

'राजन, यह काढ़ा, राबड़ी ..... सब कुछ टेम्परेरी है। जैसे ही तेरे पेट का दर्द मिट जायेगा, तूं सभी की तरह नॉर्मल खाना खा सकेगा। आज दोपहर को तुझे सिर्फ दाल-चावल ही मिलेंगे। हाँ, शाम तक यदि तुझे अच्छा हो गया तो गोल-गप्पे और चाट-पकौड़ी खाने को मिलेगी ..... ओके?'

जयेश जाते-जाते राजन के दिमाग में आग बढ़ाकर गया।

दोपहर होते-होते तो राजन की हालत पतली हो गई। अटेन्डेन्ट के रूप में बिठाया गया सचिन वहाँ जम गया था। एक-दो बार उसे पूछा भी सही

'आपको बाहर नहीं जाना है? कोई काम नहीं है?' फिर भी सभी प्रश्न का एक ही जवाब 'मैं सैनिक हूँ ..... मुझे जिस पोस्ट को छोड़ने का आदेश नहीं हैं उसे मैं छोड़ नहीं सकता।' रूम में बराबर चिपककर बैठ गया था।

'मुझे कुछ पर्सनल बात करनी है आप पाँच मिनिट के लिए बाहर जायेंगे?' आखिरकार राजन ने कह ही दिया।

'एक मिनिट' कहकर उसने संपर्क करके राजन की रिक्वेस्ट से जयेश को अवगत कराया। जयेश के आदेश को पाकर वह कमरे से बाहर गया।

फौरन दद्दु को कॉल करके राजन ने बात शुरू की .....

'दद्दु, तुमने धोखा दिया है ..... हमें यहाँ फंसा कर आप भाग गये हो।'

'बेटा, क्या हुआ? जरा बता तो सही .....'

राजन ने डिबेट कम्पीटीशन की बात बताई .....

'देख राजन, तूने ही तो चेलेन्ज लगाई थी ना? और चेलेन्ज लगाने वाला पहले से तो आपकी जीत डिक्लेयर नहीं कर सकता है ना?'

लक्ष्मीचंद जी के तर्क के सामने राजन निरूत्तर था।

'लेकिन मुझे प्रवचन में कोई interest नहीं है। मुझे जबरन सब सुनना पड़ता है। कल इन लोगों ने जैमर लगाकर मेरा ear pode भी फेल कर दिया ..... और सबसे बड़ा प्रॉब्लम ..... यह लोग रात के समय में जैमर लगा कर के पूरे नेटवर्क की वाट लगा देते हैं। पूरे दिन प्रोग्राम और रात के टाईम जैमर ..... कैसे जीयेंगे हम?'

लक्ष्मीचंदजी हँस पड़े ..... 'दद्दु, आपको हँसी आ रही है? यहाँ हमारी जान जा रही है।'

'राजन, मैं जयेश से बात करता हूँ तुझे VIP ट्रीटमेन्ट देंगे .....'

राजन मन में सोच रहा था अभी जयेश की VIP treatment को ही भुगत रहा हूँ ..... लेकिन बोल नहीं सकता था क्योंकि ड्रामा खुद ने ही खड़ा किया था।

'दद्दु, इन लोगों ने declare किया कि हमारे केम्पस से बाहर निकलने वाला लड़का लापता है ..... इसलिए कोई भी लड़का अपने आप से बाहर नहीं जायेगा। आप कल ही किसी को हमें लाने के लिए भेज दो ..... मैं नहीं रह पाऊँगा।' राजन रूआंसा हो गया।

'राजन, सब्र रख, सब अच्छा हो जायेगा। अभी एक-दो दिन देख ले।'

'नहीं ..... आपने ही वादा किया था कि आप किसी को भेज देंगे ..... अब आपको भेजना ही पड़ेगा।'

'ठीक है, मैं कल arrangement करवाता हूँ।'

राजन ने फोन कट किया।

बाहर से सचिन ने नॉक किया 'May I come in.....?'

'हाँ .....' राजन ने चीढ़कर दरवाजा खोला .....

थोड़ी ही देर में दाल-चावल आ गये ..... दाल-चावल खाकर राजन ने जयेश को बुलाया।

'कैसे हो राजकुमार?.....' जयेश ने आते ही राजन की खबर ली .....

'अच्छा है अंकल ..... एक बार दो नंबर जाकर आया, तबसे पेट में बहुत अच्छा लग रहा है।'

'गुड न्यूज..... तो चलो अभी कंपीटीशन में .....'

राजन वैसे भी बंद कमरे में ऊब गया था।

राजन कम्पीटीशन में पहुँच गया। वहाँ से उसे debate का oponent जिनांग मेहता मिला 'राजन, सुबह से तुझे देखा नहीं ..... कहाँ था?' 'stomach pain था इसलिए आराम कर रहा था।'

'अभी कैसा है?' 'ठीक है अभी ..... well ..... अभी कौनसी competition है?' 'once upon a time .....' 'मतलब?'

'अपने जीवन के कुछ यादगार लम्हों के विषय में बात करनी होती है इसमें'

'ठीक है .....' राजन सोच में पड़ गया ..... इसमें तो मैं भी Participate कर सकता हूँ। Saint Xavier's school में जैकब को उल्लू बनाने का प्लान कैसा उल्टा पड़ गया था ..... लोगों को मजा आ जायेगी। राजन ने फौरन जयेश का संपर्क किया 'अंकल मैं participate कर सकता हूँ?'

'of course ..... लेकिन तूने तैयारी की है?'

'नहीं ..... वैसे तो अभी ही मैंने कम्पीटीशन के विषय में जाना है। मेरे जीवन की एक घटना मैं कहना चाहता हूँ तो कह सकता हूँ?'

'ofcourse, why not!' कहकर जयेश ने राजन का भी नाम लिख दिया।

एक के बाद एक प्रतियोगी बोलने के लिए खड़े होने लगे। अंत में राजन का नाम घोषित हुआ। बोलने से पहले सभी बच्चे मुनि श्री निर्वेदविजयजी म.सा. के चरण छूकर शुरू करते थे, यह देखकर राजन भी निर्वेदविजयजी म. के चरण छूने के लिए गया .....

'राजन, तबीयत तो ठीक है ना?' 'हाँ गुरुजी .....' कहकर उसने अपनी बात शुरू की .....

शानदार प्रस्तुति के साथ कही गई बातों ने लोगों का दिल जीत लिया। अंत में जब अलग हॉल में परीक्षा के लिए बिठाया गया तब जो हालत हुई वह सुनकर सभा में हँसी के फव्वारे छूटे। पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा। निर्वेदविजयजी म. ने लिस्ट के ऊपर मार्किंग करके वह कागज जयेश के हाथ में दिया।

जयेश ने सबसे पहले थर्ड और सेकण्ड रेंक की घोषणा की।

'मेरे प्यारे मित्रों ..... once upon a time - competition में आप सभी कुछ न कुछ तैयारी करके आये थे। लेकिन सुबह में तबीयत की स्वस्थता ना होने के कारण आराम करने वाला लड़का स्वस्थ होते सीधा ही कॉम्पीटीशन में आकर, कॉम्पीटीशन का विषय सुनकर, मन में ही अपने जीवन की घटना की याद करके बोलने वाला जीत जाये, यह नामुमकिन लगता है ..... लेकिन यह मुमकिन हो चुका है ..... आज की कॉम्पीटीशन का Winner है ..... राजन रोशन संघवी .....

सभी ने जोरदार तालियों से इस घोषणा का स्वागत किया। विकास, विश्वास और संजू भी अपने दोस्त की जीत को सुनकर नाचने लगे।

माहौल को शांत करके मु. श्री निर्वेदविजयजी म. ने कहा 'लगातार दो दिन कम्पीटीशन में प्रथम क्रम को प्राप्त करना हमारी शिविरों का पहला रिकार्ड है। अब उम्मीद करते है कि कल की Advertise competition में भी First rank पाकर राजन हेट्रिक लगा दे। जैन जगत के युवाओं की यह शक्ति देखकर मुझे बहुत ही आनंद हुआ है ..... Keep it up .....'

मुनि निर्वेदविजयजी के संबोधन से और दूसरे दिन की शानदार जीत से राजन के मन ने यू-टर्न मार दिया। अब चाहे जो हो जाये ..... शिविर पूरी करके ही लौटूँगा .....

मधुरपान के लिए घोषणा हुई और सभी बच्चे बगल के हॉल में पहुँचने लगे। जयेश भाई ने राजन को बुलाकर पीठ थपथपाई ..... 'शानदार दोस्त शानदार ..... अब कैसा लग रहा है पेट में?'

'चूहों ने उधम मचा रखा है ..... शाम को तो गोलगप्पे चलेंगे ना?'

जयेश ने हँसते-हँसते कहा 'हाँ ..... हाँ ..... सब कुछ चलेगा ..... अब तुझे ज्यादा भूखा नहीं मारूंगा, वरना लक्ष्मीचंदजी को जवाब देना भारी पड़ जायेगा।'

'Thanks uncle' राजन ने मुस्कराकर कहा .....

'संजू, विकास, विश्वास ..... अब छः दिन हमारा डेरा-तंबू ऊंटी में ही रहेगा ..... इस शिविर को हम पूरा-पूरा attend करेंगे।' संध्या भक्ति के बाद रूम में enter होते ही राजन ने मित्रमंडली के बीच में आघोषणा कर दी .....

'राजन, सचमुच तूने हमारी मुँह की बात छीन ली। हम तीनों आज दोपहर को ही चर्चा कर रहे थे, कैसे भी करके राजन को समझा लेते है। यहाँ से जाने का मन नहीं कर रहा है।' विकास ने अपनी दिल की बात प्रगट कर दी .....

'Well ..... Advertise competition के बारे में क्या सोचा है? नाम तो लिखा लिया है, तैयारी तो करनी ही पड़ेगी ..... आज की तरह थोड़े ही चलेगा?' राजन ने हँसते-हँसते कहा .....

'चलो, सिलेक्ट करो ..... 10 आईटम में से .....' संजू ने कागज खोला .....

'अपने लिए ज्यादा ऑप्शन नहीं हैं .... सामायिक, जैन फूड, ज्ञान भंडार, नवकार वाली ...... सारी Religious items है .... हाँ...... 'Save environment' पर कुछ Presentation कर सकते हैं ..... चलो मेटर तैयार करो, आईडिया लाओ.....' राजन दिल खोलकर मेहनत कर रहा था।

'तूं हमें गाईड कर ..... आईडिया लाने का काम टॉपर लोगों का रहता है, समझे कुछ?' विश्वास की बात सुनकर सभी हँस पड़े .....

आधे घंटे में राजन ने dialogues के साथ पूरा Plot तैयार कर दिया।

तीसरे दिन से राजन सुबह से active mode में आ गया। जयेश उसमें आये हुए परिवर्तन को देख बहुत ही आनंदित था। उसे लग रहा था कि यह एक ही सुधर जाए तो भी पूरी शिविर का श्रम वसूल है। रात में लक्ष्मीचंदजी का भी फोन आया था और दोपहर की कंपीटीशन की ताजा खबर सुनकर वे भी बहुत आनंदित हो गये थे।

सुबह में right to information में युवाओं ने बहुत ही खतरनाक प्रश्नों की बॉलिंग की थी और उसके सामने मुनि निर्वेदविजयजी म. ने लॉजिकल और प्रेक्टिकल जवाब देकर शानदार बेटिंग की। 'जवानी की उम्र मजा करने की है और आप नियंत्रण की बातें करके सजा देने का काम कर रहे हो

ऐसा नहीं लग रहा है?'

'सिर्फ जैन धर्म में ही खाने के बारे में इतने सारे Restriction क्यों हैं?'

'हमारे यहाँ धनवान लोगों को ज्यादा Importance क्यों दिया जाता हैं?'

'सरस्वती और लक्ष्मी जी की पूजा भारत में होती है, मगर वे अमरिका और यूरोप वालों पर क्यों प्रसन्न होती है?'

ऐसे कई खतरनाक प्रश्नों के शानदार जवाब देकर निर्वेदविजयजी म. ने सभी शिविरार्थियों की संतुष्टि दी। राजन और उसकी मित्रमंडली भी उनकी फैन बन गई।

दोपहर के समय में competition में one by one advertise प्रस्तुत होने लगी। सभी बच्चों ने जोरदार मेहनत की थी। बीच में राजन के ग्रुप को चांस दिया गया .....

'बच्चों, आज आप सभी को मिड डे मिल में एक-एक पापड़ दिया जायेगा। आप खाके बताना वो कैसा लगा?' मंच पर बैठे हुए शिक्षक, विद्यार्थियों को कह रहे थे। शिक्षक का रोल राजन कर रहा था। सामने बैठे विकास, विश्वास और संजू को पापड़ परोसा गया। पापड़ खाकर तीनों ने शिक्षक को रिपोर्ट दिया 'सर, पापड़ बहुत बढ़िया था।' शिक्षक ने पूछा 'बढ़िया था, वो तो बराबर, लेकिन कहीं पर कच्चा लग रहा था?'

एक विद्यार्थी ने जवाब दिया 'सर, कौनसी सिगड़ी पर इसकी सिकाई हुई थी? हमें भी बताओ ना ..... ऐसी परफेक्ट सिकाई हमारे घर में भी नहीं होती है'

शिक्षक ने खड़े होकर विद्यार्थियों को धूप में पड़ी हुई रेत का ढ़ेर बताकर कहा 'ये रही वो सिगड़ी'

'सर वो तो रेत है' 'हाँ ..... Global warming ने सारी सीमाएँ तोड़ दी है। ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा फायदा यही होगा, fuel का बचाव.... और बढ़ाओ ग्लोबल वार्मिंग..... ताकि कल दाल-चावल के लिए भी फ्यूल की जरूरत ना पड़े ...'

विद्यार्थी एक-दूसरे के मुँह ताक रहे थे .....

'कुछ समझे क्या? दाल-चावल के लिए फ्यूल की जरूरत नहीं पडेगी लेकिन, उसे खाने वाला कोई बचा होगा?'

'नहीं सर ..... ऐसे दिन भगवान कभी ना दिखाये ....'

'ऐसा है? तो save tree, save environment and save world....' ऐसा कहकर शिक्षक के साथ सभी विद्यार्थीयों ने हाथ में एक बैनर दिखाकर प्रदर्शन किया .....

पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा। 'टॉपर ..... टॉपर ..... टॉपर .....' की आवाज चारों ओर से उठने लगी ..... सबसे ज्यादा तालियाँ इस advertise ने बटोरी .....

उस दिन तीसरी कॉम्पीटीशन में भी राजन की टीम का नाम Winner के रूप में घोषित हुआ। हैट्रीक की भविष्यवाणी सच साबित हुई .....

चौथे दिन सुबह में 'वंदे ..... शासनम्' के गीत के साथ हुई शासनवंदना अद्भुत और अनूठी थी। चारों दिशाओं से हाथ में शासनध्वज लेकर आने वाले शिविरार्थियों के कारण शिविर केम्पस का बड़ा मैदान शौर्य के रंग से रंग गया था। राजन यह नजारा पहली बार देख रहा था। इसे देखकर राजन के दिल में भी जैन शासन के प्रति लगाव का ज्वार उठने लगा। जिनशासन के वीर पुरूषों की बलिदान की गाथाएँ उसने कल शाम

के प्रवचन में पहली बार सुनी थी। उसी वक्त राजन के मन में एक विचार प्रगट हुआ – इस जीवन को सिर्फ पैसे और परिवार में पूरा नहीं करना है, इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में नाम लिखा जाये ऐसा भी कोई पराक्रम करना है। राजन के इस विचार को शासन वंदना देखकर जोरदार बल मिला।

'मेरे प्यारे शिविरार्थी ! ..... प्रणाम' जयेश भाई ने चौथे दिन के पहले प्रवचन से पूर्व सूचना देने की शुरूआत की ..... सभी शिविरार्थियों ने भी 'प्रणाम' कहकर प्रत्युत्तर दिया। 'मित्रों, शिविर के सातवें दिन, शनिवार के दिन, Super quiz world cup का आयोजन किया गया है ..... जो भी इसमें participate करना चाहते हैं वे सचिन भाई को अपना नाम लिखा दे ..... आपने अब तक सभी प्रवचन ध्यान से सुने होंगे और अच्छे से लिखे होंगे। उसे जारी रखना ..... ताकि Super quiz world cup आपके हाथ में आ जाये ..... ओके .....?'

घोषणा को सुनते ही राजन के मन में महत्वाकांक्षा (ambition) का दीपक प्रगट हो गया ..... यह वर्ल्डकप तो मेरा ही होगा ..... लेकिन उसने शुरूआत के प्रवचन तो सुने ही नहीं थे और अभी जो प्रवचन चल रहे हैं उसे लिखा भी नहीं है ..... तो कैसे होगा? अचानक उसके दिमाग में एक खुराफाती idea click हुआ जिसने उसके चेहरे पर मुस्कान बिखेर दी .....

क्रमश:

मुख्य आधारस्तंभ

पू. आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय उदयवल्लभसूरीश्वरजी म.
की प्रेरणा से एक सद्गृहस्थ, अहमदाबाद

आधार स्तंभ

• प्रणवभाई, सूरत • एक सद्गृहस्थ, सूरत

• पू. आचार्यदेव श्री वरबोधि सूरि म. के संयम जीवन के 50 साल
और पिता गुरुदेव पन्यास श्री कैवल्य बोधि वि.म. के 41 साल के संयम जीवन की
अनुमोदनार्थ पं. श्री पद्मबोधि वि.जी.म.सा. की प्रेरणा से गुरु भक्त परिवार

• सूरजमल कान्ता बाई गोटावाला परिवार - भवानीमण्डी
चन्द्रशेखर - किरण बाला, रूपल - सौरभ, आलीशा - अंकुर, दृष्टि - पारस

• भामाशाह श्रीमान दीनदयाल जी जैन, महेश - सीमा, नमन, लक्षित

• श्री महावीर प्रसाद जी, मनोज जी, सुनील जी, तालचिडी वाले, हिंडौन सिटी

• शान्ता बहन वाडीलाल शंभुलाल वोरा, जिज्ञा-प्रविण, जोली-नितिन, भावि, महेक,
आदीश, आरना, नयसार, बेटी रसीला, अलका, लता, घाटकोपर (कल्पतरु औरा)
श्री कल्पतरु औरा जैन संघ - घाटकोपर
श्री वाधवा जैन संघ- घाट कोपर

• सेठ श्री कान्तिलाल मणिलाल शाह, कीर्तिभाई-बीना, जिनेश- फोरम घाटकोपर

• मातुश्री पुष्पाबहन चन्दुलाल एम. शाह, कोंढ-सुरेन्द्र नगर वर्त. में घाटकोपर

• श्री धर्मेश भाई जयसुख भाई देसाई, घाटकोपर

• धनजी दामजी छेड़ा - पंकज, छेड़ा परिवार घाटकोपर

• श्री सुपार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे
पू.मु. श्री मग्नशेश्वर वि.जी, पू. मु. श्री पूर्णशेखर वि.जी, पू. सा. श्री तीर्थध्यान प्रभा श्रीजी म.सा.
की प्रेरणा से मातु श्री बेबीबाई वनेचंद जी बामणिया परिवार, दावणगेरे (मरुधर में सीलधर)
अर्हम् मोबाइल दावणगेरे (श्री गौतम, जयन्तीलालजी, पूनम, मेहेक, तन्वी)
एक गुरुभक्त परिवार, दावणगेरे
कल्पेश विपुल विशाल भाई - स्व.कलाबाई रसिकलाल शंकर लाल जी परिवार चौहाण - बरलूट- दावणगेरे
नरेन्द्र कुमार जी, ओटमल जी कालन्द्री, दावणगेरे
रसिकलाल शंकरलाल जी परिवार, दावणगेरे
एक सुश्राविका - दावणगेरे
मोहन लाल जी कटारिया, पालीवाले - दिवेश-किशोर-चंदन (देवीचंद जी)
रमण लाल जी मयाचंद जी, दिनेश कुमार, विजय कुमार, मनोज कुमार, संतोष, संयम,
मोक्षित, दर्शन, श्रेयांस, जैनम् दावणगेरे
पटियात साहेबचंद, सोहनराज, बाबूलाल, राजवीर,
लक्ष्य, हर्ष बेटा-पोता, वच्छराज जी धूड़ाजी (मरुधर-धाणसा, वर्तमान, चित्रदुर्गा)

महासंग्राम

अंक - 14

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

❑ ले. धर्मजय

शिविर का पूरा हॉल पुलिस के सायरन की आवाज से गूँज उठा। दृश्य था–एक रेव पार्टी का... शिविर के चौथे दिन दोपहर तीन बजे से सत्य घटना (Real story) पर आधारित नाट्य मंचन को देखकर सभी शिविरार्थी रोमांचित थे। रेव पार्टी में धुआँ उड़ाने वाले, इंजेक्शन लेकर नशा करने वाले, वहाँ से भागने की कोशिश करने लगे और पुलिस एक-एक करके सबको पकड़ रही थी। दूसरे दृश्य में सभी को जज मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। सभी को हवालात में बंद करने का आदेश दिया गया। नाट्य मंचन में हिस्सा लेने वाले किरदारों में शिविर का मैनेजमेंट करने वाला जयेश मुख्य रोल में शामिल था। उसका अभिनय अद्‌भुत था। लेकिन उसने दाढ़ी और मूँछ के कारण कोई उसे पहचान नहीं पा रहा था। ऐसा लग रहा था कि पूरी घटना सचमुच हमारे सामने ही घटित हो रही है।

कैदी के लिबास में रहे हुए, घुटनों के बल बैठे हुए राजेश ने बड़े जोर से पुकारा – 'कहाँ गये मेरे आका? आपने ही तो कहा था, तू चिंता मत करना, जब भी तू फँस जायेगा, हम तुझे बचा लेंगे... कहाँ गये आप?' राजेश उन्हें पुकारकर रोने लगा... 'मेरे प्यारे मित्र! तुमने ही तो बड़े प्यार से मुझे इन चीजों की आदत लगाई थी... आज आप भी नहीं दिख रहे हो... कहाँ हो तुम सभी'... वापस रोने लगा... अभिनय इतना शानदार था कि उसे रोता हुआ देखकर सभी शिविरार्थी रोने लगे।

'अबे ओ देवदास की औलाद–खाने का समय हो रहा है। दो साल तुझे यहाँ पर ही बिताने हैं... बाद में शांति से रो लेना।' जेल के वार्डन ने आवाज़ लगाई और मन मारकर लड़खड़ाता हुआ राजेश खड़ा हुआ। 'आज भी वो ही रोटी और दाल खाने पड़ेंगे... सीट् यार...' मन तैयार नहीं था लेकिन तन की भूख ने उसे जेल में दी हुई एल्युमिनियम की थाली और कटोरी लेकर भोजनालय की ओर जाने के लिए प्रेरित किया। रोजाना घर पर चाँदी की डिनर सेट में खाना खाने वाला राजेश आज जेल के एल्युमिनियम के डिनर सेट में खाने के लिए मजबूर था। रोटी-दाल खाते वक्त दाल में डाली गई मिर्च नहीं, पछतावा उसे आँखों से आँसू बहाने के लिए मजबूर कर रहा था। भोजन के अंत में एक कर्मचारी इन सभी नशेड़ियों को दवाई की गोली खाने में दे रहा था। वह गोली नशामुक्ति के लिए लेनी जरूरी थी। कुछ युवाओं ने शुरूआती दिनों में उसे फेंक दी थी तो

बड़ा रिएक्शन आया था क्योंकि कई महीनों से लगी हुई स्मैक की आदत ने उन लोगों की हालत बिगाड़कर रख दी थी। रोजाना काउंसीलिंग करने वाले काउंसलर भी आकर इन युवाओं को समझाने का काम करते थे।

'राजेश! हम पूरी कोशिश कर रहे हैं कि जल्दी से तेरा यहाँ से छुटकारा हो जाये। लेकिन वकील कह रहा था कि NCB की रेड पड़ी थी और सारे सबूत उन लोगों ने इकट्ठे कर दिये हैं। दो साल तो बिताने ही पड़ेंगे।' राजेश बेमन से पापा की बात सुन रहा था। पंद्रह दिन में एक बार विजिटिंग अवर्स के समय में परिवार वालों से मिलने की छूट थी। हर पंद्रह दिन में मम्मी या पापा राजेश का हौसला बढ़ाने के लिए आते रहते थे।

'राजेश! मैंने सुना है कि कोई जैन मुनि दो-तीन दिन में यहाँ प्रवचन के लिए आने वाले हैं। तू उन्हें सुनना और आशीर्वाद ले लेना।' राजेश ने कोई जवाब नहीं दिया तब मम्मी ने पूछा-'तूने सुना कि नहीं?' 'हाँ मम्मी सुन लिया' राजेश ने झल्लाकर जवाब दिया। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

'टाइम इज ओवर'... कहकर राजेश को उठाकर वॉर्डन ले गया। पर्दा गिरा और शिविरार्थियों में चर्चा शुरू हो गई... 'अरे यार! यह तो जयेश भाई जैसी ही शक्ल दिख रही है। कुछ समझ नहीं आ रहा।' संजू ने शंका व्यक्त की...

'तू देखते जा... आगे क्या होता है'-राजन ने जवाब दिया। पर्दा उठा तब जेल में रहा हुआ कम्युनिटी हॉल दिख रहा था। वहाँ बीच में मुनि श्री निर्वेदविजयजी म. का कट-आउट लगाया था। बैकग्राउंड से पूर्व में हुए जेल प्रवचन का ऑडियो चालू था।

'मानव से महामानव बनने की संभावना लेकर बैठे हुए मेरे प्यारे भाईयों'... यह उद्‌बोधन पूर्ण होते ही तालियों की गूँज सुनाई दे रही थी। लग रहा था कि इस गौरवपूर्ण संबोधन ने कैदियों के दिलों को झकझोर दिया था।

'एक गधा जन्म लेता है, वह जीवनभर गधा ही बना रहता है और गधे के रूप में ही मरता है। उस गधे को कोई ना शैतान कहता है, ना ही भगवान... उसी तरह कुत्ता भी कुत्ते के रूप में ही जन्म लेकर कुत्ते के रूप में ही मरता है। लेकिन, इंसान की बात कुछ और ही है। इंसान इंसान के रूप में जन्म लेता है, लेकिन संत के रूप में जीवन बीता सकता है और भगवान बनकर मर सकता है। दूसरी ओर देखने जायें तो इंसान, इंसान के रूप में जन्म लेकर अपराधी बनकर जी सकता है और शैतान बनकर मर भी सकता है। जीवन चुनने की ऐसी स्वतंत्रता प्रकृति ने और किसी को भी नहीं दी है। इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग करना या सदुपयोग, सब आपके हाथ में है।

जेल में सजा काट रहे आपको देखकर मुझे कभी भी घृणा के भाव नहीं आते हैं। क्योंकि, मैं बहुत अच्छे से जानता हूँ कि जेल में रहे हुए सभी गुनहगार नहीं होते हैं और जेल से बाहर रहे हुए सभी बेगुनाह नहीं होते हैं।

फिर से कैदियों ने ताली बजाकर मुनि भगवंत की बातों का अनुमोदन किया। रियल रिकॉर्डिंग में बज रही तालियाँ, नाटक के मंच पर बज रही तालियाँ और इसे देखकर शिविरार्थी जो तालियाँ बजा रहे थे... उन सभी में कोई अंतर महसूस नहीं हो रहा था। मुनि भगवंत का प्रवचन आगे चला...

हो सकता है कि आपकी यहाँ आने की वजह किसी के द्वारा लगाया गया गलत इल्जाम ही था तो मैं प्रशासन को अनुरोध करूँगा कि ऐसे लोगों को जल्द से जल्द बाइज्जत रिहा किया जाये और प्रभु से प्रार्थना करूँगा कि इन बेगुनाहों को प्रभु जल्द से जल्द मुक्त करायें।

दूसरी संभावना यह है कि आपकी अपराध की कोई मानसिकता नहीं होने पर भी, किसी के द्वारा किया गया अपराध आपके अपराध का बीज बन गया। वह तो अपराध करके अपनी ताकत का उपयोग करके छूट गया लेकिन आप कानून के शिकंजे में फँस गये। ऐसे सभी कैदियों के प्रति आज भी

मेरी हमदर्दी है, मैं प्रभु से और प्रशासन से प्रार्थना करता हूँ कि इनकी सजा माफ की जाये और उन्हें अच्छा नागरिक बनने का एक मौका दिया जाये। साथ-साथ प्रभु से भी प्रार्थना कर रहा हूँ कि ये लोग कैद से मुक्त होकर हमेशा के लिए सज्जनता की राह प्रशस्त करें।

तीसरी संभावना यह है कि बार-बार अपराध करके अपराध ही आपकी आदत बन गई थी। हाँ.... एक चोर चौथी बार चोरी करते हुए पकड़ा गया। जिस जज ने तीन-तीन बार चोरी के अपराध में उसे सजा सुनाई थी, उसी के सामने उसे जब चौथी बार प्रस्तुत किया गया तब जज साहब ने उसे कहा कि-'तू चौथी बार मेरी कोर्ट में आया है। तुझे शर्म नहीं आती?' उस कैदी ने जज साहब को कहा-'जज साहब! आपका प्रमोशन नहीं हुआ उसमें मैं क्या करूँ?'

जोक सुनते ही हंसी के ठहाके उठे.....

ऐसे बेशर्म आदतन अपराधियों के लिए तो मैं प्रभु को सिर्फ प्रार्थना कर सकता हूँ... सबको सन्मति दे भगवान... मुझे तो ऐसे इंसानों में दिलचस्पी है जिसमें कोई बदलाव आ सकता है। मेरे सामने अभी जो भी लोग बैठे हैं उनमें कोई न कोई अच्छा बदलाव आयेगा, वह पक्की बात है।

चार बातों में यदि आप सावधान रहेंगे तो जीवन में कभी भी ये दिन आपको देखने नहीं पड़ेंगे।

1. गलत स्थान से दूर रहो : हमारे मन पर गलत बातों की पकड़ बहुत जल्दी हो जाती है। शराब के ठेके, जुआरी के अड्डे, रेड लाइट areas-ये सारे गलत स्थान हैं। चाहे कितना भी संस्कारी और सज्जन इंसान क्यों न हो, ऐसे स्थान में जाते ही उसके मन में रहे हुए रावण और दुर्योधन active mode में आ जाते हैं।

2. गलत संग से दूर रहो : गलत संग से दूर रहना है तो गलत स्थान ही छोड़ना अनिवार्य है, लेकिन अच्छे स्थान में रहकर अच्छा ही बना रहना है तो भी गलत संग से दूर रहना ज़रूरी है। यहाँ मेरे सामने जो कोई भी बैठा है वह अपने भूतकाल को चेक करे, यहाँ तक पहुँचाने में गलत संग का बहुत बड़ा रोल है। चाहे तम्बाकू हो, सिगरेट, चाहे शराब हो या ड्रग्स... आपने जब पहली बार उसे अपने जीवन में स्थान दिया था तब वह आपके किसी मित्र ने आपको मुफ्त में दी थी। सच बात है?

सौ प्रतिशत सच बात है। कैदियों की ओर से बुलंद आवाज़ से आये प्रतिसाद ने शिविरार्थियों को प्रभावित किया।

'आपको किसी भी व्यसन को या गलत आदत को छोड़ना है तो गलत संग को सबसे पहले छोड़ दो। आप बाल-बाल बच जायेंगे। मेरे पास कई युवा Confession करने आते हैं। अपने जीवन की काली किताब वे मेरे सामने open करके जीवन परिवर्तन के लिए मार्गदर्शन लेने आते हैं। शायद 99 प्रतिशत युवाओं के जीवन में आई हुई सभी बुराइयों की नींव में मुझे कुसंग ही कारण के रूप में दिखाई दिया है।

3. गलत साहित्य से दूर रहो : आप जो कुछ भी खाते या पीते हो, उसकी सबसे पहली असर आपके शरीर पर पड़ती है; लेकिन आप जो कुछ भी पढ़ते हो या सुनते हो उसकी सबसे पहली असर आपके मन पर पड़ती है। आपका शरीर बिगड़ा तो आपका जीवन बिगड़ेगा यह ज़रूरी नहीं है, लेकिन आपका मन बिगड़ गया तो पूरा जीवन बर्बाद हो जायेगा।

4. गलत समय को समझ लो : यहाँ आने वाले 99 प्रतिशत कैदियों के मन में कभी न कभी एक विचार ज़रूर आया होगा कि, उस समय यदि मैं संभल जाता तो जेल में आने की नौबत नहीं आती। उग्र आवेश या वासना के वे क्षण कुछ ही पलों के होते हैं, उन पलों को समझकर जो खुद को संयमित कर लेता है वह कभी अपराध नहीं करेगा।

मैं जेल को कैदखाना नहीं समझता हूँ, मैं तो इसे दवाखाना समझता हूँ। हाँ, दवाखाना... जिस तरह एक मरीज़ को शरीर में कोई समस्या आती है तो पहले नंबर में वह घर में रही कुछ औषधियों के द्वारा या खान-पान के नियंत्रण से सुधार कर लेगा। लेकिन दर्द गंभीर है तो दवाखाना या अस्पताल में जायेगा और डॉक्टर जो भी पाबंदी लगायेगा उसका स्वीकार करेगा। जो भी ऑपरेशन होगा उसे सहन करेगा और अपने शरीर को स्वस्थ बनायेगा। जीवन में आये हुए दोषों का इलाज करने के लिए आपको यहाँ भर्ती किया गया है। यहाँ श्रमदान करके, अपनी और औरों की गलतियों से एक जीवनबोध को पाकर आप अपने जीवन को सुधार सकते हो।

यहाँ बैठे हुए कई लोगों के दिमाग में एक विचारधारा चलती है कि, मेरा जीवन मेरा खुद का है। इसका मैं जो चाहे वो करूँ, औरों को या समाज को इससे क्या लेना देना है? यह विचारधारा गलत है। क्योंकि आपने जन्म से लेकर युवा होने तक अपने माँ-बाप का,

समाज का, देश का सभी का उपकार लिया है। आप यदि शादीशुदा हो और एक-दो बच्चे के बाप हो तो आपके परिवार के भी, आपकी पत्नी के भी आप पर उपकार हैं और ज़िम्मेदारी भी है। आप इस तरह से हाथ खड़े कर दो, वह बिल्कुल अनुचित है।

आप ऐसा मत समझना कि आपके यहाँ आ जाने से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। आप तो यहाँ रह रहे हो। मानवाधिकार आयोग, भारत देश का उदार संविधान वगैरह के कारण आज जेल भी अधिक सुविधा वाली हो चुकी है। आपके यहाँ आने से उनकी रोटी का जुगाड़ कितना मुश्किल से हो रहा होगा, उसका आपको क्या पता है? आपके बेटे को, आपकी पत्नी को या आपके माता-पिता को लोग किस निगाह से देख रहे हैं, उसका आपको पता है? समाज उसे कैदी के परिवार के रूप में देखता है। अपराध आपने किया और तिरस्कार की सजा वे लोग पा रहे हैं।

कई बार आपका बेटा हर तरह से नौकरी के लिए योग्यता के मानक पर खरा उतरता था, लेकिन 'इसका बाप तो जेल में कैदी है' यह सुनकर उसे नौकरी ही नहीं मिली। इसकी वेदना क्या होती है उसका आपको क्या पता? कई बेटियों की शादी... जहाँ मंगनी तय होने की तैयारी में थी और लड़के वालों को पता चला कि इसका बाप तो जेल में सजायाफ्ता (कैदी) है। उसकी शादी रुक गई और लंबी उम्र तक अविवाहित रहने का दंश वो बेचारी बेटी झेल रही है। माँ-बाप के सामने सपूत बेटा बनने का ड्रामा करने वाला लड़का जिसके माँ-बाप ने अच्छे संस्कार देने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी, वो अचानक पुलिस के हाथ चढ़कर जेल का मेहमान बन गया तब माँ-बाप को समाज जो कड़वे वचन सुनाता है, उसके दु:ख को वो सपूत क्या जाने? भगवान को आप मान रहे हो या नहीं मान रहे हो, इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन आप अपने माँ-बाप के उपकारों को यदि महसूस कर रहे हो तो अपने जीवन से उन्हें गौरव दिलाना आपका पवित्र फर्ज है।'

रिकॉर्डिंग में रोने की आवाज़ स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही थी और शिविरार्थियों की भी आँखें बरस रही थी।

'मेरे मित्रों, आज मैं गुरुदक्षिणा के रूप में कुछ संकल्प की भिक्षा माँगने आया हूँ। जो कुछ भी अपराध या गलती जीवन में हो चुकी है, उसे कभी दोहरायेंगे नहीं। उस गलती या अपराध तक ले जाने वाले जितने भी रास्ते हैं उस पर आज से लेकर कभी भी कदम रखेंगे नहीं। भले ही उन रास्तों की छूट सरकार ने दी हो, लेकिन हम कभी भी उन रास्तों पर चलेंगे नहीं। मुझे पता है, मैं सरकार के विरोध में बोल रहा हूँ, लेकिन कड़वा सच बोले बिना आपकी आँखें खुलने वाली नहीं है।

सरकार को पता है कि 80% से ज्यादा अपराध के पीछे शराब वजह है, मगर सरकार उसे बंद नहीं करेगी। कुछ चंद अमीरों के हाथों की कठपुतली यह सरकार रेवेन्यू का बहाना बनाकर शराब चालू ही रखना चाहती है। लेकिन अनेक सर्वेक्षण और समाजसेवकों का यह सर्वे है कि, रेवेन्यू से होने वाले लाभ से भी ज्यादा नुकसान सरकार को शराब के कारण हो रहा है। फिर भी उस बात (सर्वे) को नज़रअंदाज़ करके सरकार शराब को कर चालू ही रखना चाहती है। वह भारत देश की सबसे बड़ी करुण कहानी है। ऐसा मत कहना कि शराबबंदी करेंगे तो वह ज्यादा बिकेगी... क्योंकि चोरी और खून जैसे अपराध को गैरकानूनी घोषित करने से अपराध बढ़ जायेंगे, ऐसा तर्क देकर चोरी और खून की वैधता सरकार कभी भी जाहिर नहीं करती है। दूसरी ऐसी ही बात है, पोर्नोग्राफी और गंदी फिल्मों की... मनोरंजन और स्वतंत्रता के नाम से सरकार भले ही इस पर पाबंदी नहीं लगा रही है, लेकिन 95% रेप के केस के अपराधी पोर्नोग्राफी और गंदी फिल्में देखने वाले रहे हैं।

मेरा स्पष्ट मानना है कि यदि आपको

फ्रूट नहीं चाहिए तो आपको उस फ्रूट को देने वाले (फल को बल देने वाले) रूट (Root/जड़) को ही काटना पड़ेगा। कैसा बुद्धि का अंधापन है कि सरकार को खून-खराबा, बलात्कार वगैरह फल नहीं चाहिए लेकिन उसे पैदा करने वाली फिल्मों, शराब, पोर्नोग्राफी का कोई विरोध नहीं है। सरकार को तो हम बदल नहीं सकते हैं, लेकिन खुद को बदल सकते हैं।

इस जेल में आपको अभी जो-जो व्यसन और फिल्मों की बात बताई वो देखने को या चखने को नहीं मिल रहा है। कोई यहाँ दो साल तो कोई दस साल रहकर जब इस जेल से रिहा होकर अपने घर जायेगा तब जिस गलत आदत को इतने साल तक अपने जीवन से दूर रखा था उसे पुनः नजदीक नहीं लायेंगे ऐसा संकल्प मैं आपसे गुरुदक्षिणा के रूप में माँग रहा हूँ। जो भी यह संकल्प लेना चाहते हैं वे अपने दोनों हाथ जोड़कर उसे ऊपर उठा लो' पाँच सेकण्ड रुककर....

'वाह, क्या बात है... मुझे उम्मीद नहीं थी कि इतनी बड़ी संख्या में मुझे गुरुदक्षिणा मिलेगी। मैं संकल्प का मंत्र बोलता हूँ। हाथ जोड़कर रखना.... धारणा अभिग्रह पच्चक्खाई........' निर्वेदविजयजी म. ने सभी कैदियों को संकल्प दिलाया।

'अब, जिन-जिन मित्रों को अपने जीवन के लिए, जीवन की कुछ समस्या के लिए समाधान चाहिए वे बारी-बारी से आकर, मुझसे मिलकर बात कर सकते हैं। करीबन आधा-एक घंटा मैं रुक सकता हूँ। वहाँ से लाईन लगाइये।'

रिकॉर्डिंग पूरा हुआ और मंच पर पर्दा गिर गया। नाट्य मंचन में एंकरिंग करने वाले सचिन ने कहा- 'यह जो रिकॉर्डिंग आपने सुनी, उसके बाद पर्सनल काउन्सेलिंग के लिए 50 से ज्यादा कैदी अपने गुरुमहाराज श्री निर्वेदविजयजी म. के पास आये। लेकिन उस वक्त उस बात का रिकॉर्डिंग नहीं हुआ था। हमारे इस नाट्यमंचन का जो मुख्य किरदार राजेश है, उसने जो बात अपने गुरुमहाराज से की, उसे आज यहाँ live बताने जा रहे हैं। "Now your focus should be towards Gurumaharaj... उस वक्त जो बात राजेश के साथ हुई थी, वो ही बात आप सभी लोगों के सामने होने जा रही है, आप गौर से सुनना।'

अचानक पर्दे के पीछे से कैदी के dress में राजेश आया और निर्वेदविजयजी म. के चरण में सिर रख कर बड़ी आवाज़ के साथ रोने लगा। सब सभी शिविरार्थी चौंक गये, यह क्या हो रहा है? आज तक किसी भी नाटक में इतना असली रुदन नहीं देखा था।

निर्वेदविजयजी म. ने उसको प्यार से सहलाया। 'सुन... शांत हो जा मेरे भाई... शांत हो जा... ' 'मेरे जैसा कोई कपूत नहीं होगा गुरुदेव!.. मेरे जैसा कोई पापी नहीं होगा गुरुदेव...'

'शांत हो जा मेरे भाई... एक बात याद रखना- 'Every saint has a past and every sinner has a future' - हर एक संत का भूतकाल होता है (जो कलंकित हो सकता है) और हर एक पापी का भविष्यकाल होता है (जो उज्जवल हो सकता है)।'

'गुरुदेव! मैं जैन हूँ, मेरी बहन ने दीक्षा ली थी और मैं रेवपार्टी में पकड़ा गया। मैंने मेरे माँ-बाप के सारे सुसंस्कारों को फेल कर दिया। मैंने मेरे कुल को कलंकित किया।' फिर से वह युवा रोने लगा।

'देख, मेरे भाई! अभी भी देर नहीं हुई है। जागो तबसे सवेरा-भले ही 58feet रस्सी कुएँ में चली गई है, लेकिन दो फीट रस्सी भी यदि हाथ में है तो पूरी की पूरी बाहर आ सकती है। तेरे पास जवानी है, अब जवानी के साथ सज्जन बनने का जुनून जुड़ जायेगा तो तू तेरी सारी कलंक की कहानी को आज ही मिटा सकता है। दुनिया वाल्मीकि को देखकर वालिया लुटेरे को याद नहीं करती है, और कभी मान लो याद कर भी ले तो अपने बहुमान भाव को बढ़ाने के लिए ही याद करती है। तू बिल्कुल फिक्र मत कर। मैं जेलर से बात करता हूँ और तेरे मम्मी-पापा से भी। तेरा पता मुझे दे दे...' उस युवा ने अपने घर का पता लिखवाया।

सचिन एंकर फिर से बीच में आ गया और राजेश पर्दे के पीछे रवाना हुआ। 'पू. गुरुभगवंत ने वहाँ के जेलर से बात करके राजेश को जेल में ही सिद्धचक्र यंत्र की आराधना करने के लिए परमिशन दिला दी। दूसरी ओर उसके मम्मी-पापा से मिलकर सारी case detail ले ली। अपनी इस शिविर में आये हुए एक युवा के दादा की ऊपर के लेवल तक रही हुई पहचान का उपयोग करके उसे छुड़वाने का सुंदर पुरुषार्थ किया, और सिर्फ छः माह में ही जो परिणाम आया वह मंच पर आप देख सकते हो....' इतना कहकर सचिन साइड पर हो गया और सभी की नज़र मंच पर गई।

पर्दा खुला और हाथ जोड़कर

आराधना कर रहा राजेश दिखाई दिया। जेलर राजेश के मम्मी-पापा को लेकर वहाँ प्रवेश करता है। 'राजेश! good news आपके अच्छे व्यवहार (Behaviour) को देखते हुए आपकी दो साल जेल की सजा को छह माह में बदल दी गई है। Now you are free and when ever you wish, you can go to your home. (आज स्वतंत्र हो और आप जब चाहो तब घर जा सकते हो)।' राजेश ने जेलर को पैर छूकर धन्यवाद कहा और मम्मी-पापा को गले लगाकर रोने लगा। 'राजेश! पू. निर्वेदविजयजी म. की कृपा से आज तू रिहा हो रहा है। हमें बहुत आनंद है कि हमें हमारा वो ही राजेश वापस मिल रहा है जो छोटी उम्र में ज्यादातर प्रभु और गुरु के पास ही दिखता था।' राजेश ने मम्मी-पापा के पैर छूकर वादा किया- 'आज से कभी भी मेरी वजह से तुझे शर्मिंदगी महसूस नहीं होगी यह मेरा वादा है आपको...'

पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा और नाटक पूर्ण हुआ। शिविर के लिए पर्दा गिरा और जब वापस पर्दा उठा तब सभी शिविरार्थी चौंक गये... नकली दाढ़ी और मूँछ दूर होते ही सबको पता चला कि वह राजेश का किरदार करने वाला और कोई नहीं, जयेश (शिविर controller & announcer) खुद था। लोगों ने जमकर तालियाँ बजाईं। सचिन ने सभी को शांत किया और माईक जयेश के हाथ में दिया।

'मेरे शिविरार्थी मित्रों! यह कथा सत्य घटना पर आधारित थी, लेकिन यह सत्य घटना किसकी थी वो आपको पता है?' पूरे हॉल में सन्नाटा छा गया... पंद्रह सेकण्ड के बाद जयेश ने रहस्य उजागर किया 'वह सत्य घटना...

और किसी की नहीं, मेरी खुद की थी...' यह बात सुनते ही सभी लोगों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। पूरे हॉल में आश्चर्य की लहर छा गई और शिविरार्थियों को यकीन हो गया कि इसीलिए यह नाट्यमंचन असली लग रहा था।

'मित्रों! करीबन पाँच साल पहले मैं मुम्बई के ही एक कॉलेज का ड्रग पेडलर बन चुका था। शुरुआत हुई थी किसी गलत मित्र के द्वारा... बाद में तो यह आदत बन गई। ड्रग्स पाने के लिए घर से चोरी भी शुरू हो गई थी। पापा बहुत अमीर थे इसलिए उन्हें पता भी नहीं लगता था कि घर से कुछ चोरी हुआ है। शुरू में मुझे किसी पते से यह प्राप्त करना था, बाद में सिर्फ पैसे से यह प्राप्त नहीं होता था। मैं एक कन्साइनमेंट (consignment) कहीं पर पहुँचा दूँ तब मुझे यह चीज़ प्राप्त होती थी। मैं ऐसे दलदल (traps) में धँस चुका था कि जहाँ से मरकर ही बाहर निकल सकते हैं। जिस पुलिस अफसर ने रेव पार्टी पर छापा मारा और जिस पुलिस अफसर ने तहकीकात करके सबूत के साथ मेरा नाम पेडलर के रूप में उजागर किया, उन सभी का मुझ पर उपकार है। मैं कॉलेज में इतना नास्तिक बन चुका था कि कभी भी गुरुदेव के संपर्क में नहीं आता, लेकिन ईश्वर को मेरी मुलाकात गुरुदेव से करवानी थी तो उन्होंने मेरे लिए जेल का स्थान चुना।

मेरे मित्रों! सचमुच कहता हूँ कि व्यसन की गलियाँ शुरू-शुरू में बहुत ही प्यारी लगेंगी, लेकिन एक बार प्रवेश करने के बाद आपको पता लगेगा कि 'यह तो one way वाला रास्ता है, यहाँ U-turn नहीं ले सकते हैं'। अब तो आगे ही बढ़ना पड़ेगा और अंत में यह गली युवावस्था में होने वाली करुण मौत की मंजिल पर ही हमें पहुँचाएगी। आप लोगों का सौभाग्य है कि ऐसी गली में घुसने से पहले ही आपको गुरुदेव मिल गये। मेरे साथ यह घटना बनने के बाद मैंने पहली ही बार यह नाट्यमंचन किया है। पू. गुरुदेव की कृपा से ही मैं यह प्रस्तुत कर पाया हूँ... मैं मेरे सभी मित्रों को अनुरोध करूँगा कि यदि आपको यह नाटक पसंद आया है और आप आज ही अपने जीवन की सुरक्षा करना चाहते हो तो कल का इंतज़ार मत करना... क्योंकि यहाँ कल क्या हो किसने जाना? मैं पू. गुरुदेव को विनती करता हूँ कि जिस तरह आपने मुझे संकल्प दिलाया था, उसी तरह मेरे इन मित्रों को भी संकल्प दिलाकर सुरक्षित कर दो। सभी शिविरार्थी खड़े होकर पू. गुरुदेव के मुख से प्रतिज्ञा ग्रहण करो। सिर्फ पाँच सेकण्ड में सभी शिविरार्थी खड़े हो गये और सभी प्रकार के व्यसनों का आजीवन त्याग किया। प्रतिज्ञा लेने के बाद संगीतकार ने संगीत के जरिये सभी का हौसला बढ़ाया।

'कल दोपहर को 2.00 बजे के बाद 'माँ तुझे सलाम' विषय पर पू. गुरुदेव का प्रवचन रहेगा। जिंदगी में कभी भी नहीं रोने वाला बच्चा या युवा इस प्रवचन में 100% रोयेगा, यह गारंटी है। आप अच्छा वाला कोटन का नेपकीन साथ में रखना। करीबन 3.30 बजे से आप अपने मम्मी-पापा के उपकार के विषय में बोल सकते हो। तो पहले से

कुछ सोचकर आना हो तो तैयारी करके आना।' जयेश ने घोषणा पूरी की और शाम के भोजन के लिए बच्चे रवाना हुए।

कभी रात्रीभोजन का त्याग नहीं करने वाली राजन की मित्रमंडली को अब रात का खाना याद नहीं आता था। शाम को ही वे खाना खा लेते थे।

पाँचवें दिन सुबह में नाश्ता करके ही राजन अकेला ही निर्वेदविजयजी म. के पास पहुँच गया। वर्ल्ड कप में जीतने के लिए जो मास्टर प्लान था, उसे साकार करने के लिए गुरुजी से नजदीकी बनाना बहुत ज़रूरी था। 'आजा राजन, वहाँ क्यों खड़ा है?' राजन की झिझक (व्यवधान) दूर करने के लिए निर्वेदविजयजी म. ने उसे अपने पास बुलाया।

'आप सुबह के सेशन की तैयारी कर रहे थे इसलिए सोच रहा था कि कहीं आपको डिस्टर्बन्स (व्यवधान) खड़ा न कर दूँ।'

'Don't worry... मैं डिस्टर्ब नहीं होता। तैयारी थोड़ी कम-ज्यादा हो तो भी देव-गुरु की कृपा से कभी समस्या नहीं आई है। क्या हाल चाल है? शिविर में जम गया?'

'बिल्कुल... हम सभी को बहुत मजा आ रही है।'

'हाँ, क्यों नहीं आयेगा? इतनी सारी Competitions में top किया है आपने।'

'बस गुरुजी, आपके ही आशीर्वाद हैं।'

बात चल ही रही थी कि इतने में जयेश कुछ काम से निर्वेदविजयजी के कमरे में आया। राजन को बैठा हुआ देखकर कमरे में प्रवेश करने से पहले ही पूछ लिया-'मैं आ सकता हूँ गुरुदेव?'

'हाँ.. हाँ आ जाओ... कोई Personal matter नहीं है। बोलो, क्या बात है?'

'गुरुजी आज पाँचवा दिन है। परसों Quiz World Cup है। अभी तक जो प्रवचन हुए हैं उस पर से प्रश्न निकालने की ज़िम्मेदारी किसी को दी हुई है?'

'नहीं.. इस वक्त सारे प्रश्न मैं ही तैयार करूँगा। मेरी notes में ही कुछ marking already मैं कर चुका हूँ। कल शाम को प्रवचन खत्म होते ही मैं हॉल की गैलरी के नीचे बैठ जाऊँगा। करीबन रात ग्यारह बजे तक Ready हो जायेगा।'

'गुरुजी, आप अपने कमरे में बैठकर ही निकालो तो क्या problem है?' जयेश ने पूछा......

निर्वेदविजयजी म. ने हँसकर कहा-'क्यों tension ले रहा है? सभी बच्चे परमात्म भक्ति करके quiz की तैयारी में ही लगे होंगे। यहाँ मेरे कागज में झाँकने के लिए कोई नहीं आने वाला है। दूसरी बात, उस जगह पर lobby (बरामदे) से प्रकाश आता है तो मुझे दूसरी लाईट की विराधना नहीं करवानी पड़ेगी।'

'ठीक है, जैसा आपका आदेश... पंद्रह मिनिट बाकी है। मैं प्रवचन हॉल में आपसे मिलता हूँ। बाकी की सारी arrangement हो चुकी है।'

'मुझे यकीन है। आप दो साल से शिविर मैनेजमेंट करके अनुभवी हो गये हो' निर्वेदविजयजी ने हँसते-हँसते कहा... जयेश ने विदा ली।

'बोल राजन! और क्या बात है?'

'गुरुजी, कल का ड्रामा दिल को झकझोर देने वाला था। कॉलेज में प्रवेश करने से पूर्व ही हमें इन लोगों की चालबाजी का पता चल गया, यह बहुत ही अच्छा हुआ। वैसे तो हमारे परिवार में शराब वगैरह पहले से ही बंद है। लेकिन, अभी तो हमारी स्कूल में आठवीं कक्षा के बच्चे occasional drinking करने लगे हैं। गुरुजी! आपका बड़ा उपकार मानूँगा कि पानी आने से पूर्व ही आपने पाली बना दी है।'

'बहुत खूब... मुझे बहुत आनंद हुआ। आप चारों ने हमेशा के लिए प्रतिज्ञा ले ली होगी ऐसी उम्मीद करता हूँ।'

'जी हाँ गुरुदेव! शराब और ड्रग्स वगैरह सारी नशीली चीजों की प्रतिज्ञा ले ली है।'

'प्रभु आपको प्रतिज्ञा के पालन के लिए बहुत ही शक्ति दे ऐसे मेरे आशीर्वाद हैं। अब मैं और तू, दोनों अभी के सेशन के लिए तैयार हो जाते हैं.. ठीक है?' 'जी गुरुजी' कहकर राजन... कमरे से बाहर आ गया। राजन खुद को बहुत ही नसीबदार मान रहा था। इत्तेफाक से Quiz World Cup को जीतने की planning का प्रथम चरण बड़ी आसानी से पूरा हो चुका था। यह plan राजन का खुद का था। संजू, विकास और विश्वास को इससे पूरी तरह से अनजान रखा गया था। क्योंकि, स्पष्ट रूप से चोरी का पाप ही इसकी नींव में बैठा था।

****

'माँ तुझे सलाम' विषय पर प्रवचन शुरू होने से पूर्व ही हर्ष ने 'यह तो सच है कि भगवान है' गीत गाकर बच्चों और

युवाओं के दिल और आँखों को भिगा दिया था।पाँच मिनिट में ही निर्वेदविजयजी म. ने माँ के उपकार और माँ की उदारता के अद्‌भुत चार प्रसंग सुनाये। हर एक सेशन में हँसाने वाले गुरुजी आज इस सेशन में सभी को रुला रहे थे। उन चार घटनाओं को कहते वक्त बीच-बीच में जब वे बच्चों और युवाओं को प्रश्न करते थे तब युवा अपने जीवन को देखकर बड़ी शर्मिंदगी महसूस करते थे। कुछ प्रश्न तो इतने लॉजिकल थे कि युवाओं के पास उसका कोई जवाब नहीं मिल रहा था।

'मैं आपको पूछ रहा हूँ कि मित्र ने थोड़ा भी उपकार किया तो आपने thank you कहा, लेकिन अनगिनत उपकार करने वाले मम्मा और डैडी को कभी thank you कहा?'

'जब आप किसी ऑनलाइन शॉपिंग एप्प से एक छोटी भी चीज मँगाते हो और उसे ओपन करते ही डिफेक्टिव पाते हो तो आप फौरन उसे वापस भिजवाकर नये अच्छे पीस की डिमाण्ड करते हो। लेकिन आपने कभी सोचा कि एक बच्चा डिफेक्टिव आने पर कभी माँ-बाप ने उसे रिटर्न किया? आप कह सकते हो कि रिटर्न किसे करे? लेकिन आपको पता ही होगा कि आज ऐसे बच्चों को गर्भ से ही रवाना कर दिया जाता है। टेक्नोलॉजि एडवान्स हो चुकी है, दूसरे-तीसरे महीने में ही पता लग जाता है और संतान को गर्भ से ही रिटर्न कर दिया जाता है। लेकिन, आज मैं ऐसे अनगिनत माँ-बाप को जानता हूँ जिसे डॉक्टर के द्वारा पता लग गया था कि बेटा शारीरिक (Physical) या मानसिक (Mental) रूप से विकलांग है। आप इसे Clear करवा दो। वरना पूरी जिंदगी इसकी सेवा में बितानी पड़ेगी। तो भी वे अपने वात्सल्य की कसौटी पर खरे उतरते हैं। मजबूती के साथ कह देते हैं कि प्रभु ने दिया है उसका मुझे स्वीकार ही करना है। प्रभु को पता है कि हम इसे संभालेंगे, इसीलिए तो हमें ही भेजा है, और किसी को नहीं...'

Rare problem वाले बच्चों की बात छोड़िए, आज के समय में तो करीबन 60 से 70 प्रतिशत से भी ज्यादा माँ-बाप अपनी संतान के व्यवहार से बहुत दु:खी हैं। फिर भी हर एक माँ-बाप अपने प्यार के इन्वेस्टमेंट को कभी कम नहीं करते हैं। जिस कंपनी में 60 से 70 प्रतिशत लोगों का इन्वेस्टमेंट फैल हो जाता है, ऐसी कंपनी में investment कौन करेगा? एक बार शांति से सोचना, बचपन से लेकर अब तक आपके माँ-बाप ने आपके पीछे कितना investment किया है? आपके Medical Issues, आपके education, आपके कपड़े, खाना-पीना, मौज शौक के पीछे कितना investment अब तक हुआ है उसका हिसाब किया कभी?

ऐसे उदार और उपकारी माँ-बाप को बच्चे सुनाते हैं- 'मेरे मित्र के मम्मी-पापा को देखें, कितना दिया है अपने बेटे को... और आप हो-एक अच्छी सी बाईक भी नहीं दिला सकते।' इन युवाओं को मैं कहना चाहता हूँ कि आज की खतरनाक economical condition में कोई एक बेटे को भी जन्म देना नहीं चाहते हैं, ऐसे वक्त में आपको जन्म दिया। आपके भविष्य के लिए ब्याज पर पैसे लेकर खुद के भविष्य को दाँव पर लगाया। एक बात हमेशा अपने दिलों-दिमाग पर लिखकर रखना कि आपके मम्मी-पापा ने आपको जो भी दिया है वह उनकी औकात की अंतिम सीमा थी।

अभी जितने भी युवा मेरे सामने बैठे हैं वो एक बार चेक कर ले, आपका smartphone ज्यादा कीमती है? कि पापा का smartphone? फिर भी आप ब्रांडेड Mobile के लिए या i-phone के लिए जिद करते हो?

इस शिविर में कम से कम इतना तय करके जाना कि जिन्होंने आप पर बिना कोई शर्त, बिना कोई स्वार्थ विश्वास रखा है, उनका विश्वास नहीं तोड़ेंगे।

आँखों को बरसने के लिए मजबूर कर दे ऐसे गुरुजी के प्रवचन और माँ की भक्ति के गीतों को सुनकर शिविर में वह हॉल अश्रुधार से भीगने लगा। राजन और उसकी टीम भी इस प्रवचन और गीत को सुनकर लगातार रो रही थी। निर्वेदविजयजी म. की आँखें भी बीच-बीच में बरस रही थी। राजन अपने जीवन में शायद पहली बार रो रहा था।

गुरुजी के प्रवचन के बाद कुछ बच्चे बोलने के लिए खड़े हुए लेकिन अपना वक्तव्य पूरा नहीं कर पाये। करुण वातावरण का असर अभी भी जारी था। अंत में इस सेशन का समापन करके सभी को भोजन के लिए भेजा गया, लेकिन बच्चे रोज की अपेक्षा से मुश्किल से आधा ही खा पाये।

****

शाम के वक्त राजन मुश्किल से खाना खा पाया। उसे लग रहा था कि जब तक मैं अपने अपराधों का इकरार (confession) मम्मी से नहीं करूँगा तब तक मुझे चैन नहीं आयेगा। उसने राजवी को call किया लेकिन बोल नहीं पाया।

'कैसा है राजन? कैसी चल रही है शिविर?'

राजन रो पड़ा 'मम्मा !... मम्मा !...' 'बोल राजन, क्या हुआ? क्यों रो रहा है?' राजवी टेंशन में आ गई।

संजू ने फौरन मोबाईल अपने हाथ में ले लिया और बात शुरू की 'आन्टी, टेंशन मत लेना। दरअसल आज 'माँ तुझे सलाम' विषय पर गुरुजी का प्रवचन था। शायद ही कोई बच्चा बाकी होगा जिसकी आँखों में आँसू नहीं होंगे। राजन आपसे कुछ कहना चाहता है।' बात को बीच में रोककर संजू ने राजन से पूछ लिया–'राजन ! now are you ok?' उसने सहमति देते हुए मुंडी (गर्दन) हिलाई... मोबाईल राजन को वापस दिया गया।

'मम्मा... मैंने तेरे साथ बहुत बार चीटिंग की है। मैंने हर दूसरे दिन तुझसे झूठ बोला है। मित्रों के साथ गया था तब अपने घर में जो–जो चीज कभी भी नहीं आनी चाहिए ऐसी चीजें खाई हैं और कभी–कभी पी भी हैं। मैंने तुझसे विश्वासघात किया है। मम्मा ! मुझे माफ कर देगी?' बोलते–बोलते राजन रो पड़ा और उस ओर राजवी भी रो पड़ी। वह कुछ भी जवाब देने के काबिल नहीं थी। लक्ष्मीचंदजी वहीं पर बैठे थे। वे सब कुछ सुन रहे थे और देख रहे थे। उन्होंने मोबाईल अपने हाथ में ले लिया। 'राजन ! तेरे जैसे ही हालात तेरी मम्मी के हैं। वह बोल नहीं पा रही है। इशारे से ही कह रही है, उसने तुझे माफ किया है। पाँच मिनिट में हम call back कर रहे हैं।'

पाँच मिनिट के बाद लक्ष्मीचंदजी ने वापस कॉल किया।

'राजन ! तेरी मम्मी से बात कर'– राजवी ने ही बात की शुरुआत कर दी।

'बेटा, तू परेशान मत होना, मैंने तुझे माफ कर दिया है। तूने जो भी कुछ किया था वो आज के युवाओं के जीवन की आम बात है। मगर तुझे तेरी गलती का एहसास हो गया वो ही सबसे बड़ी बात है। मेरा बचपन वाला राजन मुझे वापस मिल गया, मेरे लिए वो ही सबसे बड़ी खुशी की बात है।'

'मम्मा, मैंने दद्दू से जो challenge लगाई थी उसमें दद्दू जीत गये हैं। लेकिन आज ही पता चला कि उनकी जीत में ही मेरी जीत थी। मैं अब काफी बदल चुका हूँ। Really, this shivir is not game changer but life changer for me...'

'राजन, अब मैं तेरे दद्दू को दे रही हूँ।'

''राजन ! हार–जीत की बात छोड़... हमारा जो target था वह पूरा हुआ है। दो दिन के बाद शिविर का समापन है, उसमें हम सभी आपके साथ होंगे। सुना है कि तूने बहुत सारी Competition win की है। Gift distribution में बहुत सारी gifts को तेरे हाथ में देखने के लिए हम आ रहे हैं।''

"Sure दद्दू, You all are most welcome.."

कॉल कट हुआ और राजन के दिल में महत्त्वाकांक्षा (ambition) की आग जल चुकी थी। पूरे शिविर का main event 'Quiz World cup' था। बहुत सारी competition भले ही जीत लूँ, लेकिन जब तक यह world cup हाथ में नहीं आयेगा तब तक मेरे दिल को शांति नहीं होगी। लेकिन मेरी notes अधूरी है और मित्रों से notes मिल जाये तो भी क्या? कुछ information तो लिखने में छूट ही जाती है। अभी तो एक ही रास्ता दिख रहा है......

संजू, विकास और विश्वास शाम के भोजन के बाद प्रभुभक्ति शुरू होने से पहले खेलने के लिए गये लेकिन राजन Quiz की तैयारी के बहाने कमरे पर ही रुक गया और मौका मिलते ही उपाश्रय पहुँच गया। एक कागज पर वह उपाश्रय का मैप बनाने लगा। उपाश्रय की entry के अलग–अलग रास्तों को वह गौर से देखने लगा। शाम के वक्त कितने लोग आते हैं, कब आते हैं, कब गुरुजी को मिलकर वहाँ से रवाना होते हैं–सारी बातों की जानकारी लेकर वह एक कागज पर लिखने लगा। बात–बात में किसी लड़के से जान लिया कि गुरुजी शाम के वक्त गौचरी कौन से समय पर लेते हैं। यही एक वक्त था जब वह अपना काम कर सकता था। जिस गैलरी के नीचे, जहाँ सहज रूप से लॉबी की लाईट का उजाला आता है, उस जगह खड़ा रहकर चारों दिशा में और ऊपर–नीचे अवलोकन करके planning को अंतिम रूप दिया।

'राजन ! क्या बात है? अभी शाम के वक्त यहाँ?' गुरुजी की आवाज सुनकर राजन थोड़ा चौंक गया। लेकिन फौरन खुद को संभालकर जवाब दिया 'मत्थएण वंदामि साहब जी... आज तो आपने रूला दिया। मैंने मम्मा से भी बात कर ली। मेरी बात सुनकर वो भी रो पड़ी।

'क्या बात है ? मम्मा क्यों रोई?'

'मैं सुधर गया, यह सुनकर'...... राजन और गुरुजी, दोनों हंस पड़े। 'सूर्यास्त हो गया है, अभी भक्ति का शेड्यूल है ना ?'

'हाँ, गुरुजी, मैं बस वहीं पर ही जा

रहा हूँ। यह तो आपको धन्यवाद देने आया था कि, जिंदगी में कभी भी नहीं रोने वाले और सभी को रूलाने वाले राजन को आज आपने रूला दिया।'

'सब देव-गुरु की कृपा है...... बाकी मेरा इतने सालों का अनुभव है कि हर एक युवा के दिल में अच्छाईयाँ पड़ी हुई है, उसे बाहर आने के लिए बस एक निमित्त चाहिए।'

'जी गुरुजी ...... अब मैं प्रभुभक्ति के कार्यक्रम में जाऊँ?'

'हाँ..... खुशी से।' राजन चरण स्पर्श करके निकल गया। निर्वेदविजयजी म. को इसकी शाम के वक्त हुई मुलाकात सामान्य ही लग रही थी। क्योंकि हर रोज इस तरह शाम के वक्त बच्चे मिलने के लिए आते ही रहते थे।उस वक्त अंदर की बड़ी रूम में सभी साधु भगवंत बिराजमान होने की वजह से और शाम की गौचरी का वक्त होने के कारण वह बाहर खड़ा होगा यह सोचकर निर्वेदविजयजी म. अपने कार्य में लग गये। उनके चेहरे के expression को देखकर राजन भी आश्वस्त था कि गुरुजी ने मेरी मुलाकात को शंका की नजर से नहीं देखी है।

छठे दिन अंतिम प्रवचन पूर्ण करने के बाद राजन थोड़ी देर वहाँ पर ही रूका। देख लिया कि गुरुजी उस जगह पर बैठकर अपना कार्य चालु कर चुके हैं। लेकिन, फिलहाल तो Notes में marking ही चल रही थी। प्रश्न लिख रहे हो ऐसा लग नहीं रहा था। विश्वसनीय सूत्रों से जानकारी प्राप्त कर ली कि गुरुजी करीबन दस मिनिट के बाद गौचरी के लिए अंदर के कमरे में जायेंगे। बस यही वक्त था अंतिम कार्य को संपन्न करने का। राजन सीधा अपने रूम में गया। संजू, विकास और विश्वास भोजन के लिए राजन का इंतजार कर रहे थे।'संजू...... आप तीनों पहुँचो भोजन के पांडाल में, मुझे अभी भूख नहीं है। क्विज़ की तैयारी जल्दी चालू करनी पड़ेगी।'

'अरे! मेरे प्रिय पढ़ाकू... बाद में पढ़ लेना... अभी नहीं खायेगा तो भूखा रह जायेगा... कल सुबह नाश्ते से पहले कुछ नहीं मिलने वाला है मेरे आका...।' संजू की प्रस्तुति सुनकर विकास और विश्वास हँस पड़े। राजन की एक-एक मिनिट महत्त्व की थी इसलिए वह थोड़ा चिढ़ गया। 'विकास! संजू को समझा दे, दोपहर को ही मैंने शाम का खा लिया है। please leave me alone... मुझे तैयारी करनी है।'

'O.K. बाबा O.K. लगता है World Cup तो हमारे प्रिय मित्र ही जीतने वाले हैं।' संजू की बात सुनकर सभी हँस पड़े।

उनके रवाना होते ही राजन ने अपने बैग के अंदर की चेन खोली और संभालकर रखा spy video recorder निकाला। बहुत ही महँगा और बहुत ही छोटा यह साधन था। अपनी जेब में डालकर वह कमरे से बाहर निकला।

देखते ही है आगे होता है क्या?......

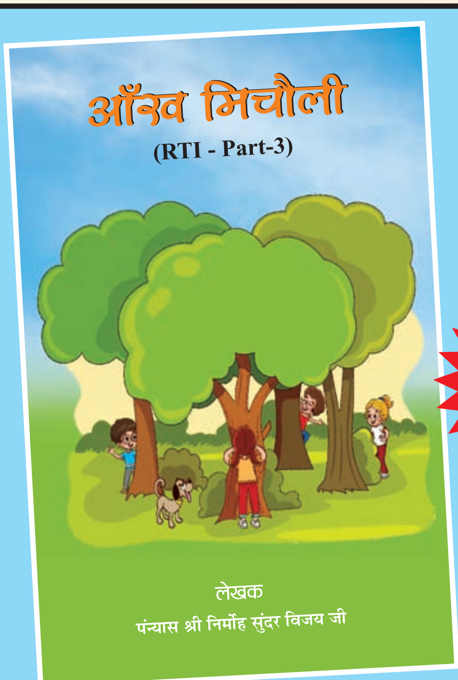

मूल्य ₹100/-

आँख मिचौली

इस किताब में Hot Questions के Cool Answers दिये गये हैं।

- भगवान कण-कण में है तो मंदिर जाने की क्यों जरूरत है?
- मूर्तिपूजा यदि धर्म है तो साधु क्यों नहीं करते हैं?
- मूर्तिपूजा यदि पाप है तो साधु प्रेरणा क्यों देते हैं?
- दिगंबर साधु बिना पात्रे गोचरी लेते हैं तो श्वेताम्बर साधु पात्रे का परिग्रह क्यों करते हैं?
- अहिंसा के पूजारी श्वेतांबर साधु हिंसा का प्रतिक डण्डा क्यों रखते हैं?
- कोमल पुष्प, पत्थर की प्रतिमा पर चढ़ाने में धर्म होता है या पाप?

पंन्यास निर्मोहसुंदर विजय जी की तेजाबी कलम से दिये गये उत्तर यदि पढ़ने हो तो पुस्तक आज ही मंगवाईये...

मो. : 9166568636

हकीकत से रूबरू कराने वाला सनसनीखेज काल्पनिक उपन्यास

महासंग्राम

अंक - 15

महाभारत : कलियुग का......

❑ ले. धर्मजय

राजन अपने कमरे से निकलकर उपाश्रय की ओर चल पड़ा। शिविरार्थी एवं कार्यकर्ताओं का पूरा ट्रैफिक भोजन के पांडाल की ओर था। राजन को लग रहा था कि भाग्यदेवी आज उसके पूर्ण समर्थन में है। संभालकर उसने उपाश्रय में प्रवेश किया। उसकी निगाहें बड़ी तेजी से घूम रही थीं। दिमाग ने सब सलामत का आदेश दिया और राजन गेलेरी की सीढ़ी की ओर लपका। एक दिन पहले से उसने लोकेशन बराबर देखकर रखा था। वह गेलेरी के उसी हिस्से में पहुँच गया। गेलेरी की रेलिंग पर सही ठिकाने पर स्पाई वीडियो रिकॉर्डर को टेप के माध्यम से चिपका दिया। अपने मोबाईल को ON करके फोकस का एंगल भी चेक कर लिया। मुनिश्री निर्वेद विजयजी म. जहाँ बैठने वाले थे वह पूरा एरिया - करीबन 20 square feet बहुत अच्छे से दिख रहा था। उस एरिया में चल रही चींटी भी दिख रही थी। फौरन अपना mobile जेब में डालते हुए वह गेलेरी से नीचे उतर गया और तेजी से उपाश्रय से बाहर निकल गया। रूम पर पहुँचकर ही उसने राहत की सांस ली। वह भी गनीमत रही कि संजू, विकास और विश्वास उसके रूम में आने के दो मिनिट के बाद ही वापस लौटे। उस वक्त उसके हाथ में शिविर की डायरी थी।

'वाह मेरे मित्र! शानदार.... बिना एक मिनिट गंवाये पढने का कैसा पुरुषार्थ! ऐ विकास फोटो लेकर आन्टी को सेन्ड कर' - विश्वास की मजाक पर राजन चिढ़ गया 'please, leave me alone... मुझे तैयारी करने दो।'

'राजन! इतनी संजीदगी के साथ तू बोर्ड की exam में भी नहीं पढता था...' संजू ने कमेन्ट कर दी...

राजन ने दो मिनिट के लिए अपनी डायरी साइड में रख दी। 'आप तीनों world cup खत्म होने के बाद जितनी मजाक मस्ती करो, चल जायेगा। लेकिन, मेरे अरमान है कि यह world cup मुझे ही जीतना है। इसमें solo playing है इसलिए मैं ऐसा कह रहा हूँ, यदि हम चारों को group में participate करना होता तो हम चारों साथ ही रहते। please आप मेरी इच्छा को, मेरे अरमान को समझोगे तो अच्छा रहेगा। आप लोगों को पता ही है कि मैं जब मैदान पर उतरता हूँ तब मेरी पूरी उर्जा मैं topper बनने के लिए खर्च कर देता हूँ, मेरे लिए वह competition do or die वाली होती है।'

राजन की बात पूरी होते ही तीनों ने sorry कहा और संजू ने कहा 'दोस्त, तेरी जीत वह हमारी ही जीत है।' विकास और विश्वास के सामने देखकर बोला 'Now no more comments, no joking and no talking... ok..?'

पूरे कमरे ने शांति की चद्दर ओढ़ ली। इस ओर निर्वेदविजयजी म. जैसे ही टेबल लेकर गेलेरी के नीचे के हिस्से में बैठे, राजन को पता चल गया। उसे मोबाईल में झांकता हुआ देखकर संजू अजीब निगाह से उसे देखने लगा। राजन ने पहले से ही इन तीनों से आने वाले प्रश्नों के उत्तर सोचकर रखे थे।

'दरअसल, मैं शुरू-शुरू में absent था, वह मैटर मैंने अच्छी नोट्स बनाने वाले दो-तीन शिविरार्थी से स्कैन करके ले लिया था वो देख रहा हूँ।' संजू ने प्रश्न किया उससे पहले ही राजन ने जवाब दे दिया। दूसरी ओर राजन अपने पन्ने पर Question और answer लिखने लगा। निर्वेदविजयजी म. की Speed जोरदार थी, लेकिन राजन को फिकर नहीं थी क्योंकि पूरा वीडियो रिकॉर्ड हो रहा था। करीबन ग्यारह बजे से पूर्व ही निर्वेदविजयजी म. ने अपना कार्य पूर्ण किया। राजन लगातार वॉच कर रहा था। साथ में यह भी ख्याल रख रहा था कि तीनों में से कोई उसके करीब न आये।

राजन आज Full night के मूड में था। निर्वेदविजयजी म. ने तो अपना

कार्य ग्यारह बजे से पहले ही पूर्ण कर लिया था। लेकिन कागज के highway पर चली हुई निर्वेदविजयजी म. की लेखनी ने तय किये हुए distance (अंतर) तक पहुँचने के लिए राजन को दो घंटे extra लगे थे। घड़ी एक बजे का समय दिखा रही थी और चौकीदार ने एक का घंटा बजा दिया था। राजन को पता था कि साधु भगवंत के उपाश्रय के दरवाजे हमेशा खुले रहते हैं। संजू, विकास और विश्वास चैन से सो रहे थे। संभलकर वह रूम से बाहर निकला। ऊंटी में रात के समय कोहरा आम बात है। उस रात भी कोहरा छाया हुआ था, जो राजन के लिए फायदेमंद साबित हुआ। वह संभलकर उपाश्रय में घूसा। गेलेरी में पहुँचकर चिपकी हुई टेप उखाड़कर स्पाई रिकॉर्डर ले लिया। जेब में डालकर उसी रास्ते से वापस लौट गया। मन में सोच रहा था, इसे कहते है पुण्य का उदय... भगवान की कृपा जोरदार बरस रही है। रूम में प्रवेश करके उस रिकॉर्डर को वापस बेग की चेन में डाल दिया। अब प्रश्न-उत्तर पक्का करने का उसने चालु किया। वैसे तो धर्म की बातें हो या स्कूल की किताबें हो, पढ़ाई उसके लिए सबसे बोरिंग सब्जेक्ट था, लेकिन जीतने का जुनून उसे कड़ी मेहनत करवा रहा था। सुबह 5 बजे तक सब कुछ पक्का करके राजन निश्चिंत हो गया। वर्ल्डकप पाने का उसका उत्साह चरम पर था। एक कार्डबोर्ड ढूंढ़कर उस पर उसने एक कागज चिपकाकर बड़े अक्षरों में लिख दिया 'सुबह 5:00 बजे तक जगा हूँ, इसलिए don't disturb me till 7:30 am.' (यह बोर्ड अपने बेड के आगे लगातार खर्राटे लगाता हुआ राजन सो गया।)

'राजन! जल्दी तैयार हो जा, नाश्ता करके नौ बजे पहुँचना है' विश्वास ने 7:30 बजे जगाया तब राजन मुश्किल से जग पाया।

सारे कार्य निपटाकर नौ बजे सभी होल में पहुँच गये। दोपहर 1:30 बजे के बाद Quiz world cup चालू होने वाला था, इससे पूर्व सुबह में 9:00 बजे से सभी शिविरार्थी अपनी ओर से कुछ-न-कुछ कमेन्ट्स शिविर के विषय में करने वाले थे। छः दिन सुनी हुई शिविर का यह Feedback था। निर्वेदविजयजी म. को लग रहा था कि इस वक्त का शिविर इतने सालों की अपेक्षा से कुछ हटके और अनूठा था।

'मेरे प्यारे मित्र... world cup is waiting for you...!' जयेश भाई ने बुलंद आवाज में जब घोषणा की तब चमक बिखेरता हुआ world cup गुरु भगवंत की पाट के आगे लाया गया। सभी युवाओं के मानों कि रोंगटे खड़े हो गये... शानदार... अद्भुत... ।

'अभी 11:00 बज रहे हैं। Qualifying round शुरू हो रहा है। participate करने के लिए 200 में से करीबन 150 शिविरार्थियों के नाम आये हैं। वे सभी आगे आकर लाइन से बैठ जाये... आपको 20 मार्क्स का paper दिया जायेगा जिसे आपको 15 मिनिट में भरना है। जो विद्यार्थी सबसे पहले ज्यादा से ज्यादा सच्चे जवाब लिखकर देगा उसे merit base पर लिया जायेगा। कुल 40 शिविरार्थियों का चयन किया जायेगा। आप एक घंटे में भोजन करके आ जायेंगे। तैयारी का आधा घंटा extra मिलाकर ठिक एक बजे आपको इस हॉल के बाहर इकट्ठा होना है। तब तक बाहर के बोर्ड पर Result लग गया होगा। Top-40 विद्यार्थियों को A, B, C, D इन चार ग्रुपों में बाँटा जायेगा। अपना-अपना ग्रुप देखकर आपको होल में बैनर देखकर बैठ जाना है।' जयेश ने घोषणा पूरी करके Qualifying round ले लिया। बाद में भोजन के लिए सभी को छुट्टी दे दी।

ठीक सवा बजे 10-10 के ग्रुप में पहला राउण्ड शुरू हो गया। वह राउण्ड पूरा होने के बाद हर एक ग्रुप से top-5 को लेकर 10-10 के दो ग्रुप बने। फिर से दोनों ग्रुप से 5-5 toppers को लिया गया। सारे प्रश्न जयेश की टीम पूछ रही थी। निर्वेदविजयजी म. लगातार देख रहे थे कि राजन के सारे जवाब सच्चे आ रहे थे। बहुत ही Confidently वह जवाब दे रहा था। दोनों राउण्ड में वह top rank

पर था। शिविरार्थियों में भी चर्चा चालू हो चुकी थी – इस वक्त का world cup तो राजन के हाथ में ही जायेगा। जैसे-जैसे राउण्ड आगे बढ़ते जा रहे थे, लोगों की (audiance) तालियाँ बुलंद होती जा रही थी। वानखेड़े स्टेडियम में India-Pakistan की मैच के वक्त जो माहौल पैदा होता है वह आज यहाँ दिख रहा था।

अन्तिम top-10 के बीच में एक-के बाद एक प्रश्न पूछे जाने लगे। पहले राउण्ड में राजन 50 पोइन्ट के साथ top पर रहा। हर एक प्रतियोगी को एक-एक प्रश्न पूछा जाता था जवाब सच्चा होने पर 10 point मिलते थे और यदि जवाब नहीं आता था तो pass करना था। बाद में दूसरा प्रतियोगी उस प्रश्न का जवाब देता था तो उसे +5 मिलता था। किसी भी प्रतियोगी को 25 से ज्यादा पोइन्ट नहीं था और राजन 50 पोइन्ट के साथ top पर था।

राजन निर्वेदविजयजी म. के रडार पर आ गया था। वे सोच रहे थे कि 'इतना perfection तो इतने सालों में कभी भी नहीं देखा। क्या, Question paper leak हो गया होगा?' पाँच सेकण्ड में दिमाग ने जवाब दिया – 'यह संभावित ही नहीं है। क्योंकि मैंने कल रात प्रश्न-उत्तर लिखकर मेरे folder में ही रखे थे। मेरे शिष्य के हाथ में भी वह नहीं गये है तो औरों की बात कहाँ? यहाँ पाट पर आने के बाद ही यह papers जयेश को मैंने दिये है।' अचानक निर्वेदविजयजी म. ने जयेश को रोका..... 'एक मिनिट जयेश, अभी top-10 का दूसरा राउण्ड मैं लेता हूँ...'

निर्वेदविजयजी म. का दिमाग 120 की speed पर दौड़ रहा था। उन्होंने Question-answer के सारे पेपर्स अपने हाथ में ले लिये। लिखे हुए प्रश्न को थोडा twist करके वे पूछने लगे। जिसके जवाब राजन बहुत मुश्किल से दे रहा था। एक सवाल में तो उसे pass ही करना पड़ा। क्योंकि गलत जवाब देने पर Negative marking था। निर्वेदविजयजी म. को यकीन हो गया कि मानो या न मानो, राजन के हाथ में सभी Questions आ चुके हैं। दूसरे राउण्ड में भी राजन top पर रहा, लेकिन 2nd rank से उसका margin कम होकर सिर्फ 10 point ही आगे रहा...

निर्वेदविजयजी म. की नजर घडी पर गई। 3:00 बज रहे थे। उन्होंने इशारे से जयेश को बुलाकर पूछ लिया 'मधुरपान की व्यवस्था हो गई है?' 'जी साहबजी! लेकिन अभी 1-2 राउण्ड लेकर बाद में सभी को छोडना है ना?'

'नहीं अभी छोड़ दो... वहाँ व्यवस्था के लिए किसी और को जिम्मा दे देना, आप मेरे साथ चलो।' निर्वेदविजयजी म. ने सीधा आदेश ही दे दिया। फौरन जयेश ने घोषणा (announcement) कर दी 'दो राउण्ड top-10 के पूर्ण हो चुके हैं। जिसमें राजन, जिनांग मेहता, वैभव दोशी और पार्थ सुराणा top-4 में हैं... उन सभी के बीच semifinal होगी after the break... हम अब...' जयेश

समय declare करे उससे पहले ही बीच में ही उसे रोककर निर्वेदविजयजी म. ने समय declare कर दिया... 'अब हम मिलेंगे ठीक 3:30 बजे... semifinal और final का मुकाबला कांटे की टक्कर जैसा होगा, कोई भी ना चुके...' बच्चों को और जयेश को भी सवाल हो रहा था कि आधे घंटे की क्या जरूरत है? 10-15 मिनिट में आराम से चालु हो सकता है। लेकिन निर्वेदविजयजी म. किसी का प्रश्न सुनने के mood में नहीं थे। फ़ौरन खड़े होकर जयेश को लेकर एक कमरे में पहुँच गये।

'गुरुजी! आप टेंशन में हो? what is problem?'

'जयेश! Paper leak हो चुका है'

'कैसे possible है साहेबजी? आपने ही निकाला था। उसकी ना कोई कोपी बनी है, ना ही आपने किसी को दी थी।'

'जयेश! तू समझ... 4 groups, 2 groups के बीच में जितने Questions पूछे गये, राजन without missing सारे answer confidently दे रहा था।'

बीच बात में ही जयेश बोल पड़ा 'साहेबजी! he is legend शिविरार्थी... उसके पास जीतने का जुनून है... it is possible साहेबजी...'

'जयेश! पहले तू मुझे सुन ले.. मेरे पास ज्यादा टाइम नहीं है।'

'sorry साहेबजी... आप बताइये...'

'last round में मैंने जैसे ही कुछ प्रश्न को twist करके पूछना शुरू किया, वह tension में आ गया, वो तूने mark किया था?' 'जी साहेबजी।'

'मैं अभी और कुछ नहीं कर रहा हूँ... मैं मेरी diary से 20-25 Questions नये निकाल रहा हूँ। इसीलिए मैंने आधे घंटे का break दिया है। मैं अभी ही मेरे कमरे को बंद करके बैठ रहा हूँ... सभी से कह देना मुझे disturb ना करे... ठीक 3:29 को तख्त (पाट) पर आ जाऊँगा।'

'o.k. साहेबजी... I will manage.....' कहकर जयेश रवाना हुआ और निर्वेदविजयजी म. अपनी diary में तेज गति से marking करने लगे। करीबन 25-30 नये Question बन गये।

दूसरी ओर, अन्तिम राउण्ड में निर्वेदविजयजी म. ने प्रश्न को twist करके पूछा, जयेश की जगह खुद ही पूछने लगे, इससे राजन को शंका हुई कि 'शायद इन्हें पता लग चुका है कि paper मेरे हाथ में आ गया है। जिस तरह वे मेरे सामने देख रहे थे उससे भी लग रहा है कि गुरुजी के रडार पर मैं आ चुका हूँ।' राजन का दिमाग तेजी से दौड़ रहा था। top-10 के दो राउण्ड के बाद जब मधुरपान के लिए सभी शिविरार्थी हॉल से बाहर निकल रहे थे तब संजू, विकास और विश्वास ने उसे गले लगाकर अभिनंदन दिया, तब भी वह खोया-खोया सा था।

'दोस्त! इतना tension में क्यों है... सभी round में तू ही top पर था, यार जश्न मना.....' संजू ने बड़ी गर्मजोशी से उसे कहा...

'संजू, जश्न तो तब मनायेंगे जब world cup हाथ में आयेगा... तुझे तो पता ही है कि semifinal और final में ही सबसे ज्यादा टेन्शन होता है, चाहे कितना भी बड़ा champion क्यों न हो.....'

राजन जवाब देकर मधुरपान के लिए जाने की बजाय रूम की ओर मुड़ा।

'राजन! मधुरपान नहीं लेना है? Let's have energy drink.....' संजू ने ऑफर की...

'दोस्त, तूं जा... मुझे कमरे पर जाकर थोड़ी तैयारी करनी पड़ेगी।'

'o.k... I understand winner instinct (विजेता की मनस्थिति को मैं समझता हूँ) All the best for world cup' 'thanks.'

संजू का आभार जताकर राजन सीधा कमरे पर पहुँचा। खुद की नोट्स के पन्ने घुमाकर out of Question paper का मैटर देखने लगा। मिली हुई 20-25 मिनिट में उसने बहुत कुछ पक्का कर लिया। घड़ी 3:28दिखा रही थी। वह दौड़ा-दौड़ा शिविर हॉल तक पहुँचा। 3:29 हुई और वह हॉल पर पहुँचा तब बाकी के तीनों competitor, audiance और निर्वेदविजयजी म. पहुँच चुके थे। निर्वेदविजयजी म. की आँखें राजन को ही ढूँढ़ रही थी। जिस तरह से उसने हॉल में प्रवेश किया और अपनी जगह तक पहुँचा वह पूरा दृश्य निर्वेदविजयजी म. के दिमाग में रिकॉर्ड हो गया और उसका analysis भी हो गया। Body language से निर्वेदविजयजी म. को स्पष्ट हो चुका था कि वह जोरदार tension में है और यह tension भी अन्तिम Round के कारण ही खड़ा हुआ है। निर्वेदविजयजी म. के दिमाग से आवाज आ रही थी 'बच्चू, यह तो शुरुआत है, tension किसे कहते हैं, उसका पता तो अब चलेगा...'

'Welcome, Now, Nail biting moments are starting ... सावधान... होशियार... हमारे चारों participants मुकाबले के लिए तैयार है। हम सभी participants को Best performance के लिए शुभकामनाएँ

देते हैं। semifinal और Final के सभी Rounds गुरुदेव खुद लेंगे। score board आपके सामने है। NOW, over to gurudev.....' जयेश ने सभी शिविरार्थियों के दिमाग में जोश भर दिया।

निर्वेदविजयजी म. सिर्फ 30 नये Questions ही तैयार कर पाये थे इसलिए कुछ पुराने और नये-- दोनों को मिलाकर उन्होंने Statistic round, Rapid fire round, googly round शुरू कर दिया। semifinal में वैभव और पार्थ बाहर हो गये। Final शुरू हुई राजन और जिनांग मेहता के बीच.... semifinal के तीन Round में निर्वेदविजयजी म. को स्पष्ट ख्याल आ चुका था कि, राजन पुराने प्रश्नों के जवाब बड़ी आसानी से दे रहा था, लेकिन नये प्रश्नों के उत्तर देते वक्त लगभग pass ही कर देता था। मतलब, कैसे भी करके उसके हाथ में पुराने Question आ गये थे। कैसे आये थे उसका investigation बाद में करेंगे, फिलहाल तो Final round पर Focus करते हैं।

Semifinal में राजन सिर्फ 10 points ही आगे था। जिनांग की अपेक्षा से राजन काफी stress में दिख रहा था। अब शुरू हो रही है कांटे की टक्कर.... सिर्फ 2 Round लिये जायेंगे 6-6 प्रश्न के.... कुल 12 प्रश्नों के जवाब मिलने पर जो शिविरार्थी आगे रहेगा वो विजेता घोषित किया जायेगा। यदि same points रहेंगे तो दो प्रश्न और पूछे जायेंगे... यानि super over खेली जाएगी। Competition का format वो ही रहेगा..... individual question का answer दिया तो +10, competitor के question का answer दिया तो +5.... गलत जवाब दिया तो -10 ... OK...?' निर्वेदविजयजी म. ने घोषणा करके जिनांग मेहता से शुरुआत की.. 4-4 प्रश्न दोनों को पूछे गये तब तक दोनों के बीच draw की situation चल रही थी। लेकिन पांचवे और छठे प्रश्न के दौरान राजन का एक जवाब गलत हुआ और खुद को पूछे गये एक प्रश्न का जवाब भी नहीं दे पाया इसलिए जिनांग मेहता के हाथ में world cup आ गया और राजन Runner up रहा... पूरे शिविर के होल में बच्चों का उन्माद चरम पर था। नाच-गान और तालियों से पूरा होल गूंज रहा था। जिनांग की आँखों में हर्ष के आँसू थे और राजन की आँखों में शोक के आँसू थे। दोनों प्रतिद्वन्द्वियों ने हाथ मिलाकर एक दूसरे का अभिवादन किया, निर्वेदविजयजी म. का आशीर्वाद लिया और quiz world cup का समापन हुआ।

सभी शिविरार्थियों ने मिलकर जिनांग को कंधे पर उठा लिया और हर्ष दोशी के संगीत की ताल पर जमकर dance किया। राजन आँखों में आँसू के साथ अपने कमरे पर जाने के लिए रवाना हुआ। होल के बीच में ही मित्रों ने उसे पकड़ लिया। पूरी मित्र मंडली (तीनों मित्रों ने) आँखों में आँसू के साथ गले लगाकर उसका अभिवादन किया।

'यार मेरे, क्यों परेशान हो रहा है... तूने जिस तरह इसे Fight दी, वो क्या कम थी? उसने भले ही world cup जीत लिया, लेकिन पूरी शिविर में सबसे ज्यादा Competition तूने ही win की है'.... संजू ने राजन का हौसला बढ़ाया। लेकिन संजू को पता नहीं था कि राजन की आँखों में आँसू किस वजह से हैं? राजन हार से भी ज्यादा अपराध बोध (guilt conscious) के कारण रो रहा था।

'चल, भोजन का time हो गया है... तूने दोपहर में कुछ नहीं लिया है... चल....' विकास राजन का हाथ खींचने लगा 'नहीं... मुझे बिल्कुल भूख नहीं है... मुझे नहीं खाना है।'

विकास ने दोनों मित्रों की ओर इशारा करके कहा 'कोई बात नहीं.. हम भी खाना नहीं खायेंगे। चलो, संजू... चलो विश्वास, कमरे पर चलें... आज रात भूखे ही सो जायेंगे...'

राजन फिर से रोने लगा। 'ऐसा मत करो... तुम खाना खाके आओ...' 'तू आ रहा है कि नहीं? बस... जवाब दे' संजू ने कड़ककर कहा... 'ठीक है.. आ रहा हूँ' राजन ने सरन्डर कर दिया। मित्रों के प्यार के सामने वह एक ही दिन में दूसरी बार हार रहा था।

निर्वेदविजयजी म. ने तख्त पर से उतरकर जयेश को बुलाया 'बोलिए गुरु जी' 'खाना खाकर फौरन मेरे पास आओ, पूरी team को लेकर..... Hurry up... और हाँ रात्रि भक्ति एवं अन्य सभी कार्य के लिए सचीन को जिम्मेदारी दे देना।'

'जी साहबजी!' कहकर जयेश रवाना हुआ... लेकिन राजन के face reading से वह बहुत कुछ समझ चुका था। उसी के लिए गुरुजी बुलाते होंगे यह बात भी उसके दिमाग में स्पष्ट हो चुकी थी।

जयेश के साथ सारी शिविर management team समय पर आ चुकी थी। कल सुबह होने वाला prize distribution से लगाकर पूरे कार्यक्रम की planning करके जयेश को छोड़कर team के सभी सदस्यों को रवाना किया....

'जयेश! मुझे पिछले दो दिन के इस Campus के सारे CCTV footage चाहिए... खासकर के जिसमें राजन दिखाई दे रहा हो वह सारे footage अलग करके मुझे चाहिए।'

'जी गुरुजी... लेकिन एक प्रश्न हो रहा है कि आपको राजन पर इतनी शंका क्यों हो रही है?'

'जयेश, तुझे याद है? दो दिन पहले सुबह में जब राजन यहाँ बैठा था तब Questions कौन निकालेगा? यह पूछने के लिए तूं आया था। उस वक्त, तेरी और मेरी सारी बातचीत राजन ने सुन ली थी।'

'हाँ गुरुजी, बराबर याद है' जयेश को लग रहा था कि गुरुजी की शंका वाजिब है।

'मैं किसी पर छानबीन किये बिना आक्षेप लगाना नहीं चाहता हूँ, इसीलिए CCTV footage मंगवा रहा हूँ.... समझ में आया तुझे?'

'हाँ गुरुजी.. एक घंटे के भीतर आपके सामने सब कुछ हाजिर हो जायेगा।'

'जयेश, वो तो तू हाजिर कर देगा। लेकिन, footage देखने के पीछे जो वजह है उसका पता किसी को भी नहीं चलना चाहिए...' पाँच सेकण्ड रुककर निर्वेदविजयजी म. ने पूछा 'got my point? (तू मेरी बात समझ गया..?)'

'जी गुरुजी.. बहुत अच्छे से समझ गया... मैं जा रहा हूँ।'

एक घंटे के बाद Laptop और pendrive लेकर जयेश ने उपाश्रय में प्रवेश किया।'गुरुजी, आ सकता हूँ?'

'आ जा जयेश.. तेरा ही इंतज़ार कर रहा था।'

'आपका प्रतिक्रमण और जाप पूरा हो गया है ना?'

'हाँ... तेरे जाने के बाद मैंने सारी क्रियाएँ पूर्ण कर दी है... NOW I am totally free... चल, बाजू के कमरे में..' निर्वेदविजयजी म. ने जयेश से बात करके सभी शिष्यों को सूचना दे दी... 'आप स्वाध्याय, जाप वगैरह करके समय से सो जाना... मैं बाजू के कमरे में जरुरी काम से जा रहा हूँ - कोई मिलने आये तो कह देना एक घंटे के बाद मिलूँगा।' 'हाँ जी..' विनीत शिष्य ने जवाब दिया।

'जयेश, कमरा बंद कर....' 'जी गुरुजी....' कहकर जयेश ने कमरे को Stopper लगा दी। जयेश को आश्चर्य नहीं हो रहा था क्योंकि CCTV footage खतरनाक थे।

'गुरुजी, आपका अनुमान सच्चा लगता है' कहकर जयेश ने Screen पर Real timing के साथ footage ON किये। 'ये देखो... समय है कल शाम 5:30 का... जब सभी शिविरार्थी भोजन के लिए गये थे और उपाश्रय में आप भी शायद अंदर के रूम में गोचरी कर रहे थे'.... जयेश ने गुरुजी के सामने देखा...

'हाँ सच है... मैं उस वक्त गोचरी में था और मेरे तीनों शिष्य उजाले के हिसाब से गोचरी रूम में ही स्वाध्याय कर रहे थे।'

'गुरुजी... उपाश्रय में प्रवेश करके तीन मिनिट के बाद यह बाहर निकल रहा है -- यह देखिए ... OK ...?'

'गुरुजी यह देखिए रात के एक बजे के बाद का समय... राजन इस समय उपाश्रय में enter हो रहा है। उसके चेहरे पर साफ तौर पर tension दिख रहा है... that means he is a culprit... और यह देखिए ... ठीक ढाई मिनिट के बाद वह बाहर निकल रहा है... एक बात गौर की आपने? कि घुसते समय उसकी Speed एकदम slow है... फूँक-फूँक कर वह कदम आगे बढ़ा रहा है और निकलने के समय उसकी Speed तीन गुना ज्यादा है--'

'exactly जयेश.. मेरी समझ में सब कुछ आ चुका है... Come with me...' निर्वेदविजयजी म. उपाश्रय के उस होल में आये, जहाँ बैठकर उन्होंने Questions लिखे थे। वहाँ खड़े रहकर निर्वेदविजयजी म. ने चारों दिशाओं में देखा... ऊपर भी देखा और सहसा बोल पड़े 'जयेश... चल, ऊपर की galary में'... गेलेरी में जाकर उन्होंने रेलिंग को चेक करने के लिए बोला 'इस रेलिंग पर टेप के कोई निशान मिल रहे हैं? torch लगाकर देख...'

जयेश ने गौर से देखा... 'गुरुजी... location मिल गया... यह देखो tape के निशान है... टच करो.. थोड़ा सा चिकना भी लग रहा है... that means उसने ultra modern Spy video recorder को इस जगह चिपकाया था। इसके ठीक नीचे आप बैठे थे। जैसे-जैसे आप लिखते गये recorder से सारी information उसे मिलती गई... आप करीबन ग्यारह बजे तक बैठे थे... इसलिए रात के एक बजे वापस आकर उस रिकॉर्डर को उखाड़कर वह ले गया... गुरुजी... this is offense... clearly offense.' (यह अपराध है... अपराध...)'

निर्वेदविजयजी म. जयेश बोला उससे पहले ही समझ चुके थे। 'जयेश, you are absolutely right... मगर मैं अब तुझे जो कह रहा हूँ वह तू गौर से सुन...' पाँच सेकण्ड रुककर निर्वेदविजयजी म. ने कहा 'चल, नीचे कमरे में जाकर बात करते हैं...' 'जी गुरुजी...'

'जयेश, राजन शिविर में आया उससे पहले ही लक्ष्मीचंदजी ने मुझे कहा था कि यह घर में सभी की जासूसी कर रहा है..... Latest Spy recorder के बारे में वह बहुत कुछ जान रहा है। उसने अपनी हुन्नर (?) का उपयोग world cup को जीतने के लिए किया है।' 'सच बात है गुरुजी... He is too much ambitious person (वह बहुत ही महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति है...)'

'जयेश, मैं बरसों से जिस व्यक्ति की खोज में था वह इस शिविर में मुझे मिल चुकी है।'

जयेश ने आश्चर्य के साथ पूछा 'गुरुजी.. आप क्या बात करना चाहते हो? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है...!'

'देख, उसका जो कौशल्य है और जो IQ level है वह अभी गलत दिशा में जा रहा है। यदि इसे सही दिशा में मोड़ दिया जाये तो जिनशासन का अभ्युदय इसके कंधे पर सवार होकर आ सकता है। मेरे दिमाग में बहुत सारे ideas दौड़ रहे हैं, लेकिन उसे साकार करने में संयमजीवन की बहुत सारी मर्यादाएँ बीच में आती हैं। आने वाले भविष्य में आने वाली चुनौतियों के महासागर को पार करने के लिए मुझे जिस जहाज की जरूरत थी वह मिल गया है, ऐसा मुझे लगता है।'

जयेश को उलझन की स्थिति में देखकर निर्वेदविजयजी म. ने कहा 'भविष्य में तुझे पता चल जायेगा।'

'वो तो सब बराबर है, लेकिन उसे रनर अप की ट्रॉफी देनी है कि नहीं, वो बताओ...'

'जयेश, जल्दबाजी बिल्कुल मत करना... कभी-कभी सच की जगह, संभावनाओं को देखकर निर्णय लेने होते हैं।'

'गुरुजी, मैं कुछ समझा नहीं...'

'उसे कल सुबह मैं बुला रहा हूँ। वह खुद को अपराधी महसूस कर रहा है कि नहीं... यह जानने के बाद ही मैं तुझे कुछ जवाब दे पाऊँगा। जयेश, तुझे उस meeting में नहीं आना है। क्योंकि मेरे सिवा कोई हकीकत नहीं जान रहा है, ऐसा ही उसे लगना चाहिए'.....

'मगर गुरुजी, CCTV footage सबूत के रूप में आप कैसे पेश करेंगे?' 'तू उसकी फिकर छोड़ दे....'

-------*------*------

'राजन, गुरुजी तुझे बुला रहे है।' ' सचीन सुबह 7.00 बजे ही राजन को मैसेज देने पहुँच गया था। गुरुजी का नाम सुनते ही राजन टेंशन में आ गया।

'क्या... क्या... काम था?' 'वो तो गुरुजी को पता।'

O.K. कहकर राजन रवाना हुआ। क्योंकि कल शाम से वह सोच रहा था कि कभी न कभी गुरुजी का बुलावा अवश्य आयेगा। वे क्या पूछेंगे? मैं क्या जवाब दूंगा? यह सोचते-सोचते वह उपाश्रय आ पहुँचा।

निर्वेदविजयजी म. एक रूम में बैठे थे। 'राजन! आ... सचीन तू जा... दरवाजा बंद कर ले।' निर्वेदविजयजी म. ने उसकी सराहना करके बात चालू की.....'कल तो तूने गजब fight दी। अन्तिम दो प्रश्न तक तो पता नहीं लग रहा था कि कौन worldcup ले जायेगा। ऐसी काँटे की टक्कर तो पहली ही बार हुई।'

राजन के चेहरे पर आनंद बिल्कुल नहीं दिख रहा था। वह यंत्रवत् सुन रहा था। निर्वेदविजयजी म. को लगा कि बात थोड़ी change करनी पड़ेगी।

'राजन! घर से कौन-कौन आया है?'

'दद्दु, पापा, मम्मी, रोशनी... सभी आये हैं।'

'आज तो वे सभी इनाम से तेरे भरे हुए हाथ देखकर कितने खुश हो जायेंगे!' 'जी गुरुजी..'

'राजन, Next शिविर में आयेगा ना?' 'Try करूँगा।'

'राजन हार-जीत तो चलती रहती है। आज शिविर का समापन और Prize distribution है, उसमें तो smiling face होना चाहिए।' राजन की आँखें गीली हो रही थी।

'राजन, तू कुछ कहना चाहता है?'

'गुरुजी, मुझसे एक बहुत बड़ी गलती हो गई है।'

'बोल, क्या है? फिकर मत कर... मेरे सिवा किसी को भी पता नहीं चलेगा।'

'गुरुजी, मैंने Questions की चोरी की थी.....' बोलते-बोलते राजन रो पड़ा।

निर्वेदविजयजी म. ने उसे सहलाया। 'मुझे पता है राजन... तेरा पछतावा तेरी आँखों से बह रहा है। मैं तुझे कोई सजा करने वाला नहीं हूँ। इसलिए नहीं कि तू लक्ष्मीचंदजी का पोता है।

इसलिए, क्योंकि तू सुधरने की बहुत बड़ी संभावना लेकर बैठा है। गई गुजरी भूल जा... यदि तुझे सचमुच पछतावा हो रहा है तो तय कर कि जो अपने हैं उसकी जासूसी नहीं करेंगे।'

'गुरुजी! आज आपको वादा कर रहा हूँ कि मैं अब से जासूसी का कार्य बंद कर रहा हूँ।'

'नहीं, तुझे जासूसी चालू रखनी है, तुझे जीतने का जुनून जारी रखना है।'

'मैं समझा नहीं... आपने अभी तो जासूसी का मना किया।'

'राजन, तूने बराबर सुना नहीं.... अपनों की जासूसी नहीं करनी है... बाकी मैं तुझे कहूँ उसकी जासूसी भी करनी है और तुझे बहुत महत्त्वपूर्ण mission भी पार करने हैं।'

'गुरुजी, अभी भी मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है.....'

'राजन, जिनशासन के लिए बलिदान देने वालों को हमने एक सेशन में याद किया था वह तुझे याद है?'

'बहुत अच्छे से याद है... मैं आपको कहना भूल गया... उस वक्त... मतलब, उस प्रवचन को सुनकर और शासनवंदना देखकर मेरे दिलो-दिमाग में एक बात पक्की हो गई थी कि इस जीवन को खाने-पीने और मौज-मजा में पूरा नहीं करना है। इस जीवन का उपयोग करोड़ों रुपये कमाकर जगत से विदा होने के लिए नहीं करना है। इस जीवन में मुझे ऐसा कुछ करके जाना है कि इतिहास में मेरा नाम रोशन हो।'

'राजन, exactly ..... तूने मेरे मुँह की बात छीन ली है। जिस तरह से भौतिक जगत आगे बढ़ रहा है.. जिस तरह से विधर्मी लोग जैन धर्म को और हमारी भारतीय संस्कृति को खत्म करने की साजिशें रच रहे हैं, उसे देखकर मुझे लग रहा है कि यदि हमने अभी कुछ नहीं किया तो शायद जिनशासन साढे अठारह हजार साल तक नहीं टिक पायेगा। लेकिन मैं जिनशासन की रक्षा और सेवा के लिए जिस बंदे की खोज में था, वह तू है... जिनशासन के मिशन के लिए मैं तुझे ही पसंद कर रहा हूँ।'

'गुरुजी! आप क्या बात कर रहे हो...' बोलते-बोलते राजन रो पड़ा...

'हाँ, मैं सच कह रहा हूँ... जब वक्त आयेगा तब मैं तुझे सब कुछ कहूँगा, पूरा मार्गदर्शन दूँगा!...' 'जी गुरुजी...'

'अब तू जा... दद्दू वगैरह सभी तेरा इंतज़ार कर रहे होंगे...

नास्ता करके, तैयार होकर आ...'

राजन ने निर्वेदविजयजी म. के चरणों में सिर झुकाकर वासक्षेप (आशीर्वाद) ग्रहण किया। अब उसे अपना सिर बहुत ही हल्का लग रहा था।

------×-----× -----

'आज बड़े सौभाग्य की बात है कि YES की तीसरी शिविर में हिन्दुस्तान की दसवें नंबर की जायन्ट कोर्पोरेट कंपनी, शंखेश्वर ग्रुप ऑफ कंपनीज के मालिक, डायरेक्टर श्री लक्ष्मीचंदजी संघवी का पूरा परिवार हमारे बीच उपस्थित है। मैं उन्हें अनुरोध करूँगा कि वे और उनके बेटे रोशन संघवी आगे आकर हमारे आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि (Chief guest) के स्थान को अलंकृत करें...' जयेश की घोषणा होते ही शिविरार्थियों ने करतलध्वनि से उनका स्वागत किया और हर्ष दोशी के संगीत की सलामी के साथ वे मुख्य मंच पर मुख्य अतिथि के स्थान पर बैठें।

मई महीने की सुबह के 9:30 बजे थे, फिर भी खुले में (open to sky) रखे गये शिविर समापन के इस कार्यक्रम में किसी को भी गर्मी नहीं लग रही थी। चारों ओर ऊंचे-ऊंचे वृक्षों से सुशोभित पहाड़ियों की वजह से प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत और अनूठा नजर आ रहा था। मानों की पृथ्वी पर की यह जन्नत थी।

लक्ष्मीचंदजी और रोशन मंच पर बीच वाली कुर्सी में बैठ गये। शिविर में बच्चों ने क्या-क्या किया, कैसे-कैसे परिवर्तन आये, प्रभुभक्ति को कितना enjoy किया, शासनवंदना में कैसा शौर्यपान किया वगैरह सारा रिपोर्ट निर्वेदविजयजी म. बीच-बीच में देते रहे और शिविरार्थियों का सम्मान और Prize distribution चलता रहा। सबसे ज्यादा कम्पीटीशन जीतने वाले राजन को ही मंच पर बार-बार आना हुआ।

अंत में MOST talented शिविरार्थी का अवार्ड और world cup देने से पूर्व निर्वेदविजयजी म. ने उदबोधन किया 'YES शिविर का यह तीसरा episode कई कारणों से अद्भुत और अनूठा रहा है। बच्चों के जीवन में आये हुए परिवर्तन से मैं अभिभूत हूँ। आज तक जो सुनने में आ रहा था कि "Youth is useless"... आज इस quote को परिवर्तित कर रहा हूँ

"Youth is used less". युवाओं में अद्भुत शक्ति है। यह शक्ति Neutral है। यदि उन्हें सिर्फ शाहरुख, सलमान और आमिर जैसे सेलेब्स एवं सचिन, धोनी और कोहली जैसे क्रिकेटर्स I-con के रूप में मिलते रहेंगे तो यह शक्ति पतन की ओर आगे बढ़ेगी।

लेकिन इस युवाशक्ति को यदि कुमारपाल, वस्तुपाल - तेजपाल और पेथडशा जैसे I-con मिलते रहेंगे तो यह शक्ति खुद के साथ-साथ पूरे देश, पूरे समाज और धर्म का उत्थान कर सकती है। इस शिविर का MOST talented शिविरार्थी का Award दिया जा रहा है एक ऐसे शिविरार्थी को, जिसने अपने जीवन की पहली शिविर attend की है। जो शिविरार्थी अपने साथ नोन-जैन मित्रों को भी साथ लाया है। जिसने सबसे ज्यादा compitition win की है और जो Quiz world cup में रनर अप रहा है। आपको पता लग गया, कौन है वह?' निर्वेदविजयजी म. के रुकते ही सभी ने कोरस में बोलना चालू किया 'राजन... राजन... राजन...' गुरुजी ने हाथ ऊँचा करके सबको शांत किया...

'आपको एक Surprise देना चाहता हूँ। इतने दिनों से उस युवा की मनाई के कारण मैंने उसका पूरा परिचय आपको नहीं दिया था। उसकी आज भी इच्छा नहीं है कि मुझे कोई मेरे पापा और दादा के नाम से पहचाने... फिर भी...' राजन बीच में खडा हो गया 'please गुरुजी नहीं...' अचानक लक्ष्मीचंदजी अपनी कुर्सी से खड़े हो गये और बोल पड़े 'मेरे प्यारे शिविरार्थियों, उसने गुरुजी को मनाई की है मुझे नहीं... राजन मेरा पोता है...!' सभी शिविरार्थियों ने दांतों के तले अंगुली दबा ली...'ओ हो हो...!' सभी के मुँह से आश्चर्य प्रगट हुआ। 'करोड़ों रुपये कमाकर मुझे जो गौरव महसूस नहीं हुआ था वह आज हो रहा है' कहकर लक्ष्मीचंदजी खुद मंच से उतरकर शिविरार्थियों के बीच जाकर, राजन का हाथ पकड़कर उसे ऊपर लेकर आये। सभी शिविरार्थियों ने जमकर तालियाँ बजाई। सभा में बैठे हुए कई अभिभावकों (Parents) की आँखों में आँसू थे। राजवी भी यह माहौल देखकर रो पड़ी। शिविरार्थी को निर्वेदविजयजी म. के प्रति विशेषरूप से बहुमान भाव हुआ... क्योंकि इतने बड़े उद्योगपति के बेटे को भी कोई special treatment उन्होंने नहीं दी थी। साथ-साथ में राजन के प्रति भी सबके दिल में एक अनूठा सम्मान भाव जगा... आमतौर पर ऐसे अमीरजादे अपने बाप के नाम पर कितना रुआब छाँटते रहते हैं, उसके सामने यह राजन अपनी पहचान छुपा रहा था।

राजन को most talented शिविरार्थी की trophy देने के लिए निर्वेदविजयजी म. ने उसकी मम्मी राजवी और बहन रोशनी को भी मंच पर बुलाया। वहाँ उपस्थित सभी लोग इस अद्भुत पल को अपने कैमरे में कैद करने लगे और अपने मित्रों को Forward करने लगे। राजन की आँखें भी गुरुजी की उदारता के कारण गीली थी। राजन ट्रॉफी प्राप्त करके नीचे उतर रहा था, लेकिन गुरुजी ने उसे मंच पर ही बैठने का आदेश किया।

'इस शिविर में सभी प्रवचनों के आधार पर Quiz world cup का आयोजन होता है। लेकिन इस वक्त जो काँटे की टक्कर थी ऐसी पूर्व में कभी नहीं हुई। इस वक्त YES-3 का world cup जा रहा है जिनांग मेहता के हाथों में...' मंच के बीच रहा हुआ world cup special light effects के कारण चमक रहा था।

'यह कप राजन खुद अपने हाथों से जिनांग को देगा' तालियों की गडगडाहट के बीच जिनांग मंच पर आया और राजन के हाथों से कप लिया। राजन ने उसे गले लगाया। इस दृश्य को देखकर जिनांग के मम्मी-पापा की आँखें भी गीली हो गई।

'आप लोगों को एक बात बताते हुए मुझे बहुत आनंद हो रहा है... जिनांग इस वर्ष 12th board की exam में पूरे महाराष्ट्र बोर्ड में Science Stream में मेरिट में दूसरे नंबर पर आया है।' निर्वेदविजयजी म. की घोषणा होते ही सभी लोगों ने खड़े होकर जिनांग को standing ovation दिया। राजन भी यह जानकर चौंक गया। जयेश के लिए भी यह news surprise थी। निर्वेदविजयजी म. ने खुलासा किया 'मैं इस समापन के लिए उपाश्रय से निकला, उसी वक्त जिनांग ने मुझे यह मैसेज दिये थे और कहा था मैंने सिर्फ आपको ही बताया है, आप ही इसे declare करना... हमें नाज है ऐसी जिनशासन की प्रतिभाओं पर... लग रहा है कि जिनशासन का अभ्युदय काल आ चुका है...।'

तालियों के साथ समापन समारोह का समापन हुआ।

राजन अपने पूरे परिवार के साथ गुरुजी को वंदना करके बैंगलोर जाने के लिए निकल गया। वहाँ से उसी रात की फ्लाईट पकड़कर मुम्बई उड़ गया। 'please fasten your seat belt... this flight is on landing mode'. यहाँ मुम्बई की फ्लाईट का लैंडिंग हुआ और वहाँ अमेरिका के न्यूजर्सी में फ्लाईट का लैंडिंग हुआ। राजन जो पुरानी याद में खोया था वहाँ से वापस

आया। न्यूजर्सी सिटी में साकार ऑपरेशन का पूरा रिपोर्ट उसे हुसैन के पास से लेना था।

सूचना : अब हम 2016 से निकलकर 2023 में आ गये हैं, मार्च 2024 की धर्मप्रेमी - संदेश की पत्रिका में जब महासंग्राम का पहला एपिसोड छपा था उसी जगह से अब (कहानी) उपन्यास आगे बढ़ेगा। कई पाठकों ने वह एपिसोड नहीं पढ़ा है इसलिए संक्षेप में उसे यहाँ दे रहे हैं। 2016 से 2023 के बीच का अत्यंत रोचक समयखंड आगे-आगे, बीच-बीच में आता रहेगा इसलिए कोई भी धर्मप्रेमी संदेश पत्रिका को miss ना करें। जिसे पूर्व के सारे episode पढ़ने हैं वे नीचे दिये गये QR code को scan करें और जो लिंक दिखेगी उसे टच करें तो आपको PDF प्राप्त हो जायेगी।

महासंग्राम के पुराने एपीसोड पढ़ने के लिए क्यूआर कोड स्केन करें।

भविष्य में... कुछ महीनों के बाद महासंग्राम के करीबन 21 episode की किताब महासंग्राम part-1 प्रकाशित होगी तब आपको हार्ड कोपी में पूरा उपन्यास पढ़ने के लिए मिलेगा।

Episode-1 **का संक्षेप**... : ->

7 अक्टूबर 2023 सुबह 5:00 बजे

हिथ्रो एयरपोर्ट पर वेटिंग रूम में राजन बैठा था और वहाँ लगे हुए T.V. पर ब्रेकिंग न्यूज में एक समाचार प्रसारित होते हैं 'हमास के आतंकवादियों ने इजरायल पर 10000 रोकेट्स दाग कर हमला किया है। इजरायल का अभेद्य कवच आयरन डोम भी नाकाम हो गया। इजरायल ने भी इस हमले की प्रतिक्रिया देते हुए गाजा पट्टी पर हमला किया।' इस समाचार को पाकर राजन की आँखों से आँसू चलने लगे। एक आँख से गम के, दूसरे से खुशी के- मेरा जिनशासन बच गया यह सोचकर खुशी के, आने वाले समय में होने वाले महासंग्राम को सोचकर गम के...

अमरीका, न्यूजर्सी जाने वाली डेल्टा एयरलाइन्स की फ्लाईट का takeoff हुआ और राजन पुरानी यादों में खो गया - उसने सुना कि Better world order - BWO में तय हुआ है कि अब विश्व में एक ही धर्म रहेगा क्रिस्लाम.. मतलब, क्रिश्चन और इस्लाम से बना हुआ धर्म..... उसने पहले सुना था कि क्रिश्चन और इस्लाम वाले लड़कर खत्म हो जायेंगे, बाकी के धर्म बच जायेंगे..... लेकिन यदि यह एक विश्वधर्म बन गया तो जैन, हिंदू वगैरह सभी खत्म हो जायेंगे। यह एजेन्डा विश्व की सबसे ताकतवर सीक्रेट सोसायटी का है। आज तक वे सभी आयोजन में सफल हुए हैं। लेकिन कई महीनों से राजन का ग्रुप Best world order - BWO के तहत इस्लाम के सामने क्रिश्चन को खड़ा करने का प्रयास कर रहा था, जिसका प्रथम चरण साकार ऑपरेशन इजरायल पर हुए हमले के साथ पूरा हुआ।

वह मोबाईल की स्क्रीन पर अपने उपकारियों के दर्शन करने लगा। सेंट जेवियर्स कॉलेज में जब लव जिहाद का मामला सामने आया था तब आरिफ की गैंग से उसका सामना हुआ था। वही आरिफ आज पक्का दोस्त बन चुका था और BWO का प्रथम ऑपरेशन साकार की सफलता में उसका हाथ था। Better world order की साजिशों को बताने वाले थे प्रोफेसर थॉमस, जो चार साल से मेरे मार्गदर्शक बने... एयरफोर्स में भर्ती हुए संजय सिंह (संजू) से कई गोपनीय जानकारियाँ मिली। विकास मल्होत्रा ने पार्टी पॉलिटिक्स की गोपनीय जानकारियाँ साझा की। विश्वास शर्मा प्लास्टिक सर्जरी में सर्जन बनेगा, लेकिन कोविड के वक्त में सच्ची जानकारियाँ उसी से प्राप्त हुई थी। यह तीनों मित्र राजन के सबसे करीब मित्र हैं। अनुपम दास जर्नलिस्ट ने अच्छा सपोर्ट किया। निर्वेदविजयजी म. ने कलियुग के इस महाभारत में श्रीकृष्ण की भूमिका अदा की थी।

सावधानी में शिखर पर बैठा हुआ राजन इस वक्त सावधानी चूक रहा था। उसकी आँखों से बरस रहे आँसू पर किसी एक यात्री की नजर थी। उस यात्री की नज़र वेटिंग रूम से उस पर थी। मोबाईल को बंद करके, वॉलेट में डालकर वह सोने का प्रयास कर रहा था, लेकिन 'साकार' की सफलता के कारण नींद नहीं आ रही थी और वह अपने अतीत में चला गया, जिसमें उसे अपनी सेन्ट जेवियर्स स्कूल दिख रही थी......

क्रमशः ...